SRI JAIN SIDHANT BHAWAN GRANTHAWALI
VOL.-I
श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली
भाग-१

समालोचनार्थं

जैन–सिद्धान्त–भवन–ग्रंथावली

(देव कुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार, जैन सिद्धान्त भवन, आरा की संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विस्तृत सूची)

भाग–१

प्रस्तावना :

डा० गोकुलचन्द्र जैन

अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

संपादन :

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दर्शनाचार्य

शोधाधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा (बिहार)

संकलन :

विनय कुमार सिन्हा, M. A. (प्राकृत)

शत्रुघ्न प्रसाद, B. A.

गुप्तेश्वर तिवारी, आचार्य

श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रकाशन,

भगवान महावीर मार्ग, आरा–८०२३०१

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

(भाग–१)

प्रथम संस्करण १९८७

मूल्य—१३५)

प्रकाशक :

श्री देवकुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार

श्री जैन सिद्धान्त भवन

आरा (बिहार)–८०२३०१

मुद्रक :

शाहाबाद प्रेस

महादेवा रोड, आरा

आवरण शिल्प :

क्रिएटिव आर्ट ग्रुप

दिल्ली

SRI JAINA SIDHANTA BHAWAN GRANTHAWALI (Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Hindi mss. Published by Sri D.K. Jain Oriental Library, Sri Jain Sidhanta Bhawan, Arrah (Bihar) India.

First Edition - 1987 Price Rs. 135/-

Jaina Siddhant Bhawana Granthavali

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa & Hindi Manuscripts

of

Sri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah

Vol.-1

Introduction :
Dr. Gokulchandra Jain
Head of the department of Prakrit & Jainagama.
Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyalaya, Varanasi

Editor ;
Rishabhachandra Jain Fouzdar,
Research Officer
Devakumar Jain Oriental Research Institute, Arrah (Bihar)

Compilation :
Vinay Kumar Sinha M. A.
Strughan Prasad B. A:
Gupteshwar Tiwari

Sri Jaina Siddhant Bhawan
PUBLICATION
Bhagwan Mahavir Marg, Arrah-802301

Foreword

Bihar has played a great rôle in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings. These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India.

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes. Each volume contains two parts. First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc. Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job. This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism.

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

February 29, 1988.
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का प्रथम भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पंचवर्षीय योजना के रूप में इसके छः भाग प्रकाशित करने में सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' का यह पहला भाग जैन सिद्धांत भवन, आरा के ग्रन्थागार में संग्रहीत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, कन्नड़ एवं हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची है। इसमें लगभग एक हजार ग्रन्थों का विवरण है। हर भाग में इसका विभाजन दो खण्डो में किया गया है। पहले खण्ड में अंग्रेजी (रोमन) में ग्यारह शीर्षकों द्वारा पांडुलिपियों के आकार, पृष्ठ संख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रंथागार में लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रंथों का संग्रह है। इनमे अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थों को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान में जैन सिद्धात भवन, आरा में उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठकों के हाथ मे होगा। इसमें २१३ दुर्लभ चित्र है।

'जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी संयोग जुड़ते गए जिससे मैं यह ऐतिहासिक एव महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने में सफल हुआ हूँ। भविष्य में भी अपने सभी सहयोगियों से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमें उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बड़े प्रेरणा-स्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एवं मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्ताओं की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य में लगे हैं।

बिहार सरकार एवं भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं संस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एवं निदेशक संग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी संबंधित

अधिकारियों के कृतज्ञ हैं और उनसे अपेक्षा रखेंगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन में उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य में भी हमें प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आंग्ल भाषा में लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एवं कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसंस्थान, आरा ने आवश्यकता पड़ने पर हमें इस प्रकाशन के सम्बन्ध में बराबर महत्त्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोंही जाने माने विद्वानों का आभार मानते हैं।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का संपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे संस्थान में मानद शोधकारी के रूप में भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनों खण्डों के संकलन के संपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा में एक हजार ग्रंथों की ग्यारह कालमों में विस्तृत सूची तथा प्राकृत एवं संस्कृत आदि भाषाओं में परिशिष्ट के रूप में सभी ग्रंथों के आरम्भ की तथा अंत के पदों का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद वर्मा ने पुस्तक के अंत में 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारों एवं टीकाकारों की नामावली और उनके ग्रन्थों की क्रम संख्या का संकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थों का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक संभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगों से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

अजय कुमार जैन

देवाश्रम, मंत्री

आरा श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

ABBREVIATION

V. S.	—	Vikrama Saṁvata
D.	—	Devanāgarī
Stk.	—	Sanskrit
Pkt.	—	Prakrit
Apb.	—	Apabhraṁśa
C.	—	Complete
Inc.	—	Incomplete

Catg. of Skt. Ms. - Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg. by Lewis Rice. M. R. A. S., Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg. of Skt. & Pkt Ms - Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar. by. Rai Bahadur Hiralal. B.A. Nagpur, 1926.

(१) आ० सू० — आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल।

(२) जि० र० को० — जिनरत्नकोष—डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना।

(३) जै० ग्र० प्र० सं० — जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह—पं० जुगलकिशोर मुख्तार।

(४) दि० जि० ग्र० र० — दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

(५) प्र० जै० सा० — प्रकाशित जैन साहित्य—डा० पन्नालाल अग्रवाल।

(६) प्र० सं० — प्रशस्ति संग्रह—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल।

(७) भ० सं० — भट्टारक सम्प्रदाय—विद्याधर जोहरापुरकर।

(८) रा० सू० — राजस्थान के शास्त्र भंडारों की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)।

समर्पण

देवाश्रम परिवार में

पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,

राजर्षि बाबू देवकुमार जी,

ब्र० पं० चन्दा माँजी,

और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी

यशस्वी तथा गुणीजन हुए हैं।

उन सभी को पावन

स्मृति को यह

श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली

सादर समर्पित है।

देवाश्रम आरा —सुबोधकुमार जैन

१४-३-८७

INTRODUCTION

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvalī* – a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah. The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b*. Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately. In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon. The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India. The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz. 1. Serial number, 2. Library accession or collection number, 3. Titleof the work, 4. Name of the author, 5. Name of the commentator. 6. Material, 7. Script and language, 8. Size and number of folio, lines per page and letters per line. 9. Extent, 10. Condition and age, 11. Additional particulars. These details provide adequate informations about the MSS. For instance thirteen MSS of *Dravyasaṁgraha* have been recorded (S. Nos. 213 to 224). It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators. Each Ms. preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number. Its justification could be observed in the details provided.

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text. All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry. Each Ms has different size and number of folios. Lines per page and letters per line are also different. All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi verson in poetry by some unknown

writer and is incomplete. Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāsā poetry by Bhagavatidas. Ms No. 223 dated 1721 v. s., is with Sanskrit commentary in Prose. Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda. These details could be seen at a glance as they are presented scientifically.

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads :

1.	Purāṇa, Carita, Kathā	1 to 155
2.	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3.	Nyāyaśāstra	454 to 480
4.	Vyākaraṇa	481 to 492
5.	Kośa	493 to 501
6.	Rasa. chanda, Alaṅkāra & Kāvya	502 to 531
7.	Jyotiṣa	532 to 550
8.	Mantra. Karmakāṇḍa	551 to 588
9.	Āyurveda	589 to 600
10.	Stotra	601 to 800
11.	Pūjā, Pāṭha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order. The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue. However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512).

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix. This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part. Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgarī* script. The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention. Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour.

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below :—

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmṛtam* (511. 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakriyākośa*(498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra*. These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him.

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṁsā* contain *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṁsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṁsābhāṣya* of Akalaṅka (457). These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī*, *Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti*. Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions.

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important. If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one. Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts. When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms. The difference of alphabets in different languages is obvious. Thus the reference of parential Ms is of great importance (373).

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS. Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannaḍa* scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi.

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana. Arrah itself. MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.

(6) The study of colophon reveals many more inportant references of *Saṁgh s, Gaṇas, Gacchas, Bhaṭṭārakas.* and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics. copying the Ms for personal study—*svā hyāya,* and getting the work prepared for his son or relative etc. Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics.

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas,* or *gāthās* have been given as *granthaparimāṇa* at the end of the MSS. This reference is very important from the point of the extent of the Text. Many times the author himself indicates the *granthaparimāṇa*. Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each). The *Āptamīmāṁsā Bhāṣya* of Akalaṅka is more popularly known as *Aṣṭaśatī* and *Āptamīmāṁsālaṁkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasahasrī*. Both works are the commentaries on the *Āptamīmāṁsā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyānanda himself says about his work :—

"*Śrotavy – aṣṭasahasrī śrutaiḥ kimanyaih sahasrasaṁkhyānaih.*"

Counting in the form of ślokas seems a later development. When the teachings of Vardhamāna Mahāvīra were reduced to writing counting was done in the form of *Padas*. For instance the *Āyāraṁga* is said to contain eighteen thousand *Padas*.

" *āyāraṁgamatthāraha—pada - sahassehi* "
(Dhavalā p. 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio cultural importance as well. The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS. The remuneration of writing was decided per hundred words. For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation. In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned. Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important.

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research.

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other. Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning. With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty.

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz. 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India. However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable. The earliest Śauraseni Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama*

with its famous commentaries *Davalā, Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannaḍa* scripts, preserved in the *Siddhānta Basadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of Śrī *Syādvāda Mahāvidyālaya*. A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof. Heraman Jacobi of Germany, Prof. Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad. A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915. Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal.

The other activity of the publication of *Biblothica Jainica—The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Saṁgraha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc. In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra, Gommatasāra, Ātmānuśāsana* and *Puruṣārtha Siddhyupāya* were published. Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published. *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning.

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular. The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgarī* on paper are valuable assets of the collection. It is undoubtedly accepted that a manuscipt is more valuable than an icon or Architectural set-up. An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost. It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice. A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, because the *Jina*. *Jinavāṇī* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras*. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D.) and Aurangzeb (1661-1669 A.D.) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places were choosen for the purpose. A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsis emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandaras*. As a result, many MSS collections came up all over India. The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Raj asthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras*. One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West. And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India. A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf. It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāṇa* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS. But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties. This resulted into two unwanted developments viz. 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity. Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama* is now well known. It is only one example.

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century. In such Insitution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Joinologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan. It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited.

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention. It is quite a different type of reference work relating to MSS. Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannadaprāntiya Tādapatriya Grantha* Sūchī in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS. The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr. Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji. Jaipur also deserve mention. L. D. Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dillī Jina-Grantha-Ratnāvālī* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a valuable addition. As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah. It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS. I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications.

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors. I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight. His associates also deserve applause for their due assistance. I also thank my esteem friend Dr. Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible.

Dr. Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jaināgam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश में विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान में इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एवं विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बड़ा संगमरमर का हॉल है, जिसमें सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रन्थों का संग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान में श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घाय है। इस कला दीर्घा में शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एवं अन्य पुरातत्व सामग्री प्रदर्शित है। यहीं ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा में श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ मे भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होंने स्थानीय जैन पंचायत की एक सभा में बाबू देवकुमार जी द्वारा संगृहीत उनके पितामह पं० प्रभुदास जी के ग्रन्थ संग्रह के दर्शन किये तथा उन्हें स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एवं संस्कृति के प्रेमी थे, उन्होंने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वहीं कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के संवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ में दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमें विभिन्न नगरों एवं गांवों में सभाओं का आयोजन करके जैन संस्कृति की सुरक्षा एवं समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गांवों और नगरों से हस्तलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानों पर शास्त्रभंडारों को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एवं निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाड़ियों पर हुआ करती थीं। किन्तु काल की गति को कौन जानता है? १९०८ ई० में ३१ वर्ष की अल्पायु में ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धांत भवन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोड़ीचन्द्र ने भवन का कार्य संभाला और उन्होंने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तों की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस में बड़े पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियों और सभाओं का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न संग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होंने बाबू देवकुमार की स्मृति में प्रशस्तियाँ लिखीं एवं भवन की सुरक्षा एवं समृद्धि की प्रेरणाएँ दीं।

सन् १६१६ में स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मंत्री निर्वाचित हुए। मंत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापों में गति भर दी। १६२४ मई में जैन सिद्धांत भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष में भव्य एवं विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १६२६ में श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थागार को नये भवन में प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होंने अपने कार्यकाल में ग्रन्थागार में प्रचुर मात्रा में हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रंथों का संग्रह किया।

जैन सिद्धांत भवन आरा में प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थों को बाहर के ग्रन्थागारो से मंगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने संग्रह में रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थों की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने संग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थों में प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एवं इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १६४६ में बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मंत्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १६५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मंत्री पद का भार दिया गया, जिसे वे अभी तक पूरी लगन एवं जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापों में कई नये अध्याय जुड़ गये हैं, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों उभर-कर सामने आये हैं।

जैन सिद्धांत भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धांत भास्कर एवं जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १६१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषयिक, हिन्दी-अंग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका में जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओं के लेख प्रकाशित होते हैं। शोध-पत्रिका अपनी उच्चकोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर में सुविख्यात है। इसके अंक जून अर दिसम्बर में प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धांत भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान है। इसमें प्राकृत एवं जैनविद्या की विभिन्न विधाओं पर शोधार्थी शोधकार्य करते हैं। संस्थान में शोध सामग्री प्रचुर मात्रा में भरी पड़ी है। संस्थान सन् १९७२ से मगध विश्व विद्यालय, बोधगया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में इसके मानद् निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत-संस्कृत विभाग, हरप्रसाद दास जैन कालेज, (मगध विश्व विद्यालय) आरा हैं। इस समय संस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी० एच० डी० की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

इस संस्था द्वारा अब तक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस समय छह भागों में भवन के हस्तलिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली तथा सचित्र जैन रामायण (रामयशोरसायनरास-मुनि केशराजकृत) का प्रकाशन कार्य चल रहा है।

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का पहला भाग पाठकों के हाथ में है। इसमें जैन सिद्धांत भवन, आरा में संरक्षित ९९७ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी के हस्त-लिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची है। वास्तव में यह संख्या एक हजार से अधिक है। यह सूची दो खण्डों में विभक्त है तथा दोनों खण्डों की पृष्ठ संख्या भी पृथक्-पृथक् है। प्रथम खण्ड में पाण्डुलिपियों का विवरण तथा दूसरे खण्ड में प्रत्येक ग्रन्थ का प्रारंभिक अंश, अन्तिम अंश एवं प्रशस्तियाँ दी गई हैं। सूची में ग्रन्थो का वैज्ञानिक ढंग से विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह विवरण निम्न ग्यारह शीर्षकों में है:—(१) क्रम-संख्या (२) ग्रन्थ संख्या (३) ग्रन्थ का नाम (४) लेखक का नाम (५) टीकाकार का नाम (६) कागज या ताडपत्र (७) लिपि और भाषा (८) आकार सेमी० में, पत्रसंख्या, प्रत्येक पत्र की पंक्ति संख्या एवं प्रत्येक पंक्ति की अक्षर संख्या (९) पूर्ण-अपूर्ण (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई है। यह सभी विवरण रोमन लिपि में दिया गया है।

१.	पुराण, चरित, कथा	१ से १५५.
२	धर्म दर्शन, आचार	१५६ से ४५३.
३.	न्यायशास्त्र	४५४ से ४८०.
४.	व्याकरण	४८१ से ४९२.
५.	कोष	४९३ से ५०१.
६.	रस, छन्द, अलंकार और काव्य	५०२ से ५३१
७	ज्योतिष	५३२ से ५५९

८.	मन्त्र, कर्मकाण्ड	५५० से ५८८.
९.	आयुर्वेद	५८९ से ६००.
१०.	स्तोत्र	६०१ से ८००.
११.	पूजा-पाठ-विधान	८ १. से ९९७.

अन्तिम शीर्षक के अन्त में आठ ग्रन्थ ऐसे हैं, जिन्हें विविध-विषय के रूप में रखा गया है। यह विषय विभाजन सामान्य कोटि का है, क्योंकि सभी ग्रन्थों का विषय निर्धारित करने हेतु उसका आद्योपान्त सूक्ष्म परीक्षण आवश्यक है।

ग्रन्थावली का दूसरा खण्ड 'परिशिष्ट' नाम से अभिहित है। इसका यह खण्ड बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रशस्तियों में अनेक महत्वपूर्ण तथ्य लिपिबद्ध हैं। अनेक काफी प्राचीन पाण्डुलिपियाँ भी हैं,जिनका समय प्रथम खण्ड में दिया गया है। प्रशस्तियों के अध्ययन से विभिन्न संघों, गांवों, गच्छों तथा भट्टारकों के सन्दर्भ सामने आये हैं। यह ग्रन्थ कुछ लोग अपने स्वाध्याय के लिए लिखवाते थे तथा कुछ लोग शास्त्रदान के लिए। ग्रन्थ श्रावकों, साधुओं तथा भट्टारकों द्वारा लिखवाये गये हैं। पाण्डुलिपियों का लेखन भारत के विभिन्न देशों (वर्तमान राज्यों में) हुआ है। जैन सिद्धान्त भवन, आरा में भी पर्याप्त लेखन कार्य हुआ है। जो पाण्डुलिपियाँ अन्य संग्रहों से स्थानान्तरित नहीं की जा सकती थीं, उनकी प्रतिलिपियाँ वहीं से कराकर मंगाई गई है। अधिकांश पाण्डुलिपियों में पूरे ग्रन्थ की श्लोक संख्या या गाथा संख्या भी दी हुई है, जिससे पूरे ग्रन्थ का परिमाण भी निश्चित हो जाता है। इस ग्रन्थावली का यह खण्ड एक ऐसा दस्तावेज है, जिससे अनेक नवीन सूचनाएँ दृष्टिगोचर हुई हैं।

क्र० १०३/१ में उल्लिखित 'राम-यशोरसायनरास' सचित्र ग्रन्थ है। इसके कर्ता श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के केशराज मुनि हैं। कर्ता ने रचना में स्वयं के लिए ऋषि, ऋषिराज, ऋषिराय, मुनि, मुनीन्द्र, पंडितराज आदि विशेषण प्रयुक्त किये हैं। ग्रन्थकी कुल पत्रसंख्या २२४ है, जिसमे से वर्तमान में १३१ पत्र उपलब्ध है। इन पत्रों में २१३ रंगीन चित्र हैं। चित्र राजपूत शैली के हैं। यह रचना राजस्थानी हिन्दी में है तथा आचार्य हेमचन्द्र रचित 'त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित' की रामकथा पर आधारित है। इसका प्रकाशन देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान से किया जा रहा है। क्र० २२३ द्रव्यसंग्रह टीका (अवचूरि) है, जो अद्यावधि अप्रकाशित है। टीका संक्षिप्त एवं सरल संस्कृत भाषा में है। किन्तु पाण्डुलिपि में टीकाकार के नाम, समयादि का उल्लेख नहीं है।

परिशिष्ट तैयार करने में 'यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया' का अक्षरशः पालन किया गया है। अनुसन्धित्सुओं की सुविधा के लिए विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थों की सूचियों के साथ सन्दर्भ दिये गये हैं, जिनमें राजस्थान के शास्त्र भंडारों की सूची भाग–१ से ५, जिनरत्नकोष, आमेर सूची, दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली, कैटलॉग आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स्, कैटलॉग आफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्ट्स् प्रमुख हैं।

'इन्ट्रोडक्शन' में डॉ० गोकुलचन्द्र जी जैन, अध्यक्ष प्राकृत एवं जैनागम विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली के पूरे परिचय के साथ उसका महत्व भी स्पष्ट किया है। तथा अनेक मौकों पर उनका मार्गदर्शन भी मिलता रहा है, जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। संस्थान के निदेशक के रूप में डॉ० राजाराम जैन के मार्गदर्शन के लिए उनका भी आभारी हूँ। श्री बाबू सुबोधकुमार जी जैन तथा श्री अजयकुमार जी जैन का तो निरन्तर ही मार्गदर्शन तथा निर्देशन रहा है। यही दोनो व्यक्ति प्रेरणा स्रोत भी रहे, अतः उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। अपने ग्रन्थागार सहयोगी श्री जिनेशकुमार जैन तथा प्रेस सहयोगी श्री मुकेशकुमार वर्मा का भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय-असमय कार्य पूरा करने में निरन्तर मदद की। इनके अतिरिक्त जिन अन्य व्यक्तियों से परोक्ष-अपरोक्ष रूप में सहयोग मिला है, उन सबका हृदय से आभार मानते हुए आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमें उनका सहयोग मिलता रहेगा।

—ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान
आरा (बिहार)

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY.

JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

S. No.	Library accession or Collection No. If any	Title of work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
1	Kha/38/1	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
2	Jha/4	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
3	Kha/14	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
4	Kha/5	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
5	Ga/105	Ādipurāṇa	—	—
6	Jha/138/1	Ādipurāṇa Tippaṇa	—	—
7	Jha/138/2	Ādinātha purāṇa	Hastimalla ?	—
8	Ga/44	Ādipurāṇa Vacanikā	—	—
9	Kha/69	Ādinātha Purāṇa	Sakalakrīti	—
10	Kha/282	Ārādhnā-Kathā Kośa	Brahma-Nemidatta	—
11	Kha/155	Ārādhanā-Kathā Kośa	Brahmanemidatta	—

Mat. or Subj.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per Page & No. of letters Per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	31.4×16.2 258.15.52	C	Old 1904 V. S.	Published.
P.	D;Skt. Poetry	30.7×15.6 367.10.52	C	Old 1851 V. S.	Copied Uderāma. Published.
P.	D;Skt. Poetry	35.5×15.4 305.15.53	C	Good 1773 V. S.	Published,
P.	D;Skt. Poetry	37×16 305.13.56	C	Old 1735 V. S.	12000 Slokas. Published.
P.	D;H. Poetry	43.8×16.9 688.11.52	C	Good 1889 V. S.	Copied by Jugarāja.
P.	D;Skt, Prose	34.4×21.3 123.15.45	C	Good	
P.	D;Skt. Poetry	22.1×17.5 95.10.18	C	Good 1943 A. D.	Copied by Lokanātha Sastri, Unpublished.
P.	D; H. Prose	35.8×17.9 544.14.48	C	Good 1961 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	29.8×19.2 177.12.53	C	Good 1797 V. S.	Published. 5500 Slokas. Copied by Gulajārilāla.
P.	D;Skt. Poetry	32.5×16.5 196.14.48	C	Old 1848 V. S.	Published.
P.	D;Skt. Poetry	28.8×11.6 244.10.47	C	Good 1807 V. S.	Published.

1	2	3	4	5
12	Ga/21/2	ĀrādhanāSāra		—
13	Kha/147/2	Bhadrabāhu-Caritra	Ācārya Ratnanandi	—
14	Kha/115	Bhadrabāhu-Caritra	Ācārya Ratnanandi	—
15	Jha/98	Bhagavatpurāṇa	Kesavasena	—
16	Ga/68	Bhaktāmara Kathā	Vinodilāla	—
17	Ga/7	Bhak mara Kathā	Vinodīlāla	—
18	Ga/132	Bhaktāmara Kathā	Vinodīlāla	—
19	Kha/195	Candraprabha Caritra	Vīranandin	—
20	Ga/170	CandraPrabha Purāṇa	Pt. Th thīrāma ?	—
21	Nga/2/49	Caturvinsati Jina Bhavāvali		—
22	Ga/129	Cārudatta-Caritra	Bhārāmala	—
23	Ga/85/3	Cetana-Caritra	Bhagavati Dāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;H. Poetry	37.1×23.1 46.18.66	C	Good	Published by Manikachandra Series.
P.	D;Skt. Poetry	29.2×12.5 28.9.50	C	Old	Published.
P	D;Skt. Poetry	22.2×14.4 57.8.24	C	Good	Published. copied by Nilakanthā Dāsa.
P.	D;Skt. poetry	35.3×16.5 98.11.54	C	Good 1698 V. S.	Coped by Uddhava Josi, Unpublished.
P.	D;H. Poetry	33.4×21.2 138.17.37	C	Good 1939 V. S.	
P.	D;H. Poetry	30.6×19.2 214.12.35	C	Good 1954 V. S.	Baladevadatta Pandita seems to be copier.
P.	D;H. Poetry	33.4×15.4 183 12.40	C	Good 1954 V. S.	Slokas No, 5400, Copied, by Cunimāli
P.	D;Skt. Poetry	34.1×21.5 306.20.26	C	Good. 1761 Saka Samvata	Written on register size paper. Copied by Pandita cārukirti. Published.
P.	D;H. Poetry	32.4×17.4 180.13.38	C	Good 1978 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	19.4×15.5 3.13.14	C	Good	Unpublished
P.	D;H. Poetry	35.2×16.1 69.10.37	C	Good 1969 V. S.	Copied by Guljari Lala.
P.	D;H. Poetry	25.8×17.9 15.15.35	C	Good 1958 V. S.	

1	2	3	4	5
24	Ga/167	Cetána-Caritra Nāṭaka		—
25	Ga/33	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
26	Ga/85/1	Daśrana-Kathā	Bhārāmalla	—
27	Kha/176/4	Daśalākṣ aṇí-Kathā	Śrutasāgara	—
28	Nga/6/11	Daśa-lākṣaṇí Kathā	Bhairondāsa	—
29	Ga/41/2	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
30	Kha/12	Dhrma-Śarmābhyobaya	Mahākavi Haricandra	—
31	Jha/103	Dharma-Śarmábhyudaya Satíka	Mahākavi Haricandra	Yaśa-Kírti
32	Kha/188/5	Dhanya-Kumāra Caritra	Brahamanemidatta	—
33	Ga/9	Dhanyakumāra-Caritra	Brahmanemidatta	—
34.	Ga/38	Dhānya-Kumāra-Caritra		—
35	Nga/2/6	Dudhārasa Dvādasí Kathā	Prabhūdāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.9×15.9 13.11.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	26.9×17.5 34.13.30	C	Good 1961 V. S.	
P.	D; H. Poetry	26.3×17.9 40.12.29	C	Good 1940 V. S.	
.	D;Skt. Poety	24.4×11.3 3.11.44	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 6.17.18	C	Good 1751 V S,	
P.	D; H. Poetry	27.8×18.5 23.14.35	C	Good 1962 V. S.	Copied by Pandit RāmaNāth.
P.	D;Skt. Poetry	29.4×13.7 158.9.45	C	Good 1889 V. S.	Published. Good hand.
P.	D;Skt. Poetry Prose	35.5×16.1 170.12.54	C	Good 1990 V. S.	Copied by Rośanalāla.
P	D;Skt. Poetry	23.1×9.8 27.8.36	Inc.	Old.	Published. Last pages are missing.
P	D; H. Poetry	36.6×21.4 19.17.65	C	Old 1932 V. S.	
P.	D; H. Poetry	26.6×17.3 44.15.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 12.10.21	C	Old 1918 V. S.	

1	2	3	4	5
36	Ga/158	Gajasingh Guṇamālā Caritra	Khemacandra	—
37	Ga/176	Gajasingh Guṇamālā Caritra	Khemacandra	—
38	Kha/160/1	Hanumāna-Caritra	Brahmajita	—
39	Kha/11	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
40	Kha/198	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
41	Jha/64	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
42	Ga/83	Hanumāna Caritra	Ananta-Kirti	—
43	Ga/102	Hanumāna Caritra	Ananta-Kirti	—
44	Jha/83	Harivaṁśa Purāṇa	Raidhū	—
45	Jha/63	Harivaṁśa Purāṇa	Jasakirti	—
46	Jha/87	Harivaṁśa Purāṇa	Brahma Jinadāsa	—
47	Kha/2	Harivaṁśa Purāṇa	Jinasenācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	25 3×11.2 108.13.44	C	Old 1788 V. S.	
P.	D H. Poet'y	33.4×20.8 87.13.43	C	Good 1984 V. S.	
P	D. Sk. Poetry	27.8×12.4 85 14.86	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	31.2×15.4 81.11.45	Inc	Old	Published. 9th'10th & 11th Sargas are missing.
P.	D;Skt. Poetry	29 2×17.9 67 13.48	C	recent 1978 V. S.	It is also called Añjani Caritra
P	D;Skt. Poet.o	33 5×20.7 67.12 40	C	Good	Copied by Bhujawala Prasāda Jaini.
P.	D. H, Poetry	28.9×15.4 54.11.35	C	Good 1901 V. S.	
P.	D H. Poetry	32.2×20.1 43.13.35	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Apb. Poetry	34.3×21.1 10.213.50	Inc	Good 1987 V. S.	Copied by Pt, Śivadayāla Caubay.
P.	D, Apb. Poetry	33.9×21.5 121.12.45	C	Good	Unpublished,
P,	D;Skt, Poetry	33.4×20.7 201.14.42	C	Good 1988	Unpublished. Copied by Pt, Śivadayāla Caubay.
P.	D;Skt. Poetry	35.5×16 435.10.32	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
48	Ga/2	Harivaṁśa Purāṇa Vacanikā	Daulata Rāma	
49	Ga/117	Harivaṁśa-Purāṇa		—
50	Kha/126	Jaṁbūswāmī-Caritra	Brahma Jinadāsa	—
51	Jha/94	Jambūswāmī Caritra	Sakala-Kīrti	—
52	Jha/114	Jambūswāmī Caritra	Rājamalla	—
53	Ga/62	Jambūswāmī-Kathā	Jinadāsa	—
54	Kha/27	Jayakumāra Caritra	Brahma Kamarāja	—
55	Ga/60	Jinadatta-Carita Vacanikā	PannāLāla	—
56	Jha/121	Jinendra Māhātmya Purāṇa	Bhaṭṭārak ndra Bhūṣaṇa	—
57	Kha/166/2	Jinamukhāvalokana Kathā	Sakal ski ti	—
58	Ga/39	Jīvandhara Caritra	Nathamal V l la	—
59	Kha/116/1	Kathāvalī		—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose Poetry	33.2×17.3 512.12.54	C	Good 1884 V. S.	21,000 Anustup Chhandas are in the ms.
P.	D; H. Poetry	26.2×11.5 128.12.44	Inc	Old	
P.	D;Skt, Poetry	29.?×18.7 83 12.42	C	Good 1608 V. S.	published, Copied by Gulajārī Lāla Śarmā.
P.	D;Skt, Poetry	27 8×12 5 117.10.32	C	Good 1664 V. S.	Capied by saha Rāmānkena, It is same to Last one.
P	D;Skt Potry	35 1×16,4 69.12.51	C	Good 1992 V. S.	Copied by Raśana Lāla.
P.	D; H, Poetry	31 5×14 3 28.9.37	C	Good 1883 A. D.	Copied by Duragāprasāda Jaini.
P.	D;Skt Poetry	26 9×11.5 86.11 40	C	Old 1842 V. S.	It is also called Jayapurāṇa.
P.	D; H, Prose	32 1×12 1 113.7.38	C	Old 1931 V. S.	
P.	D;Skt, Poetry	45.8×22.1 776.16.60		Good 1992 V. S.	Copied by Raśanalāla Jain Unpub. Slockas No, 76000· Westen two and one book.
P.	D;Skt, Poetry	25.2×11.7 14.12.52	C	Old 1932 V. S.	Copied by Pt. Paramānanda.
P.	D; H, Poetry	27.9×18.2 106,14,45	C	Good 1961	
P.	D;Skt, Poetry	24.8×11.2 103.10.42	Inc	Old 1679 V. S.	Copied by Brahmbeṇī Dāsa.

1	2	3	4	5
60	Ga/110/4	Kudeva Caritra		—
61/1	Jha/85	Madanaparājaya	Jinadeva	—
61/2	Jha/132	Mahipāla Caritra	Caritra-Bhūṣaṇa Muni	—
62	Ga/171	Mahipāla Caritra	Nathamala	—
63	Kha/183	Maithalī Kalyāṇa Nāṭaka	Hastimalla Kavi	—
64	Kha/264	Megheśvara Caritra	Mahā Kavi Raidhū	—
65	Kha/62/3	Nandīśvara Vrata-Kathā	Śubhacandrācārya	—
66	Ga/85/2 (Kha)	Nemi Candrikā		—
67	Ga/85/2 (Ka)	Nemiārtha Candrikā	Munnālāla	—
68	Ga/165	Neminatha Caritra	Vikrama Kavi	—
69	Jha/111	Nemipurāṇa	Brahma Nemidatta	—
70	Jha/66	Nemi-Purāṇa	Brahma Nemidatta	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H; Prose	21.3×15.6 36.11.26	C	Good	Durgāprasada seems to b copier.
P.	D;Skt. Prose	35.3×16.3 35.10.52	C	Good 1987 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	35.5×16.6 24.13.46	C	Good 1993 V. S.	Unpub. Slokas No. 995. copieda by Rośanalāla Ja n
P.	D; H. Prose	26.7×16.8 56.15.30	C	Good 1918 V. S.	
P.	D;Skt. Prose Poētry	28.3×17.7 46.27.26	C	Good 1972 V. S.	Published.
P.	D;Abb. Poetry	35.5×17.4 93.12.52	C	Cood 1976 V. S.	It is also called—Ādipurā ia 4000 Gāthas. Copied by Rajadhara Lal Jain.
P.	D;Skt. Prose	29.8×14.6 6.10.47	Inc.	Old	It is also called Nandiśvarā-ṭāhnikā kathā. or Siddhaca-rakathā. Unpublished. O 1 page No.-14 to 19th availa...
P.	D; H. Poetry	26.5×17.6 10.13.38	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; H. Poetry	15.5×16.1 39.12.20	C	Old 1895 V. S.	
P.	D;Skt/H Poetry Prose	27.6×18.2 37.13.33	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	35.1×16.1 104.13.50	C	Good 1990 V. S.	Copied by Rośanalāla in Arrah.
P.	D;Skt. Poetry	22.8×1.38 133.15.33	C	Old	First page is m'ss'ng. Last Page is Damaged.

1	2	3	4	5
71	Kha/ 111	Nemi-Purāṇa	Brahma Nemidatta	—
72	Ga/ 4	Nemi-Pur āṇa		—
73	Nga/ 1/7/1	Nemināthа Ristā	Hemarāja	—
74	Kha/ 146/2	Nemınirvāna-Kāvya	Vagbhaṭṭa	—
75	Jha/ 130	Neminirvāna K vāya Panjikā	Bhaṭṭāraka Jnana-bhūṣana	—
76	Ga/ 41/1	Nıṣı Bhojana Kathā	Bhārāmalla	—
77	Ga, 39/3	Nıṣi Bhojana Kathā	Bhārāmalla	—
78	Kha/ 179/3	Nirdoṣa Saptamí Kathā		—
79	Kha/ 266	Padma Carita ṭippaṇa	Candramuni	—
80	Kha/ 1	Padma-Pu ā a	Ravisenācārya	—
81	Kha/ 107	Padma-Purāṇa	R visen c ya	—
82	Ga/ 147	Padma-Purāṇa		—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	22.6×14.8 84.13.37	Inc.	Old 1665 V. S.	Published. From page No 2 to 43 are missing in begining and last pages are also missing.
P.	D; H. Prose Poetry	35.5×18.1 145.14.46	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.4×13.8 11.12.11	C	Good	First page is missing.
P.	D; Skt. Poetry	31.3×15 4 45.11.38	C	Old 1727 V. S.	Published.
P	D; Skt. Prose	35 5×17 3 48.15.45	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.6×17.4 20.13.44	C	Good 1962 V. S.	Published.
P	D; H. Poetry	32.6×16.9 13.11.37	C	Good 1955 V. S.	Published. Copied by DurgāLala.
P.	D;Hindi Poetry	25.5×11.7 6.6.33	C	Good	Published.
P.	D;Skt. Prose	35.4×17.5 34.12.55	C	Good 1894 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	40×19 487.13.46	C	Good 1885 V. S.	Published. Copied by Brahanana Gour Tiwary
P.	D;Skt. Poetry	25×11 65.9.44	Inc.	Old	Published. First 17 pages and last pages are missing.
P.	D; H. Prose	32.2×15.8 311.12.47	Inc.	Good 1890 V. S.	First 301 Pages are missing Raghunath Sharma seems to be copier.

1	2	3	4	5
83.	Ga/69	Padma Purāṇa Vacanikā	—	—
84.	Ga/8	Padma-Purāṇa Vacanikā	Daulatarāma	—
85.	Ga/116	Padma-Purāṇa Bhāṣā	Daulata-Rāma	—
86.	Kha/3	Pāṇḍava-Purāṇa	Śubhacandra Bhaṭṭāraka	—
87.	Ga/40	Pāṇḍava-Purāṇa	Bulākīdāsa	—
88.	Jha/129	Pārśva Purāṇa	Raidhū	—
89.	Jha/79	Pārśva Purāṇa	Sakalakīrti	—
90.	Kha/108	Pārśva-Purāṇa	Sakalakīrti	—
91.	Ga/30/2	Pārśva-Purāṇa	Bhūdharadāsa	—
92.	Ga/131	Pārśva-Purāṇa	Bhūdharadāsa	—
93.	Kha/8	Pradyumna-Carita	Somakīrti-Sūri	—
94.	Kha/9	Pradyumna-Carita	Somakīrti Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	34.8×15.8 749.11.43	C	Good 1953 V. S.	Colour panting by commentator on the wooden cover.
P.	D; H. Poetry	32.8×17.2 327.17.51	C	Good 1845 V. S.	....
P	D; H. Poetry	34.3×19.6 1246.12.45	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	32.5×17.6 143 14 58	C	Good 1820 V. S.	Publisheed. copied by Pandit Māyā Rāma.
P.	D; H. Poetry	26.7×17.7 [illegible]5.13.37	Inc	Good	Last pages are missing.
P,	D; Apb Poetry	35.5×16.7 38.13.52	C	Good 1993 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	32.8×17 8 96.11,83	C	Good	
P.	D;Skt. poetry	24.3×15.2 179.10.32	C	Old 1891 V. S.	Published.
P.	D, H. Poe.ry	33.5×16.1 55.14.53	C	Good 1856 V. S.	Copied by Rāmasukhadāsa.
P.	D; H. Poetry	33.1×20.3 80.12.45	C	Good 1953 V. S.	Copied by cunnimātī.
P.	D;Skt. Poetry	28.5×13.6 241.9.45	C	Good 1943 V. S.	Published. Natwarlāla Sharmā. copied it.
P.	D;Skt. Poetry	27.7×14.4 271.10.33	C	Old 1777 V. S.	Published. Capied by Sri Rai Singh.

1	2	3	4	5
95	Kha/167	Pradyumncaaritra	Somakírti Sūri	—
96	Kha/147/1	Pradyumncaaritra	Somakírti Sūri	—
97	Ga/133	Puṇyāśrava Kathā	Daulatarāma	—
98	Jha/11	Puṇyāśrava Kathā	—	—
99	Jha/82	Puṇyāśrava kathā Koṣa	Bhāvasingh	—
100	Ga/90	Puṇyāśrava kathā Koṣa	Bhāvasinha	—
101	Jha/107	Purāṇasāra Saṁgraha	Dāmanandi	—
102	Jha/12	Pūjyapāda Caritra	Padmarāja Kavi	—
103/1	Ga/155	Rāmayaśorasāyana Rāsa	Keṣarāja Ṛṣi	—
103/2	Nga/6/10	Ratnatraya Kathā	—	—
104	Nga/5/6	Ratnatrayavrata Pūjā Kathā	Jinendrasena	—
105	Nga/6/8	Ravivrata Kathā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	24.7×11.3 151.15.40	C	Old 1752 V. S.	Published.
P.	D;Skt. Poetry	30 2×14.1 126.13.46	C	Old 1769 V. S.	Published.
P.	D. H. Prose Poetry	32.5×19.6 178.14.34	C	Good 1874 V. S.	
P.	D H. Prose/ Poetry	27.2×14.6 50.13.36	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. poetry	31.1×12 5 347.10.43	C	Good	
P.	D; H, Poetry	35.6×21.3 167.16.47	C	Good 1962 V. S.	Copied by Pandita Sita Ram Sastri.
P.	D;Skt. Poetry	34.9×16.3 55.13.50	C	Good 1990 V. S.	Copied by Rośanalal. Jain It, also called caturviṁśatipurāna.
P.	D; K. Poetry	33.5×17.2 105.10.44	C	Good 1932	
P.	D; H, Poetry	25.5×11,00 224.15.44	Inc	Good	Ninty three pages are missing
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 4.17.20	C	Good	
P.	D;Skt.H Poetry	21.2×16.9 15.17.20	C	Good	
	D; H. Poetry	22.8+18.1 2.17.19	C	Good	

1	2	3	4	5
106	Nga/1/6/2	Ravivrata Kathā	Bhānukrīti	—
107	Jha/109	Rājāvali Kathā	Devacandra	—
108	Ga/168	Rāmapamāropama Purāṇa		—
109	Kha/257	Rāma Purāṇa	Somasena	—
110	Jha/35/7	Roh'ṇī Kathā	Hemarāja	—
111	Kha/185/2	Roṭatījavrata Kathā	Jainendra Kishora	—
112	Ga/72	Roṭatījavrata Kathā	Jainendra Kishora	—
113	Jha/104	Ṛṣabha Purāṇa	Sakalakīrti	—
114	Ga/98/1	Samyaktva Kaumudī	Jodharāja Godīkā	—
115	Ga/98/2	Samyaktva Kaumudī	,,	—
116	Ga/130	Samyaktva Kaumudī	,,	—
117	Ga8/39/	Samyaktava Kaumudī	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.2×13.8 3.16.18	C	Good	
P.	D;K. Prose	34.6×16.5 298.10.50	C	Good	
P	D;H. Poetry	26.2×14.2 40.11.34	C	Good	
P	D;Skt. Poetry	32.7×17.9 246.11.48	C	Good 1986 V. S.	It is also called padma-purāṇa.
P.	D;H. poetry	16.1×16.1 9.13.19	C	Good	
P	D;H. Poetry	23 0×14 0 17 6.38	C	Good 1950 V. S.	
P.	D;H. Poetry	23.2×14 1 10 6 21	C	Good	
P.	D,Skt. Poetry	30 5×14.3 167.13.43	C	Old	It is also called Ṛṣabha-deva caritra. unPublished
P.	D;H. Poetry	28.3×13.9 69.11.32	C	Good.	
P.	D;H. Poetry	28.1×16.3 93.10.33	C	Good 1913 V. S.	Slokas 1700.
P.	D;Skt. Poetry	30 1×14.8 32.13.24	Inc	Good	
P	D;H. Poetry	38.2×20.8 35.14.43	C	Good 1970 V. S.	Copied by Bhelirāma.

1	2	3	4	5
118	Ga/136/1	Samyaktva-Kaumudí	Jodharāja Godíkā	—
119	Nga/5/3	Saṅkaṭa caturthí Kathā	Devendrabhūṣaṇa	—
120	Nga/1/2/4	Saṅkaṭa catuthí Kathā	Devendrabhūṣaṇa	—
121	Ga/161	Saptavyasana caritra	Bhārāmalla	—
122	Jha/95/1	Saptavyasana Kathā	Somakírti	—
123	Jha/95/2	Saptavyasana Kathā	Somakírti	—
124	Jha/96	Śayyādāna Vaṅka Cūlí Kathā		—
125	Kha/66	Śāntināthā Purāṇa	Sakalakírti	—
126	Ga/45	Śāntināthā Purāṇa	Sevārāma	—
127	Ga/43	Śāntināthā Purāṇa	Sevārāma	—
128	Ga/41/3	Śílakathā	Bhārāmalla	—
129	Ga/101/2	Śílakathā	"	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	29.8×18.8 46.16.34	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.1×17.3 4.11.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 5.10.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.2×18.5 95.13.45	C	Good 1977 V. S.	
P.	D;Skt. Po·ty	29.8×13 5 163.10 20	C	Good 1829 V. S.	
P	D, H. Po-try	38.3×25.5 163.26 20	C	Good 1626 V: S.	
P.	D; Skt Poetry	20.2.×11.3 5.18.61	C	Good	5672 Ślokas; Published. Copied by Guljāri Lāla Sharmā
P.	D;Skt. Poetry	30.0×19.0 172.12.47	C	Old 1621 V. S.	
P	D; H. Poetry	32.5×18.6 189.17.36	C	Old	Damaged.
P	D; H. Poetry	31.6×16.5 247.12.42	C	Good. 1943 V. S.	
P.	D; H. Poetry	27.6×16.7 24.14.36	Inc	Good	24, 25 and Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	33.1×18.5 27.12.41	C	Old	

1	2	3	4	5
130	Ga/99/2	Śīlakathā	Bhārāmalla	—
131	Ga/101/1	Śīlakathā	,,	—
132	Ga/138/2	Śīlakathā	,,	—
133	Ga/91	Śreṇikacaritra	Śubhacandra	—
134	Jha/125	Śreṇikacaritra	Śubhacandra	—
135	Jha/128	Śreṇikacaritra	Jayamitra	—
136	Kha/96	Śreṇikacaritra	Jayamitra	—
137	Ga/82	Śreṇikapurāṇa	Vijayakīrti	—
138	Ga/150	Srīpālacaritra	—	—
139	Kha/88	Śrīpālacaritra	Brahmanemidatta D/o Bhaṭṭāraka Mallibhūṣaṇa.	—
140	Ga/16/1	Śrīpālacaritra	—	—
141	Ga/16	Śrīpālacaritra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	33.1×16.8 31.11.33	C	Good 1905 V. S.	
P.	D; H. Poetry	33.1×14.1 3?.10.36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.2×16.1 49.10.24	C	Old	
P.	D; H. Poetry	35.3×20.3 93.16.57	C	Good 1962 V. S.	Copied by Pt. Sitārāma.
P.	D; Skt. Poetry	35.1×16.3 64.13.48	C	Good 1993 V. S.	
P.	D;Apb, Poetry	35.6×16.5 35.13.51	C	Good 1993 V. S.	This another title of Vardhamānakāvya unpublished. Copied by Rośanalāla Jain.
P.	D;Apb. Poetry	25.8×11.5 75.13.37	C	Old	Unpublished.
P.	D; H. Poetry	28.8×16.7 116.11.32	C	Good 1929 V. S	
P.	D; H. Poetry	30.5×14.3 175.9.28	C	Good 1895 V. S.	Hariprasad seems to be copier. Author's name is not mantioned.
P.	D;Skt. Poetry	35.2×15.3 51.11.57	C	Old 1837 V. S.	Unpublished.
P.	D; H. Poetry	30.1×14.8 154.10.35	Inc.	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	34.5×16.7 112.12.42	C	Old 1891 V. S.	First and Third pages are missing.

1	2	3	4	5
142	Kha/252	Śrīpurāṇa	Hastimalla	—
143	Kha/150/1	Śruta-Pañcamī-Vrata Kathā [Bhaviṣyadatta Caritra]	Padmasundara	—
144/1	Kha/127/1	Sudarśana Caritra	Sakalakīrti	—
144/2	Kha/73/2	Sudarśana Seṭha Kathā		—
145	Nga/1/2/5	Sugandhadaśamī Kathā	Jnānasāgara	—
146	Jha/87	Sukośala Caritra	Raidhū	—
147	Kha/6	Uttara Purāṇa	Guṇabhadrācārya	—
148	Ga/11	Uttara Purāṇa		—
149	Kha/157/1	Vardhamāṇa Caritra	Sakalakīrti	—
150	Ga/46	Vardhamāna Purāṇa	Khuśācanda	—
151	Ga/57	Viṣṇu kumāra Kathā	Vinodī Lāla	—
152	Kha/77	Vratakathā Kośa	Śrutasāgara	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	33.5×20.7 38.13.39	C	Good	Unpublished.
P.	D;Skt, Poetry	31.3×12.4 42.11.56	C	Old 1800 V. S.	Last page is damaged.
P.	D;Skt. Poetry	27.3×18.1 42.12.40	C	Old 1737 Saka-Samvita	900 Ślokas. published,.
P.	D;Skt. Poetry	22.5×16.5 4.3.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 6.10.18	C	Good	
P.	D;Apb. Poetry	33.7×19.5 17 16.49	C	Good 1987 V. S.	Unpublish.d.
P.	D,Skt. Poetry	32.5×14.6 309.12.46	C	Good 1800 V. S.	Published. contains 20,000 ślokas.
P.	D; H. Poetry	32.6×16.5 262.12.46	C	Good	First page is missing.
P.	D;Skt. Poetry	26.5×12,8 122.10.42	C	Old 1886 V. S.	Published. It is also called varddhamānapurāṇa.
P.	D; H. Poetry	33.3×17.1 92.12.45	C	Good 1884 V. S. Śaka 1749	
P.	D; H. Poetry	28.3×14.7 27.7.25	C	Good 1947 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	29.5×13.5 71.14.47	C	Good 1937 V. S	

1	2	3	4	5
153	Kha/92	Yaśodhara caritra	Vāsavasena	—
154	Jha/93	Yaśodhara caritra	"	—
155	Kha/82	Yaśodhara caritra	Vādirājasūri	—
156	Kha/133	Adhyātma kalpa druma	Muni Sundarasūri	—
157	Ga/86	Adhyātma Bārakhari	—	—
158	Ga/163	Anyamatasāra	Vericandra	—
159	Jha/6	Arthaprakāśikā Tīkā	—	—
160	Ga/49/1	Aṣṭapāhuda Vacanikā	Kundakanda	Jayacanda
161	Ga/49/1	" "	"	"
162	Kha/101	Ācārasāra	Viranandi	—
163	Nga/2/23	Ālāpapaddhati	Devasena	—
164	Kha/173/4	Ālāpapaddhati	"	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt. Poetry	27.4×12.5 44.9.14	C	Old 1732 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	26.6×11.3 28.12.48	Inc	Old 1501 V, S.	Page No. 4 and 5 are missing.
P.	D;Skt. Poetry	29.7×15.4 23.10.38	C	Good 2440 Vīra S.	Uppublished.
P.	D;Skt, Poetry	26.3×11.2 24.11.53	C	Old 1800 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	24.1×17.2 42 21.19	C	Old	First two pages are missing.
P.	D; H, Poetry/ Prose	28.3×11.1 67.6.43	C	Old 1936 V. S.	
P.	D; H. Poetry	29.1×20.4 51.14.35	Inc.	Good	It is commentary on Tattvārthasūtra. Last pages are missing.
P.	D; H, Prose	34.8×21.3 194.13.38	C	Good	
P.	D; H. Poetry	35.7×21.3 156.14.44	C	Good 1946 V. S.	Copied by Gan [illegible]āma.
P.	D;Skt, Poetry	20.8×11.2 72.10.38	C	Old 1932 Śaka Sm	
P.	D;Skt. Prose	19.4×15.5 18.13.15	C	Good	Published.
P.	D;Skt, Prose	27.2×17.5 8.13.35	C	Old 1949 V. S.	It is also called Nayacakra.

1	2	3	4	5
165	Nga/2/31	Ārādhanāsāra mūla	Devasena	—
166	Ga/151/1	Ārādhanāsāra	Pannālāla	—
167	Kha/275	Ārādhanāsāra	Ravicandra	—
168	Kha/177/12	Āṣāḍha Bhūti caupāí	Āṣāḍha Bhūti Muni	—
169	Ga/86/2	Ātmabodha-Nāmamālā	—	—
170	Jha/113	Ātmatattva-Parīkṣana	Devarājarājā	—
171	Jha/112	Ātmānusār	—	—
172	Kha/145/2	Ātmānuśāsana	Guṇabhadra D/o Jinasena.	—
173	Kha/105/3	Ātmānuśāsana	Guṇabhadra	—
174	Ga/145/2	Ātmānuśāsana ṭīkā	Guṇabhadra	—
175	Kha/165/7	Āvśyakavidhi Sūtra	—	—
176	Ga/108	Banārasī-Vilāsa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt, Poetry	19.4×15.5 13.13.16	C	Good	Published.
P.	D;Pkt/H. Prose/ Poetry	32.3×12.5 45.7.35	C	Good 1931 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	20.4×17.4 46.12.23	C	Good 1944 A. D.	Contains 247 Slokas. Copied by N. Chandra Rajendra.
P.	D; H. Poetry	24.6×11.1 12.13.36	C	Old 1767 V. S.	
P.	D; H. Poetry	24.1×17.2 32.21.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	35.2×16.5 14.8.32	C	Good	
P.	D;Skt. Poetry	35.2×16 2 2.8.34	C	Good	
P.	D;Skt. poetry	31.8×14.1 33.9.44	C	Old 1940 V. S.	Published.
P.	D,Skt. Poetry	29.5×15.5 20.9.52	C	Good	
P.	D;Skt/H. Prose/ Poetry	28.5×14.7 156.10.36	C	Old 1858 V. S.	
P.	D;Pkt. Poetry	25.8×10.8 7.7.59	C	Old 1642 V. S.	
P.	D; H. Poetry	23.9×15.8 109.19.20	Inc	Old	Opeming and closing pages are missing.

1	2	3	4	5
177	Ga/1	Bhagavat Ārādhanā	Śivācārya (Śivakoṭi)	Sadāsukha dāsa
178	Ga/111/1	Bāīsa Parīṣaha	—	—
179	Kha/215	Bhavyakaṇṭhābharana pañjikā	Arhaddāsa	—
180	Kha/216	Bhavyānanda Śāstra	Pāndeya Bhūpati	—
181	Kha/199	Bhāvasaṁgraha	Śrutamuni	—
182	Kha/124	Bhāvasaṁgraha	Vāmadeva	—
183	Kha/189	Bhāvanāsara Saṁgraha	Cāmuṇda Rāya	—
184	Kha/136/1	Brahmacaryāṣṭaka	Padmanandi	—
185	Ga/6	Brahma-Vilāsa	Bhagawati-Dasa	—
186	Ga/95	"	"	—
187	Ga/110/3	Bramhā Brama-Nirūpaṇa	—	—
188	Ga/169	Buddhi-Prakāśa	Dīpacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt/H. Prose/ Poetry	35.5×18.1 410.13.54	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.7×16 6 08 11.28	C	Old 1749 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	16 9×15.3 23.11.27	C	Good 2451 Vira S.	Copied by Nemirāja.
P.	D; Skt. Poetry	16.3×15.2 12.11.30	C	Good 2451 Vira S.	Copied by Nemirāja and Sketched of Bahubali on frist page.
P.	D;Pkt. Poetry	29.8×19 6 19 9.35	C	Good	It is also called Bhāvatribhaṅgī.
P.	D;Skt. Poetry	28.4×11.5 48.8 40	C	Old 1900 V. S.	Published.
P.	D; Skt Poetry	26.3.×10 6 69 10.57	C	Old 1598 V. S.	It is also called cāritrasāra.
P.	D;Skt. Prose/ Poetry	34.5×20.6 111.15.52	C	Good 1939 V. S.	Copied by Suganachanda.
P	D; H. Poetry	31.8×14.3 129 9.48	C	Good 1755 V S.	
P	D; H. Prose	37.6×19.9 198.12.37	C	Good. 1954 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.7×16.1 16.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	31.8×19.1 99.14.50	C	Good 1978 V. S.	Copied by Pt. Dubay Rūpanārayaṇa.

1	2	3	4	5
189	Ga/172	Buddhi-Vilāsa	Bakhatarāma	—
190	Ga/106/7	Candraśataka	—	—
191	Kha/175/1	Carcā Nāmāvalī	—	—
192	Ga/135/3	Carcāśataka Vacanikā	Dyānatarāya	—
193	Ga/48/1	,, ,,	,,	—
194	Ga/48/2	,, ,,	,,	—
195	Ga/146	Carcā Saṁgraha	—	—
196	Ga/152/1	Carcā Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
197	Ga/13	,, ,,	Durgālāla	—
198	Ga/135	Carcāsāgara Vacanikā	Swarūpa	—
199	Ga/67	Caritrasāra Vacanikā	—	—
200	Ga/121	,, ,,	Cāmuṇḍarāya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3 × 17.5 68.13.46	C	Old 1982 V. S.	
P.	D; H. Poetry	23.9 × 16.8 10.25.26	C	Old	
P.	D; H. Poetry	26.1 × 16.8 49.12.28	C	Old 1942 V. S.	Copied by Pt. Chobey Mathurā Prasāda.
P.	D; H. Prose	31.8 × 16.1 83 10.40	C	Good 1914 V. S.	Copied by Nandarāma.
P.	D; H. Prose Poetry	25.1 × 14.3 41.10.26	Inc.	Old	Last pages are missing.
P.	D; H, Prose Poetry	33.3 × 21.7 91.16.23	C	Good 1929 V. S.	
P.	D; H. Prose/ Poetry	32.8 × 15.8 353.12.35	C	Good 1854 V. S.	Fatecanda sanghai seems to be copier.
P.	D; H. Prose/ Poetry	27.9 × 12.9 80.13.37	C	Old	
P.	D; H, Poetry	27.7 × 16.2 133.10.32	C	Good 1959 V. S.	
P.	D; H. Prose/ Poetry	29.2 × 19.2 242.19.32	C	ood	
P.	D; H. Poetry	27.5 × 19.6 103.14.26	Inc.	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Prose	30.3 × 15.8 212.9.36	"	Good	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
201	Kha/177/1	Caubisa ṭhāṇā	—	—
202	Kha/210 (K)	Caubīsagaṇagāthā	—	—
203	Kha/177/9	Caudasaguṇa Niyam	—	—
204	Ga/80/4	Caudaha Guṇasthāna	—	—
205	Kha/188/1	Causaraṇa Paiṇṇa	—	—
206	Ga/86/3	Cālagana	—	—
207	Kha/171/3	Chahadhālā	Doulatarāma	—
208	Kha/170 4	Chiyālīsa doṣa rahita āhāra Śuddhi	—	—
209	Kha/161/1	Darśanasāra	Devasena	—
210	Ga/32	Darśanasāra Vacanikā	—	—
211	Ga/164	Dasalakṣana Dharma	Sumati Bhadra ?	Sadāsuka-dāsa
212	Kha/214	Dānaśāsana	Vāsupujya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. Poetry	30.4×15.3 18.11.39	C	Old 1725 V. S.	
P.	D;Pkt/H. Prose/ Poetry	26.8×15.8 24.14.30	C	Good 1967 V. S.	Capied by Karam canda Rāmaji.
P.	D; H. Prose	26.6×11.? 1.10.35	C	Good 1810 V. S.	Only on page is available.
P.	D; H Prose	23.2×15.3 57.22.22	C	Old 1890 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	25.2×10.8 11.14.28	C	Old 1682 V. S.	
P.	D; H. Poetry	24.1×17 2 13.18.19	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×17 8 11 12.29	C	Good 1950 V. S.	
P.	D; H. Poetry	27.3×17.6 2.12.27	C	Old	
P.	D;Pkt. Poetry	26.6×13.1 4.10.44	C	Old 1886 V. S.	Published.
P.	D; H. Prose	33.1×15.1 105.11.58	C	Good 1923 V. S.	
P.	D; H. P.ose	22.8×15.1 42.12.30	C	Good 1978 V. S	
P.	D; Skt. Poetry	34.8×14.5 59.10.55	C	Good	

1	2	3	4	5
213	Nga/2/21	Dravyasaṁgraha	Nemicandra	—
214	Kha/173/1	,,	,,	—
215/1	Nga/6/19	,,	,,	—
215/2	Kha/73/1	,,	,,	—
216	Ga/111/5	,,	,,	—
217	Ga/111/3	,,	,,	—
218	Ga/79/2	,,	,,	Dyanāta Rāya
219	Ga/134/7	,,	,,	Bhagavatī Dāsa
220	Jha/50	,,	,,	,,
221	Jha/30	,,	,,	Bhagavatī Dāsa
222	Jha/25/1	,,	,,	Dyānata rāya
223	Kha/165/2	Dravyasaṁgraha saṭika	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt. Poetry	19.4×5.5 6.13.15	C	Good	
P.	D;Pkt, Poetry	27.2×17.6 6.8.42	C	Old 1948 V. S.	Published. copied by Munindra Kirti.
P.	D;Pkt. Poetry	22.8×18.1 6.13.16	C	Old 1273 Sana	
P.	D;Pkt. Poetry	16.7×12.8 12.10.13	C	Good	published.
P.	D; H. Poetry	21.2×15.8 10.15.18	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D;Pkt/H Poetry	21.3×16 7 18.16.15	C	Old	
P.	D;Pkt./H. Prose/ Poetry	25.3×16.2 30.11.27	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; H. Poetry	30.3×16.3 10.14.40	C	Good 1731 V. S.	
P.	P;Pkt./H. Poetry	21.2×16,7 15.15.20	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.2×10.8 33.7.23	C	Good 1731 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.9×15.4 9.23.19	C	Good	
P.	D;Pkt/ Skt. Prose	24.8×11.3 24.10.50		Old 1721 V. S.	Unpublished.

1	2	3	4	5
224	Ga/65	Dravyasaṁgraha Vacanikā	Nemicandra	Jayacanda
225	Kha/125	Dharma Parikṣā	Amitagati D/o Mādhavasena	—
226	Kha/102	,,	Amitagati	—
227	Ga/24	,,	Manoharadása	—
228	Ga/25	,,	,,	—
229	Ga/71	,,	,,	—
230	Jha/65	Dharma Ratnākara	Jayasena	—
231	Kha/157	,,	,,	—
232	Ga/113	Dharm Ratnodhyota	Jagamohandāsa	—
233	Ga/100	,,	,,	—
234	Ga/159	Dharmrasāyana	Padmanandi Muni	Devídāsa
235	Kha/45	,,	,, ,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry Prose	28.1×20.5 39.14.33	C	Good	First page is missing.
P.	D;Skt. Poetry	27.2×13.4 110.9.34	C	Old 1681 V. S.	Published.
P.	D;Skt. Poetry	25.8×11.4 72.11.41	C	Old 1776 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	33.6×14.6 174.8.36	C	Good	Contains 3300 chandās.
P.	D; H. Poetry	30.5×15.1 130.12.28	C	Old	Copied by Dharmadāsa.
P.	D; H, Poetry	23.4×12.6 242.9.20	C	Good 1860 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	33.7×20.8 80.12.43	C	Good 1985 V. S.	Published.
P.	D;Skt, Poetry	26.4×12.5 144.9.46	C	Old 1910 V. S.	Published. From page 69th to 84rth are missing.
P.	D; H. Poetry	28.3×14.3 232.9.21		Good 1945 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	27.5×16.3 164.12.21	C	Good 1948 V. S.	Published, Copied by Nīlakaṇṭhadāsa.
P.	D;Pkt/H. Poetry	33.1×16.5 19.14.42	C	Good	Published.
P.	D;Pkt/H. Poetry	30.6×16.5 18.5.45		Old	

1	2	3	4	5
236	Ga/153	Dharma V.lāsa	Dyānataraya	—
237	Ga/14	,,	,,	—
238	Ga/112/1	,,	,,	—
239	Kha/188/3	Dharmopadeśa Kāvya Tīkā	Lakṣmīvallabha	—
240	Jha/40/1	Dhālagana	—	—
241	Jha/35/6	,,	—	—
242	Kha/19/2	Gommaṭasāra (Jivakāṇda)	Nemicandra D/o Abhayanandı	—
243	Kha/274	Gommaṭasāra-Vṛtti (Jivakāṇda)	Nemicandra	—
244	Ga/128/1	Gommatasāra (Jivakānda)	Toḍaramala	—
245	Ga/128/2	Gommaṭasāra (Karmakānd)	Nemıcanda	—
246	Nga/2/22	,,	,,	—
247	Kha/173/2	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	27.8×13 1 249 11 36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	33.1×19 3 166.14 48	C	Good 1941 V. S.	
P.	D; H. Poetry	21.9×15 5 165.18.17	C	Good	
P.	D;Skt. Prose	24.3×10 6 28.17 71	C	Old	With svopajña vṛtti.
P	D; H. Poetry	15.4×11 9 14.10 20	C	Good	It is collected in a Guṭakā.
P.	D; H Poetry	16 1×16 1 10.14 20	C	Good	
P.	D;Pkt. Poetry	34×16 8 48.14 65	C	Old	Published.
P.	D;Skt./ Pkt. Prose/ poetry	34.5×12 9 218 12.60	C	Good	Published.
P.	D; H. Prose	46.5×22 5 635.16 72	C	Good 1848 V. S.	
P.	D;Pkt. Poetry	32.2×18 9 14.7.35	C	Good	
P.	D;Pkt. Poetry	19.4×15.5 22.13.16	Inc	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	27.2×17.5 9.11.38	Inc	Old	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
248	Jha/3	Gommaṭasāra (Karmakāṇḍa)	Nemicandra	Hemarāja
249	Kha/134/4	,,	,,	,,
250	Kha/192	Gotrapravara nirnaya	—	—
251	Ga/106/5	Guṇasthāna carcā	—	—
252	Ga/174	Guropadeśa Śrāvakācāra	Dalūrāma	—
253	Ga/34	Guru Śiṣya Bodha	—	—
254	Kha/227/1	Hitopadeśa	—	—
255	Jha/90	Indranandisaṅhitā	Indranandi	—
256	Ga/93/4	Iṣṭopadeśa	Pūjyapāda	Dharma-dāsa
257	Ga/151/3	Jala Gālani	Megha kirti	—
258	Jha/97	Jambūdvipa-prajnapti Vyākhyāna	Padmanandi	—
259	Kha/259	Jainācāra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt/H. Prose/ Poetry	31.2×15.7 41.15.48	Inc	Good 1888 V. S.	
P.	D; H. Prose	31.9×16.6 60.12.40	C	Cood 1845 V. S.	
P.	D;Skt. Prose	34.1×21.5 4.21.29	C	Good	Written on register size paper.
P.	D; H. Prose	23.9×16.8 36.25. 26	C	Old 1736 V. S.	
P.	D; H. Poetry	32.4×17.5 183.12.40	C	Good 1982 V. S.	Copied by Pt. Bacculāl Coubay.
P.	D; H. Prose	27.1×16.6 130 8 23	Inc'	Old	129 Page is missing.
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 4.11.56	C	Good 1987 V. S.	Copied by Batuka Prasāda.
P,	D;Pkt. Poetry	35.2×21.6 23.11.52	C	Good 1987	
P	D; H. Prose/ Poetry	27.7×17.1 4 11.32	Inc	Good	
P	D; H. Poetry	26.2×12.2 3.13.29	C	Old	Meghakirti seems to be Auther and copier.
P.	D;Skt. Prose	35.3×16.4 21.11.52	C	Good 1979 V. S.	Copied by Baṭuka Prasad.
P.	D; H. Poetry	21.2×16.8 109.12.32	C	Good	

1	2	3	4	5
260	Kha/225	Jinasamhitā	Eakasandhi Bhaṭṭāraka	—
261	Kha/127/2	Jīvasamāsa	—	—
262	Ga/127	Jñānasūryodaya Nāṭaka	Vādicandra Sūri	Bhāga-canda
263	Ga/52	Jñānasūryodaya Nāṭaka Vacanikā	,,	,,
264	Ga/78	Jñāna Sūryodaya Nāṭaka Vacanikā	,,	,,
265	Ga/87	,, ,,	,,	,,
266	Kha/164	Jñānārṇava	Śubhacandra	—
267	Kha/71	,,	,,	—
268	Ga/58/2	,,	,	—
269	Ga/58/1	,,	Vimalagaṇi	—
270	Kha/163/3-4	Jñānārṇava Tīkā (Tatvatraya Prākaśinī)	—	—
271	Kha/276	Karma Prakṛti	Abhayacandra Siddhānta Cakravartī	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	35.8×21.3 44.13.54	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.4×15.2 2·10.32	Inc	Old	Only last two pages are available
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	27.4×12 8 62.10.38	C	Good 1961 V. S.	Copied by Sitārama Śāstri
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	32.7×21.8 49.15.38	C	Good 1945 V. S.	
P.	P; H. Poetry	21.2×11.3 109 8.29	C	Good 1869 V. S	
P.	D; H, Poetry	43.5×26.8 56.24.34	C	Good 1946 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	27.1×11 4 105.11.38	C	Old 1521 V. S.	Published
P.	D; Skt. Poetry	30.0×16.5 85 14 43	C	Old 1780 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Poetry	32.2×16.3 245.14.42	C	Old 1870 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	29.5×13.4 111.10.40	C	Good 1869 V. S. Sakes 1734	Copied by Shivalala.
P.	D; Skt. Prose	25.4×11.6 10.10.36	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	20.4×17.4 42.12.29	C	Good 1944 A. D.	Copied by N. Chandra Rajendra.

1	2	3	4	5
272	Kha/109	Karmprakṛti grantha	Nemicandrācārya	—
273	Jha/43	Karmavipāka	—	—
274	Jha/58	Kaṣāyajaya Bhāvanā	Kanakakīrti	—
275	Kha/139	Kārtikeyānuprekṣā Saṭika	Swāmi Kārtikeya	Subhacandra
276	Kha/142	,, ,,	,, ,,	,,
276	Kha/85	,, ,,	,, ,,	—
277	Ga/17	Kārtikeyānuprekṣā Vacanikā	Jayacandra	—
278	Kha/163/1	Kriyākalāpa-ṭīkā	Prabhācandra	—
279	Ga/56	Kriyākalāpa Bhāṣā	—	—
280	Jha/7 Kha	Laghu Tattvārtha	—	—
281	Nga/7 Ga/11	,, ,,	—	—
282	Ga/157/9	Loka Varṇana	—	—

1	2	3	4	5
283	Kha/251	Lokavibhāga	—	—
284	Kha/70/1	Maraṇa Kandika	—	Samanlal
285	Ga/23	Mithyātvakhaṇdan	—	—
286	Ga/75	,,	—	—
287	Ga/42	,, Nāṭaka	—	—
288	Ga/5	Mokṣmārga Prakāṣaka	Todaramala	—
289	Ga/142	,,	,,	—
290	Ga/134/6	Mrtyu Mahotsava Vacanikā	—	—
291	Ga/157/4	,,	—	—
292	Kha/254	Mūlācāra	Kundakundācārya ?	—
293	Kha/135/2	Mūlācāra Pradīpa	Sakalakīrti Baṭṭāraka	—
294	Kha/143/1	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt./ Skt Poetry	32.2×20.6 70.13.43	C	Good	Copied by Muni Sarvanandi.
P.	D;Pkt./H. Poetry	23.8×16.3 26.16.17	C	Old 1887 V S	
P.	D; H. Poetry	33.4×13 8 88.8.39	C	Good 1935 V. S	It is writen on thin paper.
P	D; H. Poetry	22 3×13 8 260 20 24	C	Old 1871 V. S	
P.	D; H. Poetry	25.5×16 4 335.14 14	C	Old	Totel No. of chhanda's 1353.
P.	D; H Prose	35.2×20 6 172 15 48	C	Good	
P.	D; H. Prose	34 5×17.8 239.12.36	C	Good	
P.	D; H. Prose	30.9×16 8 9 13 43	C	Good 1944 V S.	Siyārām seems to be copier.
P.	D;Skt./H. Poetry/ Prose	19.9×15 4 27.12 16	C	Old 1918 V. S.	First two pages are missing.
P.	D; Pkt. Poetry	20.7×16.7 108.11 30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.7×21.2 61.19.66	C	Old	published.
P.	D; Skt. Poetry	31.6×14.3 156 12.39	C	Old 1874 V. S.	Published. copied by Dayachandra.

1	2	3	4	5
295	Kh[illegible]	Nav[illegible] Pa[illegible]	[illegible] Bhaṭṭa	—
296	Ga/119	Navacakra Saṭika	Hemarāja	—
297	Kha/201	Nitisāra (Sama[illegible] Bhūṣaṇa)	Indranandi	—
298	Kha/105/1	Nitisāra	”	—
299	Kha/34	Nyāyakumuda candrodaya	Prabhācandra	—
300	Kha/21	Padmanandi Pañcaviṁśatikā	Padmanandi	—
301	Kha/30	”	”	—
302	Kha/160/3	Pañcamithyātva Varṇana	—	—
303	Ga/70	Pañcāstikāya Bhāṣā	—	—
304	Jha/18	”	Kundakunda	Hemarāja.
305	Kha/265	Pañca Saṁgraha	—	—
306	Jha/119	Paramārthopadeśa	Jñānabhūṣaṇa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry Prose	21.1×11.5 25.8.31	C	Recent 1925 V. S.	
P.	D; H. Prose	25.6×13 4 18 9.43	C	Good 1956 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	29.8×19 4 9.7.36	C	Good	Publ sh:d Samaya Bhūṣana is written as title of this work in last line.
P.	D; Skt. Poetry	29 5×15.5 6.9.40	C	Good	Publish:d.
P .	D; Skt Prose	32.2×20 1 333 16.54	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 ×16 5 59.10 60	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	24. ×12.5 198.5.30	C	Old 1839 V. S.	First page rottan.
P.	D;Skt, Poetry	28 0×11 9 14 11.40	C	Good 1803 V. S.	Unpublished.
P.	D; H. Prose	27 1×11.8 225.9.36	Inc	Old	First two and closing pages missing.
P.	D;Pkt/H Poetry/ Prose	24.1×15.1 88.18.17	Inc	Old	Total p ages are damaged.
P.	D; Pkt. Poetry	35.5×17.4 73.12.47	C	Good 1527 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	35.3×16.4 8.13.53	C	Good 1992 V. S.	Unpublished.

1	2	3	4	5
307	Kha/170/3	Paramātma Prakāśa	Yogīndradeva	—
308	Ga/29	Paramātma Prakāśa Vacanikā	Doulata Rāma	—
309	Ga/81	,, ,,	—	—
310	Jha/57	Parasamaya-grantha	—	—
311	Ga/175	Praśnamālā bhāṣā	—	—
312	Kha/227/2	Prabodhasāra	Yaśah kīrtī	Brahma-deva
313	Kha/67	Praśnottaropāsakācāra	Bhaṭṭāraka Sakalakīrti	—
314	Kha/158	,,	,,	—
315	Ga/31	Praśnottara Śrāvakācāra	Bulākīdāsa	—
316	Kha/165/6	Pratikramaṇa Sūtra	—	—
317	Kha/246	Pravacana Parīkṣā	Nemicandra	—
318	Kha/279	Pravacana-Praveśa	Bhaṭṭākalaṅka	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Apb. Poetry	29.4×16.5 30.14.49	C	Old 1829 V. S.	Published.
P.	D; H. Prose	31.5×16.3 224.11.37	C	Good 1861 V. S.	
P.	D; H. Prose	27.9×16.3 47.9.25	C	Good	
P.	D;Skt. Poetry	21.1×16 9 20.12.17	C	Good	
P.	D; H. Prose	32.5×17.6 34.12.38	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 2.11.60	C	Good	Published
P.	D; Skt. Poetry	30,2×19.5 108.12.47	C	Good 1875 V. S.	Published. 3300 Ślokas, copied by Guljārilāla.
P.	D; Skt. poetry	28.3×11.8 155.10.38	Inc	Old	Published. Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	32.1×16.3 77.13.56	C	Good 1821 V. S.	
P.	D;Pkt. Prose/ Poetry	26.7×11.4 4.11.43	C	Old	
P.	D;Skt. Prose/ Poetry	—	—	—	—
P.	D; Skt. Poetry	20.9×11.4 8.8.27	C	Good 1925 A. D.	Copied by Nemi Raja.

1	2	3	4	5
319	Kha/152	Pravacanasāra Vṛtti	Kundakunda	Amṛtaca-ndra Sūri
320	Ga/35	Pravacana-Sāra	,,	Vṛndāvana
321	Kha/285	Prāyaścitta	Akalanka	—
322	Ga/134 Ka/7	Punya Paccisi	Bhagavatidāsa	—
323	Ga/73	Puruṣārtha-Siddhupāya	Amṛtacandra	Todara-mala
324	Ga/54	,, ,,	,,	,,
325	Kha/141/3	Ratnakaraṇḍa-Śrāvakā-cāra Mūla	Samantabhadra	—
326	Ga/89	Ratna-karaṇḍa Śrāvakācāra Vcanikā	,,	—
327	Ga/50	,, ,,	,,	Camparā-ma Sahāya
328	Kha/59	Ratnakaraṇḍa Viṣamapada	Samantabhadrācārya	—
329	Nga/2/36	Ratnamālā	Śivakoti	—
330	Kha/200/1	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	28 2×14.1 116.11.45	C	Old 1705 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	28 8×18.3 171 12.29	C	Good 1966 V. S.	Pu hed.
P.	D; Skt. Poetry	22.2×17.1 19,7.25	C	Good 1976 V. S.	Copied by Pt. Mūlacandra It is also called Śravakācāra, published,
P.	D; H. Poetry	30.3×16.3 4.14 45	C	Good 1733 V. S.	
P.	D; H. Prose	23.6×12.9 181.9.24	C	Good 1927 V. S.	
P.	D; H, Poetry	28 1×16.2 2)0.9.26	C	Good 1947 V. S.	Copied by Haracanda Rāya
P.	D; Skt. Poetry	33.4×15.6 8.10.46	C	Old	Published.
P.	D; H. Prose/ Poetry	34.5×25.3 325 17.42	C	Old 1929 V. S.	
P.	D; H. Prose/ Poetry	33.1×20.2 128.16.45	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	35.5×15.1 15.11.41	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 7.13.16	C	Good	Published. by MD. G. Series, Bombay
P.	D; Skt. Poetry	29.8×19.4 6.8.37	C	Good	Published. by MDG. Series No. 21, Bombay

1	2	3	4	5
331	Kha/43	Rājavārtika	Akalaṅka	—
332	Ga/106/6	Rūpacandra-Śataka	Rūpacandra	—
333	Nga/2/37	Sadbodha-Cand·cdaya	Padmanandı	—
334	Jha/59	,, ,,	,,	—
335	Nga/2/38	Sajjanacitta-Vallabha	Malliṣ·na	—
336	Jha/17	,, ,,	,,	Haragulāla
337	Nga/2/33	Saṁbodha-Pañcāstikā	Gautamaswāmi	—
338	Jha/120	Saṁbodha pañcāsikā Satika	,,	—
339	Kha/151	Samayasāra (Ātmakhyāti Tıka)	Kundakunda	Amṛtaca-ndra Sūri
340	Kha/130	,, ,,	,,	Amṛtacan-drācārya
341	Kha/28	Samayasāra Satika	,,	Amṛtaca-ndra Sūri
342	Ga/106/2	Samayasāra Nāṭaka	—	Banārasi-dāsa

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	29.3×19.8 576.13.45	C	Good	Published by B. J. Delhi.
P.	D; H. Poetry	23.9×16.8 3.25.30	C	Old'	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 7.13.14	C	Good	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.2×17.1 10 7.20	C	Good	Unpublished
P	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 6.13.15	C	Good	Published.
P.	D;Skt./H. Poetry/ Prose	24.5×17.4 25.14.30	C	Good 1953 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	19.4×15.5 6.13.15	C	Good	
P.	D; Pkt. Skt. Poetry/ Prose	35.4×16.3 7.13.52	C	Good 1992 V. S.	Copied by Rośanalāla.
P.	D;Pkt./ Skt. Poetry/ Prose	29.4×13.5 165.10.52	C	Old	Published by Digambar Jain Grantha Bhandar Series, Kāśī.
P.	D; Pkt. Skt. Poetry	27.8×11.8 124.11.56	C	Old 1900 V. S.	Published.
P.	D;Pkt./ Skt. Poetry/ Prose	25.9×11.5 194.9.46	Inc	Old	Published. last pages are missing
P.	D; H. Poetry	23.9×16.8 45.26.29	C	Old 1735 V. S.	

1	2	3	4	5
343	Ga/107	Samayasāra Nāṭaka	Banārasidāsa	—
344	a /80/1	,, ,,	,,	—
345	Ga/115	,, ,,	,,	—
346	Ga/126	,, ,, Sārtha	,,	—
347	Ga/152/5	,, ,,	,,	—
348	Ga/111/4	,, ,,	,,	—
349	Ga/30/1	,, ,,	,,	—
350	Ga/149	,, ,,	,,	—
351	Ga/152/4	,, ,,	,,	—
352	Kha/35	Samyakatva Kaumudi	—	—
353	Ga/59/1	Samādhi-Maraṇa	Bakasa Rāma	—
354	Jha/2	Samādhi-Tantra	Kundakundācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	23.6×15.8 87.23.24	C	Old	
P.	D; H. Poetry	23.2×15.3 75.21.22	C	Old 1890 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.8×13.5 122.14.20	C	Old 1745 V. S.	
P.	D; H. Poetry	27 9×13 6 200.14.36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	26 3×11.1 88.10.35	C	Old	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	20.4×16.5 110.11.27	C	Good 1886 A. D.	Copied by Durga Prasad.
P.	D; H. Poetry	32.5×16.2 54.12.48	C	Old 1862 V. S.	
P.	D; H. Poetry	29 1×13.8 75.11.38	C	Old 1725 V. S.	
P	D; H. Poetry	22.5×12.3 108.10.31	C	Old 1876 V. S.	Copied by Nityānand Brahman. 1st page is missing.
P.	D; Skt. Poetry	29.4×20.2 105.12.33	C	Good	
P.	D; H. Prose	28.5×12.8 15.10.48	C	Good 1862 V. S.	
P.	D;Skt/H. Prose/ Poetry	31.3×15.7 107.13.51	C	Good 1874 V. S.	Copied by Raghunātha Sharma.

1	2	3	4	5
355	Ga/53	Samādhi-tantra Satika	—	—
356	Kha/26	Samādhi- tantra	—	—
5 7	Ga/64/1	Samādhi-tantra Vacanikā	Māṇikacand	—
358	Kha/46/1	Samādhi-Śataka	Pūjyapāda	—
359	Ga/134/2	Sammeda-Śikhara Māhātmya	Lālacanda	—
360	Kha/194	Saptapañcāsadaśtravikā	—	—
361	Kha/106	Satvatribhangi	—	—
362	Jha/135	Satyaśāsana Parīkṣhā	Vidyānandi	—
363	Kha/57	,, ,,	,,	—
364	Kha/161/3	Sāgāradharmāmṛita (Svopajna tika)	Āśādhara	—
365	Nga/2/3	Sāmāyika	—	—
366	Nga/7/11 Kha/	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Skt.H Poetry	32.1×14.4 152.13.3		Old 1788 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	26.3×12.7 26.8.27	C	Old 1848 V. S.	
P.	D; H. Poetry Prose	32.2×12.3 31.7.40	C	Good 1938 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	25.4×10.8 14.4.42	C	Old 1814 V. S.	Published. It is also called samādhi tantra.
P.	D; H. Poetry	32.2×17.5 34.13.43	C	Good 1933 V. S.	Copied by Gulalcand. Slokas No. 1260.
P.	D; Skt, Prose/ Poetry	34.1×21.5 65.21.30	C	Good	Written on register size paper.
P.	D;Pkt. Poetry	34. ×14.4 11.12.48	C	Good	Copied by Rangnātha Bhaṭṭāraka.
P.	D;Skt, Prose	20.8×16.8 78.20.25	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Prose	34.6×14.2 29.12.53	C	Good	Published.
P.	D; Skt Poetry	25.6×12.7 154.12.40	C	Old 1900 V. S.	Published. by M. D. G. Bombay.
P.	D; Pkt. Prose/ Poetry	19.4×15.5 22.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×13.3 1.18.14	C	Good	

1	2	3	4	5
367	Nga/7/9	Sāmāyika	—	—
368	Nga/2/17	,,	—	—
369	Ga/22	,, Vacanıkā	Jayacanda	—
370	Ga/76	,, ,,	,,	—
371	Kha/150/3	Śāsna Prabhāvanā	Vasunandi	—
372	Kha/53	Śāstrasāra Samuccaya	—	,,
373	Kha/110	Sıdhāntāgama Praśastí	—	—
374	Kha/81	Siddhāntasāra	Jinendra ?	—
375	Kha/46/3	,,	Sakalakırti Bhaṭṭarka	—
376	Kha/40/3	Siddhāntasāra Dīpaka	,,	—
377	Kha/280	Siddhiviniścaya Ṭīkā	Ananta-Vırya	—
378	Kha/170/1	Ślokavārttika	Vidyanandi	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt/ H. Poetry Prose	21.1×16.2 5 16.13	C	Old	
P.	D; H. Prose	19.4×15.5 3.12.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.4×14.6 38.12.35	C	Good 1870 V. S.	
P.	D; H Poetry	21 4×11 3 94.6.23	C	Good	
P.	D;Skt. Prose	30.8×12.2 31.11.79	C	Old	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	38.2×20 6 144.14.36	Inc	Old 1968 V. S.	Last pages are missing.
P.	D; Pkt. Poetry	23.2×17 5 11.12.27	C	Good 1912 A. D.	Copied by Tātyā Nemināth Pāngal.
P.	D; Pkt. poetry	29.6×15.3 6.10.35	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.8×17.1 148.13.44	C	Old 1830 V. S.	Unpublished.
P.	D;Skt. Poetry	31. ×20.2 103.13.48	Inc	Old	Opening and closing are missing.
P.	D;Skt. Prose/ Poetry	34.6×21.7 76.14.46	C	Good	It is first prastāwa (chap ter) only.
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	28.3×1g.7 62.14.70	Inc	Good	Published, Last pages are missing.

1	2	3	4	5
379	Nga/2/2	Śrāvaka Pratikramaṇa	—	—
380	Jha/118	Śrāvakācāra	Guṇa-Bhūṣaṇa	—
381	Kha/203	,,	Pūjyapāda	—
382	Ga/28	,,	—	—
383	Ga/63	,,	—	—
384	Kha/160/5	Śrutaskandha	Brahma Hemacandra	—
385	Kha/41	Śrutasāgari Tikā	Śrutasāgara Sūri	—
386	Ga/92/2	Sudṛiṣti Taraṅgiṇi	—	—
387	Ga/92/1	,, ,,	—	—
388	Jha/115	Sukhbodha-Tikā	Yogadeva	—
389	Ga/47	Svaswarūpa Swānubhava Sūcaka (Sacitra)	Dharmadāsa	—
390	Ga/93/1	Svarūpa-Swānubhava Samyaka Jhāna (Sacitra)	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Pkt. Prose Poetry	19.4×15.5 17.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	33.8×16.4 8.13.55	C	Good 1992 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	22.7×17.3 18.8.35	C	Good 1976 V. S.	
P.	D; H. Prose	29.8×13.8 219.10.37	C	Good 1888 V. S.	Copied by Pt. Shivalāl
P.	D; H. Prose Poetry	28.6×11.7 136.11.60	C	Old 1858 V. S.	
P.	D; Pkt, Poetry	27.8×12.3 8.12.44	C	Good	Published, by M.D.G. Bombay
P.	D; Skt. Prose	35.2×20. 173.15.58	C	Old	Tatvārtha Sūtra's commentary.
P.	D; H. Prose	34.2×17.8 522.13.41	C	Good 1961 V. S.	First page is missing. Page No. 301 to 329 are extra.
P.	D; H. Prose/ Poetry	35.6×21.2 94.13.36	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	35.2×16.3 69.12.44	C	Good 1992 V. S.	It is commentary of the Tatvārtha sūtra, (o^ Umāswāmi) First two pages are missing.
P.	D; H. Prose	34.3×21.4 16.13.47	C	Old 1946 V. S.	Unpublished.
P.	D; H. Prose	33.1×18.5 14.12.39	Inc	Old 1946 V. S.	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
391	Jha/60	Svarūpa Sambodhana	Akalanka	—
392	Kha/52	Tatvaratna Pradipa	Dharmakirti	—
393	Nga/2/32	Tattvasāra	Devasena	—
394	Ga/111/2	,, Bhāṣā	—	—
395	Ga/61	,, Vacanikā	Pannā Lāla	—
396	Kha/181	Tattvānuśāsana	—	—
397	Jha/7 (Ka)	Tatvārthasāra	Amṛitacandra Sūri	—
398	Jha/29	,,	,,	—
399	Kha/141/1	,,	,,	—
400	Kha/149	Tatvārtha Sūtra (with Śrutasāgari Tikā)	Umāsvāmi	Śrutasāgara Sūri
401	Kha/186/2	Tatvārtha Sūtra Mūla	,,	—
402	Kha/112/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	21 2×17.1 5.6.20	C	Good	
P.	D;Skt. Prose	38.1×20.3 272.13.41	C	Old 1970 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	19.4×15 5 8.13.14	C	Good	Published.
P.	D; H. Poetry	20.2×16.3 9.9.23	C	Good	
P.	D; H. Prose	32.3×12.3 35.7.38	C	Good 1938 V. S	
P.	D; Skt Poetry	29 7×15 3 15.10.38	C	Good	Copied by Keśava Śharmā.
P.	D; Skt. Poetry	28 3×14 2 47.10.33	C	Good	Published by Sanātana Jaina Granthamālā, Bombay.
P.	D; Skt. Poetry	20.1×13.9 72.8.20	C	Good	Published copied by Balāmokundalāla.
P.	D; Skt. Poetry	33.6×15.3 31.10.43	C	Old 1553 V. S.	Published. 724 Ślokas.
P.	D; Skt. Prose	28.3×13.6 205.16.60	C	Old 1770 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	23.1×13.9 19.8.28	C	Old 1946 V. S.	published. First page is missing.
P.	D; Skt. Prose	19.8×15.5 17.12.23	C	Old	Published copied by Pandit Kisancanda Savāi

1	2	3	4	5
403	Nga/7/2	Tatvārtha Sūtra	Umāsvāmi	—
404	Nga/7/3	,, ,,	,,	—
405	Nga/7/6	,, ,, Vacanikā	—	—
406	Nga/7/4	,, ,,	Umāsvāmi	—
407	Nga/6/3	,, ,,	,,	—
408	Nga/1/2	,, ,, (Mūla)	,,	—
409	Jha/31/6	,, ,, ,,	,,	—
410	Ga/138/1	,, ,,	,,	—
411	Ga/120	,, ,, Tippaṇa	—	—
412	Jha/62	,, Vṛtti	Bhāskara Nandi	—
413	Ga/173	,, Bodha	Budhajana	—
414	Ga/10	,, Sūtra Tīkā	Umāswāmi	Pāṇḍe Jaivanta

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Prose	20 4 × 16.5 15.14.18	Inc	Old	Page No. 1 and 2 are missing.
P.	D; Skt. Prose	21.1 × 16.9 14.15.15	C	Good 1955 V. S.	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	23.1 × 18.5 40.17.15	Inc	Good	
P.	D; Skt. Prose	21.1 × 16.7 14.14.15	C	Old 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	22 8 × 18.1 11 17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17 8 × 13.5 17 10 21	C	Good 1908 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	18.2 × 11.8 18.9.24	C	Good	
P,	D; H. Prose	26.7 × 15.9 92.14.38	C	Good	Last page is missing.
P	D; H. Prose	28.8 × 13.4 122.8.30	C	Good 1910 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	33.8 × 21 8 154.19.30	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.4 × 17 4 93.12.45	C	Good 1982 V. S.	Copied by Pt. Coubey Laxmi Narayaṇa.
P.	D;Skt/H. Prose	27.1 × 14.1 154.13.37	C	Good 1904 V. S.	

1	2	3	4	5
415	Ga/27	Tatvārthasūtra Vacanikā	Daulat Rāma	—
416	Ga/139	Tatvārthsūtra Tikā	Cetana	—
417	Kha/135/1	Tatvārthādhigama-Sūtra	Umāswāmi	—
418	Kha/51	Tatvārtharājavārtika	Akalaṅkadeva	—
419	Ga/157/10	Traikālika dravya	—	—
420	Kha/260	Trailokya Prajnapti	Pt. Medhāvi D/o Jinacandra	,,
421	Kha/261	,, ,,	,,	—
422	Kha/84	Tribhaṅgi	Kanakanandi	—
423	Jha/126	Tribhaṅgisāra Tikā	Nemicandra	Somadeva
424	Kha/19/3	Trilokasāra	Nemicandrācārya D/o Abhayanandi	—
425	Kha/39	,, Sacitra	,,	—
426	Jha/22	,, Bhāṣā	Toḍaramala	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Prose	31.5×13.2 136.7.32	C	Old 1925 V. S.	
P.	D; H. Prose/ Poetry	32.6×17.5 953.15.58	C	Good 1970 V. S.	Copied by Sita Rām Śastri Commentry on Tatvārth Sūtra of Umā-Swāmi.
P.	D; Skt Prose	35.7×21.2 60.15.45	C	Good 1919 V. S.	Published, Copied by Pandit Śivacandra.
P.	D; Skt. Prose	38.5×20.4 290 14.57	Inc	Old 1968 Śaka Saṁvata	Published. Copied by Raṅganath Bhaṭṭ. First 67 Pages are missing.
P.	D;Skt /H Poetry/ Prose	21.1×16.5 1.20.18	Inc	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	35 4×16.4 248.11.58	C	Recent 1988 V. S.	Copied by Sri Batuka Prasād
P.	D; Pkt Poetry	29.6×15.6 33 8.24	Inc	Good	Name of Auther not mentioned in ms.
P.	D; Pkt. Poetry	29.6×15.2 73 9.44	C	Good	It is also called Vistarasatva tribhaṅgi.
P.	D;Pkt. Skt. Poetry Prose	35.1×16.3 66 13.50	C	Good 1994 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	35.5×17.2 57.9.41	C	Old	Published. 1010 Gāthās.
P.	D; Pkt. Poetry	33.6×21 63.23.44	C	Good	
P.	D; H. Prose	23.4×12.6 126 12.41	Inc	Good	First 300 Pages are missing.

1	2	3	4	5
427	Ga/148/2	Trilokasāra	Malla Ji	—
428	Ga/79/1	,,	—	—
429	Ga/99/1	,, Bhāṣā	—	—
430	Kha/235	Trivarṇacāra	Brahma-Sūri	—
431	Kha/83	,,	,,	—
432	Kha/24	,,	Somaṣena Bhaṭṭār-aka D/o Guṇbhadra	—
433	Kha/122	,,	Jinasenacārya	—
434	Kha/144	,,	,,	—
435	Kha/25	,,	,,	—
436	Ga/125	,, Vacanika	Somasenā	—
437	Kha/89	Trivarṇa-Śaucācāra	Padmarāja	—
438	Jha/106	Upadeśa-Ratna-mālā	Sāha Thākura Singh	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Prose	26.2×13.8 67.9.32	C	Good	
P.	D; H. Prose	25.2×15.9 41.11.29	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Prose	32.4×15.2 34.11.47	C	Good 1866 V. S.	Copied by Bhūpatiram Tiwari
P.	D; Skt. Prose	30.5×17.4 56.12.51	C	Good 2451 Vir S.	Copied by Nemiraja.
P.	D; Skt. Poetry	29.0×15.4 84.10.37	C	Good 2440 Vir S.	
P.	D; Skt, Poetry	28 4×13.7 175 9.38	C	Old 1759 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	38.1×20.4 159 13.58	C	Old 1970 V. S.	Published. Copied by Gulazarilala Sharma.
P.	D; Skt, Poetry	35.4×13 8 442.7.43	C	Good 1919 V. S.	Published.
P.	D; Skt Poetry	28.2×13.2 145.16.54	C	Good 1959 V.S.	
P.	D;H./Skt Prose/ Poetry	38.3×20.6 160.16.51	C	Good 1959 V. S.	Total No. ofSlokas ·3100.
P.	D; Skt. Poetry	34.3×14.4 55.11.48	C	Old	
P.	D; Pkt. Prose	31.1×17.2 210.14 42	C	Good 1990 V. S.	It is also called Mahapurana Kalikā. Unpublished.

1	2	3	4	5
427	Ga/148/2	Trilokasāra	Malla Ji	—
428	Ga/79/1	,,	—	—
429	Ga/99/1	,, Bhāṣā	—	—
430	Kha/235	Tiivarṇacāra	Brahma-Sūri	—
431	Kha/83	,,	,,	—
432	Kha/24	,,	Somaṣena Bhaṭṭār-aka D/o Guṇbhadra	—
433	Kha/122	,,	Jinasenacārya	—
434	Kha/144	,,	,,	—
435	Kha/25	,,	,,	—
436	Ga/125	,, Vacanika	Somasenā	—
437	Kha/89	Trivarṇa-Śaucācāra	Padmarāja	—
438	Jha/106	Upadeśa-Ratna-mālā	Sāha Thākura Singh	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Prose	26.2×13.8 67.9.32	C	Good	
P.	D; H. Prose	25.2×15.9 41.11.29	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Prose	32.4×15.2 34.11.47	C	Good 1866 V. S.	Copied by Bhūpatiram Tiwari
P.	D; Skt. Prose	30.5×17.4 56.12.51	C	Good 2451 Vir S.	Copied by Nemiraja.
P.	D; Skt. Poetry	29.0×15.4 84.10.37	C	Good 2440 Vir S.	
P.	D; Skt, Poetry	28 4×13.7 175 9.38	C	Old 1759 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	38 1×20.4 159 13.58	C	Old 1970 V. S.	Published. Copied by Gulazarilala Sharma.
P.	D; Skt, Poetry	35.4×13.8 442.7 43	C	Good 1919 V. S.	Published.
P.	D; Skt Poetry	28.2×13.2 145.16.54	C	Good 1959 V.S.	
P.	D;H./Skt Prose/ Poetry	38.3×20.6 160.16.51	C	Good 1959 V. S.	Total No. ofSlokas ·3100.
P.	D; Skt. Poetry	34.3×14.4 55.11.48	C	Old	
P.	D; Pkt. Prose	31.1×17.2 210.14.42	C	Good 1990 V. S.	It is also called Mahapurāṇa Kalikā. Unpublished.

1	2	3	4	5
439	Kha/129	Upadeśaratnamāla	Sakalabhūṣaṇa D/c Śubhacandra	—
440	Kha/200/2	,,	,,	—
441	Jha/100	Vairāgyasāra Satika	Suprabhācārya	—
442	Ga/26	Vasunandiśravakācāra Vacanikā	Vasunandi	—
443	Ga/118	,, ,,	,,	—
444	Ga/141	,, ,,	,,	—
445	Kha/141/2	Vidagdhamukhamaṇdana	Dharmadāsa	—
446	Jha/88	Viśvatattva-Prakāśa	Bhāvasena Traividyadeva	—
447	Kha/187/1	Vivāda Matakhaṇdana	—	—
448	Kha/187/2	,, ,,	—	—
449	Kha/128	Viveka Bilāsa	Jinadatta	—
450	Kha/88/2	Vṛhada dikṣa Vidhi	Fatelāl Paṇdita	—

6	7	8	9	10	11
P.	; Skt/ Poetry	29.8×12.7 119.12.46	C	Old	Unpublished.
P.	D; Skt. octry	29.6×19.1 121.12.48	C	Good 1970 V. S.	Copied by Gulajārilāla. 3600 Ślokas.
P.	D;Apb. Po.try	24.1×19.5 11.15.33	C	Good 1989 V. S.	
P.	D; H Poetiy	30.3×13.5 400.11.48	C	Good	
P.	D; H. Poetry	30.8×20.2 470.13.37	C	Old 1907 V .S.	
P.	D; H. Poetry	37.1×18.5 192.13.40	Inc	Old	Last fourteen pages are damaged.
P.	D; Skt. Poetry	31.6×15 6 12 15.50	C	Old	Contains 480 Ślokas. Published., A work on Buddism.
P.	D; Skt. Prose	35 3×16.4 90 11.54	Inc	Good 1988 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	20.6×10.9 12.8.24	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	20.6×10.8 11.8.37	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	26 7×12.8 49.11.50	C	Old 1900 V. S.	Published by Saraswati Granthamālā Agra.
P.	D; Skt. Prose	33.2×19.1 60.12.60	C	Good	

1	2	3	4	5
451	Jha/99	Yogasāra	Gurudāsa	—
452	Kha/49	,,	,,	—
453	Jha/123	,, Satīka (Nyāyaśāstra)	Yogīndradeva	—
454	Kha/112/3	Āptamīmāṁsā	Samantabhadra	—
455	Kha/94	,,	,,	—
456	Kha/137	,, Vṛtti	,,	—
457	Kha/150/4	,, Bhāṣya	,,	Akalaṅka deva
458	Kha/36	Āptaparīkṣā	Vidyānandī	—
459	Kha/93	,,	,,	—
460	Jha/34/6	Devāgama Stotra	Samanta Bhadra	—
461	Nga/7/5	,, ,,	,,	—
462	Ga/64/2	,, Vacanikā	Jayacanda	—

(Nyāyaśāstra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	23.8×19.4 6.15.31	C	Good 1989 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	22.5×11.5 20.9.28	C	Old 1950 V. S.	
P.	D;Apb. H. Prose Poetry	35.1×21.6 10.20.45	C	Good 1992 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 10.13.18	C	Good	Published. Written on copy size paper.
P.	D; Skt. Prose	29.4×12.8 93.10.57	Inc	Old 1842 V. S.	Capied by Mahātmā Sitarama First 2oo pages are missing. published.
P.	D; Skt, Prose/ Poetry	38.6×19.2 149.10.48	Inc	Old	Published, Last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	30.2×11 8 34.12.52	C	Old 1605 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	32.4×18.5 67 14.48	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Prose	26.2×14.2 136.9.41	C	Old 1962 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 11.11.32	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×16.9 9.15.16	C	Old	
P.	D; H. Prose/ Poetry	33.1×13.3 68.9.56	C	Good 1898 V. S.	

1	2	3	4	5
463	Ga/114	Devāgamastotra Vacanika	—	—
464	Kha/86	Nyāyadīpikā	Abhinava Dharma-bhūṣaṇa	—
465	Kha/156/3	,,	,,	—
466	Kha/196	Nyāyamaṇi Dīpikā	Baṭṭāraka Ajitasena	—
467	Kha/48	Nyāyaviniścaya Vivaraṇa	—	—
468	Ga/134/1	Parīkṣāmukha Vacanikā	Jayacanda Chavaṛā	—
469	Ga/12	,,	,, ,,	—
470	Kha/193	Pramāṇa Lakṣaṇa	—	—
471	Kha/262	,, Mīmāṁsā	Śrutamunī ?	—
472	Kha/55	,, Prameya	—	—
473	Jha/116	,, ,, Kalikā	Narendrasena	—
474	Kha/7	,, Kamalamārtaṇḍa	Prabhācandrā	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	30.1×14.8 111.9.30	C	Old	
P.	D;Skt. Prose	31.4×13.3 50.8.45	C	Old 1910 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	29.4×13.6 28.11.60	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Prose	32 0×16.0 196.13.38	C	Good 1980 V S.	Copied by Rājakumar Jain.
P.	D; Skt. Poetry	33.5×20.7 450.16.60	C	Old 1832 Śaka Saṁvata	Copied by Raṅganātha Śāstri.
P.	D; H. Prose	32.5×17 6 119.12.44	C	Good 1927 V. S.	
P.	D; H. Poetry/ Prose	32.1×18.5 99.14.40	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	34.1×21.5 34.21.27	C	Good	Written of register size paper.
P.	D; Skt. Prose	35.4×16,3 35.12.72	C	Good 1987 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	29.8×15.6 20.10.41	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	35.1×19.3 10.12.49	C	Good 1991 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	27.8×15.6 440.11.53	C	Old 1896 V. S.	Published

1	2	3	4	5
475	Kha/33	Prameyakamalamārtaṇḍa	Prabhācandra	—
476	Kha/230	Prameyakaṇṭhikā	Śāntivarṇī	—
477	Kha/63	Prameyaratnamālā	Anantavīrya	—
478	Kha/60	,,	,,	—
479	Kha/221	Prameyaratnamālā-Arthaprakāśikā	Paṇḍitācārya Cārūkīrti	—
480	Kha/208	ṣaddarśana-Pramāṇa-Prameyānupraveśa	Śubhacandra	,,
481	Kha/90	Cintāmaṇi Vṛtti	Śākatāyana	Yakṣavarmācārya
482	Kha/58	Dhātupāṭha	—	—
483	Kha/104	Hemacandra Koṣa	Hemacandra	—
484	Kha/121	Jainendra Vyākaraṇa Mahāvṛtti	Devanandi	Abhayanandi
485	Kha/18	,, ,,	Abhayanandi	—
486/1	Jha/22	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	37.0×20.5 249.15.51	C	Good 1896 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	20.8×17.1 38.11.27	C	Good	Published.
P.	D; Skt Prose	25.2×16.1 68.11.38	C	Old 1963 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	30.4×17.2 330 9.40	C	Good	Published. Copied by Lakṣamaṇa Bhaṭṭa.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	21.4×17.1 249.11 22	C	Good	It is commentry on Prameyaratnamālā of Laghu Anantavirya.
P.	D; Skt. Prose	21.1×11.5 24.8.33	C	Good	Page No. 17 & 18 are left blank.
P.	D; Skt. Prose	29.8×15 5 339.11.49	C	Good 1832 Śaka. Samavata	
P,	D; Skt. Prose	34.5×14 2 19.8.49	C	Old	
P	D; Skt. Prose	26.5×10.8 53.17.67	Inc	Old 1910 V. S.	First three pages are missing.
P.	D; Skt. Prose	35.4×18.3 380.13.58	C	Old 1907 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	31.2×13.4 43.8.30	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Prose	29.2×15.4 94.12.48	Inc	Old 1879 V. S.	Published. First 383 pages are missing.

1	2	3	4	5
486/2	Jha/78	Kātantra Vistāra	Vardhamāna	—
487	Jha/19	pañcasandhi Vyākaraṇa	—	—
488	Jha/61	Prākrita Vyākaraṇa	Śrutasāgara	—
489	Kha/228	Rūpasiddhi ,,	Dayāpāla	—
490	Jha/8	Saraswati Prakriyā	—	—
491	Jha/20/2	Siddhānta Candrikā	Rāmacandrāsrama	—
492	Jha/20/1	Taddhita Prakriyā	—	—
493	Jha/24	Dhananjaya Koṣa	Dhanañjaya	—
494	Ga/106/1	Nāmamālā	Devidāsa	—
495	Kha/132	Śāradiyākhya Nāmamālā	Harṣakirti	—
496	Kha/185/1	,, ,,	,,	—
497	Jha/67	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	31.1×17.4 250.12.46	C	Good 1928 A. D.	
P.	D; Skt. H. Prose	24.1×15.2 21.17.37	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	21.1×11.4 152.6.20	Inc	Good	It has only two Chapaters.
P.	D; Skt. Prose	34.1×21.1 143.21.30	C	Good	Written on Register size paper.
P.	D; Skt. Poetry	27.5×12.4 83.9.38	C	Old 1809 V. S.	Copied by Hemarāja. First pages are missing.
P.	D; Pkt. Prose	24.1×10.6 69.13.48	C	Old	Dhanaji seems to be copier.
P.	D; Skt. Prose	24.1×10.6 60.9.31	Inc	Old	First Two pages are missin
P.	D; Skt. Poetry	23.4×15.3 14.20.18	C	Good	It is also called Nāmamālā of Dhananjaya.
P.	D; H. Poetry	24.7×16.3 16.11.29	C	Good 1873 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	30.2×13.8 25.12.37	C	Old 1828 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	24.3×14.2 26.12.40	C	Good 1918 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	32.8×17.6 23.11.37	C	Good 1985 V. S.	

1	2	3	4	5
498	Ga/15	Trepanakriyākośa	Kisana Singh	—
499	Ga/160	,,	,,	—
500	Ga/86/4	Urvaśī Nāmamālā	Śiromaṇi	—
501	Kha/31	Viśwalocanakośa	Pandit Sridharsena	—
502	Kha/20	Alaṅkāra Saṁgraha	Amṛtānanda Yogī	—
503	Kha/212	,, ,,	,, ,,	—
504	Nga/1/3/1	Bārahamāsā	Budhasāgara	—
505	Kha/209	Candronmīlana	—	—
506	Jha/108/1	,, Saṭīka	—	—
507	Jha/108/2	,, ,,	—	—
508	Jha/25/6	Dohāvalī	—	—
509	Ga/106/8	Futakara Kavitta	Trilokacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.8×17.3 77.13.40	C	Old 1960 V. S.	
P.	D; H. Poetry	23.9×17.3 122.18.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	24.5×13.3 27.16.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	28.5×13.0 103.11.40	C	Good 1961 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	34.0×14.4 32.15.48	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×11.6 104.8.21	C	Good 1925 V. S.	
P.	D; H. Poetry	16.9×12.7 4.11.10	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	20.9×11.4 32.8.26	C	Good	
P.	D; Skt/H. Prose/ Poetry	32.5×17.5 73.20.21	C	Good 1990 V.S.	Total No. of Slockas 337.
P.	D;H./Skt Prose/ Poetry	31.1×20.2 56.31.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.9×15.4 4.17.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.9×16.8 1.23.27	C	Old	

1	2	3	4	5
510	Ga/80/7	Fuṭakara Kavitta	Trilokacand	—
511	Kha/162	Nitivākyāmṛta	Somadavā Sūri	—
512	Kha/56	,,	,,	—
513	Kha/200	Ratnamañjūṣā	—	—
514	Kha/22	Rāghava Pāṅdavīyam Saṭīka	Dhañjaya Kavi	Nemicandra
515	Jha/101	Śṛṅgāra Mañjarī	Ajitasenadeva	—
516	Kha/231	Śṛṅgārārṇavacandrikā	Vijayavarṇī	—
517	Kha/219	Śrutabotha	Ajitasena	—
518	Jha/12	,,	Kālidāsa	—
519	Nga/1/2/1	Śrutapañcamirāṣā	-	—
520	Jha/92/1	Subhadrā Nāṭikā	Hastimalla	—
521	Kha/171/5	Subhāṣita Muktāvalī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	23.2×15.3 2 22.22	C	Old 1890 V. S.	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	28.6×13.6 75.8.35	Inc	Old 1910 V. S.	Published. 66 to 74 pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	34.5×14.5 137.8.42	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×16 8 95.15.26	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.0×16.6 253.12.63	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	23.6×19.3 6.15.34	C	Good 1989 V .S.	
P.	D; Skt. Poetry	21.2×16 9 109.11.24	C	Good	Copied by Vijayacandra Jaina.
P.	D; Skt. Poetry	21.1×16.8 6 13.21	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	27.1×10.1 4.8.42	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 6.10.25	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Prose	32.7×17.7 38.12.36	C	Good 2458 VIR S.	Copied by Śaśi.
P.	D; Skt. Poetry	20.5×16.5 25.12.24	C	Good	

1	2	3	4	5
522	Kha/29	Subhāṣita Ratnasaṁdoha	Amitagati	—
523	Kha/99	,, ,,	,,	—
524	Kha/160/2	Subhāṣitāvalī	—	—
525	Kha/187/3	,,	—	—
526	Kha/156/1	Subhāṣitaratnâvalī	Sakalakīrti	—
527	Kha/176/6	Sūkti Muktāvalī	Somaprabha.	—
528	Kha/176/7	,, ,,	,,	—
529	Kha/19/1	,, ,,	,,	—
530	Kha/163/6	,, ,,	,,	—
531	Kha/136/2	Sindūra Prakarṇa (Mūla)	,,	—
532	Ga/157/7	Akṣarakevalī Śakuna	—	—
533	Jha/136	,, Praśnaśāstra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.4×12.8 76.9.47	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	26.4×11.8 83.9.46	Inc	Old 1784 V. S.	First eleven pages are badly rotten. published.
P.	D; Skt. Poetry	27.6×11 7 34.8.41	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	21.3×13.2 30.19.19	Inc	Old	Last pages are missing. Written on coloured paper.
P.	D; Skt. Poetry	28.8×13.2 22.11.47	C	Old 1836 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt, Poetry	26.2×11.3 27.11.44	Inc	Old	First & last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	25.4×10.5 20.10.40	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	33.5×14.8 25 5.35	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Poetry	24.6×12.1 10.9.55	C	Old 1813 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	34.2×20.5 26.6.30	C	Old 1947 V. S.	Copied by Paramananda. Published.
P.	D; Skt. Poetry	17.6×10.1 4.8.22	C	Old	Page No. 2 si missing.
P.	D; Skt. Poetry	20.5×17.4 7.10.17	C	Good 1943 A. D.	

1	2	3	4	5
534	Kha/188/4	Ariṣṭādhyāya	—	—
535	Jha/16/5	Dwādasa-Bhāvafala	—	—
536	Jha/137/2	Gaṇitaprakaraṇa	Śrīdharācārya ?	—
537	Jha/105	Jnānatilaka Saṭīka	—	Bhaṭṭavo-sari
538	Jha/137/1	Jyotirjnāna Vidhi	Srīdharācārya	—
539	Kha/239	Jānapradīpikā	—	—
540	Kha/272	Kewala Jnāna Praśna Cūdāmaṇi	Samantabhadrā	—
541	Kha/213	Kevalajnānahorā	Candrasena Sūri	—
542	Kha/174/3	Nimittaśāstra ṭikā	Bhadrabāhu	—
543	Kha/174/2	Mahānimittaśāstra	"	—
544	Kha/179	" "	"	—
545	Kha/174/4	Nimittaśāstra ṭikā	"	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	23.8×10 6 27.6.28	C	Good	Copied by Pt. Rāmacanda.
P.	D; Skt. Prose	24 3×16.1 5.15.15	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20.5×17.5 13.10.18	Inc	Good 1944 V. S.	It seems to be part of Jyotirjñānavidhi.
P.	D; Skt./ Pkt. Prose/ Poet y	21.6×17.2 74 18.21	C	Good 1990 V. S.	Commentry with test.
P.	D; Skt. Prose	20 4×17.5 18.10.20	C	Good 1944 A.D.	
P.	D; Skt. Poetry	17.3×15.5 19.15 38	C	Good	Copied by Nemirājā.
P.	D; Skt. Prose	21.8×17.6 23 11.33	C	Good	Copied by Devakumāra Jain.
P,	D; Skt. Poetry	34.2×21.4 376.22.21	C	Good	Written on register size paper.
P.	D; Skt. Poetiy	28.4×13.2 17.12.36	C	Good	Author's name not mentioned in the Ms.
P	D; Skt / Pkt. Poetry	26 8×15 7 76.11.40	C	Good	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.5×14.4 79.19.22	C	Old 1877 V. S.	
P.	D; Pkt Poetry	25.2×13.9 18.14.36	Inc	Good	Author's name not mentioned in the Ms.

1	2	3	4	5
546	Kha/165/4	Saṭpañcāśikā Sūtra	—	—
547	Kha/218	Sāmudrika Śāstra	—	—
548	Jha/110	Vratatithinirṇaya	Siṁhanandi	—
549	Jha/16/4	Yātrā Muhūrta	—	—
550/1	Jha/34/20	Ākāsagāminī Vidyā Vidhi	—	—
550/2	Jha/131	Aṁbikā Kalpa	Śubhacandra	—
551	Jha/71	Bālagraha Cikitsā	Malliṣeṇa	—
552	Jha/72	,, ,,	Rāvaṇa	—
553	Jha/70	,, Śānti	Pūjyapāda	—
554	Ga/157/1	Bālaka Mundana Vidhi	—	—
555	Nga/7/18	Bhaktāmarastotra Ṛddhi Mantra	Gautamasvāmi ?	—
556	Nga/7/17	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	24.8×11.3 3.13.52	C	Old	
P.	D;Skt. Poetry	16.8×15.3 10.11.27	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.1×16.3 11.12.52	C	Good 1991 V. S.	Contains slokas 401.
P.	D; Skt. Prose	24.3×16.1 3.15.14	C	Old	It has eleven cārts.
P.	D; H. Prose	25.1×16.1 2.11.36	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	35 6×17 2 18.15.50	C	Good 1994 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	34.8×19.5 6.19.53	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	34.8×19.5 2.19.51	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.8×19.5 8.18.46	C	Good	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	20.1×15.5 3.18.13	C	Good	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	21.1×16.4 22.14.16	C	Good	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	21.1×16.9 21.15.16	C	Good 1950 V. S.	

1	2	3	4	5
557	Jha/26/1	Bhūmi Śuddikaraṇa Mantra	—	—
558	Jha/34/3-4	Bija Mantra	—	—
559	Kha/217	Bijakoṣa	—	—
560	Jha/79	Brahmavidyā vidhi	—	—
561	Jha/34/12	Candraprabhamantra	—	—
562	Jha/34/27	Caubisa Tirthankara Mantra	—	—
563	Jha/34/18	Caubisa Śāsanadavi Mantra	—	—
564	Kha/245	Gaṇadharavalayakalpa	—	—
565	Jha/36/6	Ghanṭākarṇa	—	—
566	Jha/74	,, Kalpa	—	—
567	Ga/144	,, Vṛddhi kalpa	—	—
568	Kha/177/11	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.4×16.8 4.23.18	Inc	Good	
P.	D; Skt. H. Poetry	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16 9×15.2 21.11.29	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ poetry	20.8×16.7 34.11.20	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.1×16.1 1.11.32	C	Good	
P.	D; Skt Prose	25.1×16.1 1.11.33	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.1×16.1 2.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17 1×15.1 10.14.42	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14.9 2.11.20	C	Good	
P.	D;H./Skt. Prose	32.8×17.6 6.11.38	C	Good 1985 V. S.	
P.	D;Skt./H. Poetry/ Prose	33.3×16.3 5.13.40	C	Old 1903 V. S.	Rughan Prasād Agrawāla seems to be copier.
P.	D; Skt /H. Prose/ Poetry	27.2×12.3 5.12.55	C	Old	

1	2	3	4	5
569	Kha/177/8	Hāthājori Kalpa	—	—
570	Jha/34/17	Iaṣṭadevatārādhana Mantra	—	—
571	Nga/2/4	Jainasandhyā	—	—
572	Ga/166	Jainavivāha vidhi	—	—
573	Jha/133	Jinasaṁhitā	Māghanandi	—
574	Nga/7/7	Karmadahana Mantra	—	—
575	Jha/34/15	Kalikuṇda Mantra	—	—
576	Kha/177/6	Mantra Yantra	—	—
577	Kha/177/4	Namokāragaṇa Vidhi	—	—
578	Kha/118	,, Mantra	-	—
579	Jha/46	Padmāvati Kavaca	—	—
580	Jha/16/1	Pañcaparameṣṭhi Mantra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	26.8 × 11.7 1.15.48	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	25.1 × 16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	19.4 × 15.5 2.13.15	C	Good	
P.	D;Skt./H Poetry	22.2 × 19.6 13 17.25	C	Good 1978 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	32 3 × 17.7 75.10.31	C	Good 1995 V. S.	It is also called Māghanandi Saṁhitā.
P.	D; Skt. Prose	20 9 × 16.9 6.16.19	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	25 1 × 16 1 1.11.30	C	Good	
P.	D; H. Prose	25 5 × 10 8 4.10 38	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.6 × 11.8 1.10.46	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt./ Poetry	16.6 × 10.8 56.8.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.4 × 11.5 35.7.18	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	24.3 × 16.1 4.21.20	Inc	Old	

1	2	3	4	5
581	Kha/223	Pañcanamaskāra Cakra	—	—
582	Jha/13/4	Pīthikā Mańtra	—	—
583	Kha/237	Sarasvatīkalpa	Malayakīrti	—
584	Jha/34/19	Śāntinātha Mańtra	—	—
585	Jha/16/3	Siddhabhagavāna ke guṇa	—	—
586	Kha/177/5	Solahacālī	—	—
587	Kha/177/7	Vivāha Vidhi	—	—
588	Kha/258	Yańtra Mańtra Saṁgraha	—	—
589	Kha/255	Akalańkasaṁhitā (Sāra Saṁgraha)	Vijayaṇapādhyāya	—
590	Kha/54	Ārogya Cintāmaṇi	Pańdita Dāmodara	—
591	Kha/224	Kalyāṇakāraka	Ugrādityācārya	—
592	Kha/206	Madanakāmaratna	Pūjyapāda ?	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	35.7×20.2 56 14.56	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	24.5×16.5 4.21.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.3 7.14.37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.1×16.1 1.11.30	C	Good	
P	D; Skt Prose	24.3×16.1 2.18.18	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	27.9×10.8 1.13.48	C	Old	Only one page available.
P.	D; Skt Prose	25.6×10 9 5.8.50	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Prose	21 1×16.9 145 10.31	C	Good	
P.	D; skt Prose	30.3×16.6 238.12.51	C	Good	
p.	D; Skt Prose	38.5×20.5 40.13.54	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.1×21.2 155.23.27	C	Good	Copied by Śankaranārāyaṇa Śarmā, written on register size paper.
P.	D; Skt. Poetry	34.1×21.1 32.23.14	C	Good	It is written on register size paper.

1	2	3	4	5
593	Kha/205	Nidānamuktāvali	Pūjyapāda ?	—
594	Jha/77	Rasasāra Saṁgraha	—	—
595	Kha/226	Vaidyakasāra Saṁgraha	Harṣakīrti	—
596	Kha/103	,, ,,	,,	—
597	Kha/236	Vaidya Vidhāna	Pūjyapāda	—
598	Kha/114	Vidyā Vinodanam	Akalaṅka	—
599	Kha/134	Yoga Cintāmaṇi	Harṣakīrti	—
600	Jha/69	,, ,,	,,	—
601	Nga/2/9	Ācārya Bhakti	—	—
602	Nga/2/28	Aṅkagarbhaṣaḍāracakra	Devanandi	—
603	Kha/113	Aṣṭa Gāyatrī Ṭīkā	—	—
604	Kha/227/5	Ātmatattvāṣṭaka	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	34.1 ×21.1 3.22.22	C	Good	It is written on regester size paper.
P.	D; Skt Poetry	33.8 ×20.5 40.16.40	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	33.8 ×21 2 84.23.24	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	27 5 ×12 7 128.14.48	C	Old 1840 V. S.	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17 1 ×15.3 54.12.31	C	Good 1926 V. S.	Copied by Nemirāja.
P.	D; Skt, Poetry/ Prose	22 8 ×16.8 34.9.11	C	Old	Copied by T. N. Pangal.
P.	D; Skt. Poetry	25 6 × 10 2 139.8 48	C	Old 1896 V. S.	
P.	D;Skt. Prose	32.8 ×17 1 115 11.46	C	Good 1985 V. S.	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	19.4 ×15.5 4.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4 ×15.5 4.13.14	C	Good	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.2 ×16.6 19.11.27	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	35.2 ×16.3 1.9.62	C	Good	Copied by Baṭuka Prasada.

1	2	3	4	5
605	Kha/227/4	Ātmatattvāṣṭaka	—	—
606	Nga/13	Ātmajnāna Prakarana Stotra	Padmasūri	—
607	Kha/123	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅgācārya	—
608	Kha/170/5	„ „	„	—
609	Kha/178(K)	„ „	„	—
610	Kha/165/13	„ „	„	—
611	Jha/31/1	„ „	„	—
612	Jha/28/1	„ „	„	—
613	Jha/34/24	„ „	„	—
614	Jha/40/2	„ „	„	Hemarāja
615	Jha/35/1	„ „	„	—
616	Nga/6/1	„ „	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 1.11.57	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D;Skt. Poetry	19.4×15.5 7.12.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.5×21.3 24.4.18	C	Old 2440 Vir.S	Published. written in bold letters.
P.	D; Skt. Poetry	27.5×12.9 6 14 44	C	Old 1882 V. S	Published.
P.	D; Skt Poetry	20 8×16.3 13.18.17	C	Good 1947 V. S	Published.
P.	D; Skt Poetry	25.2×10.4 4 8.57	C	Old 1763 V. S.	Published.
P.	D; Skt Peotry	18 2×11.8 7.10.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 5×15.8 7.16.15	C	Good	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	25 1×16.1 13.11.33	C	Good	
P.	D; Skt./ H. Poetry	15.4×11.9 25.8.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 7.13.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.3 5.17.21	C	Old	

1	2	3		4	5
617	Jha/52	Bhaktāmarastotra Satika		Mānatunga	—
618	Ga/157/1 (K)	,,		,,	—
619	Nga/7/8	,,		,,	—
620	Ga/110/1	,,	Tīkā	Hemarāja	—
621	Kha/117/1	,,	Mantra	Mānatuṅga	—
622	Kha/117/2	,,	Ṛddhi Mantra	,,	—
623	Kha/119/1	,,	,,	,,	—
624	Kha/283	,,	,,	,,	—
625	Jha/34/16	,, Mantra		,,	—
626	Kha/284	,, Ṛddhimantra		,,	—
627	Kha/170/2	,,	,,	,,	—
628	Kha/177/14	,,	,,		—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt /H. Prose/ Poetry	17.5×10.9 40.8.24	C	Good 1971 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	10.5×7.2 25.6.10	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.9×10.9 9.7.23	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.1×15.8 29.16.19	C	Good 1919 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	15.8×11.2 49.10.27	C	Old 1967 V. S.	Published, copied by Pandit Sītārāma Śastrī
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	17.4×13.5 48.10.24	C	Old 1930 V. S.	Copied by Nīlakaṇṭha Dāsa.
P.	D; Skt. Poetry	16.8×14.5 47.9.20	C	Old 1930 V S.	Published, copied by Nīlakaṇṭha Dāsa
P,	D; Skt. Poetry	20.5×16.3 48.13.17	C	Good	Published.
P	D; Skt. Prose	25.1×16.1 2.11.30	C	Good	
P	D; Skt./ Poetry	24.1×15.5 49.10.44	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.7×18.4 7.11.42	C	Good 1966 V. S.	Published, copied by Munīndrakīrti
P.	D; Skt. Prose	22.6×10.4 10.10.30	Inc	Old	First twenty pages & last pages are missing.

1	2	3	4	5
629	Ga/106/3	Bhaktāmara ṭika	Hemarāja	—
630	Kha/87/1	,, ,,	Mānatuṅga	Brahma-Rāyamalla
631	Kha/170/6	Bhaktāmarastotra tīka	,,	Hemarāja
632	Ga/134/5	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
633	Ga/80/2	,, ,, Sārtha	Mānatuṅga	Hemarāja
634	Jha/33	,, ,, Maṇatra	—	—
635	Jha/36/3	Bhairavāṣṭaka	—	—
636	Nga/7/14	,, Stotra	—	—
637	Kha/119/2	Bhairava Padmāvatī Kalpa	Malliṣeṇācārya D/o Jinaṣena	Bandhu-sena
638	Jha/127	,, ,,	,,	Candra-śekhara Śastrī
639	Nga/3/2	Bhajana Saṁgraha	—	—
640	Kha/172/2	Bhakti Saṁgraha tīka	—	Śivacan-dra

6	7	8	9	10	11
P.	D;H. /Skt. Poetry/ Prose	23.9×16.8 14.25.26	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	29.6×13.4 26.14.53	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.8×13.8 17.14.44	C	Good 1908 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Prose	31.2×17.1 24.14.36	C	Good 1944 V. S.	
P.	D;H /Skt Prose/ Poetry	23.2×15.3 22.22.21	C	Old 1890 V. S.	
P.	D;Skt./H. Poetry	16.5×11.8 17.12.14	Inc	Good	Oponing & Closing are missing
P.	D; Skt Poetry	19.7×14.9 2.11.25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 8×16 3 3.9.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	17.3×14.6 52.13.33	Inc	Old 1956 V. S.	Published. Firt nine pagest aremissing. Copied by Nilakaṇṭha Dāsa.
P.	D;Skt/H. Prose/ Poetry	35.1×16.3 73.13.47	C	Good 1993 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.6×16.5 5.12.14	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	28.1×18.2 72.13.29	C	Good 1948 V. S.	

1	2	3	4	5
641	Ga/152/2	Bhāṣāpada Saṁgraha	Kundana	—
642	Kha/171/2(K)	Bhūpāla Caturviṁśatikā Mūla	Bhūpāla Kavi	—
643	Kha/178/5	Bhūpāla Stotra	,,	—
644	Kha/138/3	,, ,, ṭīkā	,,	—
645	Kha/227/3	Bhāvanāṣṭaka	—	—
646	Jha/31/2	Candraprabha S·otra	—	—
647	Kha/190/2	Candraprabha Śāsana Devī Stotra	—	—
648	Nga/2/48	Caturviṁśati Jina Stotra	—	—
649	Nga/2/40	,,	—	—
650	Kha/131	,, ,, Stuti	Māghanandi	—
651	Nga/2/8	Cāritra Bhakti	—	—
652	Jha/34/9	Caubīsa Tīrthaṅkara Stotra	Devānandi	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	27.4×12.1 11.16.30	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.4×16.9 4.12.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.6 9.16.20	C	Good 1947 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Poetry	31.7×16.8 13.11.36	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 1.9.64	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D; Skt, Prose	18.2×11.8 3.10.22	C	Old 1852 V. S.	
P.	D; H. Poetry	17.2×10.2 6.7.26	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 1.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.5×13.3 5.14.54	C	Old	
P.	D; Pkt./Skt Poetry	19.4×15.5 4.12.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 3.11.30	C	Good	

1	2	3	4	5
653	Nga/8/5	Cintāmaṇi Aṣṭaka	Bhaṭṭāraka Mahicandra	—
654	Kha/173/3(G)	„ Stotra	—	—
655	Jha/31/7	„ Pārśvanātha Stotra	—	—
656	Kha/253	Daśabhktyādi Mahāśāstra	Vardhamāna Muni	—
657	Kha/150/2	Devi Stavana	—	—
658	Jha/35/4	Ekibhāva Stotra	Vādirāja Sūri	—
659	Kha/171/2 (Kh)	„ „ Mūla	„ „	—
660	Kha/178 (Gha)	„ „	„ „	—
661	Kha/172/2(K)	„ „	„ „	—
662	Nga/6/7	„ „	„	—
663	Kha/138/2	„ „ Saṭika	Vādirāja Sūri	—
664	Nga/2/41	Gautamasvāmi Stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 1.13.27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.2×17.6 1.14.34	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.2×11.8 36.10.23	C	Good 1853 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.7 132.10.28	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	38.9×12.2 4.9.39	G	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 5.13.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.4×16.9 4.12.25	C	Good	Published.
P.	D;Skt./H. Poetry	20.8×16.6 8.13.20	C	Good 1947 V. S.	Published.
P.	D; Skt Poetry	28.1×18.2 10.12.39	C	Good	Published.
P.	D; Skt Poetry	22.8×18.1 3.17.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	31.5×16.5 14.10.32	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.15	C	Good	

1	2	3	4	5
665	Kha/227/10	Gītavītarāga	Cārukīrti	—
666	Kha/227/6	Gommatāṣṭaka	—	—
667	Ga/152/3	Gurudeva Kī Vinti	—	—
668	Ga/77/1	Jinacaityastava	Campārāma	—
669	Nga/7/12(Kha)	Jinadarśanāṣṭaka	—	—
670	Jha/39	Jinendra Darśana Pāṭha	—	—
671	Nga/2/52	Jinendrastotra	—	—
672	Nga/5/4	Jinavāṇī Stuti	Haridāsa Pyārā	—
673	Nga/2/34	Jinaguna Stavana	—	—
674	Kha/227/7	Jinagunasampatti	—	—
675	Jha/34/21	Jina Stotra	Raviṣaṇācārya	—
676	Kha/190/1	Jinapañjara Stotra	Devaprabhācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 17.11.56	C	Good 1930 A. D.	Copied by Bapuka Prasāda.
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 1.9.58	C	Good	Copied by Bapuka Prasāda.
P.	D; H. Poetry	26.1×12.4 7.7.26	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.6×9.6 11.7.20	C	Old 1883 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×13.3 1.18.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.3×12.4 5.10.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.7×17.1 3.11.20	C	Good 1963 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 3.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 2.11.60	C	Good	Copied by Bapuka Prasāda.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 3.11.33	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.8×10.4 7.7.24	C	Old	

1	2	3	4	5
677	Ga/157/12 (Kha)	Jinapañjara Stotra		—
678	Jha/31/4	,,		—
679	Kha/175/10	Jvālāmālinī Stotra		—
680	Jha/34/13	,, Devī Stuti		—
681	Jha/81	Jvālinī Kalpa	Indranandi	—
682	Kha/161/5	Kalyāṇamandira Stotra	Kumudacandrācārya	—
683	Nga/6/2	,, ,,	,,	—
684	Kha/161/8	,, ,,	,,	—
685	Kha/165/12	,, ,,	,,	—
686	Kha/170/7	,, ,,	,,	—
687	Kha/165/8	,, ,,	,,	—
688	Kha/172/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	10.5×7.2 8.6.10	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D;Skt. Poetry	18.2×11.8 2.10.20	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	23.7×10.9 3.8.35	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.1×16.1 3.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	20.6×16.6 39.11.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.1×12 7 4.14.40	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.3 4.17.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.6×11.2 4.10.35	C	Old 1931 V. S.	Copied by Keshava Sāgara. Published.
P.	D; Skt. Poetry	26.2×10.8 2.13.45	C	Old	Published. pages are sotten.
P.	D; Skt. Poetry	25.8×12.8 5.20.57	C	Old 1887 V. S.	Published.
P.	D; Skt. Poetry	24.6×11.2 2.16.50	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	28.1×18.2 14.12.36	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
689	Kha/178 (Kh)	Kalyāṇamandira Stotra	Kumudacandra	—
690	Jha/35/2	,, ,,	Kumudacandra	—
691	Jha/40/3	,, ,,		Banārasi-dāsa
692	Jha/28/2	,, ,,		—
693	Jha/31/3	,, ,,	,,	—
694	Jha/28/3	,, Bhāṣā	—	—
695	Kha/106/4	,, Vacanikā	—	—
696	Ga/80/3	,, Sārtha	Kumudacandra	—
697	Nga/2/2/3	Kṣamāvāṇī Āratī	—	—
698	Jha/34/2	Kṣetrapāla Stuti	—	—
699	Kha/161/7	Kāṣṭhā Saṁgha Gurvāvali	—	—
700	Jha/40/4	Laghu Sahasranāma	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 11.13.2	C	Good 1947 V. S.	Published,
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 6.13.20	C	Good	
P.	D;Skt./H Poetry	15.4×11.9 21.9.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poet.y	20.5×15.8 6.17.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.2×11.8 6.10.23	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.8 1.17.15	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H Poetry/ Prose	23.9×16.8 12.25.25	C	Old	
P,	D;Skt./H. Poetry/ Prose	23.2×15.3 19.22.22	C	Old 1890 V S.	
P.	D; H. Poetry	17.8×13.5 4.10.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.2×16.1 1.14.28	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	26.4×12.8 3.14.39	C	Old	Published.
P.	D;Skt./H. Poetry	15.4×11.9 5.9.18	C	Good	

1	2	3	4	5
701	Nga/7/10	Laghusahasranāma Stotra	—	—
702	Jha/34/26	Lakṣhmı Ārādhana Vidhi	—	—
703	Nga/2/15	Mahālakṣmī Stotra	—	—
704	Nga/7/16	,, ,,	—	—
705	Jha/36/1	Maṅgalāṣṭaka	—	—
706	Nga/4/2	Maṅgala Ārati	Dyānatarāya	—
707	Ga/157/6	Maṇibhadrāṣṭaka	—	—
708	Nga/2/12	Naṅdīśvara Bhakti	—	—
709	Kha/173/3(K)	Namokāra Stotra	—	—
710	Nga/2/53	Navakāra-Bhāvanā Stotra	—	—
711	Nga/2/14	Nemijina Stotra	Raghunātha	—
712	Kha/202	Nijātmāṣṭaka	Yogindradeva	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.1×14.7 2.12.26	C	Good	
P.	D;H./Skt. Prose	25.1×16.1 1.11.33	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.12.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.3×14.7 2.14.11	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14.9 2.11.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.5×17.9 1.10.28	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	15.6×13.3 3.10.16	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.4×15.5 10.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	27.2×17.5 1.13.35	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 3.13.16	C	Good 1954 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 1.12.14	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	29.7×19.3 3.8.39	C	Good	

1	2	3	4	5
713	Nga/2/29	Nirvāṇakānda	—	—
714	Nga/6/5	„	—	—
715	Nga/6/6	„	—	—
716	Kha/177/10 (K)	„	Bhaiyā Bhagavatī Dāsa	—
717	Nga/2/10	Niravāna Bhakti	—	—
718	Kha/112/6	Padmāvatī Kavaca	—	—
719	Kha/40/2	„ Kalpa	Malliseṇa Sūri	—
720	Kha/153/2	„ Vṛhat Kalpa	—	—
721	Jha/34/1	Padmāmatā Stuti	—	—
722	Kha/75/1	Padmāvati Stotra	—	—
723	Kha/267	„ „	—	—
724	Nga/7/13 (K)	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 4.13.14	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.8×18 1 2.17.20	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 2.17.22	C	Old 1943 V. S.	
P.	D; H. Poetry	24.1×12.8 1.14.30	C	Good 1871 V. S.	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.9×15.5 8.13.16	G	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 11.14.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.5×19 7 24.13.35	C	Old 1884 V. S.	
P.	D;Skt. Poetry	27.4×12.6 2.16.55	C	Old	
P.	D; H. Poetry	25.2×16.1 3.11.25	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	29.6×13.5 3.14.61	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	21.6×17.5 10.13.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.9×16.5 5.17.17	C	Good	

1	2	3	4	5
725	Jha/36/5	Padmāvatī Stotra		—
726	Jha/34/11	,, ,,		—
727	Jha/34/10	,, Sahasranāma		—
728	Jha/40/6	Paramānanda Stotra		—
729	Nga/7/11(K)	,, ,,		—
730	Kha/227/9	,, Caturviṁśatikā		—
731	Nga/2/47	Pārśvajina Stavana		—
732	Nga/2/50	Pārśvanātha ,,		—
733	Nga/2/39	Pārśvanātha Stotra		—
734	Kha/105/2	,, ,,	Vidyananda Swāmi	—
735	Kha/62/1	,, ,, Saṭīka	Padmaprabhadeva	—
736	Jha/34/7	,, ,,		—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14.9 6.11.21	C	Good	
P.	D;Skt. Poetry	25.1×16.1 8.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 9.11.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.7 3.9.20	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	21.1×13.3 2.18.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16 3 2.11.58	C	Good	Copied by Batuka Prasada.
P.	D; Skt. Peotry	19.4×15.5 3.13.15	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	19.4×15.5 3.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 4.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.5×15.5 4.9.49	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	30.7×16.0 3.14.52	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 4.11.30	C	Good	

1	2	3	4	5
737	Nga/6/16	Pārśvanātha Stotra	Padmaprabhadeva	4
738	Kha/119/3	Pañcastotra Satika	—	—
739	Ga/143	Pañcāśikā Śikṣā	Dyānatarāya	—
740	Kha/171/6	Pañcapadāmnāya	—	—
741	Kha/165/14	Prabhāvati Kalpa	—	—
742	Nga/2/35	Prārthanā Stotra	—	—
743	Kha/165/1	Rakta Padmāvati Kalpa	—	—
744	Nga/2/20	Ṛṣabha Stavana	—	—
745	Kha/112/5	Ṛṣimaṇḍala Stotra	—	—
746	Nga/7/1	" "	—	—
747	Jha/34/19	" "	—	—
748	Nga/2/26	Trikāla Jaina Sandhya Vandana	[illegible]	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.1 1.17.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	19.2×12.2 184.11.45	C	Old 1967 V. S.	Copied by Pandit Sītārāma Śāstri.
P.	D; H. Poetry	34.4×16.1 57.10.45	C	Good 1947 V. S.	It is a calection of Bhajan,
P.	D; Skt. Poetry	18.3×16.2 8.11.22	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	24.5×10.4 1.17.70	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 1.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.9×10.8 10.11.38	Inc	Old 1738 V. S.	First page missing. Copied by Soubhāgya Samudra. D/o Jina Samudra Sūri.
P,	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.12.14	C	Good	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	19.4×15.5 19.14.14	C	Old	Written on copy size paper.
P	D; Skt. Poetry	20.4×16.5 13.21.14	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 9.11.33	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	19.4×15.5 4.13.14	C	Good	

1	2	3	4	5
749	Kha/243	Sahasranāmārādhanā	Devendrakīrti	—
750	Kha/153/1	„ Stotra Ṭīkā	Jinasenācārya	Śrutasāgara
751	Jha/35/5	„ „	—	—
752	Jha/75	„ Ṭīkā	Śrutasāgara	—
753	Kha/161/2	„ „	Pt. Āśādhara	Amarakīrti
754	Ga/134/7(Kh)	Sata Aṣṭotarī Stotra	Bhagavatīdāsa	—
755	Kha/188/2	Śakra Stavana	Siddhasenācārya	—
756	Nga/2/27	Sattarisaya „	—	—
757	Nga/2/51	Sammedāṣṭaka	Jagadbhūṣaṇa	—
758	Kha/97	Samavasaraṇa Stotra	Samantabhadra	—
759	Gha/148/3	Saṅkaṭaharaṇa Vinati	—	—
760	Kha/177/13	Śāntinātha Ārati	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	17.2×15.4 60.14. 37	C	Good 1926 V. S.	Copied by Némirājā.
P.	D; Skt. Poetry	29.5×12.5 114.12.54	C	Old 1775 V. S.	Copied by Gaṅgārāma. Published.
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 9.13.19	Inc	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.8×17.5 127.11.38	C	Good 1985 V. S.	Page No. 68 to 78 are missing.
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	25.8×13.2 61.14.52	C	Old 1897 V. S.	
P.	D; H. Poetry	30 3×16.3 10 14.43	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.3×11.0 3 9.41	Inc	Old 1774 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 3.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×10.5 56.8.29	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24.4×12.9 2.15.40	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.3×11.4 1.12.29	C	Old	Only one page is available.

1	2	3	4	5
661	Jha/36/2	Śāntinātha Stora	Guṇabhadrācārya	—
762	Nga/2/44	,, Stavana	—	—
763	Nga/2/19	,, ,,	—	—
764	Jha/34/23	,, ,,	—	—
765	Jha/80	Sarasvatī Kalpa	Malliṣena Sūri	—
766	Jha/34/8	,, S'otra	—	—
767	Kha/176/2	,, ,,	—	—
768	Kha/173/3 (Kha)	,, ,,	—	—
769	Kha/161/6	,, ,,	—	—
770	Nga/2/6	Siddhbhakti	—	—
771	Nga/7/15	Siddhipriya Stotra Tikā	Bhavyānanda	—
772	Jha/34/22	Siddhaparameṣṭhī Stavana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14.9 1.11.20	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	19.4×15.5 1.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.12.14	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×16.7 9.11.22	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	23.9×13.5 2.9.28	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	27.2×17.5 1.14.36	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.1×12.1 1.11.32	Inc	Old	Only first page available.
P.	D; Skt./ Pkt Poetry	19.4×15.5 5.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20.9×16.3 17.16.12	C	Old	The Ms. is demaged.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 2.11.33	C	Good	

1	2	3	4	5
773	Nga/2/7	Śrutabhakti	—	—
774	Kha/50	Stotra Saṁgraha	—	—
775	Kha/165/11	Stotrāvali	—	—
776	Kha/165/5	,,	—	—
777	Kha/120	Stotra Saṁgraha Guṭakā	—	—
778	Kha/286	,, ,,	—	—
779	Jha/73	,, ,,	—	—
780	Nga/2/46	,,	Bhaṭṭāraka Jina-candradeva	—
781	Kha/227/8	Suprabhāta Stotra	—	—
782	Jha/34/5	Svayambhū Stotra	Samantabhadra	—
783	Jha/40/5	,, ,,	,,	—
784	Kha/16	,, ,, Saṭikā	,,	Prabhāca-ndrācārya

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.4 × 15.5 7.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4 × 10.2 49.7.36	C	Old 1950 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	24.5 × 11.1 6.20.45	Inc	Old	First page is missing.
P.	D; Skt. Poetry	26.3 × 10.8 11.13.52	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	13.5 × 7.3 272 5.16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	19.6 × 12.3 535.16 19	C	Old	
P.	D, Skt. Prose/ Poetry	32.8 × 17.5 72.11.39	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	19.4 × 15.5 2.13.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.2 × 16.3 2.11.55	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D; Skt. Poetry	25.1 × 16 1 14.11.32	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.4 × 11.9 5.9.16	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry/ Prose	29.7 × 13.5 79.9.38	C	Good 1919 V. S.	Published.

1	2	3	4	5
785	Kha/161/4	Viṣāpahāra Stotra	Dhanañajaya	—
786	Jha/35/3	,, ,,	,,	—
787	Nga/7/19	,, ,,	,,	—
788	Nga/7/12 (K)	,, ,,	,,	—
789	Nga/6/4	,, ,,	,,	—
790	Kha/185/3	,, ,, ṭikā	,,	Nāgacan-dra
791	Kha/178/51	,, ,,	,,	—
792	Ga/59/2	,, ,,	,,	Akhairāja
793	Kha/165/9	,, ,,	,,	—
794	Kha/171/2(G)	,, ,, Mūla	,,	—
795	Ga/157/8	Vinati Saṁgraha	—	—
796	Jha/31/9	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	24.1×12.7 3.13.40	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	16.1×16.1 5.13.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.8×11.2 4.9.34	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×13 3 4.18.12	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.1 3 17.18	G	Good	
P.	D, Skt. Poetry/ Prose	21.6×12.2 10.16.39	C	Old	
P.	D;H /Skt. Poetry	20 8×16 6 8.18.20	C	Good 1947 V. S.	Published.
P.	D;Skt /H Prose/ Poetry	29 5×13.5 12 14.48	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Poetry	26.1×10.5 5.7.32	C	Old 1672 V. S.	Published.
p.	D; Skt Poetry	25.4×16 9 5.12.24	C	Good	Published.
P.	D; H. Poetry	15.4×14.6 23.12.18	C	Good	Ist page is missing.
P.	D; H. Poetry	18.2×11.8 1.10.22	C	Good 1852 V. S.	

1	2	3	4	5
797	Nga/2/16	Vītarāga Stotra	—	—
798	Jha/28/6	Vṛhat Sahasranāma	—	—
799	Nga/2/45	Yamakāṣṭaka Stotra	Bhaṭṭāraka Amarakīrti	—
800	Nga/2/11	Yogabhakti	—	—
801	Nga/5/5	Abhiṣekapāṭha	—	—
802	Nga/6/17	,, Samaya Kā Pada	—	—
803	Jha/15	Akṛtrima Caityālaya Pūjā	—	—
804	Jha/34/25	Anantavrata Vidhi	—	—
805	Kha/76	Anantavratodyāpana Pūjā	Guṇacandra	—
806	Kha/191/7 (Kha)	Aṅkuraropaṇa Vidhi	—	—
807	Jha/49/3	Arhaddeva Vṛhad Śānti Vidhāna	—	—
808	Kha/143/2	Arhaddeva Śāntikābhiṣeka Vidhi	Jinasenācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	19.4×15.5 7.12.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.2×15.8 2.15.20	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 1.13.15	C	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	19.4×11.0 5.13.13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.9×17.1 8.15.18	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.1 1.17.23	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.6×16.2 72.22.16	C	Old	
P.	D;Skt./H. Prose	25.1×16.1 2.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.6×13.4 18.14.54	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	27.5×19.7 15.16.30	C	Old	
P.	D;Skt.H./ Poetry	20.8×16.2 50.14.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	31.4×14.2 90.10.39	C	Old 1800 V. S.	

1	2	3	4	5
809	Kha/177/10 (Kha)	Aṣṭaprakārī Pūjā Vidhāna	—	—
810	Kha/171/4	Atīta Caturviṁśati Pūjā	—	—
811	Nga/8/9	Bārasī Caubīsī Pūjā Vā Uddyāpana	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
812	Nga/2/30	Bhāvanā Battīsī	—	—
813	Nga/6/15	Bīsa Bhagavāna Pūjā	—	—
814	Kha/250	Vṛhatsiddhacakra Pāṭha	—	—
815	Kha/75/2	,, ,, Vidhāna	—	—
816	Kha/176/5	Vṛhatśānti Pātha	—	—
817	Ga/80/6	Candraśataka	—	—
818	Jha/13/7	Caityālaya Pratiṣṭhā Vidhi	—	—
819	Nga/5/8	Caturviṁśati Pūjā	—	—
820	Kha/78/2	,, Tīrthaṅkara Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	24.1×12.8 1.14.34	C	Good 1871 V. S.	
P.	D;Skt./H. Poetry	20.4×16.6 16.11.28	C	Good 1969 V. S.	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	22.1×18.1 64.13.28	C	Good 1948 V. S.	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.4×15.5 13.13.15	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	22.8×18.1 3.17.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.7×10.6 119.9.51	C	Old 1961 V. S.	Copied by Sitārāma.
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	31.6×16.2 41.9.42	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	24.6×10.6 4.10.43	C	Good	
P	D; H. Poetry	23.2×15.3 15.22.22	C	Old 1890 V. S.	Copied by Nandalāla Pānday.
P	D; Skt. Poetry/ Prose	24.5×12.5 7.21.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.9×18.6 4.13.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	33.0×14.4 32.12.46	C	Good 1892 V. S.	

1	2	3	4	5
821	Nga/6/1	Caturviṁśati Jinapūjā	Dyānatarāya	—
822	Ga/55/1	Caubīsī Pūjā	Manaraṅga	—
823	Ga/145/1	,, ,,	Vṛndāvana	—
824	Ga/93/2	Caubīsa Tīrthaṅkara Pūjā	,,	—
825	Ga/94/1	Caubīsī Pūjā	,,	—
826	Jha/26/2	Cintāmaṇi Parśvanātha Pūjā	—	—
827	Jha/16/6	,, ,,	—	—
828	Jha/16/8	,, ,,	—	—
829	Nga/8/4	,, ,,	—	—
830	Ga/103/1	Daśalākṣaṇika Udyāpana	—	—
831/1	Nga/8/7	,, ,,	—	—
831/2	Kha/73/3	,, Vratodyāpana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.2×13.8 11.16.19	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.9×10.8 108.7.35	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; H. Poetry	32.1×16.2 64.10.41	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.5×17.6 [illegible].11.38	Inc	Old	
P.	D; Skt Poetry	36.3×13.3 65.9.46	C	Good 1962 V. S.	
P.	D, Skt Poetry	22.4×16.8 24.20.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.3×16.1 4.21.18	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24 3×16.1 5.19.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 10.13.28	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.7×20.4 09 15.42	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 17.13.25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.5×16.5 22.11.28	C	Good 1955 V. S.	

1	2	3	4	5
832	Ga/103/7	Daśalakṣaṇa Pūjā	Dyānatarāya	—
833	Ga/103/5	,, ,,	—	—
834	Nga/4/5	,, ,,	—	—
835	Nga/6/12	,, ,,	Dyānatarāya	—
836	Kha/72/3	Darśana Sāmāyika Pāṭha Saṁgraha	—	—
837	Jha/25/2	Devapūjā	Dyānatarāya	—
838	Jha/37	,, ,,	—	—
839	Jha/28/4	,, ,,	—	—
840	Nga/9/1	,, Pūjana	—	—
841	Nga/6/13	,, Śāstra-Gurupūjā	—	—
842	Kha/175/2	Devapūjā (Abhiṣeka Vidhi)	—	—
843	Nga/9/2	Dharmacakra Pāṭha	Yaśonandī Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	34.7×20.4 3.15.50	C	Good	Published.
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	34.7×20.4 4.15.48	C	Good	
P.	D,Skt./H. Poetry	21.5×17 9 15.10.22	C	Good 1951 V. S.	
P.	D;Apb./H. Poetry	22.8×18.1 11.17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.8×17.2 42.15.42	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H, Poetry	22.9×12.1 3.18.15		Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.4×13.8 25.10.14	C	Old	First page is missing.
P.	D; Pkt. oetry	20.1×15.8 10 13.17	Inc	Good	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	25.6×20.6 40.10.18	C	Good	
P.	D;Apb./ Skt /H. Poetry	22.8×18.1 10.17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	27.2×14.1 13.16.38	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.5×20.3 48.14.16	C	Good 1962 V. S.	

1	2	3	4	5
844	Jha/16/2	Dharmacakra Pāṭha	—	—
845	Jha/131/8	,, Pūjā	—	—
846	Jha/13/1	Gaṇadharavalaya Pūjā	—	—
847	Nga/8/1	,, ,,	—	—
848	Ga/110/2	Grahaśānti ,,	—	—
849	Ga/157/2	Homa Vidhāna	Daulatarāma	—
850	Jha/26/5	,, ,,	Āśādhara	—
851	Kha/145/1	Indradhvaja Pūjā	Bhaṭṭāraka Viśvabhūṣaṇa	—
852	Kha/44	,, ,,	,,	—
853	Jha/27	,, ,,	,,	—
854	Nga/6/18	Janmakalyāṇaka Abhiṣeka Jayamālā	—	—
855	Jha/36/4	Jāpa-Vidhi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	24.3×16.1 6.20.16	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.2×11.8 9.10.22	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	24.5×15 6 6.21.20	C	Good	
P.	D; Skt Prose/ Poetry	22.2×18.1 8.14.28	C	Good	
P	D; H Poetry	21.5×16.6 22.16.14	Inc	Old	
P	D; Skt / H Prose/ Poetry	20 8×15.8 15.13.15	C	Good 1930 V. S.	Laxmicanda seems to be copier.
P.	D; Skt Poetry	22 4×16 8 7.18 18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 6×14.4 111.11.46	C	Good 1910 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29 2×19.5 147.12.32	C	Good 1951 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.8×14.8 103.21.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 2.17.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14.9 1.11.21	C	Good	

1	2	3	4	5
856	Nga/2/42	Jinapañcakalyāṇaka Jayamālā	—	—
857	Kha/204	Jinendrakalyāṇābhyudaya (Vidyānuvādāṅga)	—	—
858	Kha/207	Jinayajna Fhalodaya	Kalyāṇakīrtimuni	—
859	Nga/44	Jinapratimā Sthāpana Prabandha	Śribrahma	—
860	Kha/163/5	Jinapurandara Vratodyāpana	—	—
861	Jha/16/7	Kalikuṇḍa Pārsvanātha Pūjā	—	—
862	Jha/26/3	Kalikuṅdala Pūjā	—	—
863	Kha/244	Kalikuṅdārādhanā Vidhāna	—	—
864	Kha/278	Karmadahana Pāṭha Bhāṣā	—	—
865	Ga/37	Karmadahana Pūjā	—	—
866	Kha/74/1	,, ,,	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
867	Kha/72/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.14	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	34.8×14.4 131.9.53	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	31.5×18.7 86.15.47	C	Good 2451 Vir S.	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	31.8×14.2 48.12.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	25.9×12.1 9.10.55	G	Old 1932 V. S.	Unpublished. Copied by Rāmagopāla.
P	D; Skt Poetry	24.3×16.1 5.20.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.4×16.8 3.20.24	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	17.1×15.4 13.12.33	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.9×17.9 7.19.26	Inc	Good	
P.	D; H Poetry	27.1×17.5 22.24.16	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.6×15.2 34.11.45	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	26.5×17.4 10.12.33	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
868	Kha/37/1	Karmadahana Pūjā	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
869	Kha/168	,, ,,	,,	—
870	Jha/48	,, ,,	—	—
871	Nga/8/2	,, ,,	Vādicandra Sūri	—
872	Kha/186/1	Kṣetrapāla ,,	—	—
873	Kha/185/4	Laghusāmāyika Pāṭha	—	—
874	Kha/232	Mahābhiṣeka Vidhāna	Śrutasāgara Sūri	—
875	Nga/2/43	Mahāvira Jayamālā	—	—
876	Kha/140/3	Mandira Pratiṣṭhā Vidhāna	—	—
877	Kha/242	Mṛtyuñjayārādhanā Vidhāna	—	—
878	Ga/148/1	Mūlasaṁgha Kāṣṭhāsaṁghi	—	—
879	Ga/18/2	Nandiśwara Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	35.0×18.3 11.13.53	C	Old	Published.
P.	D; Skt. Poetry	24.8×10.6 16.11.46	Inc	Old	Pages disarranged & missing.
P.	D; Skt. Poetry	19.3×18.1 19.15.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 15.13.26	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×13.6 9.11.34	C	Old 1836 V. S.	Copied by Cainsukhaaji
P.	D; Pkt./ Skt. Prose/ Poetry	16.4×11.2 8.12.24	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.5×17.4 40.12.50	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 2.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30.4×16.6 38.13.52	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.4 7.12.37	C	Good 1926 V. S.	Copied by Nemirājī.
P.	D;Skt./H. Poetry	30.3×16.5 16.11.33	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	33.3×21.1 16.12.41	C	Good	

1	2	3	4	5
880	Ga/18/1	Nandiswara Vidhāna	Takacanda	—
881	Nga/2/54	Navagraha Ariṣṭa Nivāraka Pūjā	—	—
882	Nga/1/4/1	Navakāra Paccisi	Vinodilāla	—
883	Kha/191/1(K)	Nāndimangala Vidhāna	—	—
884	Kha/234	,, ,,	—	—
885	Jha/32	Nityaniyama Pūjā	—	—
886	Kha/70/2	,, ,,	—	—
887	Nga/4/4	Nityaniyama Pūjā Saṁgraha	—	—
888	Ga/94/2	Nirvāṇa Pūjā	—	—
889	Nga/4/3	Pañcamaṅgala	Rūpacanda	—
890	Kha/87/2	Pañcami Vratodyāpana	—	—
891	Nga/5/1	Pañcamerū Pūjā	Dyānataraya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	31.6×17.3 15.13.48	C	Good 1951 V. S.	
P.	D;Skt./H. Poetry	19.2×15.1 6.13.14	C	Good	
P.	D; H Poetry	17.5×13.5 12.13.9	C	Good 1913 V. S.	First page is missing.
P.	D; Skt. Prose	27.5×19.7 20.16.30	C	Old	
P.	D; Skt Prose	30.5×17.4 55.11.50	C	Good	
P.	D,Skt.,H. Poetry	17.8×14.3 24.14.18	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	25.4×19.2 9.20.19	Inc	Old	First page damaged & last pages are missing.
P,	D; Skt./ H Poetry	21.5×17.9 32.10.24	C	Good	
P	D; H. Poetry	36.3×13.3 5.9.35	C	Good 1965 V. S.	
P	D; H. Poetry	21.5×17.9 8.10 28	C	Good 1951 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	29.6×13.4 4.14.56	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	18.3×14.5 14.15.17	C	Good	

1	2	3	4	5
892	Kha/95	Pañcaparameṣṭhi Pūjā	—	—
893	Kha/74/2	,, ,,	Yaśonandi	—
894	Ga/103/2	,, ,,	—	—
895	Ga/66	,, Vidhāna	—	—
896	Kha/112/4	,, Pāṭha	Yaśonandi	—
897	Kha/40/1	Pañcakalyāṇaka Pūjā	—	—
898	Jha/23/3	,, ,,	—	—
899	Kha/62/2	,, ,,	—	—
900	Ga/103/1	,, ,,	Bakhtāvara	—
901	Nga/1/1	,, ,,	—	—
902	Kha/112/1	,, Pāṭha	—	—
903	Kha/112/7	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	27.5×13.5 43.9.38	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	29.8×15.1 67.13.44	Inc	Old	First 33 pages are missing.
P.	D; H. Poetry	34.7×20.4 18.15.51	C	Good 1987 V. S.	Copied by Jamunadas.
P.	D; H. Poetry	24.5×22.3 129.15.24	C	Old	Copied by Pandit Hira Lala.
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 134.10.31	C	Old 1800 Saka-samvat	Published. Written on copy size paper with blank & red ink pages are bordered with fine printing.
P.	D; Skt. Poetry	33.0×15.5 21.9.45	C	Old	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.6 21.17.23	C	Good 1953	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	29.6×14.8 9.11.37	Inc	Old	First 19 pages & last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	34.7×20.4 13.15.50	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×11.8 23.12.25	C	Good 1879 V. S.	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	19.8×15.5 [illegible]	C	Old 1956 V. S.	Written with red& black ink. Pages are boardered with fine printing. Last three pages are const of fine manadls sketches.
P.	D; Skt. Poetry	19.4×15.5 [illegible]	Inc	Old	First two pages and last pages are missing.

1	2	3	4	5
904	Nga/5/2	Pañcakalyāṇaka Pāṭha	—	—
905	Kha/184	Pañcakalyāṇakādi Maṇḍala	—	—
906	Nga/3/1	Padmāvatī Pūjā	Haridāsa	—
907	Nga/7/13 (Kha)	Padmāvatīdevī ,,	—	—
908	Jha/26/4	,, Pūjana	—	—
909	Nga/8/3	Palyavidhān Pūjā	—	—
910	Jha/55	Pratiṣṭhākalpa	Akalaṅkadeva	—
911	Kha/222	,, , Ṭippaṇa (Jina Saṁhitā)	Kumudacandra	—
912	Jha/86	Pratiṣṭhā Pāṭha	Jayasenācārya	—
913	Jha/42	,, ,,	—	—
914	Jha/54	Pratiṣṭhā Sāroddhāra	Bramhasūri	—
915	ha/140/2	Pratiṣṭhāsāra Saṁgraha	Vasunandi Saiddhāntika	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	21.1×16.4 37.11.24	C	Good	
P.	— —	22.3×18.3 30.0.0	C	Old	It is skeches of thirty mandalas
P.	D; Skt. Poetry	20.6×16.5 162.11.18	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20 9×16.5 2.17.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.4×16.8 3.14.16	C	Good	
P.	D; H, Poetry	22.1×18.1 8.13.30		Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.2×16.8 80.14.36	C	Good 1926 V. S.	Copied by Nemirāja.
P.	D; Skt. prose	34.8×14.5 39.10.69	C	Good 2451 Saka S.	" "
P.	D; Skt. Poetry	31.7×19.8 80.13.30	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.8×12.8 34.11.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.1×16.8 112.14.00	C	Good 2452 Vir.S.	Copied by Nemirāja.
P.	D; Skt. Poetry	27.4×16.3 33.14.51	C	Old 1949 V. S.	Pt. Paramanand.

1	2	3	4	5
916	Kha/247	Pratiṣṭhā Vidhāna	Hastimalla	—
917	Kha/176/1	„ Vidhi	—	—
918	Gaa/157/3	Prākṛtaahavāṇa	—	—
919	Kha/156/2	Puṇyāhavācana	—	—
920	Kha/98/1	„	—	—
921	Jha/9/1	Puṣpāñjali Pūjā	—	—
922	Kha/169	Pūjā Saṃgraha	—	—
923	Ga/103/6	Ratnatraya Pūjā	Narendrasena	—
924	Jha/23/1	„ „	Jinendrasena	—
925	Jha/51	„ „	„	—
926	Ṅga/6/9	„ „	Dyānatarāya	—
927	Ga/103/8	„ „	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poe.ry	17.1×15.1 10.11.34	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	27.1×15.4 34.11.32	C	Old 1909 V. S.	Written on coloured thin paper.
P.	D; Pkt. Poetry	17.5×15.5 3.13.27	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	27.4×13.6 6.11.43	C	Old	
P.	D; Stk. Poet ry	21.5×12.2 11.9.29	C	Old 1866 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	27.2×12.4 6.13.50	C	Good	
P.	D; Skt / Pkt./H. Poetry	24.9×21.4 88.26.48	C	Good 1947 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	34.7×20.4 7.15.46	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 12.18.23	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	21.2×16.2 16.17.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.8×18.1 5.17.23	C	Good	
P.	D; H. Poetry	34.7×20.4 3.15.46	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
928	Kha/263	Ratnatraya Pūjā Udyapana	Viśvabhūṣaṇa S/o Viśālakīrti	—
929	Ga/103/4	,, ,,	—	—
930	Kha/91	,, ,,	—	—
931	Kha/98/2	,, Jayamālā	—	—
932	Kha/165/3	,, ,,	—	—
933	Ga/93/3	Ṛṣimaṇḍala Pūjā	Jawāhara Lāla	—
934	Jha/49/2	,, ,,	,,	—
935	Jha/31/5	,, ,,	—	—
936	Ga/80/5	Rūpacandra Śataka	Rūpacandra	—
937	Jha/13/3	Sakalikaraṇa Vidhāna	—	—
938	Kha/143/3	,, ,,	—	—
939	Jha/45	Samavasaraṇa Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	24.6 × 19.8 33.15.40	C	Good	This work is presented to Jain Sidhant Bhavan by Buchchulāla Jain in 1987 V. S.
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	34.2 × 20.4 19.15.52	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30.4 × 14.2 8.14.57	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	29.1 × 13.4 4.7.43	C	Good	
P	D; Skt Poetry	25.6 × 11.8 3 6.35	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3 × 16.8 12.13.51	C	Good 1901 V. S.	
P	D; H Poetry	20.8 × 16.2 33.14.16	C	Good 1960 V. S.	Durgālāl seems to ba copier.
P.	D; Skt Poetry	18 2 × 11.8 19.10.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.2 × 15.3 4.22.22	C	Old 1890 V. S.	It is written only Doha Chhanda.
P.	D; Skt. Poetry	24.5 × 16.5 2.23.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	31.5 × [illegible] 9.11.47	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.6 × 18.1 25.14.52	C	Good	

1	2	3	4	5
940	Kha/79	Samavasaraṇa Pāṭha (Samavaśruti-Pūjā)	Bhaṭṭāraka Kamalakīrti	—
941	Ga/36	Sammedaśikhara Māhātmya	Lālacandra	—
942	Ga/151/2	Sammedaśikhara Pūjā	Jawāhara	—
943	Jha/38/2	,, ,, ,,	—	—
944	Nga/1/5/1	Sarasvati Pūjā	Sadāsukha	—
945	Ga/77/2	,, ,,	Sadāsukha Dāsa	—
946	Jha/13/2	Saptarṣi ,,	Viśvabhūṣaṇa	—
947	Nga/4/1	,, ,,	Bhaṭṭāraka Viśvabhūṣaṇa	—
948	Jha/23/2	,, ,,	Visva Bhūṣaṇa	—
949	Kha/148	Satcaturtha Jenārccana	—	—
950	Kha/70/3	Ṣannavati Kṣetrapāla Pūjā	Sri Viśvasena	—
951	Kha/37/2	Sārdhadvayadvipā Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	27.5×13.6 38.11.49	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×18.3 45.12.40	C	Good 1937 V. S.	
P.	D; H. Poetry	28.8×12.4 15.9.39	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.3×13.2 12.10.15	C	Old	
P.	P; H. Poetry	17.5×14.4 27.11.20	C	Good 1921 V. S.	
P.	D; H. Poetry	24.5×10.6 25.8.33	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	24.5×16.5 8.21.18	C	Good	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	21.2×15.1 12.9.25	C	Good 1951 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	23.3×19.4 8.18.21	C	Good 1956 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	28.1×15.2 95.12.33	C	Good 1935 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	29.5×19.0 17.22.21	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	35.5×19.1 93.14.54	C	Old	

1	2	3	4	5
952	Jha/1	Sārdhadvaya dwīpastha Jinapūjā	—	—
953	Kha/32	Sāmāyika Paṭha	Bahumuni	—
954	Kha/80/1	Śāntyāṣṭaka Tikā	—	—
955	Jha/13/6	Śāntimantrābhiṣeka	—	—
956	Kha/210/Kha	Śānti Pāṭha	—	—
957	Ga/55/2	,, Vidhān	Śwarūpacand	—
958	Kha/233	,, ,,	—	—
959	Kha/72/1	Śāntidhārā Pāṭha	—	—
960	Nga/6/14	Siddhapūjā	—	—
961	Jha/38/1	,,	—	—
962	Kha/160/4	Sidhacakra	Devendrakīrti	—
963	Ga/51	Śikharamāhātmyā	Lālacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	31.3 × 15.6 106.12.40	C	Good 1868 V. S.	Sivalala seems to be copier.
P.	D; Skt. Poetry	31.0 × 12.6 16.9.38	C	Old 1836 V. S.	Unpublished.
P.	D; Skt. Poetry	26 8 × 14.3 34.10.43	Inc	Old 2440 Bir. S.	Last pages are missing.
P.	D; Skt./H Prose	24.5 × 12.5 17.21.14	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26.8 × 15.8 7.8.30	Inc	Good 2438 Vir S.	Copied by Dharamcand.
P.	D; H Poetry	28.5 × 12.9 43 9 36	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	30.5 × 17.4 17.12.48	C	Good	
P,	D; Skt Prose	28.0 × 17.0 6.9.31	C	Good 1947 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	22.8 × 18.1 3 17.25	C	Good	
P	D; H. Poetry	14.3 × 13.2 7.10.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	28.4 × 10.8 16.9.41	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	30.[illegible] × 19.1 49.12.34	C	Good 1955 V. S.	

1	2	3	4	5
964	Kha/140/1	Simhāsana Pratiṣṭhā	—	—
965	Kha/172/3	Solahakāraṇa Jayamālā	—	—
966	Nga/8/6	„ Udyāpana	—	—
967	Nga/5/7	Sudarśana Pūjā	Śikharacandra	—
968	Jha/28,5	„ „	—	—
969	Kha/98/3	Śrutaskandha Vidhāna	—	—
970	Jha/9/2	„ Pūjā	—	—
971	Jha/13/5	Swasti Vidhāna	—	—
972	Nga/2/1	Svādhyāya Pāṭha	—	—
973	Ga/20	Terahadwipa Vidhāna	—	—
974	Jha/14	Tisacaubisi Paṭha	—	—
975	Nga/8/8	Tisacaturvinśati Pūjā	Subhacandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	30.4×17.1 11.13.36	C	Old	Copied by Pt. Paramananda.
P.	D; Pkt. Poetry	27.2×18.2 17.6.29	C	Old 1952 V. S.	Copied by Gobinda Singh Varmā.
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 28.13.30	C	Good	
P.	D; H. Poetry	21.2×16.6 4.14.18	C	Good 1950 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.2×15.8 5.10.24	C	Good 1950 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.5×13.4 7.14.51	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	27.2×12.4 17.8.28	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.5×16.5 9.22.15	C	Good	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	19.4×15.5 4.13.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	37.5×19.8 183.12.41	Inc	Good	First page & last pages at missing.
P.	D; Skt. Poetry	24.4×15.2 73.18.15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 49.13.26	C	Good 1774 V. S.	

1	2	3	4	5
976	Ga/137	Tisa Caubisi Pūjā	—	—
977	Kha/78/1	Trikāla-Caturvimśati Pūjā	—	—
978	Ga/19	Trilokasāra ,,	Paṇḍit Mahācandra	—
979	Ga/3	,, Vidhāna	Jawāhara Lāla	—
980	Kha/241	Vajrapañjarādhanā Vidhāna	—	—
981	Ga/112/2	Vāsupujya Pūjā	—	—
982	Kha/240	Vāstupūjā Vidhāna	—	—
983	Ga/157/11	Vidyamāna Caturvimśati Jinapūjā	—	—
984	Ga/157/5	Vimśati Vidyamāna Jinapūjā	—	—
985	Kha/171/1	,, ,,	Śikharacandra	—
986	Kha/238	Vimānaśudhi Vidhāna	—	—
987	Jha/84	Vratodyotana	Abhradeva	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28.3×17.9 136.13.35	C	Good 1913 V. S.	
P.	D. Pkt. Poetry	29.6×15.2 13.11.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	42.8×21.3 148.13.33	C	Good 1954 V. S.	
P.	D; H Poetry	36.1×20.5 227.15.44	C	Good 1964 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	17.3×15.5 6.12.37	C	Good	Copied by N. N. Rāya.
P.	D; H. Poetry	20.9×16.5 5.13.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.2 9.12.32	C	Good	Copied by Nemirājā.
P.	D; Skt. poetry	12.7×00.0 29.9.18	Inc	Old	I to 5 Pages are missing.
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	18.2×11.9 6 12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.9×17.5 60.15.13	C	Old 1941 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	17.1×15.3 9.12.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.3×16.2 22.9.54	C	Good 1987 V. S.	

1	2	3	4	5
988	Jha/49/9	Vrihadnhavaṇa	—	—
989	Kha/154	Vṛhacchānti Pāṭha	Dharmadeva	—
990	Jha/122	Bimbanirmāṇa Vidhi	—	—
991	Jha/25/4	Caubīsa Daṇḍaka	—	—
992	Jha/56	Dvijavadana Capeta	—	—
993	Jha/92/2	Lokānuyoga	Jinasenācārya	—
994	Kha/177/2	Maṅdala Cintāmaṇi	—	—
995	Jha/117	Munivaṅśābhyudaya	Cidānanda Kavi	—
996	Jha/102	Trailokya Pradīpa	Indravāmadeva	—
997	Ga/88	Yantra dwārā vividha carcā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.2 14.14.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.6×13.3 27.14.49	C	Good 1937 V. S.	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	21.6×17.5 20.13.30	C	Good 1992 V. S.	
P.	D; H. Prose	22.9×15.4 7.18.15	C	Good	
P.	D; Skt Prose/ Poetry	20.9×18.9 28.16.22	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	35.2×16.3 81.11.49	C	Good 1989 V. S.	
P.	D; H.	00.0×00.0 1.00.00	C	Old	It is a sketch of cintāmani prepared by Munilāla.
P.	D; K. Poetry	33.8×16.3 40.10.45	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35.4×16.3 82.11.55	C	Good 1990 V. S.	
P.	D; H. Prose	36.4×28.8 68.25.40	C	Good	Unpublished.

जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

([illegible])

परिशिष्ट

(पुराण, चरित, कथा)

१. आदिपुराण

Opening : श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुषे ।
धर्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुषे ॥

Closing : यो नाभेस्तनयोऽपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयम्भूरिति
त्यक्ताशेषपरिग्रहोऽपि सुधियां स्वामीति यः शब्द्यते ।
मध्यस्थोऽपि विनेयसत्त्वसमितेरेवोपकारी मतो
निर्द्वन्द्वोऽपि बुधैरुपास्यचरणो यः सोऽस्तु वः शान्तये ॥

Colophon : इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-संग्रहे प्रथमतीर्थंकर चक्रधरपुराणं परिसमाप्तम् । सप्तचत्वारिंशत्तमः पर्वः ।

पुस्तक आदिपुराणजी कर भट्टारक राजेन्द्रकीर्ति जी को दिया लखनऊ में ठाकुरदास की पत्नी ललितपरसाद की बेटी ने मिति माघ बदी सं० १६०५ के साल में ।

द्रष्टव्य—प्र० जै० सा०, पृ० १०२ ।
जि० र० को०, पृ० २६ ।
आमेर भंडार के ग्रंथ, पृ० ११ ।
रा० सू०, पृ० २६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९ ।
Catg. of Sk. & Pkt. Ms., page-624.

२. आदिपुराण

Opening : देखें, क्र० १ ।

Closing : देखें, क्र० १ ।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणे

प्रथमतीर्थंकरप्रथमचक्रधरकेवलज्ञाने निर्वाणादिवर्णनं नाम महापुराणं समाप्तम् ॥४७॥ समाप्तोऽयं श्री आदित्यपुराणग्रंथः । अथ श्रीसंवत्सरे नृपति श्रीविक्रमादित्यराज्ञः सम्वत् १८५१ चैत्रमासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ रविवासरे पट्टनपुरनगरे लिखितमिदं महापुराण उदेरामब्राह्मणेन । ॥ शुभम् ॥

३. आदिपुराण

Opening : देखें, क्र० १ ।

Closing : देखें, क्र० १ ।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणे प्रथमतीर्थंकर प्रथमचक्रधर केवलज्ञान निर्वाणादिवर्णनोनाम महापुराणं समाप्तम् । समाप्तोऽयं श्रीआदिपुराणग्रंथः । अथश्रीसंवत्सरे नृपतिश्री विक्रमादित्यराज्ञः सवत् १७७३ आषाढे मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी तिथौ-भौमवासरे पाटलिपुरेनगरे लिख्यतमात्मने ब्रह्मचारिणा सानंदेन ॥

४. आदिपुराण

Opening : देखें, क्र० १ ।

Closing : देखें, क्र० १ ।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-संग्रहे प्रथमतीर्थंकरचक्रधरनिर्वाणगमणपुराण परिसमाप्ति सप्तचत्वारिंश-तम पर्वं ॥४७॥

कर्द्दुनाभिता सत्याप्रवाऽयासुमनीविभिः ।
श्रेयमादिपुराणाद्धिमणित सुसमीहितम् ॥
.. ... .श्री हरिकृष्णसरोजराजराजितपदपंकज ।
सेवतमधुकरसुभटब्रजमंत्रिततनुअंकज ।
यह पुरण लिख्यौ पुराणातिन शुभ शुभ कीरति के धनको ।
अममतु जगमनिजसुभटलशिष्यसुथिरधर परसरामकें कथनको ।
शुभ भव सुमगलम् श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥

५. आदिपुराण

Opening : प्रणमि सकल सिद्धनिकूं, प्रणमि सकल जिनराज ।
प्रणमि सकल सिद्धान्तकूं, नमि गणधर के पाय ॥

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्ये......लक्षणमहापुराणे [illegible]कर प्रबन्धककथापुराणसंग्रहस्यारिश[illegible] पर्व पूर्णं भया। इति श्री आदिनाथ पुराण भाषा संपूर्णं। शुभं भवतु। मिती चैत्रवदी ११ संवत् १६६१ शुभ जनापुरी मध्ये।

९. आदिनाथ पुराण

Opening : श्रीमंतं जिननाथमादितीर्थकरं परम् ॥
फणीन्द्रनरेन्द्रार्च्यं वंदेनंतगुणार्णवम् ॥१॥

Closing : मुष्टात्रिंशाधिका भोष्ट् चत्वारिंशच्छतप्रमाः ॥
अस्याद्यर्हत्पुरिवस्य स्युः श्लोकाः पंडिता बुधैः ॥

Colophon : इति श्री वृषभनाथचरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचिते वृषभनाथनिर्वाणगमनवर्णनो नाम विंशः सर्गः ॥२०॥

मिति पौष शुक्ल १५ चंद्रवासरे संवत् १६७० ॥ लिखितमिदं पुस्तकं मिश्रोपनामक गुलजारीलाल शर्म्मणा। शुभं भवतु। भिण्डाग्रामनगरवासोस्ति ॥

श्लोक संख्या ४५०० प्रमाण, संवत् १७६७ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है।

देखें—जि० र० को०, पृ० २८।
Catg. of skt. & pkt. Ms., Page 624.

१०. आराधनाकथा कोश

Opening : श्रीमद्वृषभकस्यारूपान् लोकालोकप्रकाशकान्।
आराधना कथाकोशं वक्ष्ये नत्वा जिनेश्वरान् ॥

Closing : भव्यानां वरशांतिकान्तिविलसत्कीर्तिप्रमोदं श्रियं।
कुर्यात्स रचिता: विशुद्धशुभदा: श्रीनेमिदत्तेन वै: ॥

Colophon : इति श्री कथाकोशे भट्टारके श्रीमल्लिभूषणशिष्य ब्रह्मनेमिदत्तविरचिते श्रीजिनपूजादृष्टांतकथा वर्णनायां चतुर्थपरिच्छेदः समाप्तः। १११/संवत् १८४८/शाके १७१३/समयनाम आश्विनमासे कृ (ष्ण) पक्षे षष्ठी रविवार लिखित पं माहवाम्नाय पटणामध्ये स्वस्थान काशी मध्ये।

देखें— दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३-४।
प्र० जै० सा०, पृ० १७४-१७५।
रा० जै० भं० सू० III, पृ० २३५।

जि० र० को०, पृ० ३२।
Catg. of Skt. & pkt. Ms., page, 626.

११. आराधनाकथा कोश

Opening : देखें, क्र० १०।

Closing : तेषां पादपयोजयुग्मकृपया श्री जैनसूत्रोदिताः,
सम्यग्दर्शनबोधवृत्ततपसामाराधनासत्कथाः ॥

Colophon : इति श्री कथाकोशे भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्यब्रह्मनेमिदत्तविरचिते श्री जिनपादपूजाफलदृष्टान्तकथा वर्णनायां चतुर्थः परिच्छेदः समाप्तः। संवत् १८०७ वर्षे फाल्गुन सुदी ६ बुधे लिखितम् श्री श्री साहिजहानाबाद मध्ये। शुभं भवतु। श्रीरस्तु। लेखकपाठकयोः।

१२. आराधनासार

Opening : श्री अरिहंत जिनेसुरजी इस ग्रंथ की आदि सुमंगलदाई।
लोक अलोक प्रकाशकदेव समोष्टत आदिक ग्रन्थहाई ॥

Closing : जैवंतो निशदिन रहो, जैनधर्म सुखकंद।
ता प्रसाद राजा प्रजा, पावो बहुआनन्द ॥

Colophon : इति श्री आराधनासार कथाकोष समाप्तम्। शुभम्।

१३. भद्रबाहुचरित्र

Opening : सद्बोधभानुनाभित्वा जन्तूनां सततं तमः।
यः सन्मतित्वमापन्नः सन्मतिः सन्मतिं क्रियात् ॥

Closing : श्वेतांशुकमतोद्भूतिं श्रुत्वा ज्ञापयितुं जनान्।
व्यरीरचमिमं ग्रंथं, न स्व पांडित्यगर्वतः ॥

Colophon : इतिश्री भद्रबाहुचरित्रे आचार्य श्री रत्ननंदिविरचिते श्वेताम्बरमतोत्पत्ति यापलिमतोत्पत्ति वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः। इति भद्रबाहुचरित्र समाप्तम्। पंडितदयारामेन लिखापितम्।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४।
प्र० जै० सा०, पृ० १६३।
जि० र० को०, पृ० २९१।

१४. भद्रबाहुचरित्र

Opening : देखें—क्र० ११।

Closing : देखें—क्र० ११।

Colophon : इति श्री भद्रबाहुचरित्रे आचार्य्य श्री रत्ननंदिविरचिते श्वेतांबरमतोत्पत्ति आपलिमतोत्पत्तिवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः ॥ इति श्री भद्रबाहुचरित्र समाप्तम् ॥ नीलकण्ठदासेन लिखितम् ॥

१५. भगवत् पुराण

Opening : श्रीमंतं परमेश्वरं शिवकरं लीलानिवासं शिवम्,
तोम्यानन्तशिवं महोदयमहं लोकत्रयाच्चस्पिदम् ।
तं योगीन्द्रनृपेन्द्रदेवनिकरैः संस्तूयमानं सदा,
यद्दृष्टया भुवनत्रयेपि नितरां पूज्यो भवेन्मानुषः ॥

Closing : खखवह्निशिखिश्लोकसंख्याः प्रोक्ता कवीशिना ।
श्रीमतोऽस्य पुराणस्य लेखयंतु सुखार्थिना ॥

Colophon : इति श्री भगवत्पुराणे महाप्रासादोद्धारसंदर्भे भ० श्री रत्नभूषण भ० श्री जयकीर्त्याम्नायप्रबेकनरपत्याचार्य शिष्यब्रह्ममंगलाग्रज मंडलाचार्य श्री केशवसेनविरचिते श्रीऋषभनिर्वाणानंदनाटक वर्णननामा द्वाविंशतितमः स्कन्धः ॥२२॥ संवत् १६६८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे पूर्णमास्यां तिथौ भृगुवासरे श्री अवंतिकापुर्यां श्री महावीरचैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्रीरत्नभूषणतत्पट्टे भ० श्रीजयकीर्ति तद्गुरुभ्राताम्ंडलाचार्य श्री केशवसेन तच्छिष्याचार्य श्री विश्वकीर्ति अवल ब्र० कनकसागर ब्र० दीपजी सिद्धान्ती ब्र० राजसागर ब्र० इन्द्रसागर ब्र० मनोहर बा० दानां बा० लक्ष्मी बा० कमलावली पं० चंपायण पं० योगराज पं० मायाराम प० बलभद्र इति संघाष्टक चिर जीयात् । आचार्य श्री विश्वकीर्तिपठनार्थं जोसी उद्धवेन लिखितमिदं पुस्तकं चिरंतेतु ।
संवत् १९८९ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ श्री आरानगर्यां श्री स्व० देवकुमारेण स्थापित श्री जैन सिद्धान्तभवने तत्पुत्रबाबू निर्मलकुमारस्य मंत्रित्वे श्री पं० के० भुजबलीशास्त्रिणः अध्यक्षत्वे च संग्रहार्थमिदं पुस्तकं लिखितम् । शुभमस्तु ।

१६. भक्तामर कथा

Opening : प्रथम पीठि कर जोरि करि गुरु भक्ति सिर नावै ।

वसुविधि अह नव निधि वृद्धि कु रिद्धि जाते आइवे ॥

Closing : कही विनोदीलाल शारदसुत परतापतैं।
पूरन भई रसाल अद्भुत कथा सुहावनी ॥

Colophon : इति श्री प्रथम जिनेन्द्रस्तवने श्री भक्तामर महात्चरित्रे भाषा लालविनोदीकृत ....कथा सम्पूर्णम् । सब मिलके चौपही दोहा ॥ ३७५६ ॥ संवत् ॥ १९३८ मिती सावनसुक्लपक्षे अष्टम्यां मंगलवासरे आरा नगरे सम्पूर्णम् ।

१७. भक्तामर कथा

Opening : देखें, क्र० १६।

Closing : संख्या परम रसाल देखहु याही ग्रन्थ की।
कही विनोदीलाल षट् सहस्त्र द्वै सतक पुनि ॥

Colophon : श्री इति प्रथम जिनेन्द्र स्तवन श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लाल विनोदीकृत चौपाई बंध अड़तालीसमी कथा सम्पूर्ण। सर्वकथा चौपाई छंद श्लोक दोहा अरिल्ल (अडिल्ल) कुंडलिया सोरठा काव्य ॥ ३७६० ॥ संपूर्ण शुभमस्तु। पौषमासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ चंद्रवासुरे संवत् १९५४। दस्तखत बलदेवदत्त पंडित के।

१८. भक्तामर चरित्र

Opening : देखें, क्र० १६।

Closing : देखें, क्र० १७।

Colophon : इति श्री प्रथम जिनेन्द्रस्तवने श्री भक्तामरचरित्रे भाषा लाल विनोदि कृत चौपाई बंध अड़तालीसमी कथा समाप्तम्। सर्वकथा चौपाई छंद श्लोक दोहा अरिल्ल कुंडलिया सोरठा काव्य। ३७६०। मिति श्रावणकृष्ण दशम्यां रोज मंगर (ल) वार संवत् १९५५। श्लोक ५४००।

यह ग्रंथ लिखावित बाबू श्रीयीशदास वास्ते लोचना बीबी के वास्ते देने श्री मुनीन्द्रकीर्ति श्री भट्टारक जी को देने को लिखा मुन्नीलाली ने।

१९. चन्द्रप्रभचरित्र

Opening : वन्देऽहं सद्वानन्दकन्दलीकन्दचन्दुरम्।
चन्द्राङ्कं चन्द्रप्रभं चन्द्रनाथं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥

चन्द्रप्रभार्हच्चरितस्य काव्यं व्याख्यायते मया ।
विशमन्वयरूपेण स्पष्टसंस्कृतभाषया ॥ २ ॥

Closing : इति वीरनन्दिकृतावुदयाङ्के चन्द्रप्रभचरिते महाकाव्ये तद्व्याख्याने च विद्वन्मनोवल्लभाख्ये अष्टादशः सर्गः समाप्तः ।

Colophon : शक वर्ष १७६१ नेत्रविकारि संवत्सरद माघ शुद्ध १ .... श्रीमच्चारुकीर्ति पंडिताचार्यवर्य स्वामियवर पादकमल भृंगोपमानियाद बेलगुलदयि वर्णदवलिष्टमोत्रद विजयं पेयनुयी चन्द्रप्रभा काव्यदव्याख्यानद पुस्तक बरदु संपूर्णवायितु आचंद्रार्कपर्यंत भद्र शुभं मंगलम् ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ११६ ।
Cat. of Skt. & Pkt. Ms., Page-640.
Cat. of Skt. Ms., P. 302.

२०. चन्द्रप्रभ पुराण

Opening : श्री चन्द्रप्रभु पदकमल, हाथ जोड़ सिर नाय ।
प्रणम शारदा मातपुन, गुरु के लागू पाय ॥

Closing : यही उत्तम जगत माँही चार सब अघहार ।
सरन इनही की सुहीरा, लाल भवदध तार ॥
हमरै यही मंगलचार ॥

Colophon : इति श्री चंद्रप्रभुपुराणे कनककुलनामगाम वर्णनो नाम सत्तरमो अधिकार पूर्णभया । इति श्री चन्द्रप्रभुपुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
मिति जेठवदी १ संवत् १९७८ । शुभं भवतु ।

२१. चतुर्विंशति जिन भवावलि

Opening : जयादिवह्मा च महाबलोभवत्,
ललितम्यदेहत्ववज्रजंघक: ।
मार्यस्ततः श्रीधरको विधिस्ततो,
च्युतेन्द्र नाभिस्त्वहमिंद्र कवंभे ॥

Closing : देवो विश्वकर्मदिदेवहृरथयो भूसारक: केसरी,
धर्मातारकसिंहदेवकनको श्रोत्तं पुरो सांतवें ।
राजाभूद्वरिषेणकसूरइहल्वकौशुरोनंदक:,
स्वर्गे षोडशमेहरिजिनवरोवीराबतारास्मृता: ॥

Colophon : इति चतुर्विंशतिजिन भवावलि संपूर्णम् ।

२२. चारुदत्तचरित्र

Opening : चरण नमों महावीरके, हरन सबै दुखदंद ।
तरन जु तारन जगत को, करन महासुख कंद ।।

Closing : चारुदत्त संपति विभो अहिमिंदर पद कहि- चरन ।
इस भांति चरित्र वाचो सुनो सकल संघ मंगलकरण ।।

Colophon : इति श्री चारुदत्त चरित्र भाषा भारामल्ल विरचितं सम्पूर्णम् । लिखितं गुलजारीलाल निवासी रत्नगढ़ के जैनी पद्मावती पुरवार रोज बृहस्पतिवार संवत् १९६० मिती चैत्र शुक्ल ५ पंचमी शुभम् ।

२३. चेतनचरित्र

Opening : श्रीजिनचरण प्रणामकरि, भविक भगति उरआनि ।
चेतन अरु कछु करमको, कहौं चरित्र बखानि ।।

Closing : संवत सत्रहसैचतीस मैं, जेष्ठ सप्तमी आदि ।
श्री गुरुवार सुहावनौ, रचना कही अनादि ।।

Colophon : इति श्री चेतनकर्मचरित्र संपूर्णम् । मिति श्रावण बुदी १३ संवत् १९५८ ।

२४. चेतनचरित्र नाटक

Opening : पारस चरन सरोजरज, सरस सुधारउसार ।
जेहि सेवत जड़ता नसै, सज सुबुद्धि सुखकार ।। १ ।।
पंच परमपद को नमों, सर्वसिद्धि दातार ।
चेतन कर्मचरित्र को कहूं कछू अधिकार ।। २ ।।

Closing : आप विराजो महल आपने समर भूमि जाता हूं,
जितने आये सभी को बंदी करके लाता हूं ।
सुमति मनावै जिनवर ध्यावो समर जीति मैं आता हूं,
मैं भी आपका राजवीर बाल वीर कहलाता हूं ।
अपने मालिक के दुश्मन को सूरवीर यदि पाता है,
तो मारे बिन निरख जम केहूं, बधा गम खाता है ।।

Colophon : इति चेतनचरित्र नाटक संपूर्ण ।

२५. दर्शनकथा

Opening : श्री रिषभनाथ जिन प्रणमौ तोहि।
अजर अमर पद दीजे मोहि ॥
अजित जिनेश्वर वंदन करौं।
कर्मकलंक छिनक में हरौ ॥

Closing : दर्शन कथा पूरणभई, पढै सुनै सब कोय।
दुख दलिद्र (दरिद्र) नासैं सबै, तुरत महासुख होय ॥
॥ ८१ ॥

Colophon : इति श्रीदर्शनकथा सम्पूर्ण। मिती अगहन वदी ३० सवत् १९६१ मुकाम चन्द्रापुरी।

२६. दर्शनकथा

Opening : देखें क्र० २५।

Closing : दुख दरिद्र सब जाय नशाय।
जो यह कथा सुनो मनलाय ॥
पुत्रकलित्र बढ़ै परिवार।
जो यह कथा सुनै नरनार ॥

Colopnon : इति दर्शन कथा सम्पूर्णम्।
यह ग्रन्थ संवत् १९४० में मनोहरदास आरा के मंदिर में चढ़ाया गया था।

२७. दशलाक्षणी कथा

Opening : अर्हंतं भारती विद्यानंदिसद्गुरु-पंकजम्।
प्रणम्य विनयात् वक्ष्ये दशलाक्षणिकं व्रतम् ॥ १ ॥
राजगेहात्समागत्य वैभारवरभूधरम्।
श्रेणिको नमतिस्मोच्चैः वीरं गंभीरधीधरम् ॥ २ ॥

Closing : जातः श्रीमतिमूल संघतिलके श्री कुंदकुंदान्वये,
विद्यानंदिः गुरुर्वरिष्ठमहिमा भव्यात्मसंबुद्धये।
तच्छिष्य श्रुतसागरेण रचितं कल्याणकीर्त्याग्रहे,
भव्येयाद्दशलाक्षणव्रतमिदं भूयाच्चसत्संपदे ॥

Colophon : इति श्री दशलाक्षणिक कथा समाप्ताः।

२८. दशलाक्षणीकथा

Opening : रिषभनाथ प्रनमूं सदा, गुरुनमकार के पाय ।
तीन भवन विख्यात है, सब प्राणी सुखदाय ॥

Closing : भूला चूका होय जो, लीजो सुकवि सुधार ।
मोह दोस दीजै नहीं, करो सु सब हितकार ॥

Colophon : इति दशलाक्षणी कथा समाप्तम् ।

२९. दान कथा

Opening : देव नमो अरिहंत सदा और सिद्ध समूहन को सिरनाई ।
सूरज आचार को भजौ और नमों उपध्याय के तिल पाई ॥

Closing : दानकथा पूरन भई, पढ़ै सुनै नित सोई ।
दुख दालिद्र (दारिद्र) नासै सबै, तुरत महासुख होई ॥

Colophon : इति श्री दानकथा संपूर्ण । लिखितं पंडित रामनाथ पुरोहित मुकाम चन्द्रापुरी ।

३०. धर्मशर्माभ्युदय

Opening : श्री नाभिसूनोश्चिरमंङ्घ्रियुग्म नखेंदवः कौमुदमेधयंतु
यत्रानमन्नाकिनरेंद्रचक्रचूडाश्मगर्भप्रतिबिंबमेणः ॥ १ ॥

Closing : अभजदथविचित्रैर्वाक् प्रसूनोपचारैः
प्रभुरिह चंद्रारांधितोमोक्षलक्ष्मीम् ।
तदनुतदनुयायी प्रापपर्यंतपूजोपचित
सुकृतराशिः स्वं पदं नापिलोकः ॥ १२५ ॥

Colophon : इति श्री महाकवि हरिचन्द्रविरचिते धर्मशर्माभ्युदये महाकाव्ये श्री धर्मनाथ निर्वाणगमनो नाम एकविंशतितमः सर्गः ॥ २१ ॥ श्री संवत् १८८९ कार्तिक धवल पंचम्याम् । अग्रवाल आरानगरे वासलगोत्रे बाबू जीवनलाल जी तथा भुपाल चंद जी तेन इदं शास्त्रं लिखापितं तथा उत्तमचंदजी वा जो धनलाल जी अहेलाल तथा प्यारेलालजी इदं शास्त्रं लिखापितम् ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १९२ ।

(३) रा० सू०, पृ० २१० ।
(४) जि० र० को०, पृ०१९३ ।
(5) Catg. of Skt. & Pkt. Ms. Page-656
(6) Cat. of Skt. Ms. P. 302

३१. धर्मशर्माभ्युदय सटीक

Opening :

जयति जगति मोहध्वांतविध्वंसदीपः,
स्फुरित कनकमूर्तिर्ध्यान लीनो जिनेन्द्रः ।
यदुपरि परिकीर्णस्कंधदेशाजटाली,
विगलितसरलातः कज्जलाभाविभति ॥

Closing : ………तदनुयायी तत्सेवातत्परः सन् कृतनिर्वाणकल्याणमहोत्सवोपार्जितपुण्यराशिर्निजं निजं स्थानं चतुर्णिकायामरसंघातो जगाम ।

Colophon : इति श्री मण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिशिष्य पंडित श्री यशःकीर्तिविरचितायां संदेहध्वांतदीपिकायां धर्मशर्माभ्युदयटीकायां एकविंशतिमः सर्गः । स्वस्तिश्री संवत् १६५२ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यांतिथौ गुरुवासरे अंबावती वास्तव्ये राजाधिराज श्रीमानसिंह जी राज्ये श्री नेमिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदान्वये भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तिः तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधागोत्रे सा. पचाइण भार्या पुंहसिरि तत् पुत्री द्वौ प्रथम सा. नूना द्वितीय सा. पूना………नूता पु. सा. वीरदास भार्या ल्हौकम चांदणदे सियारदे एताभिर्मिलित्वा धर्मशर्माभ्युदयकाव्यस्य टीका लिखाप्य आचार्य लक्ष्मी चन्द्रायप्रदत्ता ।

शुभमिति ज्येष्ठशुक्ला द्वितीया शुक्रवार विक्रम सम्वत १९९० को यह पुस्तक लिखकर पूर्ण हुई, जिसे आरा निवासी स्वर्गीय बाबू देवकुमार द्वारा स्थापित श्री जैनसिद्धान्त भवन में संग्रह करने के लिए पं० के० भुजबली जी शास्त्री अध्यक्ष के द्वारा बाबू निर्मल कुमार जी मंत्री जैन सिद्धान्त भवन ने लिखवाया । रोशनलाल ने लिखा ।

३२. धन्यकुमार चरित्र

Opening : श्रीमंतं जिनं नत्वा केवलज्ञानलोचनम् ।
वक्ष्ये धन्यकुमारस्य वृत्तं भव्यानुरंजनम् ॥

Closing : तां त्रि: परीत्य सद्भक्त्या तं दृष्ट्वा केवले क्षणम् ।
कनत्कांचनसद्रत्नं सिंहासनमधिस्थितम् ॥

Colophon : उपलब्ध नहीं ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० १८७ ।

३३. धन्यकुमार चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३२ ।

Closing : इह निचोर (ड़) इस ग्रन्थ को यही धर्म की मूर (मूल) ।
सुद्धातम ल्यौ लाये मिटै कर्म अंकूर ॥ ६४ ॥

Colophon : इति धनकुमार चरित्र सम्पूर्णम् । संवत् १९३२ चैत्र वदि ७ शुक्रवार शुभम् । श्लोक संख्या १२२४ ।

३४. धन्यकुमार चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३२ ।

Closing : धन्यकुमार चरित्र यह पूरन भयो विशाल ।
(प) ढ़त सुनत सुख उपजै आनंद मंगलकार ॥

Colophon : इति धन्यकुमार चरित्र सम्पूर्णम् ।

३५. दुधारस द्वादसी कथा

Opening : वीनवे उग्रसेन की लाडली कर जोरिके नेमि के आगे खड़ी ।
तुम काहे पिया गिरनार बैठो हमसेती कहो कहा चूक परी ॥

Closing : कथाकोष में जो कहा, ताको देखि विचार ।
सेवक भाषा मनधरी, पढ़ो भव्य चितधार ॥

Colophon : इति दुधारस द्वादशी कथा समाप्ता ।
लिख्यतं प्रभूदास अग्रवाला । मिति वैशाख सुदी २ शुक्रवार संवत् १९१८ ।

३६. गजसिंह गुणमाला चरित्र

Opening : श्री ऋषभादिक जिनवर नमूं, चौवीसों सुखकंद।
बरसण दुखदूरै हरै, तामैं नित आनंद॥

Closing : जो नरहनारी सीलधारी तासमनि अतिमंडणी।
शिवसुखकरणी दुखहरणी कमयसयसविहंमणी॥

Colophon : इति श्री गजसिंह गुणमालचरित्रे गुणमाल तपकरण······ उपधानवहन राजा-धर्मशास्त्रबारसा रचना श्रवण हुकमकुमर पदस्थापन राजागुणमाल दीक्षाग्रहणदेवलोक गमनाधिकार षष्टं खंड सपूर्णः। इति श्री तपगच्छमध्ये चंद्रशाखायां पंडित श्री मुक्तिचंद्र तत् शिष्य पंडित श्री खेमचन्द्रविरचितायां गुणमाल चौपई सम्पूर्णः। संवत् १७८८ वर्षे मिति चैत्र सुदि पचमी दिने अतिकुसला लिखितं श्री मालपुरामध्ये। श्रीरस्तु।

३७. गजसिंह गुणमाला चरित्र

Opening : देखें—क्र० ३६।

Closing : देखें-क्र० ३६।

Colophon : इति श्री गजसिंह गुणमाला चरित्रे गुणमाला तपकरण तपउपधान वहण राजाधर्मशास्त्रचारभारचना श्रवण हुकम कुमार पट्टस्थापन राजा गुणमाला दीक्षाग्रहणदेवलोक गमनाधिकार षष्टं खंड समाप्त। मिति फागुन वदी १५ संवत् १९८४ श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा लिखितं भुजबल प्रसाद जैन मालथौन जिला-सागर।

३८. हनुमान चरित्र

Opening : सद्बोधसिंधु चन्द्राय, सुव्रताय जिनेशिने।
सुव्रताय नमोनित्यं, धर्मशर्माय सिद्धये॥

Closing : पठकः पाठकस्त्वैन, वक्ता, श्रोता च भावके,
चिरं नंदतयं ग्रंथः तेन सार्द्धं युगावधिः।
प्रमाणमस्य ग्रंथस्य त्रिसहस्त्रमितं बुधैः
श्लोकानामिहमंतव्यं हनुमच्चरित्रे शुभे॥

Colophon : इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्मजितविरचिते एकादशः सर्गः

सर्गः (समाप्तः) । शुभं भवतु ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९२ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४५६ ।
(३) आ० सू०, पृ० १६० ।
(४) रा० सू० III, पृ० २२१ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २० एवं ५३४ ।
(6) Catg. of Skt & Pkt. Ms. Page-714.

३९. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : देखें, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनूमंच्चरित्रे ब्रह्माजितविरचिते द्वादशसर्गः समाप्तः ॥

४०. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : देखें, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्माजितविरचिते एकादश: सर्गः समाप्तः ॥ १२ ॥ हस्ताक्षर बद्रुक प्रसाद ॥ मुकाम जैन सिद्धान्त भवन—आरा ॥ संवत् १९७८ ॥

४१. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : देखें, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनुमानचरित्रे ब्रह्माजितविरचिते द्वादसं सर्गं समाप्त । मिती फागुनवदी ३ संवत् १९८४ लिखतं भुवनप्रसाद जैनी मुकाम मालथोन जिला सागर निवासी ने ।

४२. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : जिनवर एक वचन मो देहु । कुगुरु कुमारग निवारहु तेहु ॥
होहि सर्व सन्यासह मरन । भव भव धर्म जिनेश्वर सरन ॥

Colophon : इति श्री हनुमंतचरित्रे आचार्य श्री अनंतकीर्तिविरचिते हनुमन्निर्वाणगमनो नाम पंचमो परिच्छेद । इति श्री हनुमच्चरित्र-सम्पूर्णम् । संवत् १६०१ का शाके १७६६ वा जेठ मासि कृष्णपक्षे तिथौ १३ बुधवासरे सवाई राजा रामसिंह जी को राज । लिखत महात्मा जोशीपन्नालाल लिखी सवाई जयपुर म (मे) । श्रीरस्तु ।

४३ हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : देखे, क्र० ४२ ।

Colophon : इति श्री हनुमानचरित्र आचार्य श्री अनंतकीर्तिविरचिते हनुमननिर्वाणगमनोनाम पचमो परिच्छेद । इति हनुमानचरित्र सम्पूर्णम् । श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ रविवासरे संवत् १६५५ ।

४४. हरिवंश पुराण

Opening : सुरवइसय वंदहु तिजणवइहु, सिरि अरिट्ठणेमिहु चरणं ।
पणविवितहु वंसहु कहजयसंसहु भणमि सवणमणसुदरयणं ॥

Closing : चिरुणंदउ सच्छो जामणहच्छो रविससिगणहणरकत्त गणु ।
कइयणणिरुसोहहु दोसु णिरोहहु सुणउपय ''' भव्वयणु ॥

Colophon : इय हरिवंसपुराणे मणवंछियफलेण सुपहाणे सिरिपण्डिय रइधूवणिए सिरिमहाभव्वसाधु लाहासुय संघाहिवजोणाणमणिग सिरि अरिट्ठणेमि णिव्वाणगमण तहेव दायारवं सुद्दंसण णाम चउदहमो सधी परिछेऊ सम्मत्तो संधि ॥ १४ ॥

अथसंवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १६५८ वर्षे वैशाखसुदि पंचमी आदित्यवासरे''''' '' भगउतीदासतेनेदं हरिवंस शास्त्रलिखापितम्, ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त लिखापितम् । इति हरि-पुराणरयधूकृत समाप्तम् । मिति वैशाखशुक्ल १० संवत् १६८७ ह० प० शिवदयाल चौबे चन्देरी वालों के ।

४५. हरिवंश पुराण

Opening : पयडिय जय हंसहो कुणय विहंसहो ।
भंविय कमल सरहंसहो पणविवि जिणहंसहो ॥

Closing : जामहि गहु सायरु चंदु दिवायरु, ता पवडउ ठिवहाहु कुलु ।
जेवि राहुहि वरियउ कुरुवंस हुयहियउ, कारावियउ हय पावमालु ॥

Colophon : इय हरिवंसपुराणे कुरुवसहिट्ठए विबुह चिताणुरंजणे सिरि गुणकित्ति सीस मुणि जसकित्ति विरइये साहु ठिवहा णाम किए णेमिणाह जुधिट्ठर भीमज्जुण णिव्वाणगमणं णिकुल सहदेव सव्वट्ठसिद्धि गमणं वण्णणो णाम तेरहमो सग्गो समत्तो । संधि १३ । इति हरवंस पुराण समाप्त । चैत्र सुदी १४ संवत् ८५ ? ।

४६. हरिवंश पुराण

Opening : सिद्धं सम्पूर्ण ...... प्रतिपादनम् ॥

Closing : रक्षा कुर्वन्तु संघस्य जिनशासनदेवता ।
पालयंतोखिलं लोकं भव्यसज्ज्ञानवत्सला ॥

Colophon : इति श्री हरिवंसपुरसणे ब्रह्म श्री जिनदास विरचिते नेमिनिर्वाण गमन वर्णनो नाम चत्वारिंशतमः सर्गः । इति हरिवंश पुराण समाप्तम् ।

यह पुस्तक पं० पन्नालाल जी (उदासीन आश्रम तुकोगंज इंदौर) के मार्फत लिखाई गई । मिति माघकृष्ण २ सं० १९८८ ह० पं० शिवदयाल चौबे चन्देरी वालों के ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४६० ।
(२) आ० सू०, पृ० १६१ ।
(३) जैन ग्रन्थ प्र० सं, I, पृ० १०० ।
(४) प्रश० सं० II, पृ० ७० ।
(५) रा० सू० II, पृ० २१८ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २२४ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P 715.

४७. हरिवंश पुराण

Opening : सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षणं द्रव्यसाधनम् ।
जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साधनाद्यथशासनम् ॥ १ ॥

Closing : आशीर्वाद ॥ मांगल्यम् .... ॥

Colophon : अथसंवत्सरेऽस्मिन् श्रीविक्रमादित्यमहीभृतोरुद्धा ।

संवत् १८६४। तत्र शाके १७२९। वैसाखमासे कृष्णपक्षे द्वितीया भृगुवासरे। लिखित गोपलिराम तिवारी। पोथीलिखी मैनपुरी श्रीहुकमगंजमध्य: ॥

यावज्जिनस्य धर्मोऽयं लोकोस्थितिदयापर: ।
यावत्सुरनदीवाहस्तावन्न्दतु पुस्तकम् ॥
यादृशं पुस्तकं.......... दीयते ॥

द्रष्टव्य–(१) जि० र० को०, पृ० ४६० ।
(२) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३ ।

४८. हरिवंश पुराण

Opening : देखें, क्र० ४७ ।

Closing :
सेवक नरपति को सही, नाम खुशीलराम ।
तानै इह भाषा करी, जपकरि जिनवर नाम ॥
श्रीहरिवंश पुराण की, भाषा सुनऊ सुजान ।
सकलग्रथ संख्या भई, सहस एकीस प्रमाण ॥

Colophon : इति श्रीहरिवंश पुराण भाषा वचनिका सपूर्णम् । श्लोक अनुष्टुप सख्या एकीस हजार । २१,००० । सवत् १८८४ मासासमे मासे चैत्रमासे शुक्ले पक्षे सप्तम्या भौमवासरे । पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मा लेखि । पट्टनपुरमध्ये गायघाट क्षत्री महलमध्ये निवास शुभमस्तु कल्याणकमस्तु । सिद्धिरस्तु मगलमस्तु पुस्तक लिखायित बाबू जिनवरदास जी ने ।

४९. हरिवंश पुराण

Opening : देखें, क्र० ४७ ।

Closing :
तवहिदेव तासौं फिरि ओई ।
सो ती मुरि ··· ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

५०. जम्बूस्वामी चरित्र (११ सर्ग)

Opening :
श्रीवर्धमानतीर्थेशं वंदे मुक्तिवधूवरं ।
कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृतम् ॥

Closing : सर्वेक्षतिप्रमाणानि शतान्यकपरित्यके ।
विप्राद् सत्कविलोकानां शुभानां संति निश्चितम् ॥

Colophon : इति श्री जम्बूस्वामीचरित्रे ब्रह्मजिनदासविरचिते विद्युच्चरमहामुनि सर्वार्थसिद्धिगमनं नामैकादशः सर्गः ।

यावल्लवण समुद्रो यावन्नक्षत्रमंडितो मेरु ।
यावच्चन्द्रदिवाकरौ तावदयं पुस्तको जयतु ॥

संवत् १६०८ की प्रति से यह नकल की गई है ।

मिति ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां १४ शनिवासरे संवत् १९७१ लिखितमिदं पुस्तकं मिश्रीलालक गुलजारीलालशर्मणा भिंडग्रामनगरवास्तोऽस्ति रि० ग्वालियर ।

यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिख्यते मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १२७ ।
(३) आ० सू०, पृ० ५६ ।
(४) रा० सू० I, पृ० ६८, ६९, १३१, २१० ।
(५) जि० र० को०, पृ० १३२ ।

५१. जम्बूस्वामी चरित्र

Opening : देखें, क्र० ५० ।

Closing : देखें, क्र० ५० ।

Colophon : इत्यार्षे श्री जंबूस्वामीचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते विद्युच्चरमहामुनि सर्वार्थसिद्धिगमनो नामैकादशः सर्गः ॥ ११ ॥

श्री संवत् १६६४ वर्षे आसोज सुदि १५ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणगुरुपदेशात श्रीजोहा वास्तव्यहुंबडज्ञातीय सा, श्री का [illegible] नकादेतायाः पुत्र सो. माइका भार्या ललतादेतायाः पुत्रत्रय:च भार्याबाडमाद प्रभृमहींमां प्र तृपजे सयति, स्वज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं बाइजीजयवाय इदं लिखाप्य दत्तम् । लेखकपाठकयोः शुभं भवतु । साहरांमाकेन लिखितमिदं वडतालिनवातनं श्री । श्री जंबूस्वामिचरित्र भट्टारक श्री सकलकीर्तिकृत । भ. श्री जिनचन्द्रस्य पुस्तकमिदं ।

५२. जम्बूस्वामी चरित्र

Opening : उद्दीपीकृतपरमानंदाद्यात्मचतुष्टयं च बुद्धया।
निगदंति यस्य मभिद्धि स्वमिहतं स्तुवे वीरम् ॥

Closing : जंबूस्वामीजिनाधीशो भूयान्मंगलसिद्धये।
भवतां भुवि भो भव्या. श्री वीरांतिमकेवली ॥

Colophon : इति श्री जंबूस्वामिचरित्रे भगवच्छ्रीपश्चिमतीर्थंकरोपदेशानुसरित स्याद्वादानवद्यगद्यपद्यविद्याविशारद पंडित राजमल्लविरचिते साधुपासात्मजसाधुटोडरसमभ्यर्थिते मुनि श्री विद्युच्चर सर्वार्थसिद्धिगमनवर्णनो नाम त्रयोदशमः पर्वः।

शब्दार्थैरर्थवच्छास्त्रं यथेदं याति पूर्णताम्।
तथा कल्याणमालाभिः वर्द्धतां साधु टोडरः ॥

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द संवत् १६३२ वर्षे चैत्रसुदी ८ वासरे .... परमश्रावकसाधु श्री टोडर जंबूस्वामिचरित्रं कारापितं लिखापितं च कर्मक्षयनिमित्तम्। लिखितं गगादासेन।

यह प्रतिलिपि स्व० बा० देवकुमार जी द्वारा स्थापित श्री जैनसिद्धान्त भवन आरा में संग्रहार्थ श्री बाबू निर्मलकुमार जी के मंत्रित्व काल में श्री पं० के भुजबली शास्त्री की अध्यक्षता में बा० पन्नालाल जी के द्वारा देहली से उपरोक्त प्रति मंगाकर तैयार की गई। शुभ मिति अषाढ़ कृष्णा १२ वीर सं० २४६१ वि० स० १९९२। हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० १३२।

५३. जम्बूस्वामी कथा

Opening : प्रथम पंच परमेष्ठी नाऊँ।
दूज्यो सरस्वती नमूँ पाऊँ॥
तीजे गुरु चरने अनुसरो।
होय सिद्धि कवि तु विस्तरो॥

Closing : तिन यह कथा करी मनलाई।
बाच्य हर्ष उपजै सुखदाई॥
पढ़ै सुनै जो मनुषै कोई।
मनवांछित फल पावै सोई॥

Colophon : इति श्री जंबूस्वामी की कथा संपूर्ण। मिति वायणवदी ३ वार रविवार सन् १८८३ साल। दस्तखत दुर्गाप्रसाद जैनी आरे।

५४. जयकुमारचरित्र (१३ सर्ग)

Closing : श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं वृषभं गुरुराज्यितम्।
प्रवक्षीतिनि हंतारं वंदे विश्वं शिवाप्तये ॥ १ ॥

Opening : सकलकीर्तिकृतं पुरदेवजं समवलोक्य पुराणमियं कृति:।
जयकुमेषु यपालसुतस्य च वृहदवं जिनसेनकृतं कृता ॥ १०१ ॥

Colophon : इति श्री जयांके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनंदि गुरुपदे ब्रह्म कामराजविरचिते पंडित जीवराजसहाय्या त्रयोदशम: सर्ग:। इति श्री जयकुमार चरित्रं समाप्तं। शुभप्रसाकात् संपूर्ण जातम्। संवत् १२४२ मासोत्तममासे आसौजमासे(कृष्णपक्षे १५ सोमवासरे नगरविद्यानामध्ये पांडे हेमराजेन लिखितमस्ति। स्वपठनार्थं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। वाचै पढ़ै जे पंडितजी नै श्री जिनाय नम: म्हांकी जीनै बै। आयुर्भवतु श्री। मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये संघाम्नाये श्री भट्टारक विश्वभूषणदेवा: तत्पट्टे श्रीभट्टारकेंदुश्रीभट्टारक जिनेन्द्रभूषणदेवा: तत्पट्टे भट्टारकमहेन्द्रभूषणदेवास्तैरिदं स्वस्याध्ययनार्थं शुभं भूमात् गोपा·····? नगरे जयकुमारचरितस्येदं पुस्तकम्।

देखें—जि० र० को०, पृ० १३२।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 643.

५५. जिनदत्तचरित्र वचनिका

Opening : पंचपरम गुरुकूं प्रणमि पूजौं सारदमाय।
भाषा जिनदत्त चरित की करूं स्वपर हितदाय ॥

Closing : पंनालाल सु चौधरी रची वचनिका सार।
जिनदत्त के सु-चरित्र की भाषपति के अनुसार ॥

Colophon : सम्पूर्ण।

५६. जिनेन्द्रमाहात्म्य पुराण

Opening :

श्री मल्लिसद्मपदांबुजद्वयरजः शुद्धांजनोन्मीलित-,
प्रोद्यल्लोचनतो विलोक्य निखिलं जैनस्मृतैर्निश्चयम् ।
विद्यत्केसवनंदिनामभुनिना प्रोक्तां यथा वै तथा,
निर्मास्यामि समस्तकल्मषहरीं पौण्याश्रवीं सत्कथाम् ॥

Closing :

वांछा श्री मज्जिनेन्द्रादिभूषणस्य च या हृदि ।
सा जिनेन्द्रप्रसादेन सफलो भवताद्ध्रुवम् ॥

Colophon : इति मुमुक्षुसिद्धान्तचक्रवर्तिः श्री कुन्दकुन्दाचार्यानुक्रमेण श्री भट्टारकविश्वभूषण पट्टा भरण श्री ब्रह्महर्षसागरात्मज श्री भट्टारक-जिनेन्द्रभूषणविरचितम् श्री जिनेन्द्रपुराणं समाप्तमिदं शुभ भूयात् । संवत् १८५२ कार्तिकशुक्लप्रतिपदायां गुरुवासरे पुराणसमाप्तिः ।

श्री मूलसंघे बलात्कारगणे·····भट्टारकमहेन्द्रभूषणेन इय पुस्तिका लिखापिता दत्ता स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थम् ।

यह पुस्तक जैन सिद्धान्त भवन मे लिखी गई । शुभमिति पौष कृष्ण सप्तमी ७ मंगलवार श्री वीर निर्वाण स० २४६२ विक्रम सवत् १९९२ । ह० रोशनलाल जैन लेखक ।

विशेष—५५ कथाएँ (चरित्र) हैं ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १३१ ।

५७. जिनमुखावलोकन कथा

Opening :

चतुर्विंशतितीर्थेशान् धर्मसाम्राज्यवर्तकान् ।
नत्वा वक्ष्ये व्रतं श्री जिनेन्द्रमुखावलोकनम् ॥

Closing : ·········मौनव्रतसत्फलार्थकथकानदत्वयं भूतले ॥

Colophon : इति मौनव्रत कथा समाप्तम् । लिखितं पंडित परमानंदेन रात्रौ गुरौ एकादश्यां १९३२ संवत्सरे दिल्ली नगरे आयायस मन्दिरे शुभं भूयात् ।

द्रष्टव्य :—जि० र० को०, पृ० १३६ ।

५८. जीवन्धर चरित्र

Opening :

जयवंतो वरतो सदा प्रथम रिषभ अवतार ।
धर्मप्रवर्तन जिन कियो जुग की आदि मझार ॥

Closing : संवत् अष्टादश शत आठ। अधिक और पैंतीस प्रमान।
कार्तिक सुदि नौमी गुरुवार। ग्रन्थ समापित कीनो सार ॥

Colophon : इति श्री जीवंधर चरित्र आचार्य श्री शुभचन्द्रप्रणीतानुसारेण नथमल बिलालाकृत भाषायां जीवंधरमुनिमोक्षगमन वर्णनो नाम त्रयोदशसर्गः सम्पूर्णम्। इति जीवन्धर चरित्र सम्पूर्णम्। मिती पुस (पौष) सुदी ४ संवत् १९६१ मुक्काम चंद्रापुरी।

५९. कथावली

Opening : श्री शारदास्पदीभूत-पादद्वितयपंकजम्।
नत्वार्हतं प्रवक्ष्यामि व्रतं मुकुटसप्तमीं ॥

Closing : मुनिराहे निभोश्रेष्ठि······ ॥

द्रष्टव्य :—जि० र० को०, पृ० ६६।

६०. कुदेव चरित्र

Opening : सो हे भव्य तूं सुणि। सो देखौ जगत विषै भी यह न्याय है।

Closing : तौ एक सर्वज्ञ वीतराग जो जिनेश्वर देवता का वचन अंगीकारकरि अर ताका वचनानिंअनुसारि देवगुरु धर्म का श्रद्धानकरि।

Colopnon : इति कुदेव चारित्र वर्णन सम्पूर्णम्। मिति कार्तिक सुदी २ सन् १२७६ साल दसखत दुरगाप्रसाद जैनी आरा मध्ये लिखा, जो देखा सो लिखा।

भूलचूक देखके, बुधजन लियो सुधार।
हमें दोष मत दीजियो, क्षमा करो नर ज्ञान ॥

६१/१. मदनपराजय

Cpen'ng : यत्कमलपदपद्य श्री जिनेशस्य नित्यम्,
शतमखशतसेव्यं पंचकल्याणकयुक्तम्।
दुरितवनकुठारं ध्वस्तमोहांधकारं,
सकलविमलबोधं भक्तिभारैर्नमामि ॥ १ ॥

Closing : अज्ञानेन धिया विना किल जिनस्तोत्रं मयायत्कृतम्,
कि वा शुद्धमशुद्धमस्ति सकलं नैवं हि जानाम्यहम् ।
तस्मत्तैर्मुनिपुङ्गवाः सुकवयः कुर्वन्तु सर्वे क्षमां,
संशोध्या······कथामिमां स्वसमये विस्तारयन्तु ध्रुवम् ॥

Colophon : इति मदनपराजयं समाप्तम् ।

६१/२. महिपाल चरित्र

Opening : यस्यांग्रदेशे शत् कुंतलाली, दूर्वांकुरालीव विभाति नीला ।
कल्याणलक्ष्मी वसतिः सविस्यादादीश्वरो मंगलमालिका वः ॥

Closing : श्री रत्ननंदिगुरुपादसरोरुहालिश्चारित्र भूषणकविर्यदिदं ततान ।
तस्मिन् महीपचरिते भववर्णनाढ्यः सर्गः समाप्तिमगतमत्किल पंचमोऽयम् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक रत्ननंदिसूरि शिष्यमहाकविवर श्री चारित्र-भूषणमुनि विरचिते श्री महीपालचरित्रे पंचमो सर्गः । इति श्री मही-पालचरित्र काव्यं सम्पूर्णम् । अथ ग्रंथ श्लोक संख्या ६६५ संवत्सरे १८७० का ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ४ बुधवासरे लिप्यकृत महात्मा शंभुरामः ।

उक्त लिपि देहली से मंगवाकर श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा मे संग्रह के लिए श्री प० के० भुजबली जी शास्त्री की अध्यक्षता में लिखी शुभमिति चैत्रकृष्णा ११ बुधवार विक्रम सं० १९९३ वीर सं० २४६३ । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन ।

द्रष्टव्य— जि० र० को०, पृ० ३०८ ।

Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 680.

६२. महिपाल चरित्र

Opening : श्रीमत वीर जिनेशर, युग नमकर धरि भाल ।
महीपाल नृप चरित्र की, भाषा करो रसाल ॥

Closing : जिनप्रतिमा जिनभवन जिन पंचकल्याणक थान ।
आदि मध्य अवसान मैं मंगलकरो महान ॥

Colophon : इति श्री महीपाल चरित्र सम्पूर्णम् ।

६३. मैथिलीकल्याण नाटक

Opening : कः प्रस्तोता किलोक्ती प्रतिकृतकविता कंचुकानां कुलीनां,
के च स्तोतास्त्वत्र च स्तुतियत्ककवि वाग्वतूवल्लभानाम् ।
कल्पः अल्पायमाविभिवबहुकलामायुक्तानाल्पकल्पः,
सौम्य मह्नं विजयेताद्रमरथतनयः साधुनो रामभद्रः ॥

Closing : एतन्नाटकरत्नमुत्तमगुणं विभ्राजते मैथिली,
कल्याणं प्रथमद्वितीयमपि सत्सेषु द्वितीयं मतम् ।
सर्वत्रप्रथितः प्रबंधमनयः श्री सूक्तिरत्नाकरं,
प्रख्यातापरनामधेय महतः श्री हस्तिमल्लस्य वै ॥

Colophon : समाप्तोऽयं मैथिली कल्याणनाटकम् इति शुभम् । संवत् १९७२ विक्रमे आषाढ शुक्ला १४ रवौ श्री वृषभादितीर्थंकराः श्रेयस्कराः सन्तु ।

आषाढ शुक्लपक्षे हि चतुर्दश्यां रवौ लिखे- ।
त्रैत्र्यर्षाङ्केन्दु वर्षे च सीतारामकरेण सत् ॥

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३१५ ।

६४. मेघेश्वर चरित्र

Opening : सिरिरिसह जिणेन्दहु भुवसयइन्दहु भवतम चंदहु गणहरहु ।
पयजुयलुण वेप्पिणु चित्तिणि हेप्पिणु चरिउ भणमि मेहेसरहु ॥

Closing : पुणु सुउतुहु तीयउ अवचरिणीयउ जिणसासण रहधूर धरणु ।
रइपति रयणोवमु पालियकुलकमु दुत्थिहजणदुह भरहरणु ॥१३॥

Colophon : इय मेहेसर चरिए । आइपुणस्स सुत्त अणुसरिए सिरिपंडिय रइधूविरइय ॥ सिरिमहाभव्वखेमसीह साहुणामणाम किए ॥

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृप विक्रमादित्य गताब्दः १६०६ वर्षे मार्गसिर सुदि तृतिया श्री कुरुजांगलदेसे श्री सहितवढ़ साहि-राज्य प्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री कुमारसेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रतापसेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री महासेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयसेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री नयसेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री आसेनदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री अनन्तकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारकीर्तिदेवाः तत्पट्टे

अनेक विद्यानिधान भट्टारक श्री हेमचंद्रदेवाः तत्पट्टे अनेकविद्या हरी-
तरंगु भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवाः ॥

शुक्रवार वदी ८ सं० १९८६ वीर सं० २४६५ ॥ ई०
१९३९ को समाप्त हुआ। लेखक राजधरलाल जैन ॥

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३१५.

६५. नन्दीश्वर व्रत कथा

Opening : प्रणम्य परमानंदं जगदानंददायकम् ॥
सिद्धचक्र कथा वक्ष्ये भव्यानां शुभहेतवे ॥ १ ॥

Closing : श्रीपद्मनंदीमुनिराजपट्टे शुभोपदेशीशुभचन्द्रदेवः ।
श्री सिद्धचक्रस्य कथावतारं चकार भव्यांबुजभानुमाली ॥
सम्यग्दृष्टिविशुद्धात्मा जिनधर्मे च वत्सलः ॥
जालाकः कारयामास कथां कल्याणकारिणी ॥

Colophon : इति नंदीश्वर अष्टान्हिका कथा समाप्ताः ॥

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० २००, ४३६.

६६. नेमिचन्द्रिका

Opening : आदि चरन हिरदै धरौ, अजित चरन चितलाय ।
संभवसुरत लगायकैं, अभिनंदन मनलाय ॥

Closing : मारग जाने मोक्ष कौ, जिनवर भक्त सुवास ।
कहूं अधिक कहूं हीन है, सो सब लीजे सोर ॥

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्रिका संपूर्णम् । मिती जेष्ठवदी ७ संवत्
१९६२ । लिखितं पं० चौबे छुट्टीलालकी ।

६७. नेमिनाथचन्द्रिका

Opening : प्रथम नमो जिनचंद्रपद नमत होत आनंद ।
शिवसुखदायक सकल हित, करत जगत जगफंद ॥

Closing : एक सहस्र अरु अठशतक, बरष असिति और ।
वाही संवत यो करी, पूरन इह गुणगौर ॥

Colophon : इति श्री नेमनाथ जीकी चन्द्रिका मुन्नालालकृत सम्पूर्णम् ।
संवत् १८९५ मासोत्तमे मासे माघेमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां चंद्रवासरे

पुस्तकमिदं रघुनाथ द्विवेदीभिः पट्टनपुरे बालमनंज लिखति. जिन-प्रसादात् मंगलमस्तु ।

६८. नेमिनाथचरित्र

Opening :

प्राणित्राणप्रवणहृदयौ बंधुवर्गो समग्रम्,
हित्वा मोहान्धहृदपरिजनैर्बंधसेनात्मजो च ।
श्रीमान् निर्विषयविमुखो मोक्षकामश्चकार,
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ॥

Closing : श्री नेमिनाथ का निर्मल चरित्र रचा जो कि राजीमती के दुःख से आर्द्र है ।

Colophon : इति श्री विक्रमकवि विरचित नेमिचरित हिन्दी भाषानुवाद सम्पूर्णम् ।

६९. नेमिनाथपुराण

Opening :

श्री मन्नेमि जिनं नत्वा लोकालोकप्रकाशकम् ।
तत्पुराणमहं वक्ष्ये भव्यानां सौख्यदायकम् ॥

Closing :

शांति कान्ति सुनीति सकलसुखयुतां संपदामायुरुर्व्वैः,
सौभाग्यं साधुसंगं सुरपति महितं सारजैनेन्द्रधर्मम् ।
विद्यां गोत्रं पवित्रं सुजन जन⋯⋯⋯व्याविवर्तिं,
श्री नेमे सुत्पुराणं दिशतु शिवपदं वोत्र ⋯ ॥

Colophon : इति श्री त्रिभुवनैक चूडामणि श्री नेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदी नामांकिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्री नेमितीर्थंकरपरमदेव पंचम कल्याणक व्यावर्णनो नाम पद्मनाम नवम बलदेव कृष्णनाम नवमनारायण जरासंध नामप्रति-नारायण चरित्र व्यावर्णनो नाम षोडशोऽधिकारः समाप्तः ।

श्री शुभमिति आश्विनकृष्ण पंचमी गुरुवार वीर सं० २४६० विक्रम सं० १९९० को यह पुस्तक लिखकर पूर्ण भई । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक । आरा जैनसिद्धान्त भवन में प्रतिलिपि की गई ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २१८ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १९९ ।
(४) रा० सू०, पृ० ८४ ।

(५) जै० ग्र० प्र० सं०१, पृ० १२७।
(6) Catg. of Skt. & Pkt. Ms. P. 681.

७०. नेमिपुराण

Opening : नमामि विमलाधीशं केवलज्ञानभास्करं।
वंदेनंतजिनं भक्तयानंतानतसुखाकरम् ॥ १२ ॥

Closing : देखें-क्र० ६६।

Colophon : भुवनैक चूडामणि श्री नेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदि नामांकिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्री नेमितीर्थंकरपरमदेव पंचमकल्याणक व्यावर्णनो नाम पद्मनाम नवमबलदेव कृष्णनाम नवम-नारायण जरासंध प्रतिनारायण-चरित्रव्यावर्णनो नाम षोडशोधिकारः समाप्तः।

७१. नेमिपुराण

Opening : देखें-क्र० ६६।

Closing : ततोदुःखादरिद्री च रोगीशोकाविरूपकः,
परद्रव्यापहारेण संसारे ससरत्परम्।
तस्मात् सतोषतो नित्यम् मनोवाक्काययोगतः,
स्तेयत्यागो दृढ भव्यैः पालनीयः सुखप्रदः ॥

विशेष :— हस्तलिपि में विभिन्नता है।

७२. नेमिपुराण

Opening : नेमिचंद जिनराज के चरण कमल युगध्याय।
भाषू नेमपुराण की भाषा सुगम बनाय ॥

Closing : मगल श्री अरहत सिद्ध साधु जिनधर्म पुन।
ये ही लोक महत परम सरण जगजीव कौं ॥

Colophon : ऐसे भट्टारक श्री मल्लिभूषण के शिष्य आचार्य श्री सिंहनन्दि के नामकरि चिन्हित ब्रह्मनेमिदत्त करि विरचित जो तीनभुवन का चूड़ामणि समान नेमिजिन ताके पुराण की भाषा वचनिका संपूर्ण। मिती वैशाख वदी १२ संवत् १६६२ मु० चंदेरी मध्ये शुभं भवतु।

७३. नेमिनाथरिस्ला

Opening : छोड़े संसार नेहे तपको जोड़े।
छोड़े सब्ब तात मात बात बीचारी।
छोड़े परिवार सबै राजुल नारी ॥

Closing : सब पढ़ें बंध सब है ।

Colophon : इति रेखता सम्पूर्ण ।

७४. नेमिनिर्वाणकाव्य (१५ सर्ग)

Opening : श्री नाभिसूनोः पदपद्मयुग्मनखाः सुखानि प्रथयन्तु ते वः ।
समुन्नमन्नाकिशिरः किरीटसंघट्टविस्रस्तमणीयितं यैः ॥

Closing : अहिच्छत्रपुरोत्पन्नप्राग्वाटकुलशालिनः ।
छाहडस्य सुतश्चक्रे प्रबंधं वाग्भटः कविः ॥

Colophon : इति श्री नेमिनिर्वाणाभिधानो नाम पंचदशः सर्ग समाप्तः । संवत् १७२७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे अष्टमी बुधवासरे ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २१८ ।
(३) जैन ग्रन्थ प्र० सं० I, पृ० ८ ।
(४) रा० सू० II, पृ० २४८ ।
(५) प्र० जै० सा०, पृ० १६२ ।
(6) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., Page-661.
(7) Catg. of Skt. Ms., P 302.

७५. नेमिनिर्वाणकाव्य पंजिका

Opening : नुत्वा नेमीश्वरं जिनं लब्धानंतचतुष्टयम् ।
कुर्वेहं नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका ॥

Closing : येऽः चरंति स्म । पुरस्सरं अग्रेसरं । निरस्य स्फेटयित्वा भवभावितमोहमल्लं निरस्य मोहरिपुम् ॥ ८२ ॥

Colophon : इति श्री भट्टारकज्ञानभूषणविरचितायां श्री नेमिनिर्वाण महाकाव्यपंजिकायां पंचदशमः सर्गः समाप्तोऽयं ग्रन्थः । श्रीरस्तु ।

देहली से प्रति मंगवाकर जैन सिद्धान्त भवन, आरा में प्रतिलिपि कराकर रखी गई ।

७६. निशि भोजन कथा

Opening : प्रथम नमसि जिनदेव पूर्व गुरु निरग्रंथ हूँ ।
करहुं सरस्वती सेव [illegible] हूँ ॥

Closing : निश सु कथा पूरन भई, पढ़े सुनें चित लोय।
सुख पावें जे नर त्रिया, पाप नाश तिन होय ॥

Colophon : इति निश भोजनत्याग कथा समाप्ता:। शुभं भवतु। मिति अगहण वदी ७ सम्वत् १६६१।

७७. निशि भोजन कथा

Opening : देखें, क्र० ७६।

Closing : देखें, क्र० ७६।

Colophon : इति श्री निशिभोजन कथा समाप्तम्।
महावीर वंदौं सदा, रत्नत्रीन दातार।
निजगुण हमें सु दो अबे, अपनो जानि हितकार ॥
श्री शुभ संवत् १६५५ मिति कुआर कृष्ण ८ वार बृहस्पति।

७८. निर्दोष सप्तमी कथा

Opening : श्री जिन चरणकमल अनुसरू, सदगुरु की मैं सेवा करू।
निरदोष सातमनी कथा, बोलू जिन आगम छै यथा ॥

Closing : ये व्रत जे नरनारि करैं, ते जन भवसागर उतरैं।
अजर अमर पद अविचल लहैं, ब्रह्म ज्ञान सागर इम कहैं ॥

Colophon : इति श्री निर्दोष सप्तमी व्रत कथा समाप्तम्।

७९. पद्मनन्दिचरित टिप्पण

Opening : शंकरं वरदातारं जिनं नत्वा स्तुतं सुरैः।
कुर्वे पद्मचरित्रस्य टिप्पणं गुरुदेशनात् ॥

Closing : लाड़ बागड़ि श्रीप्रवचनं सेन पंडिता पद्मचरितस्य कर्णोवला-रकारगण श्री श्रीनंद्याचार्य सत् शिष्येण श्री चन्द्रमुनिना श्रीमद्विक्रमादित्यसंवत्सरे सप्ताशीत्यधिकवर्ष सहस्र श्रीमद्धरायां श्रीमतो राजे भोजदेवस्य पद्मचरिते।

Colophon : इति पद्मचरिते पर्व टिप्पण सम्पूर्णम्। एवमिदं पद्मचरित-टिप्पणं श्री चन्द्रमुनिकृतं समाप्तम्। शुभं भवतु संवत् १८८४ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे पंचम रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये आम्नाये।

८०. पद्मपुराण

Opening : सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धेः कारणमुत्तमम् ॥
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादकम् ॥ १ ॥

Closing : इदमष्टादशप्रोक्तं सहस्राणि प्रमाणतः ।
शास्त्रमानुष्टुभश्लोकैः त्रयोविंशतिसंयुतम् ॥

Colophon : इति श्री पद्मचरिते रविषेणाचार्य प्रोक्तं बलदेवनिर्वाणगमनाभिधानं नाम पर्व: । १२३ ॥ इति श्री रामायणं सम्पूर्णम् । ग्रंथाग्रंथ संख्या-१८०२३ शुभमस्तु । संवत् १८८६ प्रथम आषाढ़-शुक्लपक्षे पंचमि सोमवासरे लिखितं ब्राह्मण गौड़ शिवाविप्रातराव-नग्रमध्ये (?) ॥

यादृशं .... न दीयते ॥

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २० ।
(२) जि० र० को०, पृ० २३३ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७१ ।
(४) रा० सू०, पृ० ८७ ।
(5) Cat. of Skt. & Pkt. Ms., Page-664.
(6) Catg. of skt. Ms., page, 314.

८१. पद्मपुराण

Opening : (पृष्ठ १८) देववर्णनो नाम प्रथमोध्यायः ।
अथ वंशाश्चत्वारि तेषां नामानि वक्ष्यते ।
इक्ष्वाकुसोमवंशौश्च हरिविद्याधरौ तथा ॥ १ ॥
भरतस्यार्किर्त्यवंशो पुत्रस्तस्माद्भव वंशाः ।
तथोत्पन्नः सुबलो महाबलातिबलः ॥ २ ॥

Closing : (पृष्ठ ८२)
कुबेरेण ततो मार्गे मायाप्राकारस्तु निर्मितः ।
शतयोजनमुत्सेधः क्रूरजीवभयंकरः ॥ ५२ ॥
तत्प्रदेशे ततो ज्ञात्वा सुग्रीवं कीर्तिमुखः
सुग्रीवितः सैन्यः महस्तोकर्मतीवरी ॥ ५३ ॥

८२. पद्मपुराण

Opening : अथानंतर श्री रामलछमन सभा विषै विराजे अर राजा पृथ्वीधर .... ।

Closing : जे पालैं जे सरदहै, जिनवचधर्म सुजान ।
जे भाषे नर सुधता निश्चै लेहि निरवान ॥

Colophon : इति श्री पद्मपुराण जी की भाषा ग्रन्थ संपूर्णम् । श्लोक संख्या २३००० । सवत् १८६० । चैत्रकृष्णद्वितीयायां गुरुवासरे पुस्तकमिदं रघुनाथसम्मेण लेखि ।

८३. पद्मपुराण वचनिका

Opening : चिदानंद चैतन्य के, गुण अनंत उरधार ।
भाषा पद्मपुराण की भाषू श्रुति अनुसार ॥

Closing : देखें, क्र० ८४ ।

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य विरचितमहापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिका विषै बालावबोध वर्णनो नाम एक सौ बाईसमा पर्व पूर्ण भया । यह ग्रंथ समाप्तभया शुभं भवतु । माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पचम्यां । श्री संवत् १९५३ । ग्रंथ श्लोक संख्या २३२०० ।

सूबा औध (अवध) देशमुल्क हिन्दुस्तान में प्रसिद्धजिला सु नवाबगंज बाराबकी नाम है ।
टिकैतनगर सुथाना डाकखाना जानौ तासु दिसपूरव सरैयाँ भलो ग्राम है ॥
कवि भगवानदत्त बास स्थान जानौ तहां अन्न जलकें स्वबस आयौ यही ठाम है ।
लिख्यौ ग्रंथ पदुमपुराण धर्मवृद्धि हेत जिला शाहाबाद आरा शहर मुकाम है ॥

विशेष :— ग्रन्थ के काष्ठावरण पर (ऊपर) लिखा है—

"पुत्र पौत्र संपति बाढ़ै बाढ़ै अधिक सरस सुखदाई ।
मुसम्मात नन्ही बीबी जोजे बाबू सुखालचंद पुत्र धनकुमारचंद वो राजकुमारचंद पौत्र संभूकुमारचंद जंबूकुमारचंद जैनेन्द्रकुमार चन्द मंगलम् भूयात् ।"

'बीच में मन्दिर का चित्र है उसके दोनों ओर इन्द्र हाथियों के साथ चंवर ढुराते हुए।'

काष्टावरण पर (भीतर)

"चौबीस तीर्थंकरों के चिह्नों के बहुत ही सुन्दर रंगीन चित्र" बने हुए हैं।

चौबीस तीर्थंकरों के चिह्नों के चित्र एवं तीर्थंकरों नाम टीकाकार की हस्तलिपि में स्पष्टरूप से लिखे हुए हैं। लकड़ी पर चित्रकारी का कौशल अनुपम है. जो कि अन्यत्र बहुत कम उपलब्ध है। अंग्रेजी में इसे "लैकर वर्क" चित्रकारी कहते हैं, जो कि सामान्यतया पानी पड़ने पर भी नहीं धुलता।
इस तरह के चित्रकारी के लिए चित्रकारिता का विशिष्ट ज्ञान आवश्यक है।

कला पारखी दर्शकों के लिए इस काष्ठपट्ट पर बनायी गई अनुपम चित्रकला को श्री जैन सिद्धान्त भवन के अन्तर्गत श्री शांतिनाथ मंदिर के प्रांगण में श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार कला दीर्घा में रखा जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक दर्शक इसे देख सकें।

८४. पद्मपुराण वचनिका

Opening : महावीर वंदौं सुबुधि रतन तीन दातार।
निजगुण हमैं द्यौ अबै, अपनों जानि हितकार॥

Closing : तादिन संपूर्ण भयौ यह ग्रंथ सिव दाय।
चहुं संघ मंगल करौ, बढौ धर्म जिनराय॥

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य कृत महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिका बालबोध का तेईसवाँ पर्व पूर्ण भया। इति महापद्मपुराण समाप्तम्। १२३॥ संवत् १८४८ वर्ष भादों सुदी १२ को लिख चुके, लेखक बखतमल्ल नंद वंसी बारी नगर मध्ये लिखा है।

८५. पद्मपुराण भाषा

Opening : सिद्ध ... ...प्रतिपादनम्॥

Closing : बहुरि जाय वन तप करि भारी।
शिवपुर जानेकी मनमें विचारी ॥
अब इहां भई निरविघ्न अहार।
राममुनि को निरविघ्न अहार ॥

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य कृत मूलसंस्कृत ताकी वचनिका दौलतराम कृत ताकी चौपाई छंद बध मह श्री राम महामुनि का निरंतराय अहार का होना यह एकसौ चौसठी संधि पूर्ण भयो। शुभम्।

८६. पांडवपुराण

Opening : सिद्धमिद्धार्थ सर्वस्वसिद्धिदं सिद्धिसत्पदं ॥
प्रमाणनयसंसिद्धि सर्वज्ञं नौमि सिद्धये ॥ १ ॥

Closing : यावच्चन्द्राकंतारा: सुरपतिसदन तोयधि: शुद्धधर्मं
यावद्भूगर्भदेवा: सुरनिलयगिरिर्दैव गगादिनद्य. ॥
यावत्सत्कल्पवृक्षास्त्रिभुवनमाहिता भारते वैजगत्यां
तावत्स्थेयात्पुराण शुभशततजनक भारतं पाण्डवानां ॥

Colophon : श्रीमद्विक्रमभूपते द्विकहतस्पष्टाष्ट संख्यै गते
रम्येष्टाधिकवत्सरे सुखकरे भाद्रे द्वितीया तिथौ ॥
श्रीमद्वाग्वरनी मृतीदमतुले श्री शाकवाते
श्रीमच्छ्रीपुरुधाभिधे विरचितं स्थेयात्पुराण चिरम् ॥
इति श्री पांडवपुराणे भारतनाम्निभट्टारकश्रीशुभचन्द्रप्रणीते ब्रह्मश्रीपालसाहाय्यसापेक्षे यां भवोासर्गमहन्तनोत्पत्तिमुक्तिमर्वार्थसिद्धिगमनश्रीनेमिनाथनिर्वाणगमनवर्णनं नाम पंचविंशतितमं पर्व: २५। संवत् १८२० वर्षे द्वितीयज्येठसुदि रविवारे ग्रंथ लिखापितं पंडित.......... ? श्री यासमती जी तत् शिष्यं पडिन मथार.मजी आत्मयोग्य कर्मक्षयार्थं लिखितम्। श्री कासमाबाजार मध्ये श्रीरस्त ॥ श्री: ॥

द्रष्टव्य —(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २०।
(२) जि० र० को, पृ० २४३।
(३) आ० सू०, पृ० ६८।
(४) प्र० जै० सा०, पृ० १८१।
(5) Catg. of Skt. & Pkt. Ms. P 667.

८७. पांडवपुराण

Opening : सेवत सत सुरराव स्वयं सिवसिद्धमय।
सिद्धारथ सरवंसनय प्रमान सिद्ध अयं॥

Closing : कीर्जे पुष्ट शरीर को, करके सरसाहार।
की गुनता सी युद्ध मैं जो भाजै भयधार॥

Colophon : नही है।

८८. पार्श्वपुराण

Opening : पणविवि सिरि पासहो सिवउरि वासहो, विहुणिय पासहो गुणभरिऊ।
भविय सुहकारणु दुक्खणिवारणु, पुणु आहास मिसहु भरिऊ।

Closing : मच्छरमय हीणउं सत्थपवीणउं, पंडियमणुणंदउ सुचिरू।
परगुणगहणायरू वयणिय मायरू जिणपय पयरूहु णविय सिरु॥

Colophon : इय सिरि पासणाहपुराणे आयम अत्थस्स अत्थिसुणिहाणे सिरि पंडिय रइधू विरइए सिरि महाभव्वखेऊं साहुणामं किए सिरि पासजिण पंचकल्लाणवण्णणो तहेव वायार वंस णिद्देसो णाम सत्तमो संधी परिच्छेओ सम्मत्तो। संधि। ७। इति श्री पार्श्वनाथपुराणं समाप्तम्।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये १५४९ वर्षे चैत्र-सुदि ११ शुक्रवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे शुभनामा योगे श्री हिसारपेरोजा कोटे श्री महावीरचैत्यालये सुलितान श्री साहिसिकंदरराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे त्रयोदशप्रकारचरित्रालंकारालंकृत: बाह्याभ्यन्तर परिग्रहसमिग्रह (?) समर्था: भट्टारक श्री खेमकीर्तिदेवा: तत्पट्टे त्रिकालागत श्रावकवृंदविहितपदसेवा भट्टारक श्री हेमकीर्तिदेवा. तत्पट्टे कुवलयविकासनैकचन्द्रो भट्टारक श्री कुमारसेनदेवा: तत्पट्टे प्रतिष्ठाचार्य श्री नेमचंद्रदेवा, तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोइलगोत्रे आशीवाल सराफ-देवशास्त्रगुरु चरणारविंदचंचरीकोपम पंचाणुव्रत प्रतिपालका समा परमश्रावकसाधु महणांख्य: चादपाही। तृतीयपुत्र: जिनपूजापुरंदरसाधु दूल्लणु भार्या जे वूहि तस्यांगजा प्रथम पुत्रमयणरूप व्रत·······हु विलज कल्पवृक्षान् साध·····वणुभार्यादिवांही

द्वितीय पुत्र साधु सीहा, भार्या डेडीए तेषां ......कर्म्मक्षयं साधुपिरदूतस्य पुत्र ....पार्श्वनाथ चरित्रं लिखापितम।

उपर्युक्त प्रति से यह प्रति जैन सद्धान्तभवन, आरा के संग्रहार्थ लिखी गई। शुभमिती माघशुक्ला ८ गुरुवार वीरसम्वत २४६३। विक्रम संवत् १९९३ हस्ताक्षर रोशनलाल जैन। इति।

द्रष्टव्य— जि० र० को०, पृ० २४६।

८९. पार्श्वपुराण

Opening :

नमः श्री पार्श्वनाथाय विश्वविघ्नौघनाशिने।
त्रिजगस्वामिने मूर्द्धा ह्यनन्तमहिमात्मने॥

Closing :

सर्वे श्रीजिनपुंगवाश्च विमलाः सिद्धा अमूर्ता विदो,
विश्वार्च्चर्या गुरुवोजिनेंद्रमुखजा सिद्धान्तधर्मादयः।
कर्त्तारो जिनशासनस्य महिता स वंदिता संश्रुता,
येतेमेऽत्र दिशंतु मुक्तिजनकः सुद्धिः च रत्नत्रये॥

पंचादशाधिकानि वा विंशतिः शतान्यपि।
श्लोकसंख्या अस्य विज्ञेया सर्व ग्रन्थस्य लेखकैः॥

Colophon :

इति श्री पार्श्वनाथथचरित्रे भट्टारक सकलकीर्तिः विरचिते श्री पार्श्वनाथमोक्षगमन त्रयोविंशतितमः सर्गः समाप्तः। इति श्री पार्श्वनाथचरित्रं समाप्तम्।

देखें—जि० र० को०, पृ० २४६।
Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 667.

९०. पार्श्वपुराण

Opening : देखें, क्र० ८९।

Closing : देखें, क्र० ८९।

Colophon :

इति श्री पार्श्वनाथचरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचिते श्री पार्श्वनाथमोक्षगमनवर्णनो नाम त्रयोविंशतितमः सर्गः श्री पार्श्वनाथचरित्रसमाप्तं॥ देउल ग्रामे लिखितं नेमसागरस्य इदं पुस्तकं॥

९१. पार्श्वपुराण

Opening : मोह महातम दलन दिन, तप लक्ष्मी भरतार।
ते पारस परमेश मुझ, होय सुमति दातार॥

Closing : संवत् सत्रह से समैं, अर नवासी लीय।
सुदि अषाढ़ तिथि पंचमी, ग्रंथ समापत कीय॥

Colophon : इति श्री पार्श्वपुराणभाषायां भगवन्निर्वाणगमनोनाम नवमो अधिकार समाप्तम्। संवत् १८५६ कार्तिक सुदी नवमी बुध-श्वेताम्बर ऋषि हंसराज जी तत् शिष्य ऋषि रामसुखदास जी शाहजहानाबाद मध्ये लिपिकृतम् आत्मार्थे। शुभं भवतु।

९२. पार्श्वपुराण

Opening : देखें, क्र० ९१।

Closing : देखें, क्र० ९१।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथपुराण भाषायां भगवन्निर्वाणकवर्णनो नाम नवमोधिकारः॥ ९॥ इति श्री पार्श्वनाथपुराण भाषा सम्पूर्णम्। संवत् १९५३ सन् १३०३ अगहण शुक्ल एकादश्यां तिथौ मंगरवासरे दसखत चुनीमाली का।

९३. प्रद्युम्नचरित (१४ सर्ग)

Opening : श्रीमतं सन्मतिं नत्वा नेमिनाथं जिनेश्वरम्॥
विश्वजेतापि मदनो बाधितुं नो शशाकयः॥ ॥

Closing : चतुःसहस्रसंख्यातः सार्द्धं चाष्टशतैर्युतः।
भूतले सततं जीयाच्छ्रीसर्वज्ञप्रसादतः॥ १६९॥

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्यविरचिते श्री प्रद्युम्न सांबअनिरुद्धादिनिर्वाणगमनो नाम चतुर्दशः सर्गः समाप्तः॥ मिति कार्तिक शुक्ला ५ चंद्रवासरे संवत् १९५३। लिखि नटवर लाल शर्मणा॥

विशेष—इसमें मात्र १४ सर्ग हैं, जबकि दिल्ली जिनग्रन्थ रत्नावली में १६ सर्ग की प्रतियों के भी उपलब्ध होने की सूचना है।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, प०, पृ० २२।
(२) जि० र० को०, पृ० २६४।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७६।
(४) आ० सू०, पृ० ६४।
(५) रा० सू० III, पृ० २१३।
(6) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 670.

६४. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३।

Closing : देखें क्र० ६३।

Colophon : इतिश्री प्रद्युम्नचरिते आचार्य श्री सोमकीर्तिविरचिते श्री प्रद्युम्न अनिरूद्धनिर्वाणगमनो नामचतुर्दश. सर्गः समाप्त.। समाप्तमिद श्री प्रद्युम्नचरितम्। वाच्यमानं चिर नदन्तु पुस्तक: सवत् १७१७ वर्षे माघ सुदि २ दिने लिख्या समाप्तिनीत: लेखिततश्च कुशलान्वये साहश्री बंगूजी तत्पुत्र परम धार्मिक साह श्री रायसिहजी केन स्वकीय ज्ञातवृद्धयर्थम्।

श्लोक—यादृशं··· ··· ···न दीयते ॥

६५. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३।

Closing : देखें, क्र० ६३।

Colopnon : इति श्री प्रद्युम्नचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्य विरचिते प्रद्युम्न शंवअनिरूद्धादि निर्वाणगमनो नाम चतुर्दश: सर्ग:। श्री मद्वि-क्रमभूपते-गंजरसांद्रीं दुर्गते वत्सरे मासे फागुनि के दिने रवि सुते-कंद्राख्यकासत्तिथि तस्मिन्नेव लिपिकृतो गुवताराज्येविनष्टे लिखी ग्रंथो घनपतिसंज्ञिनामतिमता कैराणकाख्ये पुरे।

६६. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३ ।

Closing : देखें, क्र० ६३ ।

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरित्रे श्रीसोमकीर्ति आचार्यविरचिते श्री प्रद्युम्नसंबअनुरुद्धादि निर्वाणगमनो नामषोडशः सर्गः । इति प्रद्युम्नचरित्र सम्पूर्णम् । संवत्सरे श्री विक्रमार्कभूपते संवत् १७६६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे तिथौ च तौम्यां सोमवासरे । लिखतं मुर्वकसागरेण तत् शिष्यसमीप तिष्ठते ग्रामपुर मध्ये ।

जो उपजो संसार सबै वस्तु का नाश है ।
तातैं इही विचार धर्मविषै चित्तराखना ॥

श्रीरस्तु मंगलं दद्यात् ।

विशेष —संवत् १७६५ वर्ष फागुणमासे शुक्लपक्षे द्वादसी दिने नादरसाह्‌बाद-शाह नैं दिल्ली में कतलाम किया मनुष्यों का प्रहर तीन ।
इस प्रति में सर्गों की संख्या १६ है, जबकि अन्त में श्लोक संख्या वही है ।

६७. पुण्याश्रव कथा

Opening : श्री वीरजिनमानम्य वस्तुतत्वप्रकाशकम् ।
वक्ष्ये कथामयं ग्रंथं पुण्याश्रव विधानकम् ॥

Closing : रविसुतको पहलो दिन जोय ।
अरु सुरगुरु को पीछे होय ॥
वार यही जिन लीजो सही ।
तादिन ग्रंथ समापति लही ॥

Colophon : इति श्री पुण्याश्रव ग्रंथ मूल कर्ता रामचंद्र मुनि टीका दौलतराम कृत संपूर्ण । संवत् १८७४ मिती माहसुदि ३ रविवासरे संपूर्ण कृतम् ।

६८. पुण्याश्रव कथा

Opening : देखें, क्र० ६७ ।

Closing : ······तीस्यो पुकारै छै । तव राजाबहोतबल सा ······।

Colophon :　उपलब्ध नहीं ।

९९. पुण्याश्रव कथाकोष

Opening :　वर्द्धमान जिन वंदिकै, तत्वप्रकाशनसार ।
पुण्याश्रव भाषा करूं भव्य जीवन हितकार ॥

Closing :　दान तना अधिकार यह, पूरा भया सुजान ।
बहुविध की सम्रुसम, भोवहु करैं कल्यान ॥५९०६॥

Colophon :　इति श्री पुन्याश्रवविधाने ग्रंथ के सवानंददिव्य मुनि शिष्य रामचंद्र विरचिते दान अधिकार समाप्त ।

पुन्याश्रव ये कथा रसाल । पूजादिक अधिकार विसाल ॥
षट् अधिकार परम उतकिए । छप्पन कथा जासमैं मिए ॥
आदि पुरानादिक जे कहा । अभिप्राय सो यामैं लहा ॥
आचारज जिय धरि अभिलाष । कीनो तास संस्कृत भाष ॥
तास वचनकारूप सुधार । दौलतराम कथा बुधसार ॥
तातैं भावसिंध निज छंद । आरंभ किया चौपाई बंद ॥
...　....　....

प्रभु को सुमिरन ध्यानकर, पूजा जाप विधान ।
जिन प्रणीत मारग विषै, मगन होहु मतिमान ॥

१००. पुण्याश्रव कथाकोष

Opening :　देखें, क्र० ९७ ।

Closing :　प्रभु कों सुमरण ध्यानकर, पूजा जाप विधान ।
जिनप्रणीत मारगविषै, मगन होहु मतिमान ॥

Colophon :　इति श्री पुण्याश्रव कथाकोष भाषाजी राजभावसिंह कृत समाप्तम् । श्रीशुभ सवत् १९६२ तत्र वैशाखकृष्ण तृतीयायां लिपि कृतम् पं० सीतारामशास्त्री स्वकरेण सहारनपुर नगरे ।

नोट :—लेखक का नाम भावसिंह होना चाहिए ।

१०१. पुराणसार संग्रह

Opening :　पुरूदेवं पुराणाद्यं प्रणम्य वृषभं विभुं ।
चरितं तस्य वक्ष्यामि पुण्यमादशमाङ्गवान् ॥

Closing : महिम्नामाधारो भुवनविलतध्वांततपन: ।
स भूयान्नो वीरो जननजयसंपत्तिजनन: ।।

Colophon : इति श्री बर्द्धमानचरित्रे पुराणसारसंग्रहे भगवन्निर्वाणिगमनं नाम पंचम: सर्ग: समाप्त: ।

प्रतिलिपि जैनसिद्धान्त भवन आरा में रोशनलाल जैन ने की । शुभमिती फाल्गुन शुक्ला ६ गुरुवार विक्रम संवत् १९९० वीर संवत् २४६० । इति शुभं भवतु ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० २५३ ।

१०२. पूज्यपाद चरित्र

Opening : पादपद्मगलिगे बाचुबेनेन्नलकवनु ।।
उपदेशगेदु सकलतत्ववनुरे कुपतबेन्नद संहरिसि ।
सुपथव तोरि मुपवनु भव्यगित्तवुपदेशकरिणे रगुबेनु ।।

Closing : ...... सौख्यमं कनकगिरिवराधीश्वरं पार्श्वनाथ ।

Colophon : अंतु संधि १५ क्कां पदनु १६३२ सखिरद बंभेनूर मूव- तोंबत्तकूकां मगल जयमंगल शुभमंगल नित्यमंगल महा ।

हृदिनेंदनेय संधि मुगिदुदु ।
पूज्यपादचरित्रे संपूर्न मंगलमहा ।

१०३/१. रामयशोरसायन रास

Opening : श्री मनमोहन स्वाम जी त्रिभुवन त्यारण देव ।
तीरथंकर प्रभु बीसमो सुरनर सारे सेव ।। १ ।।

Closing : बरसां सोलां केरी सुन्दरी सुन्दर मुखल भाखै ।
रूप अनूपम अधिक बनायो इन्द्र करै अभिलाख ।। सी० ।।
रिमझिम रिमझिम घूंघर बाजै ।

Colophon : नहीं है ।

विशेष : यह पाण्डुलिपि गुजराती लिपि में 'देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, सूरत' से 'आनन्दकाव्य महोदधि' के दूसरे भाग में

प्रकाशित ।

१०३/२. रत्नत्रय कथा

Opening : श्री जिनकमल नित नमुं, सारदा प्रणमी अश निरथमु ।
गौतम केरा प्रणमो पाय, जहथि बहुविधि मंगल थाय ॥

Closing : याम्या मणि मानिक भंडार, पद-पद मंगल जय जयकार ।
श्रीभूषण गुरुपद आधार, ब्रह्मज्ञान बोले सुविचार ॥

Colophon : इति रत्नत्रय कथा संपूर्णम् ।

१०४. रत्नत्रयव्रत पूजा व कथा

Opening : श्रीमत सन्मतं नत्वा श्रीमत: सुगुरुनपि ।
श्रीमदागमत: श्रीमान् वक्षे रत्नत्रयार्चनम् ॥

Closing : देखें, क्र० १०३/२ ।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयव्रत कथा समाप्तम् ।

विशेष—पूजा जिनेन्द्रसेन रचित है ।

१०५. रविव्रत कथा

Opening : श्री सुष्दायक पास जिनेस,
प्रणमौं भव्य पयोज दिनेस ।
सुमरौ सारद पद अरविंद,
दिनकर व्रत प्रगट्यौ सानंद ॥

Closing : यह व्रत जे नरनारी करै,
सो कबहूं नहिं दुरगति परै ।
भाव सहित सुर वर सुषलहैं,
बार बार जिन जी यों कहैं ॥

Colophon : इति श्री रविव्रत कथा जी लघु समाप्तम् ।

१०६. रविव्रत कथा

Opening : देखें–क्र० १०५।

Closing : इह व्रत जो नरनारी करै,
सो कबहू नहि दुर्गति परै।
भाव सहित सो सिवसुष लहै
भानुकीर्ति मुनिवर यो कहै ॥

Colophon : इति रविव्रत कथा समाप्तम्।

१०७. राजावलि कथा

Opening : श्री मत्समस्तभुवनशिरोमणि सद्विनयविनमिताखिलजनचिन्ता-मणिये नित्य परमस्वामियनभिनुतिसि पडे–वे शाश्वतसुखमम्।

Closing : इति कथेय केलवर प्रातियु नेरेकेडुमु बलिकमायुं श्रीयुं संतानवृद्धि सिद्धियनतसुख तप्पुदप्पुदेड्डु निहनं।

Colophon : इति सत्यप्रवचन काल प्रवर्त्तन कनकाचलश्रीजिनाराधक मलेयूर देवचद्र पंडित विरचित राजवली कथासारदोल् जातिनिर्णय–प्ररूपण त्रयोदशाधिकारं। समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

१०८. रामपमारोपम पुराण

Opening : पंचपरमगुरु को सुमरन करो, अरु जिन प्रतमा जिनधाम।
श्री जिनबाणी जिनधरम को, करजोर करो परनाम ॥

Closing : श्रीरामपमारो वर्नन करो वाच सुनो नरकोय।
भवदधि तारन को यह कारनै मोक्षबंछ वरलोय ॥ २५ ॥

Colophon : अपठनीय।

१०९. रामपुराण

Opening : वंदेहं सुव्रतं देवं पंचकल्याणनायकम्।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृंदसुखप्रदम् ॥

Closing : श्री मूलसंघे वरपुष्कराख्ये गच्छेसुजातो गुणभद्रसूरिः ।
पट्टे च तस्येव सुसोमसेनो भट्टारकोभूद्विदुषां शिरोमणिः ॥

Colophon : इति श्रीरामपुराणे भट्टारकं श्री सोमसेनविरचिते राम-स्वामीनो निर्वाणवर्णनो नामत्रयत्रिंशसमोधिकारः । ३३ ॥
समाप्तोयं रामपुराणं ग्रंथाग्रंथश्लोक ७००० । सप्तसहस्त्राणि । मिती भादों सुदी ११ संवत् १९८६ तादिन यह पुस्तक लिखकर समाप्त की ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३३१, २३४ ।

Catg. of Skt. & Pkt. Ms., Page-687.

११० रोहिणी कथा

Opening : वासुपूज्य जिनराज को, वंदू मनवचकाय ।
ता प्रसाद भाषा करो, सुनो भविक चितलाय ॥

Closing : रोहनी व्रत पालै जो कोई, ता घर महामहोत्सव होई ।
मनवचकाय सुद्ध जो धरै, क्रमतेमुकति वधु सुख वरै ॥ ८५ ॥

Colophon : इति रोहणी व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१११ रोटतीज व्रत कथा

Opening : चौबीसों जिन को नमों, श्री गुरुचरण प्रभाव ।
रोटतीज व्रत की कथा, कहो सहितचित चाव ॥

Closing : मूल चक जो कथा मंझारा, लै भविजन सब सुजन संवारा ।
शुभ संवत् उन्नीसपचासा, अषाढ शुक्ल तृतीया मलोमासा ॥
बार शुक्र शशि कथा प्रकाशा, वाचक हृदय हर्ष की आशा ।
जैन इन्द्र किशोर सुनाई, जय-जय ध्वनि चतुर्दिक छाई ॥

Colophon : इति संपूर्णम् । शुभं भूयात् ।

११२. रोटरीज व्रत कथा

Opening : देखें, क्र० १११ ।

Closing : देखें, क्र० १११ ।

Colophon : शुभं भूयात् । इति सम्पूर्णम् ।
यह पुस्तक संवत् १९५१ मिति वैशाख कृष्ण परिवा को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

११३. ऋषभपुराण

Opening : श्रीमंतं त्रिजगन्नाथमादितीर्थंकरं परम् ।
फणीद्रेन्द्रनरेंद्रार्च्यं वंदेऽनंतगुणार्णवम् ॥

Closing : अस्टाविंशाधिकाभिः षट् चत्वारिंशत्सतप्रमाः ।
अस्यादर्हश्चरित्रस्य स्युः श्लोकाः पिंडिताबुधैः ॥

Colophon : इति श्री वृषभनाथ चरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचिते वृषभनाथनिर्वाणगमनोनाम विंशतितमः सर्गः ।
द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ५७ ।

११४. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : परमपुरुष आनन्दमय चेतन रूप सुजान ।
नमो शुद्धपरमातमा, जग प्रकाशक भान ॥

Closing : सम्यक्दर्शन मूलहै, ग्यान पेढ़ द्रुम डार ।
चरण सुपल्लव पहुप है, देहि मोषि फलसार ॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा भाषा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदयभूप अरहदाससेठादिक स्वर्गगमन कथन संधि ग्यारमी संपूर्णम् ।

अठारासै सोलहतरा, चैतमास है सार ।
शुक्लप्रतिपदा है सही, गुरुवार पैसार ॥१॥
लिपि कीन्ही भेलीराम जू, ग्याति सावडा जानि ।
वासी चंपावति सही, बौरिगढ मधि आनि ॥२॥
जयचंद जी सौं वीनती, करौ जुमनवचकाय ।
राति दिवस पढ़िज्यो सदा, इह कथा मनलाय ॥३॥

११५. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, ११४ ।

Closing : चंदसूर पानी अवनि, जबलग अवर आकाश ।
मेरादिक जबलगि अटल, तबलगि जैन प्रकाश ॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा साह जोधराज गोदीका विरचिते उदतोदयभूप अरहृदासमेठादिक स्वर्गगमनवर्णन नाम एकादश परिच्छेद. । इति श्री समकित कौमुदी कथा साह जोधराज गोदीका जातिभावसाकी करि भाषा समाप्त. । संवत् १९१३ पौष मासे कृष्ण सप्तमीयां गुरुवासरे । श्लोक सख्या १७०० ।

११६. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखे, क्र० ११४ ।

Closing : परम जिनेश्वर कोय है, स्वर्गमुक्ति पद देय ।
ताकी मनवचकाय सो, देवसु पूज करेय ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

११७. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखे, क्र० ११४ ।

Closing : देखें, क्र० ११४ ।

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा भाषा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदयभूप अर्हद्दाससेठादिक स्वर्गगमन कथा सम्पूर्णम् ।

देखें, क्र० ११४ ।

श्री संवत् १९७० शाके १९३५ मगशिर सुदी ९ नवमी रविवार मध्यान्हमें इह ग्रंथ संपूर्ण भया।

विशेष—हरप्रसाद दास धर्मशालाशाला, आरा में लिखा गया।

११८. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, क्र० ११४।

Closing : देखें, क्र० ११४।

Colophon : देखें, क्र० ११७।

संवत् १९४९…… … श्रावण कृष्ण अष्टम्यां सम्पूर्णम्।

११९. संकटचतुर्थी कथा

Opening : वृषभनाथ वंदो जिनराज, पुनि सारद वंदो सुषसाज।
गणधर वे सुभमति हो लहो, संकटचोथि कथा तब कहो॥

Closing : विश्वभूषण भट्टारक भए देवेन्द्रभूषण तिहिपट्ट ठए।
तिनि यह कथा करी मनुलाइ, भव्यकजन सुनियो चित ल्याइ॥

Colophon : इति संकटचौथिकथा समाप्ता।

१२०. संकटचतुर्थी कथा

Opening : देखें, क्र० ११९।

Closing : देखें, क्र० ११९।

Colophon : इति संकट चौथकी कथा सम्पूर्णम्।

१२१. सप्तव्यसन चरित्र

Opening : श्री अर्हंत प्रनाम करि, गुरुनिरग्रंन्थ मनाइ।
सप्तविसन भाषा कहूँ, भव्यजीव हितदाइ॥

Closing : सकलमूल याग्रंथ को जानो मनवचकाय।
दयाधर्म नितकीजिये, सो भव भव सुख होय॥

Colophon : इति श्री सप्तविसन भाषायां समुच्चय कथा परस्त्री विसन-फल वर्णनो नाम सप्तमो अधिकार। इति श्री सप्तविसन चरित्र भाषा सम्पूर्ण। मिति चैत्रसुद २ संवत् १९७७।

१२२. सप्तव्यसन कथा

Opening : प्रणम्य श्रीजिनान् सिद्धानाचार्यान् पाठकान् यतीन्।
सर्वद्वंद्वविनिर्मुक्तान् सर्वकामार्थदायकान्॥

Closing : यावत्सुदर्शनोमेरूर्यावच्च सागराद्वर:।
तावन्नंदत्वयं लोके ग्रंथो भव्य जनार्चित:॥

Colophon : इत्यार्षे भट्टारक श्रीधर्मसेन भट्टारक श्रीभीमसेनदेवा: तेषां आचार्य श्री सोमकीर्तिविरचिते सप्तव्यसनकथा समुच्चये परस्त्रीव्य-सनफलवर्णनो नाम सप्तम: सर्ग: ॥७॥

शाके १६६४ मिति आषाढ़ वदि त्रयोदश्यां तिथौ भौमवासरे सवत् १८२६ का तद्दिवसे आर्द्रानक्षत्रे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये वैगडदेशे मंगलूरग्रामे…… भट्टारक श्री धर्मचंद्रलिखितमिदं शास्त्र सप्तव्यसनचरित्र अर्जिका श्री नागश्री पठनार्थं इदं शास्त्र लिखितं स्वज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं दत्तम्।

विशेष—संपूर्णग्रन्थस्य श्लोकानां संख्या— १८५३।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २४।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० २३४।
(३) जि० र० को०, पृ० ४१६।
(4) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P 701.

१२३. सप्तव्यसन कथा

Opening : देखें, क्र० १२२।

Closing : देखें, क्र० १२२।

Colophon : संवत् १६२६ वर्षे शके १४९१ प्रवर्तमाने शुक्लसंवत्सरे वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ रविवारे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री धर्म-चन्द्रोपदेशात् बघेरवाल जाति चामरागोत्रे संघवीधीना तस्य भार्या लखमाई तयो: पुत्र नील्ह साह तस्य भार्या पुतलाई तयो: पुत्र गुणासाह

तस्य भार्या चोखाई ज्ञातावरणी कर्मक्षयार्थं गोमटश्री अधिकार्ये: पुत्तलिका पुस्तकं दत्तम् । कल्याणं भवतु । भट्टारक माहेन्द्रसेन ...... ।

५२४. शय्यादान बंक चूली कथा

Opening : शय्यादानगुणख्यायी संवेगरसकूपिका ।
सप्तव्यसननविंत्री बंकचूलकाथाख्यात् ॥

Closing : इत्येवं नृपनन्दनःप्रतिदिनं निःशेषपापोद्यतः,
शय्यादानमनुत्तरं गुणवतां दत्वा मुनीनां मुदा ।

Colophon : इति शय्यादाने बंकचूली कथा ।

५२५. शांतिनाथ पुराण (१६ सर्ग)

Oloaing : नमः श्रीशांतिनाथाय जगच्छांति वि धायिने ॥
कृत्स्न कर्म्मोघशांताय शांतये सर्वकर्म्मणाम् ॥ १ ॥

Closing : अस्य शांतिचरित्रस्य ज्ञेया: श्लोका: सुलेखकै: ॥
पंचसप्तत्यधिकास्त्रिचत्वरिंशछतप्रमा: ॥ ४१७ ॥

Colophon : इति श्रीशांतिनाथचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते श्री शांतिनाथसमवसरणधरमोपदेशमोक्षगमनवर्णनो नाम षोडशोऽधिकार: ॥ १६ । इति श्री शांतिनाथचरित्रं समाप्तम् । शुभं भवतु ॥ मासोत्तमे मासे वैशाखेमासे शुक्लतिथौ षष्ट्यां भृगुवासरे अय ग्रंथा समाप्त. । लिखितमिदं पुस्तकं मिश्रोपनामकगुलजारीलालशर्मणा ॥ संवत् १९७१ ॥ आर्य्या बनाई ।

श्लोक—भिन्डे निवासनशाली गुलजारीलाल नामको हि मिश्रश्च ॥
विललेख पुस्तकं यत् पातु सदा तल्लिखकमान् लोके ॥ १ ॥

रि० ग्वालियर जि० भिंड । श्लोक संख्या ५६७२ संवत् १९२१ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

द्रष्टव्य–(१) जि० र० को०, पृ० ३८० ।
(२) दि० जि० ग्रं० र०, पृ० २४ ।
(३) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 694

१२६. शान्तिनाथ पुराण

Opening : प्रणम्य परमानन्दान् देवसिद्धान्तसगुरून् ।
शांतिनाथपुराणस्य भाषा सहित नौम्यहम् ॥

Closing : जिनवर धर्मप्रभाव सों, परम विस्तरयो ग्रंथ ।
ता सेवत पाइये सदा, नाक मोष (मोक्ष) को पंथ ॥

Colophon : इति श्री शांतिनाथ पुराण आचार्य श्री सकलकीर्ति विरचिताद्भाषा विरचितात् लघुकवि सेवारामेन तस्य जिनज्ञानोत्पत्ति धर्मोपदेश विहार समय निर्वाणगमन निरूपणो नाम पचदसमोधिकारः । इति शांतिनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् । लिखि आरा नगर में श्री जिनमंदिर विषै मिती चैत्रशुक्ल चौथ वार बुध को लिख समाप्त भया ।
शुभं भवतु ।

१२७. शान्तिनाथ पुराण

Opening : देखें, क्र० १२६ ।

Closing : देखें, क्र० १२६ ।

Colophon : देखें, क्र० १२६ ।

इति श्री शान्तिनाथ पुराण भाषा संपूर्णम् । लेखकं दुर्गाप्रसाद ब्राह्मण लिखि गोरखपुरमध्ये अलीनगर में श्री जिनमंदिर विषै मिति कार्तिक सुदी चौथ (४) वार बुध को लिखि समाप्त भया ।

धर्मेन हन्यते शत्रु धर्मेन हन्यते ग्रहः ।
धर्मेन हन्यते व्याधि यथा धर्म तथा जयः ॥

१२८. शीलकथा

Opening : प्रथमहि प्रणमूं श्री जिनदेव, इन्द्र नरिन्द्र करे तिन सेव ।
तीनलोक में मंगलरूप, हे वंदू जिनराज अनूप ॥

Closing :

का नर शील दुरंधर नारि।
सो नर सदा पवित्र विहार ॥
वा नर त्रिया वि ... ... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२९. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८ ।

Closing : देखें क्र० १३० ।

Colophon : इति शील माहात्म्य कथा सम्पूर्णम् । दस्तखत दुरगा-प्रसाद मिति कुवार (आश्विन) सुदी १४ सोमवार को बाबू केशो (केशव) दास की कबीला सुमतदास की महतारी ने चढ़ाया पंचायती मंदिर में गया जी के ।

१३०. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८ ।

Closing :

शीलकथा पूरनभई पढ़े सुने जो कोय।
सुख पावें वे नर त्रिया, पाप नाश तिन होय ॥

Colophon : इति श्री शीलकथा सम्पूर्णम् । तारीख २ अप्रैल सन् १९०५ । बैशाख कृष्ण ३ रविवार ।

१३१. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८ ।

Closing : देखें, क्र० १३० ।

Colophon : इति श्री शील माहात्म्य की कथा सम्पूर्णम् । मिती पौष कृष्ण ११ दिन शनिवार को पूरण भई । इदं पुस्तकं नीलकंठदासेन लिखितम् ।

१३२. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८ ।

Closing : देखें, क्र. १३० ।

Colophon : इति श्री शीलकथा सम्पूर्ण । मिति वैशाख वदी १ सन् १२७६ साल दसखत दुरगा प्रसाद जैनी जिला आरा ।

१३३. श्रेणिकचरित्र

Opening : तीनलोक तिहुंकालमें पूजनीक जिनचंद ।
श्री अरहंत महंतके, बंदौं पद अरविंद ॥

Closing : मनवचतन यह शास्त्र कों, सुनें सरदहै सार ।
नामशर्म्म भोगिकै, होत भवोदधिपार ॥

Colophon : इति श्री श्रेणिक महाचरित्रे ग्रंथ फलितवर्णनो नामएकविंश-तिमो प्रभाव: । इति श्रेणिकचारित्र सम्पूर्णम् ।

उगणीस सौ बासठ यही, कृष्ण पाच वैसाख ।
सोम सहारनपुर विषै, सीताराम जुराख ॥१॥
मूलऋक्ष शिवयोग में लिखकरि पूर्ण विचार ।
पंडित जन पढ़ लीजियो, लिखी बुद्धि अनुसार ॥२॥
जैसी प्रति देखी लिखी, तैसी नहीं महान ।
निजकर शोधि संभारिकै, पढ़ि लीजै बुधवान ॥३॥

शुभम् संवत्सर: १९६२ शक: १८२७ वैशाखकृष्ण पचम्यां सोमदिने मूलर्क्षे शिवयोगे सहारनपुरनगरे लिपिकृतं पं० सीताराम-शास्त्री निजकरेण ।

भव्या: पठंतु शृण्वन्तु, क्षेममार्गानुगामिन: ।
करार्पेण विदोतूर्णं श्रीमद्गुरुप्रसादत: ॥

१३४. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री वर्द्धमानमानंदं नौमिनानागुणाकरम् ।
विशुद्धध्यानदीप्तार्चिर्हुतकर्मसमुच्चयम् ॥

Closing : वंदारुहेमगिरिधामरभूमिवास संमानदी नमसि सिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठंतु यावदमितो वरमस्यवैश्मा तिष्ठंतु कोविदमनींशुवमध्यभूता: ॥

Colophon : इति श्री श्रेणिकचरित्रप्रथमानुयोग भविष्यत् पद्मनाभपुराणे आचार्यशुभचन्द्रविरचिते पंचकल्याणवर्णनो नाम पञ्चदशपर्व: समाप्त: । संवत् १८०७ ज्येष्ठसुदी ५ मंगलदिने लिखितं मुनिविमल सुश्रावकपुण्यप्रभावक जैनीलाला प्रतापसिंह जी आत्मार्थ परमभ-नोग्यम् ।

संवत् १९९३ विक्रमीये आषाढ़ सुदि १० मंगलदिने रोशन-लाल लेखक ने लिखा ।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २५ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३९६ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २२४ ।
(४) आ० सू० पृ०, १५७ ।
(५) रा० सू० II, पृ० १६, २३१ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २१६ ।
(7) Catg. of skt. & Pkt. Ms., page, 698.

१३५. श्रेणिकचरित्र

Opening : पणवेवि अणिंद हो चरमजिणिंद हो, वीर हो दंसणणाणवहा ।
सेणिय हो णरिंदहु कुवलयचंद हो णिसुणहो भविय हो पवरकहा ॥

Closing : दयधम्मपवत्तणु विमलसुकत्तणु णिसुणंतही जिणइंदहु ।
ज होइ सपण्णउ हुउ मणिमण्णउ तं सुह जगिहरि इंदहु ॥

Colophon : इयसिरि वड्ढमाणकव्वे पयडियचउवग्गमग्गरसभव्वे सेणिय अभयचरित्ते विरइय जयमित्तहल्लसुकइत्तो भवियणजणमणहरण संथाहिवहोलिवम्मकण्ण सेणियधम्मलाहो वड्ढमाणणिव्वाणगमणवण्णणो णाम एयारहमो संधी परिच्छेऊ सम्मत्तो सधी ॥ ११ ॥

इति श्री श्रेणिकचरित्रं सम्पूर्णम् । सवत् १७६६ वर्षे श्रावणवदि ५ भृगु अपराह्निसमए श्रीपालसमनगरि स्थाने लिखित ब्रह्म कृपासागर तच्छिष्य लिखितं पंडित सुंदरदास ।

शुभमिती आषाढ़शुक्ला ८ बृहस्तपरिवार वीर सम्वत् २४६३ विक्रम संवत् १९९३ । हस्ताक्षर रोशनलालजैन ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३९६ ।

१३६. श्रेणिकचरित्र (११ संधि)

Opening : परमप्पयभावणु सुहगुणपावणु णिहणिय जम्मजरामरणु ।
सासयसिरिसुंदरु पणयपुरंदरु रिसहगुण वविसिवमुसपसरणु ॥

Closing : देखें, क्र०, १३५

Colophon : इति श्री वर्द्धमानकाव्यं ॥ श्रेणिकचरिए एकादशमो संधि: समाप्ता ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्य राज्ये संवत् १६०० तत्रवर्षे फाल्गुणमासे कृष्ण पक्षोद्वितीयायां २ तिथौ शुक्रवासरे श्री तिजारा स्थान वास्तव्यो साहिआल मुराजप्रवर्त्तमाने श्री काष्टासंघे माथुरान्वये । पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे साहुतोल्हा (?) भार्या राणीतस्य पुत्र जिणदासु । तस्य यार्या सोभा तत्पुत्रा पंच । प्रथम पुत्र साधु महादासु । द्वितीय पुत्र साधुगेल्हा । तृतीय पुत्र साधु नगराजु । चतुर्थपुत्र साधु जगराजु । पंचमपुत्र साधु सीहू । जिण-दास प्रथमपुत्र महादासु तस्य भार्या दोदासही । तस्य पुत्रते जनुतस्य भार्या लाडो । जिनदास दुतीयपुत्र गेल्हा तस्य भार्या धीमाही तस्य पुत्र मानूभस्य भार्या भामो तस्यसुत्रकीतनु । दुतीय सुत्र सोनू तस्य भार्या पोमी दुतीय भार्या सवीरी । जिणदास तृतीयपुत्र नगराजु-तस्य भार्या धनपालही पुत्र चत्वार प्रथमपुत्र जीवांहुतस्य भार्या भीपयो दुतीयपुत्र अमियपालु तृतीय पुत्र ग···? चतुर्थ दरगहमलु । जिणदास पुत्र चतुर्थ जगराजु तस्य भार्या धीमाही तस्य तृतीय बूढा । तस्य तस्य भार्या चांदिणी दूतीय पुत्र ··· ···· ···· तृतीयतो तु जिणदास पंचमपुत्र सीहु तस्य भार्या लक्ष्मणही तस्य ·· ···· ···· तस्य भार्या कपूरी । एतेषां मध्ये साधु सांगूनि इदं श्री श्रेनिकसारा ज्ञानावरणी कर्म्मक्षयनिमित्तेन आत्मपठनार्थं कर्मक्षय निमित्तम् लिख्यापितं ॥

१३७. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री जिनवंदौं भावयुत, मनवचतन सुद्ध रीति ।
ऐसो है परताप प्रभु, कहीं उपजै भीत ॥

Closing : धर्मचंद्र भट्टारक नाम, ठोऽया गोत बड्यो अभिराम ।
मलयसेण सिंहासन सही, कारंजय पट शोभा लही ॥

Colophon : इति श्री होनहार तीर्थङ्कर पुराणे भट्टारक श्री विजयकीर्ति विरचिते जंबूस्वामी अरहदास श्रेष्ठि अर्जिका मुनिदीक्षाविधानवर्णनं नाम द्वात्रिंसोऽधिकारः। संवत् १९२१ शाके १७८४ समय भाद्रपदे मासे कृष्णपक्षे एकादश्यां गुरुवासरे इदं पुस्तकं लिखितं रामसहाय सर्मणः ग्रा० बांसपाली अ० आरे।

१३८. श्रेणिकचरित्र

Opening :

श्री सिद्धचक्र विधि केवल रिद्धि।
गुण अनंत फल जाकी सिद्ध ॥
प्रणमौं परम सिद्ध गुरु सोइ।
भव्य संग ज्यौं मंगल होइ ॥

Closing :

जीवदया पालै दुखहरै, अशुचि बोल कबहुं न उच्चरै।
आप आपनै चित सब सुखी, कर्म जोग शांक नर दुखी ॥
... ...तहा कथा यह पूरण करै ॥

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसंगमंगलकरणं बुधजनमनरंजन पातिगगंजन सिद्धचक्रविधि दुखहरणं त्रिभुवनसुखकारण भव्यजलतारण सम्पूर्णम्। श्री लिखितं ब्राह्मण पं० चन्द्रावह महाराष्ट्र ज्ञानी ब्रह्मा हरिप्रसाद। संवत् १८६५ मिति चैत्र सुदी ७ रविवार। शुभ भूयात्।

१३९. श्रेणिक चरित्र (९ अधिकार)

Opening :

नत्वा श्रीमज्जिनाधीशं सुराधीशार्चितक्रमम्।
श्रीपालचरितं वक्ष्ये सिद्धचक्रार्चनोत्तमम् ॥

Closing :

श्रीयावत्र महेन्द्रदत्त सुयती संज्ञानवन्निर्मलः।
सूरि श्रीगुणसागरादिविबलिनो सेवापरः सन्मतिः ॥
ख्याते मालवदेशसंघे पूर्णाशानगरे वरे।
श्रीमहावीरजिनागारे सिद्ध शास्त्रमिद शुभम् ॥
संवत् सार्द्धसहस्रं च पचाशीति समुत्तरे।
आषाढेषु पंचम्यां संपूर्ण रविवासरे ॥

Colophon : इति श्रीसिद्धचक्रपूजातिशयं प्राप्ते श्रीपालमहाराज चरित्रे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदि ब्रह्म श्री शांतिदासानुमोदिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्रीपालमहामुनीन्द्रनिर्वाण गमन-वर्णनो नाम नवमोधिकारः सम्पूर्णम् । संवत् १८३७ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे । कुंदकुंद आचार्याम्नाये भट्टारक श्री गुलालकीर्तजी तत् शिष्य हरिसागरजी तत् पुत्र: लालजु पंडित इदं पुस्तक लिखित्वा परोपकाराय इदं हिरदै नगमध्ये श्रावण शुक्ल पंचम्यां संपूर्णो जातः । शुभ भूयात् । मोसमात गोवींदा कुंवर औजे बाबू महावीर सहायजी कीने दललाक्षणी के उद्यापन में चढ़ाया मीति भादो शुक्ल १५ संवत् १९४५ ।

द्रष्टव्य—जि र० को०, पृ० ३९७ ।

Catg. of Skt. & pkt. M., P 696.

१४०. श्रीपाल चरित्र

Opening : प्रथमहि लीजै ॐकार । जो भवदुख विनाशन हार ।।
सिद्धि चक्रविध केवल रिद्ध । गुण अनत जाको फल सिद्ध ।।

Closing : ता सुत कुल मंडन परमध्य । धर्म आगरे में अरि सध ।।
ता सुत बुद्धि हीन नहि आन । तिन कियो चौपई बध बखान।।

Colophon : नही है ।

१४१. श्रीपाल चरित्र

Opening : जय श्री धर्मनाथ सुखगेह, कंचन वरनविराजति देह ।
जय श्री संति पयासहु साति, दुखहरन मूरति सोभति ।।

Closing : अरू जो नरनारी व्रतकरें, चहुँ गति को भ्रम सव हरें ।
भव्यनि को उपहास बताइ, निहिचै सोउ मुकति हि जाइ।।
।।२४००।।

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसंयमंमगलकरने बुधजन मनरंजने पातिगगंजने सिद्धचक्रविधिदुखहरने त्रिभुवनसुखकरने भवजलतरने चौपही बंध परिमल्ल कृतं श्री जिनवर बंधौ महि आनंदी सिद्धचक्र बसुसारलीयं जुवती नवरंग पुरजनसंगम गहेसुर निजगेह गय । एक दसमी संधि ।।११।।

Colophon : लिखतं जवाहरब्राह्मणगढ गोपाल (ल) मध्ये मिति आषाढ़ कृष्ण ११ दैत्यवारे शुभ संवत् १८९१ ।

१४२. श्री पुराण

Opening : देखें, क्र० १ ।

Closing : देखें, क्र० १ ।

Colophon : इति श्री पुराणसमाम्नाये दशमं पर्व । इत्ययं समाप्तो ग्रन्थः ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३६८ ।

१४३. श्रुतपंचमी व्रत (भविष्यदत्त चरित्र)

Opening : विशुद्धसिद्धान्तमनंतदर्शनं, स्फुरच्चिदानंदमहोदयोदितम् ।
विनिद्रचंद्रोज्ज्वलकेवलप्रभं प्रणौमि चंद्रप्रभतीर्थनायकम् ॥

Closing : अपठनीय ।

Colophon : अपठनीय ।

१४४/१. सुदर्शनचरित्र (८ परिच्छेद)

Opening : नमः श्रीवर्द्धमानाय धर्मतीर्थप्रवर्तिने ।
त्रिजगत्स्वामिनेनत शर्मणे विश्वबांधवे ॥

Cloning : सर्वे पिंडीकृता· श्लोकाः बुधैर्नवशतप्रमा· ।
चरित्रस्यास्य विज्ञेया श्री सुदर्शनयोगिन· ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक सकलकीर्तिविरचिते श्रीसुदर्शनचरित्रे सुदर्शनमहामुनिमुक्तिगमन वर्णनोनामाष्टमः परिच्छेदः समाप्तमिति । शुभं भवतु । देउलग्रामे नेमिसागरेण अयं ग्रन्थः लिखितः स्व पठनार्थम् । शके १७३७ तिथि फाल्गुन सुदी ३ ।

द्रष्टव्य—(१) वि० जि० ग्रं० र०, पृ० ३० ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० २४९ ।
(३) आ० सू०, पृ० १४६ ।
(४) जि० र० को०, पृ० ४४४ ।
(5) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P.711.

१४४/२. सुदर्शन सेठ कथा

Opening : तदा सुदर्शनः स्वामी तस्मिन्घोरोपसर्गके ।
ध्यानावासे स्थितः तत्र मेरुवन्निश्चलाशयः ॥

Closing : किंचिदूनः परित्यक्त -कायाकारोप्यकायकः ।
त्रैलोक्यशिखरारूढः तनुवाते स्थिरं स्थितः ॥

Colophon : नहीं है ।

१४५. सुगंधदशमी कथा

Opening : श्रीजिनसारद मनमैं धरू । सुहगुरु नैं नित वदन करु ॥
साधसंत पद वंदो सदा । कथा कहुं दशमीनी मुदा ॥

Closing : ए व्रत जे नर नारी करैं, ते भौसागर तै ओतरैं ।
छंदै पाप सकल सुख भरैं, ब्रह्मज्ञानसार उच्चरैं ॥

Colophon : इति सुगंधदशमी कथा सम्पूर्णम् ।

१४६. सुकोशल चरित्र

Opening : जिणवरमुणिविंद हो थुवसयइंदहु चरणजुवलु पणवेवित हो ॥
कलिमलदुहनासणु सुहणयसासणु चरिउ भसामि सुकोशल हो ॥

Closing : जा महिरयणायरु णहिससिभायरु कुलगिरिखरकण यद्दिवरा ।
तावाइ जंतउ वुहंहि णिरुत्तउ चरिउ पवट्टउ एहुधरा ॥

Colophon : इय सुकौसल चरिए छउसंधी सम्मत्तो ॥ ६ ॥

यह प्रति सु० देहली खजूर की मसजिद वाले नये पंचायती मंदिर में से संवत् १६३३ विक्रम की लिखी हुई प्रति से लिखी जो कि बाबू देवकुमार जी द्वारा स्थापित श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए संग्रहार्थ विक्रम् सवत् १९८७ के मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को लिखकर तैयार हुई । इति शुभम् ।

द्रष्टव्य— जि० र० को०, पृ ४४४ ।

१४७ उत्तर पुराण

Opening : श्रीमांजितोजितो जीयाद् यद्वचास्यमलानलम् ।
क्षालयंति जलानीव विनेयानां मनोमलम् ॥

Closing : अनुष्टुप छन्दसा ज्ञेया ग्रंथसंख्यात्रविंशतिः ।
सहस्राणां पुराणस्य व्याख्यातृश्रोतृलेखकैः ॥

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते श्रीवर्द्धमानपुराणं परिसमाप्तम्...... ....? समाप्तं च महापुराणं ग्रंथाग्रंथसहस्त्र २०००० । श्रेयः श्रेणयः .... । संवत् अष्टादशशात १८०० पंचदशसंवत्सरे मार्गशीर्षमासे दशम्यां तिथौ कृष्णायां शनिवासरे ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३२ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १०७ ।
(३) रा० सू० III, पृ० २१२ ।
(४) आ० सू०, पृ० १५ ।
(५) जि० र० को०, पृ० ४२ ।
(६) Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 627
(७) Catg. of Skt. Ms., P. 314 ।

१४८ उत्तर पुराण

Opening : ....जिमि भूपति में षट गुन होय ।
ते निह्व कंटक राजकरेय, आगे और सुनो चितदेय ॥

Closing : इह पुराण जिन पास को संपूरण सुखदाय ।
पढ़ै सुने जे भव्य जन ते खुस्याल सुखपाय ॥

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्ठि लक्षण महापुराणसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्य प्रणीतानुसारेण श्री उत्तरपुराणस्य भाषाया श्री पार्श्वतीर्थंकरपुराण परिसमाप्तम् ।

१४९. वर्द्धमानचरित्र (१९ अधिकार)

Opening : जिनेशे विश्वनाथाय अनंतगुणसिंधवे ।
धर्मचक्रभृतेमूर्द्ध्ना श्री वीरस्वामिने नमः ।।

Closing : त्रिसहस्त्राधिकाः पंच त्रिंशद्श्लोकाः भवंतिवै ।
यत्नेन गुणिता सर्वे चरित्रस्यास्य सन्मते ।।

Colophon : इति भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते श्री वीरवर्द्धमान-चरित्रे श्रेणिकाभयकुमारो भवावली भगवन्निर्वाणगमनवर्णनो नामैकोनविंशोधिकारः । ग्रंथ संख्या ३०३५ । संवत् १८८६ का मिति माघकृष्णत्रयोदश्यां गुरुवासरे श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे-लोहाचार्याम्नाये भट्टारकश्री सहस्त्रकीर्तिः देवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचंददेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीललितकीर्ति वर्तमाने तेनेदं पुस्तक लिखापित विराटनगर मध्ये कुंथुनाथचैत्यालयमध्ये इद पुस्तक लिपिकृतम् ।

तैलाद्रक्षेजलाद्रक्षेद्रक्षेसिथलबंधनात् ।
मूर्खहस्ते न दातव्यं एवं वदति पुस्तकम् ।।
जबलगमेरु अमिग्ग है तबलग ससिअरू सूर ।
तब लग यह पुस्तक रहो दुर्नय हस्तकर दूर ।।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३४३ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms. P 689.

१५०. वर्द्धमान पुराण

Opening : श्री जिनवर्द्धमान इह नाम, साथ विराजतु है गुणधाम ।
घातिकर्म क्षय तैं वृद्धि जोय, ज्ञानी तणी मम दीजै सोय ।

Closing : महावीर पुराण के, श्लोक अनुष्टुप् जान ।
दोय सहस्त्र नवशतक है संख्या लयो शुभ जान ।।

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्ठि लक्षणमहापुराणसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्य-प्रणीतानुसारेण श्री उत्तरपुराणस्य भाषायां श्री वर्द्धमानपुराण परिस-

माप्तम् । संवत् १८८४ शाके १७४६ ज्येष्ठ शुक्ल पंचम्यां गुरु-वासरे पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्मा ने लिखि । शुभं भूयात् ।

१५१. विष्णुकुमार कथा

Opening :

प्रथमहिं प्रथम जिनेन्द्र चरण चित्त ल्याईयै ।
प्रथम महाव्रतधरन सु ताहि मनाईयै ॥
प्रथम महामुनि भेष सुधरण धुरंधरी ।
प्रथम धरम परकाशन प्रथम तीर्थंकरी ॥

Closing :

मुनि उपसर्ग निवारणी, कथा सुने जो कोइ ।
करुणा उपजे चित्तमें, दिन दिन मंगल होय ॥

Colophon : इति श्री विष्णुकुमार का वात्सल्यमुनि उपसर्ग निवारणी कथा लाल विनोदी कृत स्वयं पठनार्थं सूकरे लिखितम् सम्पूर्णम् । शुभ भवतु । संवत् १६४६ चैतशुक्ल पक्ष चौथ शनिवासरे । लिखतं बुणू बाबू की मांजी कलकत्ता मध्ये ।

इतनी मेरी अरज है, सुनो त्रिभुवन के ईश ।
तुम विन काऊ और कूं, नये न मेरो शीश ॥

१५२. व्रतकथाकोश

Opening :

ज्येष्टं जिनं प्रणम्यादावकलंकं कलध्वनि ।
श्री विद्यानंदिनं ज्येष्टजिनव्रतमयोच्यते ॥

Coleing :

स्त्री चैत्रमासेन मात्रसदृक्षा निर्व्युढचारव्रता ॥
दीर्घायुर्बलभद्रदेवहृदया भूयात्वद्यं संपदः ॥२४६॥

Colophon : इति भट्टारक श्री मल्लिभूषण भट्टारक गुरुपदेशात्सूरी श्री श्रुतिसागर विरचितापल्लविधानव्रतोपाख्यान कथा समाप्ता । फागुण कृष्णपक्ष संमत् १६३७······ ॥ ब्राह्मण गंगा वकस पुष्करण्य पाराशर ॥ बनेडामध्ये ॥

संवत् १७१६ का भाद्रवमासे कृष्णपक्षे प्रतिपत्तिथौ बुध-वासरे अस्य व्रतकथा कोशशास्त्रस्य टीका लिखिता ॥

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३६८ ।

१५३. यशोधरचरित्र

Opening : जितारातीन्जिनान्नत्वा सिद्धान्सिद्धार्थसंपदः ।
सूरीनाचारसंपन्नानुपाध्यायान् तथा यतीन् ॥१॥

Closing : सम्यक् सिद्धगिरो······ ·····सच्छ्रिया: ॥

Colophon : इति यशोधरचरिते मुनिवासवसेनकृतेकाव्ये अभयरुचि भट्टारक अभयमत्यो: सूर्यप्रगमनो चंद्रमारी धर्मलाभो यशोमत्यादयोन्ये यथा-यथं नाक निवासिनोम् अष्तम: सर्ग: समाप्त: । इति वासवसेन विरचिते यशोधरचरित्रं समाप्तम् । संवत् १७३२ वर्ष सोमे काष्ठासंघे भट्टारक श्री पं० विश्वसेन ब्रह्मजयसागर: । आत्मपठनार्थम् ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६ ।
(२) रा० सू० III, पृ० ७५, २१७ ।
(३) जैं० ग्र० प्र० सं० १, पृ० ७ ।
(४) जि० र० को० पृ० ३२० ।

१५४. यशोधरचरित्र

Opening : देखें, क्र० १५३ ।

Closing : कृतिर्वासवसेनस्य वागडान्वयजन्मन: ।
इमां यशोधराभिख्यां संसोध्य धीयतां बुधा: ॥

Colophon : इति यशोधरचरिते अभयरुचि भट्टारकस्य स्वर्गगमनो वर्णनो नामाष्टम: सर्ग ।

सवत् १५०१ वर्षे माघसुदि ३ गुरो अद्य इहसूर्यपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासंघे नंदितटगच्छे विद्याधरगणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये·········सुश्राविकाहरषू पुत्र जांईआ सारंगधर्म-प्रभावना निमित्तं श्री यशोधरचरित्रस्य पुस्तकं लिखाप्य श्री जिन-शासनम् ।

१५५. यशोधरचरित्र (४ सर्ग)

Opening : श्रीमदाग्भ्रदेवेन्द्रमयूरानंदवर्त्तनम् ।
सुव्रतांभोधरं वन्दे गंभीरनयगर्जितम् ॥

Closing : मुनिभद्रयश: कांत मुनिवृंदै: सुशंषिता ।
भद्रं करोतु मे नित्यं भयदोषाधिवर्जिता ॥७६॥

यह ग्रंथ वीर सं० २४४० में लिखा गया है ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ३१६ ।

धर्म, दर्शन, आचार

१५६. अध्यात्मकल्पद्रुम

Opening : नमः प्रवचनाय। अथायं श्रीमान् शांतनामरसाधिराजः सकलागमादिसुशास्त्रास्मरिवार्यनिषद्भूतसुधारसायमाऐहिकामुष्मिकाञमंतानदोहसाधनतया पारमार्थिकोपादेयत्वयमर्बरससारभूत ज्ञाताशांतरसभावनात्माऽध्यात्मकल्पद्रुमाभिधान ग्रंथांतरग्रथनतनिपुणेन पद्य संदर्षेण भाव्यते।

Closing : इममितिमानधीत्यचित्तेरम यतियो विरमत्वयं भवाद्राग्।
स च नियत मनोरमेतवास्मिन् सह नव वैरिजयश्रियाशिव श्री।

Colophon : इति नवमश्रीशांतरसभावनास्वयो अध्यात्मकल्पद्रुमग्रंथोऽय जयअंके। श्री मुनिसुंदरभूरिभिः कृतम्।

विशेष—यह ग्रंथ करीब वि० सं० १८०० से भी कम का ज्ञात होता है।
देखें, जि० र० को०, पृ० ५।

१५७. अध्यात्म बारखड़ी

Opening : खोर तिलक बिंदी, अंग बाप उरमाल।
यामैं तो प्रभु ना मिले, पेट भराई चाल॥

Closing : ग्यान हीन जानों नहीं, मनमें उठी तरंग।
धरम ध्यान के कारनैं, चेतन रचे सुचग॥

Colophon : इति अध्यात्म बारखड़ी समाप्त।

१५८. अन्यमतसार

Opening : आदिनाथ भगवान की वंदना करि संसारके हितके निमित्त जैनमतधर्मकी प्रसंशाकरि मुख्यतया धर्म की धारना करना श्रेष्ठ है

Closing : शास्त्र यह अब पूरन भयौ। भव्यन के मन आनंद ठयौ।
जे श्रावक पढ़हैं मनलाय। छहमत भेद तुरत सोपाय ।।

Colophon : इति श्री अन्यमतसार सग्रह ग्रथ भाषा संपूर्ण ।
एक सहस्त्र अरु छ सौ जान।
ग्रंथ सो संख्या करी बखान ।।
पंडित बैनीचंद सुजान ।
जैनधर्म मैं किंकर जान ।। संपूर्ण ।
मिति माघ बदी १४ संवत् १९३६ ।

१५९. अर्थप्रकाशिका टीका

Opening : बदौं श्री वृषभादि जिन धर्मतीर्थ करतार ।।
नमैं जासपद इद्र सत सिवमारग रुचिधार ।।

Closing : राजै सहज स्वभाव मैं, तजि परभाव विभाव ।
नमौं आप्त के परमपद ... ... ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष—मात्र एक अध्याय की टीका पूरी हुई है। शेष अनुपलब्ध है।

१६०. अष्टपाहुड वचनिका

Opening : श्रीमत वीरजिनेश रवि, मिथ्यातम हरतार ।
विघ्नहरन मगलकरन, बदौ वृष करतार ।।

Closing : सवत्सर दसआठ शत सतसठि विक्रमराय ।
मास भाद्रपद सुकलतिथि तेरसि पूरण थार ।।

Colophon : इति श्री कुंदकुंदाचार्य कृत अष्टपाहुड ग्रथ ... प्राकृत गाथा बंध ताकी देशभाषामय वचनिका समाप्तम् । श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ १४ गुरुवासरे संवत् १९६० । श्री ।

१६१. अष्टपाहुड वचनिका

Opening : देखें, क्र० १६० ।

Closing : देखें, क्र० १६० ।

Colophon : देखें, क्र० १६० ।

लिखतं वैश्य गंगाराम साकिन मुरादाबाद मुहल्ला किसरौल संवत् १६४६ चैतवदी अमावस दिन इतवार (रविवार) ।

१६२. आचारसार

Opening : लक्ष्मीवीर जिनेश्वर: पदनतानंतामराधीश्वर: ।
पद्मासमपदांबुज: परमविल्लीलाप्ततत्वव्रज: ॥

Closing : विमेघचद्रोज्वलकीर्तिमूर्तिस्समस्तसैद्धांतिकचक्रवर्ति: ।
श्रीवीरनंदीकृतवानुदारमाचारसारं यतिवृत्तसारं ॥
ग्रंथ प्रमाणमाचारसारस्य श्लोकसंमितं
भवेत्सहस्त्रंद्विशतं पंचाशच्छांकतस्तथा ॥३५ ॥

Colophon : इतिश्रीमन्मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव श्रीपादप्रसादऽसाधितात्मप्रभाव समस्त विद्याप्रभाव सकलदिग्वर्ति कीर्ति श्री मद्वीरनदी सैद्धांतिक चक्रवर्ति कृताचारसारे शीलगुणवर्णनं नाम द्वादशाधिकार: समाप्त: ॥१२॥ श्री पंचगुरुभ्योनम: ॥

शके १८३२ साधारण नाम संवत्सरस्य फाल्गुन मासे कृष्ण-पक्षे ११ रविवासरे समाप्तोयं ग्रंथ: । रामकृष्ण शास्त्रिणा पुत्र रंगनाथ शास्त्रिणा लिखितोयं ग्रन्थ शुभं भवतु ।

देखें, जि० र० को०, पृ० २२ ।

१६३. आलापपद्धति

Opening : गुणानां विस्तरं वक्ष्ये स्वभावानां तथैव च ।
पर्यायाणां विशेषेण नत्वा वीरं जिनेश्वरम् ॥

Closing : ·· ··· संश्लेषरहितवस्तुसंबन्धविषयोनुपचारिता: सद्भू-तव्यवहार: यथाजीवस्य शरीरमिति ।

Colophon : इति श्री सुखबोधार्थमालापपद्धतिश्रीदेवसेन पंडित विरचिता समाप्तम् ।

(१) जि० र० को०, पृ० ३४।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०६।
(४) आ० सू० पृ०, १३।
(५) रा० सू० II, पृ० ८०, १६४।
(६) रा० सू० III, पृ० १९६।
(६) दि० जि० र०, पृ० ३८।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., page, 626.

१६४. आलापपद्धति

Opening : देखें, क्र० १६३।

Closing : देखें, क्र० १६३।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापपद्धतिः श्रीदेवसेनपण्डित विरचिता समाप्ता। लिखतं पूर्वदेश आरा नगर श्री पार्श्वनाथजिनमंदिर मध्ये काष्ठासंघे मायुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्याम्नाये श्री १०८ भट्टारकोत्तमे भट्टारकजी श्री ललितकीर्ति तत्पट्टे मार्दवापरनामी श्री १०८ राजेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति दिल्ली सिंहासनाधीश्वर नैं लिखी संवत् १९४९ का मिती भादव वदी ६ वार रवि कू पूरा किया।

१६५. आराधनासार

Opening : विमलवरगुणसमिद्धं सुरसेण वंदियं सिरसा।
णमिऊण महावीरं वोच्छं आराहणासारं ॥१॥

Closing : अमुणियतच्चेण इमं भणियं जं किंपि देवसेणेण।
सोहंतु तं मुणिंदा अथि हूजइ पवयणविरुद्धं ॥११५॥

Colophon : एवं आराधनासारं समाप्तम्।
द्रष्टव्य—जि. र. को., पृ. ३३।
Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 626

१६६. आराधनासार

Opening : प्रथम नमूं अर्हन्त कूं, नमूं सिद्ध शिरनाय।
आचारज उवझाय नमि, नमूं साधु के पाय ॥

Closing : कैई ग्रन्थनिकी वची वचनिका बाचामई देश की ।
पन्नालाल जु चौधरी जिनमिको कारक दुलीचंदजी ॥

Colophon : इति वचनिका बनने का सम्बन्ध सपूर्ण ।

१६७. आराधनासार

Opening : सम्यग्दर्शनबोधेन चरित्ररूपान् प्रणम्य पंचगुरून् ।
आराधनासमुच्चयमागमसारं प्रवक्ष्याम: ॥

Closing : छद्मस्थतया यस्मिन्नतिबद्धं किंचिदागमविरुद्धम् ।
शोध्यं तद्धीमद्धीमद्भिर्विशुद्धबुध्या विचार्यपदम् ॥
श्री रविचन्द्रमुनीद्रैः पनसोगे ग्रामवासिभिः ग्रन्थः ।
रचितोऽयमखिलशास्त्रप्रवीणविद्वन्मनोहारी ॥

Colophon : इत्याराधनासारः ।

यह ग्रन्थ जैन ज्ञानपीठ मूडविद्री के वर्तमान एवं जैनसिद्धान्त भवन आरा के भूतपूर्व अध्यक्ष विद्याभूषण प. के. भुजवली शास्त्री के तत्वावधान में उक्त भवन के लिए जैन मठ मूडविद्री के ग्रन्थागार से एन. चन्द्रराजेन्द्र विशारद–द्वारा लिखवाया गया । नवंबर १९४४ ई. ।

द्रष्टव्य—जि. र. को, पृ. ३३ ।

१६८. आषाढ़भूति चौपाई

Opening : सकल ऋद्धि समृद्धि करि, त्रिभुवन तिलक समान ।
प्रणमु पासजिणेसरू, निरूपम ज्ञान निधान ॥

Closing : ... नित होज्यो परम कल्याण रे ।

Colophon : इति श्री पिंड विशुद्धि विषये आसाढभूति चौपाई संपूर्णम् । संवत् १७६७ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी ४ शुक्रवारे श्रावकासदा कुवर लिखायतं । श्री आगरा नयरे ॥

१६९. आत्मबोध नाममाल

Opening : सिद्धसरन चितधारके, प्रणमूं शारद पाय ।
मुझ ऊपर कीजै कृपा, मेधा दीजे माय ॥

Closing : इक अष्ट चार अरि सात धरिये, माघसुदी दशमी रवी।
इह साख विक्रम राज के हैं, विस्तार कीजे कवी।
इह नाममाला अतिविशाला कंठ धारे जे नरा।
बहु बुद्धि उपजे हिये माही, ग्यान अगमें है खरा॥
॥१७६॥

Colophon : इति श्री आत्मबोध नाममाला भाषा सम्पूर्णम्।

१७०. आत्मतत्त्वपरीक्षण

Opening : समन्तभद्रमहिमा समंतव्याप्तसंविदा।
कुरुते देवराजार्य आत्मतत्त्वपरीक्षणम्॥

Closing : ... ... प्राणात्मवादोप्य प्रामाणिकः प्राणस्यानित्यतया देहात्मवादोक्तदोषप्रसङ्गात्।

Colophon : इति श्रीमदर्हत्परमेश्वरचारूचरणारविंदद्वंद्वमधुकरायमान-आत्मीयस्वांतेन सद्युक्तियुक्तमवचननिचयवाचस्पतिना अतिसूक्ष्मम तिना परमयोगीयोऽयसमुपेक्षितभागधेयेन सुहृतिकृतिविततिभागधेयेन सज्जनविधेयेन समुचितपविश्वचरित्रानुसंधेयेन जैनराजस्य जननजल-निधिराजायमानसिनतटाकनिलयदेवराजराजाभिधेयेन र्णाविवरण-वितरणप्रवीणेन अगण्यपुण्यवरेण्येन प्रणि · · · ·।

१७१. आत्मानुसार

Opening : शिक्षावचस्सहस्त्रैव क्षीणपुण्येन धर्मधीः।
पात्रे तु स्फायते तस्मादात्मैव गुरुरात्मनः॥

Closing : तद्विचारिसहस्त्रेभ्यो वरमेकस्तत्त्ववित्तमः।
तत्त्वज्ञानसमं पात्रं नाभून्न च भविष्यति॥

Colophon : नहीं है।

१७२. आत्मानुशासन

Opening : लक्ष्मी निवासनिलयं, विलीननिलय निधाय हृदिवीरं।
आत्मानुशासनं शास्त्रं, वक्ष्ये मोक्षाय भव्यानाम्॥

Closing : श्री नाभियोजिनोभूयाद्, भूयसे श्रेयसेयवः।
जगद्ज्ञानजलेयस्य दधाति कमलाकृतिम् ॥

Colophon : इति श्री आत्मानुशासनं समाप्तम्।
जैनधर्म की पाल, तुम करयो महाराज।
दर्शन तुम्हारे करत ही, पाप जात है भाज ॥
मिति ज्येष्ठ बदी ११ शुक्रवार संवत् १६४०। लिखतं ब्रह्मदत्त पंडित आत्म पठनार्थम्।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६।
(२) जि० र० को०, पृ० २७।
(३) प्र० जैन० सा०, पृ० १००–१०१।
(४) आ० सू०, पृ० १०।
(५) रा० सू० II, पृ० १०, १७६, ३८४।
(६) रा० सू० III, पृ० ३६, १६१।
(7) Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 623.

१७३. आत्मानुशासन

Opening : देखें, क्र० १७२।

Closing : इति कतिपयवाचांगगोचरीकृत्यकृत्यं,
चितमुदितमुच्चैश्चेतसां चित्तरम्यं।
इदम् विकलमंतः संततं चिन्तयन्तः,
सपदि विपद पेतामाश्रयते श्रियंते ॥ २६७ ॥

Colophon : जिनसेनाचार्य पादस्मरणादीनचेतसां।
गुणभद्रभदंतानां कृतिरात्मानुशासनम् ॥ २६८ ॥
इति श्रीमद्गुणभद्रस्वामी विरचितमत्मानुशासनं समाप्तम् ॥

१७४. आत्मानुशासन

Opening : श्रीजिनशासनगुरु नमौं. नानाविधि सुखकार।
आतमहित उपदेशतैं, करै मंगलाचार ॥

Closing : ····अथवा जिनसेनाचार्य का शिष्य जो गुणभद्र ताका माष्या है। ए दोऊ अर्थ प्रमाण है।

Colophon : इति श्री आत्मानुशासनमूलभाषाग्रंथ संपूर्णम्। सवत् १८५८ मिती मार्गशिर बदी १४।

१७५. आवश्यक विधि सूत्र

Opening : नमो अरहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं।।

Closing : १. सच्चित्त, २. दव्व, ३. विगई, ४. वाहणह, ५. वक्ष, ६. कुसुमेसु, ७. वांहण, ८. सयण, ६ विलेपण, १०. अबंत, ११. दिसि, १२. न्हाण, १३. भात्तसु, १४. मीम।

Colophon : इति आवश्यकविधिसूत्रं। संवत् १६४२ वर्षे कातग (कार्तिक) मासे शुक्लपक्षे पंचमी तिथौ रविवारे लिखितं कृषसतगुणेन। शुभं भवतु।

१७६. बनारसीविलास

Opening : ···ताल अरथविचार।।

Closing : ···ध्यानधरैं बिनती करैं।
बनारसि बंदाति ···।।

Colopnon : अनुपलब्ध।

१७७. भगवती आराधना

Opening : सिद्धे जयप्पसिद्धे चउव्विआराहणा फलं पत्ते।
वंदित्ता अरिहंते वुच्छं आराहणा कमसो।।

Closing : हरो जगत के दुख सकल करो सदा सुखकंद।
लसो लोक मैं भगवती आराधना अमंद।।

Colophon : इति श्री शिवाचार्य विरचित भगवती आराधनानाम ग्रंथ की देशभाषामय वचनिका समाप्तः। मिती माघ सुदी १२ संवत् १६६१। श्री जिनाय नमः।

१७८. बाईस परीषह

Opening : पंच परमपद प्रनमिके, प्रनमो जिनवर बानि ।
कहौ परीषह साधुकैं, बिंशति दोय बखानि ॥

Closing : हृदैराम उरोस तैं भए कवित्त ए सार ।
मुनि के गुन जे सरदहै, ते पावहि भवपार ॥

Colophon : इति श्री बाईस परीसह सम्पूर्णम् ।

१७९. भव्यकण्ठाभरण पञ्जिका

Opening : श्रीमान् जिनो मे श्रियमेषदिश्याद्यदीयरत्नोज्ज्वलपादपीठम् ।
कर्रीतेन्द्रोत्करमौलिरत्नैः स्वपक्षरागादिव चालितं स्वैः ॥ १ ॥

Closing : आप्तादिरूपमितिमिक्षमवेत्यगम्यगेतेषु रागमितरेषु च मध्यभावम् ।
ते तन्वते बुधजनः नियमेन तेऽ ऽासत्वमेत्य सततं सुखिनो भवन्ति ।६।

Colophon : इत्यर्हद्दासकृत भव्यकण्ठाभरणस्य पञ्जिका समाप्तम् ।
अय च मूडबिद्रि निवासिना रानु० नेमिराजाख्येन समालिख्य आषाढ़ शुक्लाष्टम्या समाप्तोऽभवत् ॥ वीरशक २४५१ ॥

देखें, जि० र० को०, पृ० २९३ ।

१८०. भव्यानन्दशास्त्र

Opening : श्रियं क्रियाद्यस्य महानिर्जेहे निरस्तगाम्भीर्यगुणः पयोधिः ।
स्वीकीयरत्नप्रकरैः प्रदीपशोभां बिधत्ते स जिनश्चिरं वः ॥१॥

Closing : नमः श्रीशान्तिनाथाय कर्मारण्यदवाग्नये ।
दमीरामममस्ताय बोधाम्भोधिसुधांशवे ॥

Colophon : इति श्रीमत्पाण्ड्यभूपतिविरचिते भव्यानन्दः समाप्तः ।
अयमपि रानु० नेमिराजाख्येन लिखितः । आषाढ़ शु० नवम्यां समाप्तोभूत् ॥
श्री वीरनिर्वाण शकं २४५१ ॥ मूडबिद्री ॥

१८१. भावसंग्रह

Opening : खविदघणघायिकम्मे अरहन्ते सुविधिदत्थणिवहेय ।
सिद्धाण्ठ गुणेसिद्धेरय शान्तय साहुगेथुवे साहू ॥ १ ॥

Closing : बरसारन्तयणीउणोसुन्दं परदो विरहिय परभावो ।
भवियाणं पडिबोहण परोपहा चन्दणाम् मुणी ॥ १२३ ॥

Clophon : इति श्रुतमुनिविरचितः भाव संग्रहः समाप्तः ॥

देखें—Catg of skt. & pkt. Ms., P. 678.

१८२. भावसंग्रह

Opening : श्रीमद्वीरंजिनाधीशं, मुक्तीशं त्रिदशार्च्चिम् ।
नत्वा भव्य प्रबोधाय, वक्ष्येऽहं भावसंग्रहम् ॥

Closing : यावद्वीपाद्वयो मेरु र्रविचंद्रदिवाकरौ ।
तावद्वृद्धि प्रयात्युर्च्चिवशदं जिनशासन ॥
अयोगगुणस्थानं चतुर्दशम् ।

Colophon : इति श्री वामदेव पंडित····· ··· ····

देखें, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ. ४२ ।
(२) जि. र. को., पृ. २९६ ।
(३) प्र. जै. सा., पृ. १६५ ।
(४) आ. सू., पृ. १०८ ।
(५) रा. सू. II, पृ. १६४ ।
(६) रा. सू. I , पृ. १८३ ।
(7) Catg. of skt. & pkt. Ms , P. 678

१८३. भावनासार संग्रह

ॐ नमो वीतरागाय ।

Opening : अरिहनव रजो हतनररहस्य हरं पूजनायमर्हं ······ ।

Closing : तत्वार्थरद्धान्त महापुराणेष्वाचारशास्त्रेषु च विस्तरोक्तम् ।
आख्यान् समासात्वनुयोगवेदी चारित्रसारं रणरंगसिंहः ॥

Colophon : इति सकलागम संयम संपन्न श्रीमज्जिनसेन भट्टारक श्री पादपद्म प्रसादासादित·········शिष्य श्री ब्रह्मसार सदाम्नाये ।

देखें,—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P 640.

१८४. ब्रह्मचर्याष्टक

Opening : कायोत्सर्गायतांगो जयतिजिनपतिर्नाभिसुनुः महात्मा ।
मध्यान्तेयस्य भास्वानुपरिपरिगतै राजतेस्मोग्रमूर्तिः ॥
चक्रं कर्मेन्धनानामतिबहुदहतो दूरमैदास्य ··· ···· ···।
··· ··· ··· त्यादिना ॥

Closing : मया पद्मनन्दिमुनिना मुमुक्षुजनं प्रति युवती स्त्रीसंगति वर्ज्जिनं अष्टकं भणितं कथितम्, सुरतरागसमुद्रगताः प्राप्ताजनाः लोकाः अजमयि मुनौ मुनीश्वरे क्रुद्ध कोधंः माकुरुत माकुर्वंतु मयि पद्म-नदिमुनौ ।

Colophon · इति श्री ब्रह्मचार्याष्टकम् समाप्तम् । शुभ संवत् १९३७ भादव सुदी ५ गुरुवार लिखितम् सुगनचंद पाल्मग्राममध्ये । शुभं भवतु ।

देखें– जि० र० को०, पृ० २८६ ।

१८५· ब्रह्म विलास

Opening : ओंकार गुण अतिअगम, पंचपरमेष्ठि निवास ।
प्रथम तासु वदन कियौ लहियह ब्रह्मविलास ॥

Closing : जामें निज आतम की कथा, ब्रह्मविलास नाम है जथा ।
बुद्धिवंत हंसियो मतकोय, अल्पमति भाषाकवि होय ॥
भूलचूक निजनेंन निहारि, शुद्ध कीजियो अर्थविचारी ।
संवत् सत्रह सै पचावन ···॥

Colophon : नहीं है ।

विशेष–इसके अन्तिम पद्य ही प्रशस्ति सूचक हैं ।

१८६. ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्री सिद्ध नमीज्जै ।
आचारिज उपझाय तासु पदवंदन किज्जै ॥

Closing : जह देखो तहाँ ब्रह्म है, बिना ब्रह्म नहीं और ।
जे यह पाये विनसुख कहै, ते मूरख शिरमौर ॥

Colophon : इति श्री ब्रह्मविलास भैया भगवतीदास जी कृत समाप्तम् ।
तनुज श्री बीरनलाल के, लेखक दुर्गालाल ।
जैनी आरामो वसे, कासिल गोत्र अग्रवाल ॥
श्री शुभ सम्वत् १६५४ मिती भादो शुक्ल १४ बृहस्पतिवार समाप्त भया ।

१८७. ब्रह्माब्रह्मनिरूपण

Opening : असी आउसा पच पद, वंदौं शीश नवाय ।
कहु ब्रह्मा अरु ब्रह्म की, कहुं कथा गुनगाय ॥

Closing : .... सोई तो कुपंथ भेद जाने नाही ।
जीवन की, बिना पंथ पाय मूढ़ कैसे मुन्दा हरसे ॥

Colophon : पूरनम् ।

१८८. बुद्धिप्रकाश

Opening : मनदुखहरकर सिद्धसुरा, नरासकल सुखदाय ।
हराकर्मभट अष्टक अरि, ते सिध सदा सहाय ॥

Closing : पढ़ो सुनो सीखो सकल, बुधप्रकाश कहंत ।
ताफल मिव अधनासिकैं, टेक लहो सिव संत ॥

Colophon : इति श्री बुधिप्रकाशनाम ग्रंथ सपूर्णम् । इसग्रंथ का प्रारंभ तो नगर इंदोर विषै भया । बहुरि तापीछै सपूरण भाडल-नग्र जोमैलसांता विषै भया । याके पढ़ैं सुनै तै ब्रहि होय तातें है भव्य हो जैसे तैसे इसका अभ्यास करने योग्य है ।

मिति कार्तिक वदी एकम चंद्रवार संवत् १६७८ तादिन यह शास्त्र समाप्त भया । हस्ताक्षर पं० श्री दुबे रुपनारायण के ।

१८९. बुद्धि विलास

Opening : समदविजय सुत जिनसु नमत अघहरत सकलजग,
कुवर पदांतप बकगलियबकर हुनिये करम ठग ।

भरमतिमर सब ससतु उदय हुव तिभुवन दिनकर,
अपि भवि भववधि तरत लहत गति परमपुक्तिवर ।
तसु चरनकमल भविजन भ्रमर लखि अनुभवरस चखत,
बहुकरहु नजरि मुझपर सुजिम फल फलहि झमकहि
बखत ॥ १॥

Closing : नखित अश्वनी वारगुरु, सुभमहूरत के मद्धि ।
ग्रंथ अनूप रच्यौ पढ़ै, ह्वै ताको सवसिद्धि ॥

Colophon : इति श्री बुद्धिविलास नामग्रंथ सम्पूर्णम् । मिती भादौ वदी ६ संवत् १९८२ में ग्रंथ पूर्णभयौ ।
जैसी प्रत देखी हुती, तैसी लई उतार ।
अक्षिर घट वड हो जो, बुधजन लीयौ समार ॥

१६०. चन्द्रशतक

Opening : अनुभौ अभ्यासमें निवास शुद्ध चेतन को,
अनुभौ सरूप सुद्धबोध बोध को प्रकाश है ।
अनुभौ अनूप ऊपरहत अनंत ग्यान,
अनु भौ अतीत त्याग ग्यान सुखरास है ॥

Closing : सपतशेषगुनथान थैं छूटे एक गत देवकी ।
यौं कह्यौ अरथ गुरुग्रंथ मे, सति वचन जिनसेवकी ॥

Colophon : इति श्री चद्रशतक समाप्तम् ।

१६१. चरचा नामावली

Opening : त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितम्,
साक्षाद्येनयथास्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलि ।
रागद्वेष भयामयातंक जरा लोलत्वलोभादयो,
नालं यत्पदलंघनाय समहृ दिवो मया वंद्यते ॥

Closing : जैसें जानि करि सदाकाल वीतराग देवकौं स्मरण करवौ जोग्य छैं ।

Colophon : इति चरचा नामावली संपूर्णम् । शुभं भवतु मंगलम् । मिती भादो बदी ८ संवत् १६४२ मुक्काम चन्द्रापुरीमध्ये लिख्यतं पं० श्री चोबे मथुरापरसाद ।

१६२. चर्चा शतक वचनिका

Opening : ॐ सरवज्ञ अलोकलोक इक उकवतदेखैं ।
हस्तामल ज्योंकि हाथ जो सर्व विशेखैं ।।

Closing : तातैं पदार्थ हम सरदहा भली प्रकार जानना । इति कहिये इस प्रकार चरचा कहियैं सिद्धान्त की रखबदल सतक कहै सोकवित्त संपूर्णम् । करता द्यानतराय टीका का करता हरजीमल शुद्धजैनी पाणीपथिया । १०४ ।

Colophon : इति चरचाशतक टीका संपूर्ण । शुभमिती असाढ़ कृष्णा ४ संवत् १६१४ गुरुवार लिख्यतं नंदराम अग्रवाल । श्लोक सख्या २०४० ।

१६३. चर्चा शतक वचनिका

Opening : देखें, क्र० १६२ ।

Closing : जगमहादेव है षट्पद कृष्ण नामहर जानिये ।
द्यानतकुलकर मैंनाभनूप भीम बली भुव मानिये ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६४. चर्चा शतक वचनिका

Opening : देखें–क्र० १६२ ।

Closing : चरचा मुख सौं भनै सुनै नहि प्राणी कानन,
केई सुनि घरि जाय नांहि भावै फिरि आनन ।
तिनको लखि उपगारसार यह शतक बनाई,
पढत सुनत ह्वै बुद्धि शुद्ध जिनवाणी गाई ।
इसमें अनेक सिद्धान्त का मथन कथन द्यानत कहा,

सब माँहि जीव को नाम है जीवभाव हम सरदहा ॥

Colophon : इति श्री द्यानतराय जी कृत चर्चाशतक सम्पूर्णम् । संवत् १६२६ श्रावण शुक्ल अष्टम्यां चंद्रवासरे लिखि कर्मणा पूर्णीकृतम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१६५. चर्चासंग्रह

Opening : धर्मधुरंधर आदि जिन, आदिधर्म करतार ।
नमूं देव अघहरण तैं, सब विधि मंगलसार ॥

Closing : ... ... विद्यानामचतुर्दश प्रतिदिनं कुरुवंततो-मंगलम् ।

Colophon : इति चतुर्दश विद्यानाम संपूर्णम् ।
मिती ज्येष्ठ सुदी ५ संवत् १८५४ शुभस्थाने श्री अटेर मैं लिख्यौ ग्रंथप्रति श्री लाला जैनी फतेचरसघई श्री की पैतैंवासी सुखवास शुभस्थाने श्री भैरोजजी में लिखाई ग्रंथ चर्चासंग्रह जी ।

१६६. चर्चा समाधान

Opening : जयो वीर जिनचंद्रमा उदै अपूर्व जासु ।
कलियुग कालेपाखमय, कीनो तिमिर बिनास ॥

Closing : देवराज पूजत चरण, अशरणशरण उदार ॥
कहूं संघ मंगलकरण, जियकारिणी कुमार ॥

Colophon : इति श्री चरचा समाधान ग्रंथ संपूर्णम् ।

१६७. चर्चा समाधान

Opening : देखें—क्र० १६६ ।

Closing : देखें— क्र० १६६ ।

Colophon : इति श्री चरचा समाधान ग्रंथ संपूर्ण । पत्र १३२ । दोहा—
सुत श्री चिरनलाल के, लेखक दुरगा लाल ।

जैनी आरा मो रहे, काशिल गोत्र अग्रवाल ।।
महल्ले महाजन टोली अनुअल मे। संवत् १९५६ मिति फागुन शुक्ल १ वार गुरुवार ।

१९८. चर्चा सागर वचनिका

Opening : श्री जिन वासुपूज शिवदाय। चपा पंचकल्यान लहाय।।
विघ्न विडारन मगलदाय। सो वदो शरणाइ सहाय।।

Closing : चउपद के धुर वर्ण चउ, क्रम करि पक्ति अनूप।
चर्चा सागर ग्रंथ को, कर्ता नाम स्वरूप ।।

Colophon : इति श्री चर्चासागर नाम शास्त्र सपूर्णम्। शुभं भवतु ।

१९९. चरित्रसार वचनिका

Opening : परमधरमरथ नेमि मम, नेमिचद जिनराय।
मगल कर अघहर विमल, नमो सु मनवचकाय ।।

Closing : अन्य ग्राम विर्षे जो भिक्षा के निमित्त गमन ता विषे नाही है उद्यम जाके बहुरि पाणिपुट मात्र ही है।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२००. चरित्रसार वचनिका

Opening : मुकतमार्गदिसायकै कर्म सयल करि चूरि।
वदौं विश्व विलोकि को, इच्छु नयगुण भूरि ।।

Closing : .... जो याके अपराध समान मेरा भी अपराध है, ऐसा ही ... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२०१. चौबीस ठाणा

Opening : सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिदवर णेमिचंदमकलंकं ।
गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं ॥

Closing : ए इंदिय बियलाणं इक्काणवदी हुवंति कुल कोडी ।
तिरिय(४३)नर(१४)देव(२६)नारय(२४)सगअट्ठा
सहिय सद्धाणं ॥

Colophon : इति चउवीस ठाणा समाप्ता । संवत् १७२५ वर्षे भादव वदि ६ वृहस्पतिवारे काष्ठासंघी भट्टारक श्री महीचन्द्रजी तत्शिष्य पांडे भोवाल तेन लिखतं स्वात्मार्थम् ।

विशेष —इसमें कुछ गाथाएँ गोम्मटसार की प्रतीत होती है ।
देखें, Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 642.

२०२. चौबीस गणगाथा

Opening : गइइंदियंचकायेजोयेवेय कषायणाणेयं ॥
संयम दंसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ॥१॥

Closing : उरपाँच सहनन वाले न मांडै । तेरमें गुणस्थान तक ।
वज वृषभनाराचसंहनन है ॥ आगे सहनन ॥ हाड नाहि ।
ऐसा जिनवानी में कह्या है । तीवानि धन्य है ॥५॥

Colophon : इति श्री पस्वुरणसमजनेलायकचर्चा ॥ संपूर्ण ॥ लिपीकृत लहिया करमचंद रामजी पालीताणा नयरे ॥ संवत् १६६६ भाद्रमासे कृष्ण पक्षे तिथि द्वितियाम् ॥

विशेष—कुछ गोम्मटसार की गाथाएँ भी उद्धृत हैं ।

२०३. चौदस गुणनियम

Opening : सचित्त दव्व विगइं वाणहि तंबोल वच्छ कुसुमेसु ।
वाहुण सयण विलेवण बिंसि बंभ न्हाण भत्तेसु ॥

Closing : इति चउदस नियम प्राभातै मो कला राखी जै संध्याकूं फेर याद कीजे जितरामोकला राख्या था तिण सोउ वालागै तों विशेषलाभ होइ, अधिक न लगाई जै ।

Colophon : इति श्री चउदस गुण नियम संपूर्णम् । लिखतं कृष स्यामजी (श्यामजी) संवत् १८१० माघशुक्ला १४ । कल्याणमस्तु ।

२०४. चौदह गुणस्थान

Opening : गुन आतमीक परिनाम गुनी जीवनाम पदार्थ ते आतमी परिनाम तीन जातके शुभ, अशुभ, शुद्ध....।

Closing : तिन सहित अविनाशी टंकोत्कीर्ण उत्कृष्ट परमात्मा कहिए ।

Colophon : यह चौदह गुणस्थानक का स्वरूप संक्षेप मात्र जिनवाणी अनुसार कथन पूर्ण भया । इति श्री चौदह गुणस्थान चर्चा सम्पूर्णम । शुभसंवत् १८६० मिती माघकृष्ण चतुर्दशी गुरुवासरे लिपिकृतम् नन्दलाल पांडे छपरामध्ये ।

२०५. चउसरण पईन्नं

Opening : सावज्जजोगविरहउ वित्तणगुण वउय पडिवत्ता ।
खलियस्स निंदणावण तिगिच्छ गुणधारणा चेव ।।

Colsing : इय जीव पमायमहारिवरं सद्दतमेव मज्झयण ।
जाए सुति संजम वउ कारणं निवुई सुहणं ।।

Colophon : इति श्री चउसरण पईन्न समाप्तम् । लिखत पूज्य ऋषि जी तस्य शिष्येण ऋषि लाखू आत्मार्थम् । सम्वत् १६८२ वर्षे चैत्रवदि ७ । कल्याणमस्तु ।

२०६. चालगण

Opening : देवधरमगुरु वंदिकै कहूं ढाल गणसार ।
जा अवलोके बुद्धि उर, उपजै शुभकरतार ।।

Closing : तहाँ काल अनंता रहे सुसंता अनअवहंता सुखदानी ।
चिन्मूरति देवा ध्यान अभेवा सुरसुख सेवा अमलानी ।।

अब जनमे नाहीं या भवमांही सबके सांई सबजानी ।
तुमको जो ध्यावै तुमपद पावै कविटेक कहै क्या अधिकारी ।।

Colophon : इति चालगण सम्पूर्णम् ।

२०७. छहढाला

Opening : तीनभुवन में सार, वीतराग विज्ञानता।
शिवसरूप शिवकार, नमौं त्रियोग सम्हारिकै॥

Closing : लघुधी तथा प्रमादतैं शब्द अर्थ की भूल।
सुधी सुधार पढौ सदा ज्यौं पावौ भवकूल॥

Colophon : इति श्री छहढाल्यो दौलतरामजी कृत संपूर्णम्। मिती मगसिर सुदी १० वार सोमवार संवत् १९५०। शुभं भूयात्।

२०८. छियालीस दोषरहित आहारशुद्धि

Opening : अरिहंत सिद्ध चितारिचित, आचारज उवझाय।
साधु सहित वंदन करो, मन वच शीश नवाय॥

Closing : केवल ज्ञान दोउ उपजाय, पंचम गतिमें पहुँचे जाय।
सुख अनंत विलसैहि तिहि ठौर, तातैं कहै जगत शिरमौर॥

Colophon : संवत सत्रसै पंचास ज्येष्ठ सुदी पंचमी परकाश।
भैया वंदत मन हुल्लास जैं जैं मुक्ति पंथ सुखवास॥
इति छियालीस दोष रहित आहारशुद्धि सम्पूर्णम्।

२०९. दर्शनसार

Opening : पणमिय वीरजिणिंदं सुरसेणि णमेसिये विमलणाणे।
वोच्छं दसणसारं जह कहियं पुव्वसूरीहिं॥

Closing : कसतूरु सउलोउच्चं अरकंतयस्य जीवस्स।
किं जुअमण्णासा जीवज्जियव्वाणरिदेण॥

Colophon : इति दर्शनसार समाप्तम् विराटनगरमध्ये मल्लिनाथ चैत्यालये इद पुस्तकं लिखापितं श्रावणवदी चतुर्दश्यां बुधवासरे संवत् १८८६ का।
देखें—जि० र० को०, पृ० १६७।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 652.

२१०. दर्शनसारवचनिका

Opening ; देवेन्द्रादिक पूज्य जिन ताके क्रम शिरनाय।
भूतमानि जिनवरतैं भावभक्ति उरल्याय॥

Closing : विशेष विद्वान होय सो ग्रंथ के अभिप्राय सूं लिखी बातेंतो मोसें नवति की जाणें और शास्त्रनतें लिखी बातें यह अबार की संवत् १६२३ की माघ सुदि १० को जानें, ऐसें जानना।

Colophon : इति श्री दर्शनसार समाप्तः।

षट्दर्शन अरू पंच मिथ्यात जैनाभास पंथ अघवात।
अरू कलि आचार शास्त्र निरुपण सार॥

२११. दसलक्षणधर्म

Opening : ऊँकार कूं नमनकरि, नमूं सारदा माय।
तिनि कारागृहमें टिकैं, श्रीजिन सीस नवाय॥

Closing ... . सम्यक् दृष्टि कै तो अैसी वांछा है।

Colophon : इति दसलक्षणधर्म कथन भाषा वचनिका सम्पूर्णम्।
मिति भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी गुरुवार संवत् विक्रम १६७८।

२१२. दानशासन

Opening : यस्य पादाब्जसद्गन्धाघ्राणनिर्मुक्तकल्मषाः।
ये भव्याः सन्ति तं देवं जिनेन्द्रं प्रणमाम्यहम्॥ १॥
दानं वक्ष्येऽथ वारीव शस्यसम्पत्ति कारणम्।
क्षेत्रोप्तं फलतीव स्यात् सर्वस्त्रीषु समं सुखम्॥ २॥

Closing : मतं समस्तैर्ऋषिभिर्यदाहृतैः प्रभासुरात्मावनदानशासनम्।
मुदे सता पुण्यधनं समर्जितं दानानि दद्यान्मुनये विचार्य्य तत्॥

Colophon : शाकाब्दे त्रियुगाग्निशीतगुणितेऽतीते वृषे वत्सरे
माघे मासि च शुक्लपक्षदशमे श्री वासुपूज्यर्षिणा।
प्रोक्तं पावनदानशासनमिदं शास्त्राहितं कुर्वताम्
दानं स्वर्णपरीक्षका इव सदा पात्रत्रये धार्मिकाः॥
समाप्तमिदं दानशासनम्

देखें—जि० र० को, पृ० १७३।

२१३. द्रव्यसंग्रह

जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं।
देविंदविंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा॥

दव्वसंगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदासुदपुण्णा ।
सोधयंतु तणुसुत्तधरेण णेमिचंदमुणिणा भणियं जं ।।
इति मोक्षमार्गप्रतिपादकः तृतीयोऽध्यायः । द्रव्यसंग्रहसंपूर्णम् ।
देखें, —जि० र० को, पृष्ठ १८१ ।
Catg of skt. & pkt. Ms., P. 654.

२१४. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें०—क०, २१३ ।

Closing : देखे०—क० २१३ ।

Colophon : इति द्रव्यसंग्रह समाप्तम् । लिखितं भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति छपरानगरमध्ये पार्श्वनाथ जिनदीर्घ मंदिरे सवत् १६४८ मि० भा० सु० १ वा० शु० । प्रातकाल समाप्त शुभ भूयात् ।

२१५/१. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें—क० २१३ ।

Closing : देखें—क० २१३ ।

Colophon : इति श्रीदव्रसंग्रह जी संपूर्णम् । मीति माघवदी ५ रोज शुक्र सन् १२७३ साल ।

२१५।२. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें–२१३ ।

Closing : देखें–क० २१३ ।

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रहं गाथा संपूर्णम् ।

विशेष—इस प्रति में ६३ गथाएँ हैं ।

२१६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें–क० २१३ ।

Closing : णिक्कम्मा अट्ठगुण किंचूणा चरमदेहदो सिद्धा ।
लोयग्गठिदा णिच्चा उप्पादवयेहिं संजुत्ता ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२१७. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें क्र० २१३ ।

Closing : कुकथा के नासनि कूं बुद्धि के प्रकाशनि कूं ।
भाषा यह ग्रंथ भयो सम्यक् समाज जी ।।

Colophon : इति श्रीद्रव्यसंग्रह भाषा और प्राकृत सम्पूर्णम् ।

२१८. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें-क्र० २१३ ।

Closing : द्यानत तनक बुद्धि तापरि बखान करी,
बाल रीति धरी ढकी लीजो गुणसाज जी ।
कुकथा के नाशन कों बुद्धि के प्रकाशन कों,
भाषा यह ग्रंथ भयो सम्यक् समाज जी ।।

Colopnon : इति द्रव्यसंग्रहं नेमिचन्द्राचार्य विरचितमिदं पंचधा द्रव्यसंग्रह समाप्तः । श्रीरस्तु । सं० १९६२ । नेत्ररसांकेन्दुवत्सरे विक्रम-नृपस्य वर्तमाने माघमासे तमपक्षे वाणतियौ शशिवासरे लिपिकृतम् । सीताराम करेण चक्षुषापि बुद्धिमंदतया विशेषं कथं शक्यम् । इदमपि विद्वांसः पठनीयाः । शुभमस्तु ।

२१९. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० २११ ।

Closing : मंगलकरण परम सुखधाम । द्रव्यसंग्रह प्रति करौं प्रणाम ।।
आगे चेतन कर्मचरित्र । बरनौं भाषा बंध कवित्त ।।

Colophon : इति श्री दर्वसंग्रह ग्रंथ गाथा कवित्त बंध सम्पूर्णम् ।

विशेष—अन्त में चेतन कर्म चरित्र प्रारम्भ करने की बात लिखी है लेकिन लिखा नहीं गया है ।

२२०. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें—क्र० ११३ ।

Closing : देखें—क्र० २१८ ।

Colophon : इति द्रव्यसंग्रह मूल गाथा वा भाषा संपूर्णम् ।

२२१. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें—क्र० २१३ ।

Closing : संवत् सतरसै इकतीस, माहसुदी दशमी सुभदीस ।
मंगलकरण परम सुखधाम द्रव्यसग्रह प्रति करू प्रणाम ।।

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह कवित्तबंध सम्पूर्णम् ।

२२२. द्रव्यसंग्रह

Opening . रिषभनाथ जगनाथ सुगुण मनथान है,
देव इन्द्र नरविंद वंद सुखदान है ।
मूल जीव निरजीव दरव षट्विध कहे,
वंदौं सीस नवाय सदा हम सरदहे ।। १ ।।

Closing : देखे, क्र० २१८ ।

Colophon : इतिपूर्ण ।

२२३. द्रव्यसंग्रह टीका (अवचूरि)

Opening : अथेष्टदेवताविशेषं नमस्कृत्य महामुनि सैद्धान्तिक श्री नेमिचन्द्र प्रतिपादितानां षड्द्रव्याणां स्वल्पबोधप्रबोधार्थं संक्षेपार्थतया विवरणं करिष्ये ।

Clophon : .... द्रव्यसंग्रहमिमं किं विशिष्टाः दोषसंचयच्युता रागद्वेषादिदोषसंघातच्युताः बहुन बोधरा ।

Colophon : इति द्रव्यसंग्रह टीकावचूरि सम्पूर्णः। संवत् १७२१ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे पंचमी दिवसे पुस्तिका लिखापितं सा० कल्याण-दासेन।

२२४. द्रव्यसंग्रह वचनिका

Opening : .... या मैं कहूँ हीनाधिक अर्थ लिखा होय तो पंडित जन सोधियो ... ...।

Closing : मंगल श्री अरहंतवर मंगल सिद्धि सुसूरि।
उपाध्याय साधू सदा करो पाप सब दूरि॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह भाषा सम्पूर्णम्।

२२५. धर्मपरीक्षा

Opening : श्रीमन्नभस्वन्त्रयतुन्गशाल जगद्गृहंबोधमयः प्रदीपः।
समततोद्योतयते यदीया भवंतु ते तीर्थकराः श्रियेन॥

Closing : संवत्सराणां विगते सहस्रे, संसप्ततो विक्रम पार्थिवास्या।
इदं निषिद्धान्यमत समाप्तं जिनेन्द्र धर्मामितियुक्तशास्त्र॥

Colophon : इत्यमितगतिकृता धर्मपरीक्षा समाप्ता। संवत् १६८१ वर्षे पोषवदी षष्ठी तिथौ। पुस्तक पंडित जी श्रीरामचद जी आत्मपठनार्थं लिपिकृता।

देखें, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ. ४७।
(२) जि. र. को., पृ. १८६।
(३) प्र. जै. सा., पृ. १६१।
(४) आ. सू., पृ. ७६।
(5) Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 655.

२२६. धर्मपरीक्षा

Opening : देखें, क्र० २२५।

Closing : देखें, क्र० २२५।

Colophon : इत्यामितगति कृता धर्म्म परीक्षा समाप्ता॥
संवत् १७७६॥ समय कार्तिक सुदि वदि दशम्यां मंगलवासरे लिखितमिदं पुस्तकं गोवर्द्धन पण्डितेन॥

२२७. धर्मपरीक्षा

Opening : प्रणमु अरिहंत देव, गुरु निरग्रंथ दया धर्म।
भवदधि तारण एव, अवर सकल मिथ्यात भणि ॥

Closing : पढ़ै सुनै उपजै सुबुद्धि कल्याण सुभ सुख धरण।
मनरसि मनोहर इम कहै सकल संघ मंगलकरण ॥

Colohpon : इति श्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहर दास कृत संगानेरी खंडेलवाल कृत सम्पूर्ण।
ग्रन्थ संख्या ३३०० श्लोक।

२२८. धर्मपरीक्षा

Opening : देखें – क्र० २२७।
Closing : देखें – क्र० २२७।
Colophon : इतिश्री धर्मपरीक्षा भाषा सम्पूर्ण। लिखतं धरमदास अयं पुस्तकम्।

२२९. धर्मपरीक्षा

Opening : देखें — क्र० २२७।
Closing : देखें क्र० २२७।
Colophon : इतिश्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहरदास कृतः सम्पूर्ण।

२३०. धर्मरत्नाकर

Opening : लक्ष्मीनिरस्तनिखिला पदमाप्रवंतो,
लोकप्रकाशकयप्रभवंति भव्या.।
यत् कीर्ति-कीर्तनपराजित वर्धमान,
तं नौमि कोविदनुत सुधिया सुधर्मम् ॥

Closing : य वंदो नयता सुधाकरदवी, विश्वं निजाश्रुतकरै,
यावल्लोकमिमं बिभर्तिधरणी, यावच्च मेरुस्थिरः।
रत्नासुस्फुरितो तरंगपयसो यावत्पयो राशय,
तावच्छास्त्रमिदं महर्षिविनिधहे तत्यवचमानश्रिये ॥

Colophon : इति श्री सूरि श्री जयसेन विरचिते धर्मरत्नाकरनामशास्त्र सम्पूर्णम् । मिती वैशाख सुदी दोयज (२) संवत् १६८५ भृगुवासरे शुभं लिषा भुजवल प्रसाद जैनी श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए । इत्यलम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १६२ ।

२३१. धर्मरत्नाकर

Opening : देखे, क्र० २३० ।

Closing : देखे, क्र० २३० ।

Colophon : इति श्री सूरि श्री जयसेन विरचिते धर्मरत्नाकरनामशास्त्रं संपूर्णम् । संवत् १६१० का मार्गशीर्ष वदी ५ बुधवासरे शुभम् ।

२३२. धर्मरत्नोद्योत

Opening : मगल लोकोत्तम नमों श्रीजिन सिद्ध महत ।
साधु केवली कथित वर, धरम शरण जयवत ।।

Closing : स्याद्वाद आगम निर्दोष, अन्य सर्व ही है जु सदोष ।।
त्याग दोष गुण धरे विचार । हेतु विचय ध्यान निर्द्धार ।।

Colophon : इति श्री बाबू जगमोहन लाल कृत धर्मरत्न ग्रन्थे मध्य आराधना नाम नवमों अधिकार ।।६।। याके पूर्ण होते श्री धर्मरत्नग्रन्थ सपूर्णभया ।

आदि मध्य अरू अत में, मगल सर्वप्रकार ।
श्रीजिनेन्द्र पद कज जुग, नमों सुकर सिरधार ।।
तर्कवात लागे नही नहि आज्ञानतमरच ।
धर्मरत्न उद्योत मे करि उद्यम सुख सच ।।

२३३. धर्मरत्नोद्योत

Opening : देखे, क्र० २३२ ।

Closing : उपमा बहु अहमिन्द्रकी, है सबही स्वाधीन ।
कहे पुरातन अर्थ की दोहे छद नवीन ।।

Colophon : इति श्री धर्मरत्नग्रन्थ सम्पूर्णम् । संवत् १६४८ मिति कार्तिक कृष्ण ६ रविवासरे लिखितं नीलकठदासेन श्रेयांशदासस्य पठनार्थम् ।

२३४. धर्मरसायन

Opening : पणिऊण देवदेवं धरणिदणरिंद इंद थुयचलणं ।
णाणं जस्स अणंतं लोयालोयं पयासेइ ॥१॥

Closing : भवियाण बोहणत्थं इयधम्मरसायणं समासेण ।
वरपउमणंदि मुणिणा रइयंभवियाणवणुराण ॥

Colophon : इति श्री धम्मरसायणं संपूर्णम् ।
इति श्री धर्मरसायन ग्रन्थ की भाई देवीदासजी खडेलवाल गोधा गोती जैनपुर वासी ने पटना में भाषा की । मिति आसिन सुदी १४ ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १९२ ।

Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 656.

२३५. धर्मरसायन

Opening : देखें, क्र० २३४ ।

Closing : देखें, क्र० २३४ ।

Colophon : इतिश्री धम्मरसायणं संपूर्णम् ।

२३६. धर्मविलास

Opening : गुण अनंतकरि सहित रहित दस आठ दोषकर ॥
विमल ज्योति परकास भास निज आन विषै हर ॥

Closing : जब प्रम बम बन साधु गुन वक्ता श्रोता सुखकरी ।
जानत है सबता करपुनी गुन प्रताप सब नर तरी ॥

Colophon : इति श्री धर्म विलास भाषा महाग्रंथ सुकवि द्यानतराय अगरवाले कृत ... ... सम्पूर्ण ।
पुस्तक रिखबदास की छाबड़ा के डेरे मस्तक परि विराजै, सवाई जैपुर का तेरापंथ के मंदिर की पंचायती मैं ।

२३७. धर्मविलास

Opening : बंदौ आदि जिनेश पाप तमहरन दिनेश्वर।
बंदत हौ प्रभु बंद बंद दुख तपत हनेश्वर॥

Closing : देखें, क्र० २३६।

Colophon : इति श्री श्री धर्म विलास भाषा महाग्रंथ सुकवि द्यानतराय अग्रवालकृत छमासी अधिकार संपूर्ण। संवत् १६३४ मिति माह (माघ) सुदी ६ रोज (दिन) सोमवार।

लिखतं पीतम्बर दास जैसवार मौजे सहयऊ मध्ये परगन्हू सादाबाद जिला मथुरा। लिखायतं लाला जगभूषणदास जी अगर-वाले मौजे आरे वाले।

२३८. धर्मविलास

Opening : देखें—क्र० २३७।

Closing : कनक किरती करी भाव, श्री जिन भक्ति रचे जी।
पढ़े सुणे नर नारि सुरग सुख लह्यो जी॥

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम्।

विशेष— प्रति के अन्त में एक विनती है। प्रशस्ति नहीं।

२३९. धर्मोपदेशकाव्य टीका

Opening : श्री पार्श्वं प्रणिपत्यादौ श्री गुरुं भारतीं तथा।
धर्मोपदेश ग्रन्थस्य वृत्तिरेषा विधीयते॥

Closing : यावन्मेरुः क्षितिभृत् यावन्नक्षत्रमंडलं विलसत्।
तावन्नन्दतु नित्यं ग्रंथः सवृत्ति सहितोयम्॥

Colophon : इति श्री धर्मोपदेश काव्यं सवृत्तिकं सम्पूर्णम्।
शास्त्राभ्यासः सदाकार्यो विबुधे धर्मभीरुभिः।
पुस्तकं साधनं तस्य तस्माद्रक्षेत् पुस्तकम्॥ १॥
अद्यनास्ति जिनाधीशः नास्ति संप्रति केवली।
आधारः पुस्तकस्यैव नृणां सम्यक्त्वधारिणाम्॥ २॥
शृण्वन्ति जिनवाणीं य महापद्ममयीं बुधाः।

असंशयं लभंते ते स्वर्गमोक्षश्रियं शुभाम् ॥ ३ ॥
देखें, जि० र० को०, पृ० १६५ ।

२४०. ढालगण

Opening देवधरमगुरु वंदिकैं, कहूं ढालगण सार ।
जा अवलोकें बुद्धि उर, उपजै शुभ करतार ॥

Closing : अब जनमैं नाहीं या भव मांही सबके सांई सब जानी ।
तुमकौं जो ध्यावै शुभ पद पावै कवि टेक कहै क्या अधिकानी ॥

Colophon : इति ढालगढ़ संपूर्णम् ।

२४१. ढालगण

Opening : देखें—क्र० २४० ।

Colsing : देखें—क्र० २४० ।

Colophon : देखें—क्र० २४० ।

२४२. गोमम्टसार (जीव०)

Opening : सिद्धंसुद्धपणमिय जिणिदवरणेमिचंदमकलंकं
गुणरयणभूसणुदय जीवस्सपरूपणं वोच्छं ।

Closing : गोमट्टसुत्तलहणे ··· ····अभिणयवीरमत्तंगी ॥

Colophon : गोमटसारजी की गाथा संपूर्ण ।
देखें,–(१) जि. र. को., पृ. ११० ।
(२) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 637-38
(३) Catg. of Skt. Ms., 310.

२४३. गोम्मटसारवृत्ति (जीवकाड)

Opening । मुनि सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रं जिनेश्वरम् ।
टीकां गोमटसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिकाम् ॥

Closing : आर्यार्य्यासित गुणसमूह संधार्य्यऽजित सेन गुरुर्युवनगुरुः यस्य गोम्मटो जयतु ।

Colophon : नहीं है ।

२४४. गोम्मटसार (जीवकाण्ड)

Opening : वंदौं ज्ञानानन्दकर नेमिचंद गुणकंद ।
माधव वंदित विमल पद पुण्य पयोनिधि नंद ॥

Closing : धन्य धन्य तुम तुमहीते सब काज भयो कर जोरि
बारंबार बंदना हमारी हैं ।
मंगल कल्यान सुख ऐसो अब चाहत हौं होऊ मेरी
ऐसी दशा जैसी तुम्हारी है ॥

Colophon : इति श्रीमत् लब्धिसार वा क्षपणासार सहित गोमटसार शास्त्र की सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नामा भाषाटीका संपूर्ण । .... श्री महाराजा श्री राजाराम चंद्रराज्य शुभं । लिख्यतं नग्रचंद्रापुरी मध्ये हीराधर जो वाचै सुनै ताको श्री शब्द बचनै । सवत् १८४८ आषाढ़ सुदी १५ दिनं शुभं भवतु ।

२४५. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : पणमिय सिरसा णेमि गुणरयणविभूषणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणनिलयं पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥

Closing : पाणवधादीसु रदो जिणपूजामोक्खमग्गविग्घयरो ।
अज्जेइ अंतरायं ण लहइ इच्छियं जेण ॥

Colophon : इति श्री कर्म्मकाण्ड सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ११०
Catg. of Skt & pkt. Ms., P. 608.
Catg. of Skt. Ms., P. 310.

२४६. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखें—क्र० २४५ ।

Closing : देखें—क० २४५ ।

Colophon : इति श्री कर्मकाण्ड समाप्तम् ।

२४७. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखें—क० २४५ ।

Closing : ... ... परतिरियाऊ .... अपूर्ण ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२४८. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखें—क० २४५ ।

Closing : . . . पूर्वोक्त क्रियाकरि करै स स्थिति अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जाणना ।

Colophon : इति श्री कर्मकाण्डनेमिचन्द्राचार्य विरचिते हेमराजकृत टीका सम्पूर्णम् । मिती कातिक सुदी १३ संवत् १८८८, लिषतं भीखन राय नतिबारा पुस्तिक साहु फूलचंद की ।

२४९. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)

Opening : देखें क० २४५ ।

Closing : . . . . . अरु जु प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त क्रियाकरि करै सु स्थिति अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जानना । इयं भाषा टीका पंडित हेमराजेन कृता स्वबुध्यानुसारेण ।

Colophon : इति श्री कर्मकांड टीका संपूर्णसमाप्ता: श्री कल्याणमस्तु श्री रस्तु । संवत् १८४५ साके १७१० श्रावणवदि ११ भौम ।

२५०. गोम्मटसार निर्णय

Opening : . . . पौमदिविनत-अशितोज्वलोतं वृषभप्रवरकुम्भसुगम् पर्याय-समास, इरिकेतु, ओलम् अक्षरसमासर बताबनु सूचन् पर्याय समास समास ।

Closing : भागिनि रयगोत्रं निष्कलङ्क प्रवर गङ्गदेवसूनम् अभायपीय शाखा ।

Colophon : नहीं है ।

२५१. गुणस्थान चर्चा

Opening : गुन आतमीक परिनाम गुनी जीऊ नाम पदार्थ ते
आतमी परिनामतीन जातके, शुभ, अशुभ,
शुद्ध ... ... ।

Closing : ए पांच भाव सिद्ध के रहे, तिन सहित अविनासी टंकोत्कीर्ण उत्कृष्ट परमातमा कहिये ।

Colophon : यह चौदह गुणस्थानक कथनरूप सक्षेपमान् जिनवाणी अनुसार कथनकर पूरनकिया । संवत् १७३६ मगसिर बदी त्रयोदशी तिथौ।
... ... ।

२५२. गुरोपदेश श्रावकाचार

Opening : पंचपरम मंगलकरन, उत्तम लोक मझारि ।
असरन कौं ये ही सरन, नमू सीस करधारि ।।

Closing : माधो नृपपुर जांहि डालूराम न्यौं गयाहि, इष्टदेवबलनहि उमगको अनाय है ।
गुरुउपदेशसार श्रावक आचारग्रन्थ, पूरनता पाहि अर्थ पदवी को दायक है ।।

Colophon : इति श्री गुरोपदेश श्रावकाचार सम्पूर्णम् । इति शुभ मिती भाद्रपदसुदी ३ शनिवार सम्वत् १९८२ । हस्ताक्षर पं० श्री वच्चूलाल चौबे के ।

२५३. गुरुशिष्यबोध

Opening : जगत कुशल जगदीश से हैं भी बड़ो सुजान ।
ताकूं बंदीं भाव से, सौ परमातम जान ।।

Closing : ... ...अर जैसो और है तैसो तू नाही,

जाहा (जहाँ) तहा (तहाँ) तू है सो तू ही है···।

Colophong : (Missing) नहीं है।

२५४. हितोपदेश

Opening : जयति परं ज्योतिरिदं लोकालोकावभासनम् ।
यस्या परमात्मनामधेयं तद्वन्देशुद्धचैतन्यम् ॥

Closing : ये यथोक्तविधायिनः सुमतयास्तेमन्त सोख्योज्वला ।
जायन्ते च हितोपदेशममलं सन्तः श्रयन्तु श्रीयैः ॥

Colophon ; समाप्तोऽयं ग्रन्थः। हस्ता० बटुकप्रसाद। संवद् १६७०।

२५५. इन्द्रनन्दिसंहिता (४ अध्याय)

Opening : अथस्नानविधिप्रक्रमा।
लोगियधम्मो लोगुत्तरोहि धम्मो जिणेहि णिद्दिट्ठो।
पढमंमतरसुद्धी पच्छादुवहिधवासुद्धी ॥

Closing : भावेइ छेदपिंडं जो एवं इंदणंदिगणिरचिदं।
लोइयलोउत्तरिएववहारे होइ सो कुसलो ॥४८॥

Colophon : इति इन्द्रनन्दिसंहितायां प्रायश्चित्तप्रकरणो नाम चतुर्थोऽध्याय। । इतिस्पूसर्णम्।

२५६. इष्टोपदेश

Opening : पूज्यपाद मुनिराजजी, रच्यो पाठ सुखदाय।
धर्मदास वंदनकरैं, अंतरघटमें आय ॥

Closing : ··· अर मोक्ष मैं प्राप्त होय है तातैं सर्व,
प्रयत्नकरि निर्ममत्वभाव ··· ··· ·· ।

Colophon : अनुपलब्ध।

२५७. जलगालनी

Opening : प्रथम वंदं जिनदेव अनंत । परम सुभग शीतल शुभ संत ।।
सारद गुर वंदु प्रमाण । जलगालण विधि करूं बखाण ।।

Closing : जो जलगालि जुगतिसु जिहि विधि कहु पुराण ।
गुलाल ब्रह्मइत नुरस किहिज, लोकमधि परमान ।।३१।।

Colophon : इति जलगाल परिसंपूर्णम् । भट्टारक शुभकीर्ति तरिशष्य-स्वामी मेघकीर्ति लिखितम् । शुभं भवतु ।

२५८. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व्याख्यान

Opening : जंबूद्वीपमंटीपणकं । पचवीसकोडाकोडी उद्धार, पल्य । संजेसा-रोमं हवंति तेत्ता द्वीपसमुद्रा भवति ।

Closing : ... ... गजदंत–२०, वृषभगिरि १७०, मलेच्छखंड ८५०, कुभोगभूमि ९६, समुद्र २, तोरणद्वार २२५०, एवं ज्ञातव्यम् ।

Colophon : इति श्री पद्मनंदी सिद्धांतिवचनकाकृतं जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-व्याख्यानक कृतं समाप्तम् । कर्मक्षयोनिमित्तम् । संवत् १९७९ आषाढकृष्णा ३ भौमवासरे श्री जैन सिद्धान्तभवन आरा के लिए पं० भुजवलीशास्त्री की अध्यक्षता में काशीमण्डलान्तर्गत सथवाग्राम-निवासी वटुकप्रसाद कायस्थ ने लिखा ।

देखें, Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 642.

२५९. जैनाचार

Opening : श्रीमदमरराजनुतपादसरसिज सोमभास्कर कोटितेज ।
कामितार्थवनीवसुरवीजसुखबीजक्षेमदोरि सु जिनराज ।।

Closing : दिनकरशशिकोटिभासुर सुज्ञानतनुरूपपुण्यकलाप ।
गुणमणिमयदीपयप्रपसंताप तर्णिसिसंतेसु निर्लेप ।।

Colophon : समाप्तम् ।

२६० जिनसंहिता

Opening : मंगलं भगवानर्हन्मंगलं भगवान् जिनः ।
मंगलं प्रथमाचार्यो मंगलं वृषभेश्वरः ।।१।।

विज्ञानं विमलं यस्य भासते विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांह्रये ॥२॥

Closing : नाटकस्थलतुल्यस्तत्पार्श्वमित्यच्छियो भवेत् ।
तद्भित्तिस्थलभित्ति च यथाशोभं प्रकल्पयेत् ॥७५॥
सभद्रो वा कल्पोऽथ ··· ··· रथोभवेत् ।
वासोऽस्मिन्पञ्चताल: स्यादुक्तांशज्ञापितोच्छ्रये ॥७६॥

Colophon : इति जिनसंहिता संपूर्णम् ।
देखें— जि० र० को०, पृ० १३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५२ ।
रा० सू० II, पृ० १४ ।

२६१. जीवसमास

Opening : श्रीमतं त्रिजगन्नाथं केवलज्ञानभूषितम् ।
अनंतमहीरूढ श्रीपार्श्वेशं नमाम्यहम् ॥

Closing : नवधामानवाश्चैव नवधाविकलांगिन: ।
इति जीवसामासा:स्युरष्टानवति संख्यका: ॥

Colophon : नहीं है ।

२६२. ज्ञानसूर्योदय नाटक

Opening : वदों केवलज्ञान रवि, उदय अखंडित जास ।
जो भ्रमतमहर मोक्षपुर, मारग करत प्रकाश ॥

Closing : ये चार परममंगल विमल ये ही लोकोत्तम विदित ।
ये ही शरण्य जगजीव कौं जानि भजहु जो चहत हित ॥

Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक सपूर्णम् । विक्रम संवत् १९६१ तत्र भाद्रशुक्ला १५ पौर्णिमायां लिपिकृतम् पं० सीताराम शास्त्री स्वकरेण विमलमालायाम् ।
देखें, Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 649.

२६३. ज्ञानसूर्योदयनाटक वचनिका

Opening : देखें—क० २६२ ।

Closing : देखें —क० २६२ ।

Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक की वचनिका सम्पूर्णम् । मिति फाल्गुणमास शुक्लपक्ष द्वादश्यां वृहस्य (बृहस्पति) वासरे शुभ संवत् १६४५ का सवाई आरानगर मध्ये लिपिकृत्वा । शुभ ।

२६४. ज्ञानसूर्योदय नाटक (वचनिका)

Opening : देखें—क्र० २६२ ।
Closing : देखें—क्र० २६२ ।
Colophon : इति ज्ञान सूर्योदय नाटक सम्पूर्णम् । मिती वैशाख वदी १० बुधवार संवत् १८६६ ।

२६५. ज्ञानसूर्योदय नाटक वचनिका

Opening : देखें—क्र० २६२ ।
Closing : देखें—क्र० २६२ ।
Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक की वचनिका सपूर्ण । मिति कार्तिकशुक्ल एकम्यां शुक्रवासरे शुभ संवत् १६४६ का सवाई आरा नगर । कल्याणमस्तु ।

२६६. ज्ञानार्णव

Opening : ज्ञानलक्ष्मीघनाश्लेष प्रभवानंदनदिनम् ।
निर्शितार्थमज नौमि परमात्मानमव्ययम् ।।

Closing : इति जिनपति सूत्रात्सारमुद्धृत्य किञ्चित्,
स्वमति विभवयोग्यं ध्यानशास्त्रं प्रणीतम् ।
विबुधमुनि मनीषांभोधि चन्द्रायमाणम्,
चतुरतु भुवि विभूत्यै यावदींद्रचद्रान् ।।

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचन्द्र विरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे मोक्षप्रकरणम् समाप्तम् । इति श्री ज्ञानार्णवः समाप्तः । संवत् १५२१ वर्षे आषाढ़ सुदी ६ सोमवासरे श्री गोपाचलदुर्गे तोमर वरवंशे श्री राजाधिराज श्री कीर्तिसिंह राज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुस्करगणे भ. श्री गुणकीर्तिदेवस्तत्पट्टे भ. श्रीयशः कीर्तिदेवस्तत्पट्टे भ. श्रीमलयकीर्तिदेवस्तदाम्नाये गर्गगोत्रे सा. महणासङ्गा-

यहिहलोमृत्युत्रिपंकाबात् क्रियाकमलिनी मार्त्तण्ड चतुर्विधदानपरंपरा धाराधरा सारपोषितानेकोत्तममध्यमावरपात्र: अनेक गुणिजनहृदया-नंदाकूपारोल्लासेंदूयकल्पदेहा, सदा सदयोदय प्रभाकर कराप-हस्तित पाप सतापसमुच्चय अनवरत दान पूजाश्रुतश्रवणादिगुणगण-निवासनिलय: कारापितप्रतिष्ठा महामहोत्सव: अत्यात्मरसरसिक: संघभारधुरंधर: सवाधिपति: बुधानामधेय: सद्भार्याविमलतर शीलनी-रतरंगिणी जिणधर्माणुरागिणी निर्मलतपाचरणा अनवरतकृतशरणा संयमणिपरहो तयो: प्रथमपुत्रआहारदानदानेश्वर: आश्रितजनकल्पवृक्ष: गुरुचरणकमलषट्पद: षट्कर्मरत दानपूजाकारापितनिरतरक्षमामूर्ति: संघाधिपति मलभार्या ऋनही स. बुधाद्वितीयपुत्र हाथी भार्यापाल्हाही सं. बुधा तृतीयपुत्र देवराजएतेषा मध्ये चतुर्विधदानरतेन संघई क्षेमल नामधेयेन निजज्ञानावरणीय कर्मक्षयाय श्री ज्ञानार्णवं पुस्तकं लिखाप्य मुनि श्री पद्मनंदिने दत्तम् ।

श्री मूलनंदि सघादि बलात्कारगणे गिर: ।
.... गछे भट्टारकस्येदं ज्ञानभूषणस्य पुस्तकम् ।।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५३ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५० ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५७ ।
(४) आ० सू०, पृ० १६६ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २०२, ३४९ ।
(६) रा० सू० III, पृ० ४०, १९२ ।
(7) **Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 646.**

२६७. ज्ञानार्णव

Opening : देखें– क्र० २६६ ।

Closing : देखें—क्र० २६६ ।

ज्ञानार्णवस्य माहात्म्यं चित्तं कोवित्तसत्वत:
य ज्ञानात्तीर्यते भव्यै दुस्तरोपि भवार्णव: ।। ३ ।।

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचन्द्रदेवविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदी-पाधिकार: । मोक्षप्रकरणं समाप्तं । इति श्री ज्ञानार्णवसूत्रसं-

पूर्ण। संवत् १६८० वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ गुरुवासरे। श्री ज्ञानार्णवम् संपूर्णकृता।
लिखितं श्री पट्टणानगरमध्ये। लेषक–पाठकयो चिरं जीयात्। श्रीरस्तु शुभं भवतु ॥

२६८. ज्ञानार्णव

Opening : देखें--क्र० २६६।

Closing : देखे--क्र० २६६।

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचंद्रविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे मोक्षप्रकरण समाप्तम्। सवत् १८७०।

२६९. ज्ञानार्णव भाषा

Opening : ललितचिन्ह पद कलित लिखत निजमपति।
हर्षित मुनिजन होइ धोइ कलिमलगुन जपति ॥

Closing : ताके जिनवानी को श्रद्धान है प्रमान ज्ञान,
दरसन दान दयावान अवधान है।
ज्ञान ही के कारणतैं भाषा भयो ज्ञान सिंधु,
आगम को अंग यामे ध्यान को विधान है ॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे श्री श्रीमालान्वये बदलियागोत्रे परमपवित्र भईआ श्रीवस्तुपाल सुत श्री ताराचन्द्रस्याभ्यर्थनया पंडित श्रीलक्ष्मीचन्द्रेण विहिताभाषेय सुखबोधनार्थम्। संवत् १८६९ शाके १७३४ वैशाखमासे तिथौ ११ बुधवासरे समाप्तम् भवतु, लिखतं काशि मध्ये राजमंदिर लिखादितं लाला बगसुलाल जी पठनार्थं परोपकरणार्थम्। श्रीभगवानार्पणमस्तु। लिखतं ब्राह्मण शिवलाल जाति गौड ब्राह्मण।शुभं भूयात्।

२७०. ज्ञानार्णव टीका

Opening : शिवोयं वैनतेयश्च स्मरश्चात्मैव कीर्तितः।
अणिमादिगुणनर्घ्यरत्नवार्द्धिबुधैर्मतः ॥

Closing : .... शुभं कारितं मयाना गुणवरित्रय विनयतौ ज्ञानावर्णवस्यांतरे विद्यानंदि गुरुप्रसादजनितदयादमेय सुखम्।

Colophon : इति श्री ज्ञानार्णवस्य स्थितिगतटीकातत्त्वत्रय प्रकाशिन समाप्ता ।

२७१. कर्मप्रकृति

Opening : प्रक्षीणावरणद्वंसमोहप्रत्यूह कर्मणे ।
अनंतानतधीदृष्टि सुखवीर्यात्मने नमः ॥

Closing : जयन्ति विधुताशेषपापांजन समुच्चयाः ।
अनंतानंतधी दृष्टिसुखवीर्या जिनेश्वराः ॥

Colophon : इति कृतिरियमभयचंद्र सिद्धान्तचक्रवर्तिनः । मङ्गमस्तु स्याद्वादशासनाय ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ७२ ।

२७२. कर्मप्रकृति ग्रंथ

Opening : देखें– क्र० २४५ ।

Closing : देखें क्र० २४५ ।

Colophon : इति श्री नमिचंदसिद्धान्ति विरचित कर्म्मप्रकृति ग्रंथः समाप्तः ॥ संवत् १३६६ का शुभमस्तु ॥

विशेष—यह ग्रंथ श्री देवेन्द्र प्रसाद जैन द्वारा दिनांक १३-६-१९१८ को श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा को सादर समर्पित किया गया है ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० ७१ ।
(2) Catg. of Skt & Pkt Ms., page 632.

२७३. कर्मविपाक

Opening : सिरिवीरजिणं वंदिय, कम्मविवागं समासओ वुच्छं ।
कीरइ जिराण हेऊहिं जेण सोमणराकम्मं ॥

Closing : गाहग्गंभवरीए बुंदमहुसरमयाणुसारीए ।
टीगाए णिम्मियाण एगुणा होइ णऊईऊ (ओ) ॥

Colophon : इति श्री कर्मग्रंथ सूत्रसमाप्तम् । षष्ट कर्मग्रंथ । श्रीरस्तु । संवत् १९६६ शाके १७३१ मिती भादववदि ३ सोमवारे तथा विजै

आणंदसूरगच्छे लिपि शराज (स्वराज) द्विजैमुनि श्री नागपुर मध्ये दिक्षणदेशे ।

देखें, जि. र. को पृ. ७२, ७३ ।

२७४. कषायजयभावना

Opening : येन कषायचतुष्कं ध्वस्तं संसारदुःखतरुबीजम् ।
प्रणिपत्य त जिनेन्द्र कषायजयभावनां वक्ष्ये ।।

Closnig : यत. कषायैरिहजन्मवासे समाप्यते दुःखमनन्तपारम् ।
हिताहित प्राप्तविचारदक्षैरत. कषायाः खलु वर्जनीयाः ।।

Colophon : इति कनककीर्तिमुनिना कषायजयभावना प्रयत्नेन भव्यचित्तशुद्धयैविनयेन समासतो रचिता । इति कषायजय चत्वारिंशत् समाप्तः । जैन सिद्धान्त भवन, आरा ता १८–१०–२६ ताडपत्रसे उतारा गया ।

२७५. कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक

Opening : शुभचद्रं जिनं नत्वानतानंतगुणार्णवम् ।
कार्तिकेयानुप्रेक्षायास्टीका वक्ष्ये शुभश्रिये ।।

Closing : लक्ष्मीचद्रगुरुः स्वामी शिष्यस्तस्य सुधीयसा ।
वृत्तिर्विस्तारिता तेन श्री शुभेन्दुः प्रसादतः ।।

Colophon : इति श्री स्वामी कार्तिकेयटीकायां त्रिद्य विद्याधरषट्भाषा कवि चक्रवर्तिभट्टारक श्री शुभचन्द्र विरचितायां धर्मानुप्रेक्षाया-द्वादशमोधिकारः समाप्तम् । १२ सपूणम् । रामं पि वेदवस्वेदु विक्रमार्कगतेपि वैशालिवाहनसाकश्च नामांवरमुनिचंद्र ।

देखें, —जि० र० को, पृष्ठ ८५ ।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 634.

२७६/१. कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक

Opening : देखें०—क्र०, २७५ ।
Closing : देखें०—क्र०, २७५ ।

Colophon : इति श्री स्वामि कार्तिकेयटीकायां त्रिविधविद्याधरषट्भाषा कविचक्रवर्ति. भट्टारक श्री शुभचंद्रविरचितायां धर्मानुप्रेक्षायाः द्वादशमोधिकारः समाप्तम्। सपूर्णम् संवत् १८५८ वर्षे शाके १७२३ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे तिथौ षष्ठी मंगलवासरे हिसार पट्टे लोहाचार्याम्नाये काष्ठासंघे पुष्करगणे माथुरगच्छे श्रीमद्भट्टारकत्रिभुवनकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्रीसहस्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेंद्र-कीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्ति जी तत् भ्राता पंडित प्राणदराम तच्छिष्य क्षेमचन्द्रेण प्रयागमध्ये लिपि कृतम्। स्वयं पठनार्थम्। शुभमस्तु।

२७६।२. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : अथ स्वामिकार्तिकेयो मुनीद्रोऽनुपेक्षा व्याख्यातुकामो।
मलगालनमंगावाप्तिलक्षण मंगलमाचष्टे ॥

Closing : तिहुयणपहाण सामि कुमारकाले वि तवियत्तवयरण।
वसुपुज्जसुयं मल्लि चरिमतियं संथुवे णिच्च ॥

Colophong : इति स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा समाप्ता। मिती कार्तिगमासे शुभे कृष्णपक्षे तिथि ७ वार सोमवार संवत् १८६० का साल .... मथ्यचीरंजीव अमिचन्दगोतसेठी लिखायतं चिरंजीव श्री चन्द्रेण स्वकीय पठनार्थ वाचपठ ज्यानजथा योग्य बंचज्यो। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु।

यादृशं .... दीयते।

इद पुस्तक राज्येंद्रकीर्तिमुने पठनार्थं श्रीचन्द्रेणदत्तम्।

२७७. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : प्रथम रिषभजिन धरम कर, सनमति चरन जिनेश।
विघनहरन मंगलकरन, भवतम दुरन दिनेश ॥

Closing : जैनधर्म जयवंत जग, जाको मर्म सुपाय।
वस्तु यथारथ रूपलखि, ध्यावे शिवपुर जाय ॥

Colophon : इति श्री स्वामि कार्तिकेयानुप्रे[illegible] नाम प्राकृत ग्रंथ की देश भाषामय वचनिका सम्पूर्ण। मिती कार्तिक बदी ५ वार गुरु सम्वत् १६१४ को समाप्त भया। लिखा [illegible] काएथ (कायस्थ) [illegible] जौरीलाल अग्रवाल नारायण दास के बेटा ने मोकामी आर वास्ते सिरी (श्री) असदामके।

२७८. क्रियाकलाप टीका

Opening : जिनेन्द्रमुन्मीलितकर्मबन्ध, प्रणम्य सन्मार्ग कृतस्वरूपम्।
अनन्तबोधादि भव गुणौघं, क्रियाकलाप प्रकट प्रवक्ष्ये॥

Closing : ·· ···· एतावस्संख्यश्रवाच्छिन्नयदपरिमाण श्रुत पचपद पर्चभि: पादैरपि क नामानि—११२८३५८०००।

Colophon : इति श्रीपंडित प्रभाचन्द्र विरचितायां क्रिया कलापटीकायां समाप्तम्। सवत् १५७० वर्षे चैत्रवदि ७ शुक्रवासरे। श्र मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्रीसिंहनन्दिन: शिष्यनीबाई विनय श्री लिखायितम्।

देखो, Catg of Skt. & Pkt. Ms. P 635.

२७९. क्रियाकलापभाषा

Opening : समवसरण लछमी सहित, वर्द्धमान जिनराय।
नमो विवुध वदित चरण, भविजन कौं सुखदाय॥

Closing : जबलौ धर्म जिनेसर सार।
जगतमांहि वरतै सुखकार॥
तवलौ विस्तर ज्यौ यह ग्रंथ।
भविजन सुरसित् दायक पथ॥१९००॥

Colophon : इति श्री क्रियाकोश भाषा मूलत्रेपन क्रिया नै आदि दै भर और ग्रन्थ की शाखका मूलकथन उपरि सम्पूर्णम्।
इति क्रियाकलाप भाषा समाप्तम्।

२८० लघुतत्वार्थसूत्र

Opening : दृष्ट चराचरं येन केवलज्ञानचक्षुषा।
तं प्रणम्य महावीरं वेदिकां तं प्रवक्ष्यते॥

Closing : बोधिः समाधिः प्रणमामि सिद्धिः,
स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः ।
चिंतामणि चिंतितवस्तुदाने,
त्वां विद्यमानस्य ममास्तु देव ॥

Colophon : इति श्री लघुतत्वार्थानि समाप्तम् ।

२८१. लघुतत्त्वार्थ

Opening : देखें, क्र० २८० ।

Closing : देखें, क्र० २८० ।

Colophon : इति श्री लघुतत्वार्थानि समाप्तानि ।

२८२. लोकवर्णन

Opening : भवणेसु सत्तकोडी, बावत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा ।
भवणामरिंद महिया, भवणसमा ताणि वंदामि ॥

Closing ; जंबूदविदुदीवे चरंति सीदिं सदं च अवसेसं ।
लवणे चरंति सेसा— — — ॥

Colophono : नहीं है ।

विशेष—प्रारंभ में गाथा एक से नौ तक मूल है । उसके बाद क्रमांक ३०२ से ३७४ तक पूर्ण है । अन्त में अधूरी गाथा Closing में दी हुई है । ग्रन्थ अव्यवस्थित है ।

२८३. लोकविभाग

Opening : लोकालोकविभागज्ञान् भक्त्या स्तुत्वा जिनेश्वरान् ।
व्याख्यास्यामि समासेन लोकतत्वमनेकधा ॥

Closing : पञ्चादशशतान्याहुः षट्त्रिंशदधिकानि वै ।
शास्त्रस्य संग्रहस्त्वेवं छन्दसानुष्टुभेन च ॥

Colohpon : इति लोकविभागे मोक्षविभागो नामैकादशं प्रकरणं समाप्तम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ०३३६ ।

२८४. मरणकंडिका

Opening : पणमंतिसुरासुरमनुलियरयणव्वंकिरणकंतिवियरयम् ॥
वीरजिणयजयलणमिनुणमणेमिरिद्गातम् ॥१॥

Closing : वयइअरकराइ वुणह भावहलोराहिं हुरहणि `` १ ॥
जीवइ सोणरइले समेणमरणं च सुणण ॥

Colophon : इति मरनकांड संपूर्ण मिती कात्यागवदी ५ बुधवासरे सवत् १८८७ समनलाल ।

२८५. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : प्रथम सुमरि अरिहंत कों, सिद्धन कौ धरि ध्यान ।
सरस्वती शीश नवाइके, वंदौ गुरु जुत ध्यान ॥

Closing : महिमा श्री जिनधर्म की, सुनियत अगम अनंत ।
जा प्रसादतै होत नर मुक्ति वधू के कंत ॥
ग्रन्थ अनूपम रच्यौ यह दै ग्रन्थनिकी साखि ।
मूरख हाथि न देहु भवि, अधिक जतन सौ राखि ॥

Colophon : इति मिथ्यात्व खंडन नाटक सम्पूर्ण । संवत् १६३५ मिती ज्येष्ठ कृष्ण नवमी शनिवारे ।

२८६. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : देखें, क्र० २८५ ।

Closing : देखें, क्र० २८५ ।

Colophon : इति मिथ्यात्व खंडन नाटक सम्पूर्णं । मिती श्रावण कृष्णे ४ बुधवार संवत् १८७१ लिखी फतेपुर मध्ये ।

२८७. मिथ्यात्व खंडन नाटक

Opening : देखें—क्र० २८५ ।

Closing : देखें—क्र० २८५ ।

Colophon : इति श्री मिथ्यात्व खंडन नाटक सम्पूर्ण ।

२८८. मोक्षमाग प्रकाशक

Opening : मंगलमय मंगलकरन वीतराग विज्ञान ।
नमों ताहि जातें भये अरिहन्तादि महान ।।

Closing : बहुरि स्वरूप विषै वा जिनधर्म विषै वा धर्मात्मा जीवनि विषै अतिप्रीति भावंसों वात्सल्य है । ऐसैं आठ अंग जाननें ।

Colophon : नहीं है ।

२८९. मोक्षमार्ग प्रकाशक

Opening : देखें—क्र० २८८ ।

Closing : .... सो परलोक के अर्थि कैसे, स्मरण करै है किछू विचार होय सकता नांही ।

Colophon : इति श्री मोक्षमार्ग प्रकाशजी संपूर्ण ।

२९०. मृत्यु महोत्सव

Opening : मृत्युमार्गेप्रवृत्तस्य वीतरागो ददातु मे ।
समाधि बोधिपाथेयं यावन्मुक्ति पुरीपुरः ।।

Closing : उगणीसैं अठारा सुकल पंचमि मास असाढ ।
पूरण लखी बांचो सदा मनधारि सम्यक् गाढ ।।

Colophon : इति श्री मृत्यु महोत्सव पाठ वचनिका समाप्ता । लिखतं बिरामण सियाराम वासी नग्र लिछमणगढ का । मिति पौ (षं) सुदी २ संवत् १९५४ ।

२९१. मृत्युमहोत्सववचनिका

Opening : कृमिजालशताकीर्णे, जर्जरे देहपंजरे ।
भज्यमानेन भेतव्यं यस्त्वं ज्ञानविग्रहः ॥

Closing : देखें, क्र० २९० ।

Colophon : इति श्री मृत्युमहोत्सव वचनिका सम्पूर्णम् ।

विशेष—अन्तमें अभिषेक पाठ भी लिखाहुआ है, जो अपूर्ण है ।

२९२. मूलाचार

Opening : मूलगुणे सुविसुद्धे वंदित्ता सव्वसंजदे शिरसा ।
इह परलोगहिदत्थे मूलगुणे कित्तइस्सामि ॥

Closing : ... . सकललोकालोकस्वभाव श्रीमत्परमेश्वरजिनपतिमतवितत मतिचिदचित्स्वावचिद्भावसाधितस्वभाव परमाराध्यतमसैद्धान्तपारावार पारीणाय आचार्य श्री कुन्दकुन्दाचार्याय नमः ।

Colophon : इति समाप्तोऽयं ग्रंथः ।

२९३. मूलाचार प्रदीप

Opening : श्रीमतं मुक्ति भर्त्तारं, वृषभं वृषनायकम् ।
धर्मतीर्थकरं ज्येष्ठ, वंदेनंतगुणार्णवम् ॥

Closing : पंचषष्ठ्यधिकाः, श्लोकाः त्रयस्त्रिंशशतप्रमा. ।
अस्याचारसुशास्त्रस्य ज्ञेया पिंडीकृता बुधैः ॥

Colophon : नहीं है ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३५ ।
(३) आ० सू०, पृ० ११३, २०१ ।
(४) रा० सू०, पृ० १६५ ।
(५) Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 681.

२९४. मूलाचार प्रदीप

Opening : देखें, क्र० २९३ ।

Closing : देखें, क्र० २९३ ।

Colophon : इति श्री मूलाचारप्रदीपकाख्ये महाग्रंथे भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचितेअनुप्रेक्षा परीषहजयद्विवर्णनोनाम द्वादशमोधिकार: । लिखतं दयाचन्द लेखक वासी जैनगर का हालवासी जैसिंघपुरामध्ये । मिति वैशाख शुक्लपक्षे तिथौ चतुर्थ्यां रविवासरे संवत् १८७४ का । वाचकानां लेखकानां शुभ भवतु ।

२९५. नवरत्न परीक्षा

Opening : रत्नत्रयाय भुवनत्रयवंदिताय कृत्वा नमः समवलोक्य च रत्नशास्त्रम् ।
रत्नप्रवेशकमधिकृत्य विमुच्य फल्गुन् संक्षेपमात्र मिति बुद्धभटेन दृष्टम् ।।१।।

भुवनत्रितयाक्रांतप्रकाशीकृतविक्रम: ।
बलो नाम।भवच्छ्रीमान्दानवेंद्रो महाबल: ।।२।।

Closing : तत्रपुराहहसूनुना समासोक्ति: । मणिशास्त्र मत्तां बुद्धभटक्षयेणेयमिति वज्रमौक्तिक पद्मराग मरकतेंद्र नीलवैडूर्यकर्केतन पुलक रुधिराक्ष स्फटिक विद्रुमाणां । बीजाकर गुणदोष क्रातममूल्य परीक्षा धारयितुम् । दोषगुणानाम् हानियोग च विस्तारेऽसौबुद्धभटेन निर्दिष्ट: ।।

Colophon : इति बुद्धभट्टनाम रत्नशास्त्रं समाप्तम् ।। भद्रं भूयादिति स्तौमि अयमपि ग्रन्थ: रान्॰ नेमिराजाख्येन लिखित: ।। माघशुक्ल चतुर्दश्यां समाप्तश्च रक्ताक्षि सवत्सर: ।। क्रिस्तशक १९२५-फेब्रुअरी ।। मूडविद्री ।।

२९६. नयचक्र सटीक

Opening : वंदो श्री जिनके वचन, स्याद्वाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनभवलही, ह्वै मिथ्यात निरमूल ।।

Closing : तैसो ही कहतो सोइ अनुपचरित असद्भूत विवहार कहिये । जैसे जीवको शरीर ऐसो कहतो ।

Colophon : इति पंडित नारायणदासोप् जोग यह हेमराजकृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्तम् । श्री मिती पौष सुदी ११ संवत् १९५६ । हस्ताक्षर बलदेव प्रसाद।

२९७. नीतिसार (समयभूषण)

Opening : प्रणम्यन्त्रिजगन्नाथाम्निन्द्रा नन्दितसम्पदः ।
अनागाराम्प्रवक्ष्यामि नीतिसारसमुच्चयम् ॥१॥

Closing : माघत्प्रात्यर्थिवादिद्विरद घटिघटाटोपवेगपावनोदे ।
वाणी यस्याभिरामामृगपतिपदवीं गाहते देवमान्या ॥
श्रीमानिन्द्रनन्दी जगतिविजयतां भूरिभावानुभावी ।
दैवज्ञ. कुण्डकुन्दप्रभुपदविनयः स्वागमाचारचञ्चुः ॥११३॥

Colophon : इति श्रीमदिन्द्रनन्द्याचार्य्य विरचितमिदं समयभूषणं समाप्तम् ॥ शुभ भूयात् ॥
देखे—जि० र० को , पृ० २१९ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 660.

२९८. नीतिसार

Opening : श्रीमदुभलक्ष्मीरमणाय नमः ॥ निर्ग्रन्थसमय भूषणम् ॥
देखें, क्र० ४४७ ।

Closing : साद्यन्त सिद्धशान्तिस्तुतिजिनगर्भजनुषोस्तु या द्वंत ॥
निष्क्रमणेयोग्यतं विधिश्रुताद्यपि शिवे शिवान्तर्मपि ॥

Colophon : नही है ।

२९९. न्यायकुमुदचन्द्रोदय

Opneing : सिद्धिप्रदं प्रकटिताखिलवस्तुतत्त्वमानदमदिरमशेषगुणैक पानम् ।
श्रीमज्जिनेन्द्रमकलकमनतवीर्य मानम्य लक्षणपद प्रवर प्रवक्ष्ये ॥१॥

Closing : तत्संपत्तौ च मुमुक्षुजनमोक्षमार्ग्गोपिदशद्वारेण परार्थं संपत्तये सौचेग्हत इति ॥

Colophon : इति श्री भट्टारकाकलङ्कशशाङ्कानुस्मृतप्रवचनप्रवेशः समाप्तः॥
इति ग्रंन्थः समाप्तः ।
देखें—जि० र० को०, पृ० २१९ ।

३००. पद्मनन्दि पंचविंशतिका

Opening : देखें—क्र० १८४ ।

Closing : पुवतिसंगतिवर्जनमष्टकं प्रतिमुमुक्षुजन भणितं मया ।।
सुरभिरागसमुद्रगता जना कुरुत माकुम्र मत्रमुनौ मयि ।।

Colophon : इति श्री ब्रह्मचर्याष्टकप्रकरणं समाप्तम् ।।
इति श्री पद्मनंदिकृता पंचविंशतिका समाप्ता ।।
देखें,--जि० र० को०, पृ० २२८ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 664.

३०१. पद्मनंदि पंचविंशतिका

Opening : देखें--क्र० १८४ ।

Closing : देखें--क्र० ३०० ।

Colophon : इति श्री ब्रह्मचर्याष्टकप्रकरणं समाप्तम् ।। इति श्री पद्मनंदिकृता पंचविंशतिका समाप्ता ।। २५ ।। अथ संवत्सरेऽस्मिन् नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १८३६ मितिचैत्र शुक्लनवम्यां शनिवासरे इदं पुस्तकं लिपीकृत पूर्णं जात श्री रस्तु शुभ भूयात् कल्याणमस्तु ।।

३०२. पंचमिथ्यात्व वर्णन

Opening : वेदान्त क्षणकत्वं च शून्यत्व विनयात्मकम् ।
अज्ञान चेति मिथ्यात्व पंचधा वर्तते भुवि ।।

Closing : इत्येव पंचधा प्रोक्ता मिथ्यादृष्टिभिधानकम् ।
सोपादेयमिद सर्व मिथ्यात्व विषदोषत: ।।

Colophon : इति श्री पंचमिथ्यात्व वर्णन संपूर्णम् । संवत् १८०३ वर्षे पोह (पौष) सुदी २ तिथौ बुधवारे श्री दिल्लीमध्ये श्री माथुर गच्छे काष्ठासंघे स्वामी जी भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्ति जी तस्य भ्रातृयांमे श्री भैरामजी तस्य याभे रामचंद लिखापितम् । शुभं भवतु ।
परस्परस्य मर्माणि, न भाषन्ते बुधाजना: ।
ते नरा च क्षयं यांति, वल्मीकोदर सर्पवत् ।।

३०३. पञ्चास्तिकाय भाषा

Opening : ... ... की नाहीं प्राप्त हुए है. तिनको सरण है तिनको नमस्कार होउ ।

Closing : ....संसार समुद्रको उतरि करि सम ... ... ।

Colophon ; अनुपलब्ध ।

३०४. पंचास्तिकाय भाषा

Opening : जीर्ण ।

Closing : जीर्ण ।

Colophon : नहीं है ।

३०५. पंचसंग्रह

Opening : छद्दव्वसवपयत्थे दव्वाइ चउविहेण जाणंते ।
वन्दित्ता अरहन्ते जीवस्स परूवणं बोच्छं ॥ १ ॥

Closing : जाएत्थ अपडिपुणो अत्थो अप्पागमेणरइ उत्ति ।
तं खमिऊण बहुसुया पूरऊणं परिकहितु ॥ ६ ॥

Colophon : एवं पंचसंग्रहः समाप्तः ॥ शुभं भवत्लेखकपाठकयोः ॥ अथ श्री टवंक नगर ॥ संवत् १५२७ वर्षे माघवदि ३ गुरुवासरे श्री मूलसंघे सारस्वतगच्छे । भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः ॥ तच्छिष्यो मुनि रत्निकीर्तिदेवाः ॥

देखें, जि० र० को०, पृ० २२८, २२९ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 662.

३०६. परमार्थोपदेश

Opening : नत्वानंदमयं शुद्धं परमात्मानमव्ययम् ।
परमार्थोपदेशाख्यं ग्रंथं वच्मि तदर्थिनः ॥

Closing : येऽत्रैव शमसंयमयुक्ताः द्वेषरागमदमोहविमुक्ताः ।
संति शुद्धपरमात्मनि रक्ताः ते जयंतु सततं जिनभक्ताः ॥२७२॥

Colophon : इति परमार्थोपदेशग्रन्थः भट्टारक श्री ज्ञानभूषण विरचित-समाप्तः ।

यह प्रतिलिपि जैन सिद्धान्त भवन, आरा में संग्रहार्थ लिखी

गई । शुभमिती पौषकृष्णा ७ मंगलवार विक्रम संवत् १९९२, हस्ताक्षर रोशनलाल जैन ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६१ ।
(२) जै० ग्र० प्र० सं०, प्रस्तावना, पृ० ५१ ।
(३) भ. सम्प्र., पृ. १४२, १५४, १८३, १९७

३०७. परमात्म प्रकाश

Opening : चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥

Closing : परम पय गयाणं भासवो दिव्वकाउ,
मणसि मुणिवराणं मुक्खदो दिव्व जोई ।
विसय सुह रयाणं दुल्लहो जोउ लोए,
जयउ सिव सरूवो केवली कोवि बोहो ॥

Colophon : इति श्री योगीन्द्रदेव विरचित परमात्मप्रकाश संपूर्णम् । संवत् १८२९ वर्षे मिती भादौ वदी ११ एकादशी चंद्रवासरे लिखितं गुमीमीराम सौन पोथी गुन आमर लेखक-पाठकयो शुभं अस्तु कल्याणमस्तु ।

देखें—जि. र. को., पृ. २३७ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 665.

३०८ परमात्मप्रकाश वचनिका

Opening : चिदानंद ।चिद्रूप जो, जिन परमातम देव ।
सिद्धरूप सुविशुद्ध जो, नमौं ताहि करि सेव ॥

Closing : ऐसा श्री जिन भाषित शासन सुखनिक कैसे करानिकरि। वृद्धि कूं प्राप्त होऊ ।

Colophon : श्री योगिन्द्राचार्यकृत मूल दोहा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका दौलतराम कृत भाषा वचनिका सम्पूर्ण भई, संवत् १८६१ ।

३०९ परमात्म वचनिका

Opening. : चेतन आनंद एक रूप है, कर्मरूपी वैरीको जीतें ताते जिन है ।

Closing : और विषै सुखमैं जो मग्न है तिनकौं इह जोग दुरलभ है।
जैवंत प्रवर्तो सेव दुरलभ कोई ग्यान है सो।

Colophon : इति परमात्मप्रकाश समाप्तम्।

३१०. परसमयग्रंथ

Opening : श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

Closing : निश्चेष्टानां वधो राजन् कुत्सितो जगती पते।
ऋतु मध्योपनीतानां पशुनामिव राघवः॥ १६५॥

Colophon : नहीं है।

विशेष—विभिन्न पुराणों से संग्रहीत सदाचार विषयक श्लोक हैं।

३११. प्रश्नमाला भाषा

Opening : आगें राजाश्रेणिक गौतम स्वामी तें प्रश्न किये.... ।

Closing : .... ते भव्यात्मा कल्याण के अर्थि सुबुद्धी परभवमें सोभा-
पावेगे ऐसी जानि इस प्रश्नमाला कौं धारन करहु।

Colophon : इति श्री प्रश्नमाला सम्पूर्णम्।
प्रश्नमाला पूरनभई, आदेश्वर गुनगाय।
सम्यक्ति सहित याचित रहो, ज्ञान सुरति मनमाह॥

३१२. प्रबोधसार

Opening : नम श्री वीरनाथाय भव्यांभोरुह भास्वते।
सदानंद सुधास्यंदत् स्वादसंवेदनात्मने॥

Closing : सर्वलोकोत्तरत्वाच्च जेष्ठत्वात्सर्वभूभृताम्।
महात्वात्स्वर्णवर्णत्वात्वमाद्य इह पुरुषः॥

Colophon : इति प्रबोधसारः समाप्तः।

देखें—जि० र० को, पृ० १७३।

३१३. प्रश्नोत्तरोपासकाचार (२४ सर्ग)

Opening : जिनेशं वृषभं वंदे वृषभं वृषनायकम्।
वृषाय भुवनाधीशं वृषतीर्थं प्रवर्तकम्॥१॥

Closing : कृत्याकृत्यद्वयी कार्य: स व्यथामुनिनोदित: ।
संवरो पावनो बंधो मावत्कालांतमेव हि ॥ १२४ ॥

Colophon : इति श्री प्रश्नोत्तरोपासकाचारे भट्टारक श्री सकलकीर्ति-विरचिते अनुमत्यादि प्रतिमा द्वयप्ररूपको नाम चतुर्विंशतितम: परिच्छेद: ॥ २४६ ॥ संवत् १९७० । लिखितमिदं मिश्रोपनामक गुलजारीलालशर्मणा ॥ मिती माघ शुद्ध ५ शनौ शुभं भवतु श्लोकसंख्या प्रमाणम् ३३०० ॥ संवत् १८७५ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

देखें—(१) दि० जि० र०, पृ० ६३ ।
(२) जि. र. को., पृ. २७८ ।

३१४. प्रश्नोत्तरोपासकाचार

Opening : देखें—क्र० ३१३ ।

Closing : गुणधरमुनिसेव्यं, विश्वतत्वप्रदीपम् ।
विगतसकलादेषं ... . ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

३१५. प्रश्नोतरश्रावकाचार

Opening : सेवत जहि सुरईश, वृषनायक वृषदाइ हैं ।
वंदौ जिनवृषभेश, रच्यो तीर्थ वृष आदिजिन ॥

Closing : तीनहिसे या ग्रंथ कें, भए जहानाबाद ।
चौथाई जलपथ विषै, बीतराग परसाद ॥

Colophon : इति श्री मन्महाशीलाभरण भूषित जैनी सुनु लाला बुलाकीदास विरचितायां प्रश्नोत्तरोपासकाचारभाषायां अनुमत्यादिमप्रतिमाद्वय प्ररूपणो नाम चतुर्विंशतिम: प्रभाव: ॥ २४ ॥ इति भाषा प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ग्रंथ सम्पूर्ण । संवत् १८२१ पौष शुक्ल दशमी चंद्रवार । पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मा ने लिखि । मंगलमस्तु ।

३१६. प्रतिक्रमण सूत्र

Opening : इच्छामि पडिक्कमिउं पगामसिज्जाए निगामसिज्जाए उव्वत्तणाए परियत्तणाए आउट्टणाए पसारणाए··· .... ।

Closing : एवमाहं आलोइय निंदिय गरहिय दुगंधिय ।
तिविहेण पडिक्कंतो वंदामिणे चौवीसं ॥

Colophon : इति यतिनां प्रतिक्रमणसूत्रं सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० २५६ ।
(2) Catg. of skt. & Pkt. Ms., page, 669.

३१७. प्रवचनपरीक्षा

Opening : त्रिलोकीतिलकायार्हत्पुंवराय नमो नमः ।
वाचामगोचराचिन्त्य बहिरभ्यन्तरश्रिये ॥

Closing : परमामृतदानेन प्रीणयद्विबुधान् परम् ।
शरणं भक्तिमन्नेमिचन्द्रवज्जिनशासनम् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २७० ।

३१८. प्रवचन प्रवेश

Opening : धर्मतीर्थकरेभ्योस्तु स्याद्वादिभ्यो नमो नमः ।
वृषभादिमहावीरान्तेभ्यः स्वात्मोपलब्धये ॥

Closing : प्रवचन पदान्यभ्यस्यार्थांस्ततः परिनिष्ठिता-
नसकृदवबुद्धेद्धाद्बोधाद् बुधो हतसंशयः ।
भगवदकलकानां स्थानं सुखेन समाश्रितः,
कथयतु शिवं पंथानं वः पदस्य महात्मनाम् ॥

Coophon : इति भट्टाकलंकशशांकानुस्मृतप्रवचनप्रवेशः समाप्तः ।
अयमपि एन नेमिराजाख्येन लिखितः । माघशुक्ल त्रयो-
दश्यां समाप्तः । दक्षिण कनाडा मूडबिद्री १६२५ फेब्रवरी ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २७० ।

३१९. प्रवचनसार

Opening : सर्व व्याप्यैकचिद्रूप, स्वरूपाय परमात्मने ।
स्वोपलब्धिः प्रसिद्धाय ज्ञानानंदात्मने नमः ॥

Closing : इतिगदितमनीचैस्तत्त्वमुच्चावचं यः,
चितितदपि किलाभूत्कल्पमग्नौ कृतस्य ।

अनुभुवतदुर्व्वैः विश्विदेवाय यस्माद्,
अपरमिह न किंचित् तत्वमेकं परंचित् ॥

Colophon : इति तत्वदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्तिः समाप्ता । श्रीरस्तु । संवत् १७०५ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्यां बुधवासरे अर्गलपुरमध्ये शाह जहांन राज्ये लि० श्वेतांबर रामविजयेन लिखाप्येदं श्राविकाख्यमोनृणां संघपतिना श्री साहु श्री जयतीदासेन पुत्र जगतराजयुतेन स्वकीयज्ञानावरणीय कर्मक्षयनिमित्तं पंडित श्री वीरूकायदत्त वाच्यमानं श्री चतुर्विधसंघपुरतः .... पुस्तकं जीयात् ।

देखें, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ. ६३ ।
(२) जि. र. को, पृ. २७० ।
(३) प्र. जै. सा., पृ. १७८ ।
(४) आ. सू., पृ. ६६ ।
(5) Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 671.

३२०. प्रवचनसार

Opening : सिद्ध सदन बुधिबदन मदनमदकदनदहन रज,
लवद्धिलसंत अनंत चारू गुनवंत संत अज ॥

Closing : प्रवचनसार जी महान, वृंदावन छदवंद करी ।
ताको दूजिप्रस्थहरि आन मनवंछित पूरन करी ॥

Colophon : श्री प्रवचनसार जी गाथा २७५ टीका संस्कृत २७५ भाषा छंद २८६४ । मकरमासे कृष्णपक्षे तिथौ ७ बुधवासरे संवत् १६६६ ।

३२१. प्रायश्चित्त

Opening : जिनचन्द्रं प्रणम्याहमकलंकं समन्ततः ।
प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि श्रावकाणां विशुद्धये ॥

Closing : सहस्राणि बर्झेत्वेका पंचनिष्कं प्रपूजनम्,
प्रायश्चित्तं य करोत्येतदेवं जाते दोषे तथा शान्त्यर्थमार्या ।
राष्ट्रस्यासौ भूमिपस्यात्मनोपि स्वस्थावस्थितं शं तनोति ॥

Colophon : इत्यकलंकस्वामि निरूपितं प्रायश्चित्तं समाप्तम् । मिती वि. संवत् १६७६ श्रावण शुक्ला चतुर्थी लिखितं जयपुरे पं० मूल चन्द्रेण समाप्तः प्रायश्चित्तो ग्रंथः अकलंकविरचितः ।

(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६४ ।
देखें— (२) जि० र० को०, पृ० २७६ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ १८० ।
(४) रा. सू. II, पृ. १७२ ।
(५) रा. सू. III, पृ. १८६ ।
(६) Catg of Skt & Pkt. Ms., P. 673.

३२२. पुण्य पचीसी

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्रीसिद्ध नमीजे ।
आचारज उवझाय तासु पदवंदन कीजे ।।

Cloing : सत्रह से तेतीसके उत्तम फागुनमास ।
आदि पक्ष नमिमावसों कहै भगोती दास ।।

Colophon : इति पुण्य पचीसी ।

३२३. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय

Opening : परमपुरुष निज अर्थ को साधि भए गुणवृंद ।
आनंदामृत चद को वदत हूँ सुषकद ।।

Closing : अठारह से ऊपरे संवत् सत्ताईस ।
मास मागिसररतिससिर सुदि दोयज रजनीस ।।

Colophon : इति श्री पुरुषार्थसिद्धयुपाय ।

३२४. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय

Opening : देखें—क्र० ३२३ ।

Closing : अठारह से ऊपरे संवत् है बीस मास ।
मार्गसिर शिशिर रितु, सुदी है जरनीस ।।

Colophon : इति श्री अमृतचन्द्र सूरि कृत पुरुषार्थसिद्धयुपाय सम्पूर्णम् ।
इदं पुस्तकं लिखतं हरबंशराय श्रवक पल्लीवार गोटि गुजरात
कास्यप गोत्र तस्य तनय रामबकाल निविसते कान्यकुब्जे मिति
वैशाखमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे दशम्यां संवत् विक्रमादित्ये १९४७ ।।
विशेष—इसके आवरण (कूट) पर एक स्टीकर चिपका हुआ है

जिसपर " पुरुषार्थ सिद्धोपाय बाबू सीरी अंसदास " हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखा हुआ है। जिसका ग्रन्थ की प्रशस्ति से कोई सम्बन्ध नहीं प्रतीत होता, अतः यह क्या है ? समझना कठिन है।

३२५. रत्नकरण्डश्रावकाचार मूत्री

Opening : नमः श्रीवर्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्यादर्पणायते ॥

Closing : सुखयति सुखभूमिः कामिनं कामिनीव,
सुतमिव जननी मां शुद्धशीलाभुनक्तु।
कुलमिव गुणभूषण कन्यका संपुनीतात्,
जिनपतिपदपद्म प्रेक्षिणी दृष्टिलक्ष्मीः ॥

Colophon : इति श्री समंतभद्रस्वामि विरचितोपासकाध्ययने पंचम परिच्छेदः समाप्तः।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६५।
जि० र० को०, पृ० ३२६।
प्र० जै० सा०, पृ० २०८।
आ० सू०, पृ० १२०।
रा० सू० II, पृ० १६८।
रा० सू० III, पृ० ३४।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 685.

३२६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका

Opening : इहां इस ग्रन्थ के आदि में स्याद्वाद विद्याके परमेश्वर परम निर्ग्रंथ वीतरागी श्री समन्तभद्रस्वामी जगतके भव्यनि के परमोपकार के अर्थि ··· ···।

Closnig : हरि अनीति कुमरग हरो, करो ··· ···।
मोक्ष निधि भूषित करो, मारग सु रत्नकरंड ॥

Colophon : इति श्री स्वामी समन्तभद्र विरचित रत्नकरंड श्रावकाचार की देशभाषामय वचनिका समाप्ता। इस प्रकार मूलग्रन्थ के अर्थ का प्रसादतें ··· ··· अपने हस्त से लिखा। संवत् १९२९ श्रावण शुक्ल चतुर्दश्यां शनिवासरे। श्लोक अनुष्टुप १६०० हजार ग्रन्थ संपूर्ण लिखा।

३२७. रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका

Opening : वृषभ आदि जिन सन्मतिसार ।
शारद गुरुकूं नमि सुखकार ।।
मूल समन्तभद्र मुनिराज ।
वृत्ति करी प्रभेन्दु यतिराज ।।

Closing : टीका रमणी देखिकरि, संस्कृत करि अभिराम ।
कल्पित किंचित् नही लिखी, रची तासकी दाम ।।

Colophon : इति रत्नकरंड वचनिका सम्पूर्णम् ।

३२८. रत्नकरण्ड विषम पद

Opening : रत्नकरंडक विषमपदव्याख्यानं कथ्यते ।।
श्री वर्धमानाय ।। अंतिम तीर्थङ्कराय ।।

Closing : · · · जिनोक्तपदपदार्थप्रेक्षमवोलेति ।।

Colophon : इति रत्नकरंडक विषमपदव्याख्यानं समाप्तम् ।

विशेष -समंत भद्राचार्य के रत्नकरडक के विषम पदों का व्याख्यान है। आचार विषयक होने पर भी पुस्तक की प्रकृति कोशात्मक है।

३२९. रत्नमाला

Opening : सर्वज्ञं सर्ववागीशं वीरं मारमदापहम् ।
प्रणमामि महामोह-शांतये मुक्तिताप्तये ।।

Closing : यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिमां परां ।
ससुद्धचरणों नूनं शिवकोटित्वमाप्नुयात् ।।

Colophon : इति रत्नमाला संपूर्णम् ।

विशेष---छपी पुस्तक में ६७ श्लोक हैं, जबकि उक्त प्रति में ६८ हैं। देखे --जि० र० को०, पृ० ३२७।

Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 686.

३३०. रत्नमाला

Opening : सर्वज्ञं सर्ववागीशं वीरं मारमदापहं ।
प्रणमामि महामोह शान्तयेम मुक्तताप्तये ।।१।।

Closing : योनित्यम्पठति श्रीमान् रत्नमालामिमां पराम् ।
सम्बुद्धचावनोनूनं शिवकोटित्वमाप्नुयात् ॥६७॥

Colophon : इति श्री समन्तभद्र स्वामि शिष्यशिव कोटयाचार्य्य विरचिता-रत्नमाला समाप्ता ॥ शुभं भूयात् ।

३३१: राजवार्त्तिक

Opening : प्रणम्यसर्वविज्ञानमहास्पदमुसाश्रेयं ॥
मिथ्यैकल्मषपंचीरं वक्ष्ये तत्वार्थवर्त्तिकम् ॥१॥

Closing : प्रत्यक्षं तद्भगवतानर्हतांतैश्च भाषितम् ॥
गुह्यतेस्तीत्यतः प्राज्ञैर्न्नछ्मपरीक्षया ॥३२ ॥

Colophon : इति तत्वार्थवार्त्तिके व्याख्यानालंकारे दशमो ध्यायः ॥ समाप्त ॥

देखें —जि० र० को, पृ० १५६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 869

३३२. रूपचन्द्र शतक

Opening : अपनो पद न विचारहु, अहो जगत के राय ।
भवबन ज्ञायकहार हे, शिवपुर सुधि बिसराय ॥

Closing : रूपचंद सद्‌गुरुनिकी, जनु बलिहारी जाइ ।
आपुनबै सिवपुर गए, भव्यनु पंथ दिखाइ ॥

Colophon : इति श्री पांडे रूपचंद शतकं समाप्तम् ।

३३३. सद्बोध चन्द्रोदय

Opening : यज्जानन्नपि बुद्धिमानपि गुरुः शक्तो न वक्तुं गिरा,
प्रोक्तं चेन्न तथापि चेतसि नृणां सम्मातिचाकाशवत् ।
यत्रस्वानुभवस्थितेपि विरला लक्ष्यं लभन्ते चिरात्,
सम्मोक्षैकनिबन्धनं विजयते चित्तत्वमत्यद्भुतम् ॥१॥

Closing : तत्त्वज्ञानसुधार्णवं लहरिभिदूरं समुल्लासयन्,
तृष्णायत्र विचित्रचित्तकमले संकोचमुद्रां दधत् ।
सद्विद्याश्रितभव्यकैरवकुले कुर्वन्विकाशं श्रियं,
योगीन्द्रोदयभूधरेविजयते सद्बोधचन्द्रोदयः ॥५०॥

Colophon : इति श्री सद्बोधचन्द्रोदय समाप्तम् ।
विशेष—जिनरत्नकोष पृ० ४१२ पर 'पद्मानन्द' कृत सद्बोधचन्द्रोदय का उल्लेख है, जिसमें ६० संस्कृत श्लोक हैं। किन्तु इसमें मात्र ५० श्लोक हैं।
देखें—जि० र० को०, पृ० ४१२ ।
Catg. of Skt & pkt. Ms. P. 700.

३३४. सद्बोध चन्द्रोदय

Opening : देखें—क्र० ३३३ ।
Closing : देखें—क्र० ३३३ ।
Colophon : इति पद्मनन्दिविरचितसद्बोधचन्द्रोदयः समाप्तः ।

३३५. सज्जनचित्त बल्लभ

Opening : नत्वा वीरजिनं जगत्त्रयगुरुं मुक्तिश्रियो वल्लभं,
पुष्पेषु क्षीयनीतबाणनिवहं संसारदुखापहम् ।
वक्ष्ये भव्यजनप्रबोधजननं ग्रंथं समासादहं
नाम्ना सज्जनचित्तवल्लभमिमं शृण्वंतु संतो जनाः ॥

Closing : वृत्तैः विंशति .. .. .. संसारविच्छित्तये ॥

Colophon : इति सज्जनचित्तवल्लभ समाप्तम् ।
देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६७ ।
जि० र० को., पृ. ४११ ।
प्र० जै० सा०, पृ० २३० ।
रा० सू० II, पृ० ३६०, ३७३ ३८६ ।
बै. प. प्र. सं. १ पृ. ६१, ७२ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 700.

३३६. सज्जनचित्त वल्लभ

Opening : यहां प्रथम ही टीकाकार अपने इष्टदेवगुरुशास्त्रदेव कौं नमस्काररूप मंगलाचरण करै है ।

Closing : हरमुलाल कहै, जोलौं जगजालदहै ।
और शिवनाही लहै तौलौ तूं ही स्वामी हमार हैं ।।

Colophon : इति सज्जनचित्तवल्लभ नाम ग्रन्थ संपूर्णम् संवत् १९५३ ।

३३७. संबोध पंचास्तिका

Opening : णमिऊण अरुहचरणं वंदे गुणु सिद्ध तिहुयणे सारं ।
आयरियउज्झायाणं साहू वंदामि तिविहेण ।।

Closing : सावणमासम्मि कया गाहाबंधेण विरइयं सुणह ।
कहियं समुच्चय छंपयडिज्जंतं च सुहबोहं ।।५०।।

Colophon : इति संबोध पंचास्तिका समाप्तम् ।
देखें,—जि० र० को०, पृ० ४२२ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 704.

३३८. संबोध पंचास्तिका सटीक

Opening : देखें—क्र० ३३७ ।

Closing : अस्या संबोधपंचासिकाया बहवो अर्थो भवति परन्तु मया संपेक्षार्थे कथिताः च पुन. सुखं स्वात्मोत्पन्नसुखं बोधि प्राप्त्यर्थं मया कृता. ।

Colophn : इति संबोधपंचासिका धर्माधिकाशिकशास्त्रं समाप्तम् । श्री गौतमस्वामीविरचितं शास्त्रं समाप्तम् । सम्वत् १७९३ वर्षे शाके १६५८ प्रवर्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे षष्ठी तिथौ ।

शुभमिती पौषकृष्णा ७ मंगलवार श्रीवीर संवत् २४६२ वि० सं० १९९२ के दिन यह प्रतिलिपि लिखकर तैयार हुई । ह० रोशनलाल जैन ।

३३९. समयसार (आत्मख्याति टीका)

Opening : नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकाशते ।
चित्स्वभावायभावाय सर्वभावांतरच्छिदे ।।

Closing : स्वशक्तिसंसूचितवस्तुतत्वैः, व्याख्याकृतेयं समयस्य शब्दैः ।
स्वरूपगुप्तस्य न किंचिदस्ति, कर्त्तव्यमेवामृतचन्द्रसूरिः ।।

Colophon : इति समयसारव्याख्यायामात्मख्यातिनाम्नी वृत्तिः समाप्ता । समाप्तश्चसमयसारव्याख्याव्यासः । श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः मंगलमस्तु । ओंकाराय नमो नमः । परमात्मविनाशिने नमोनम । ओं नमः सिद्धाय ।

देखें—दि. जि. ग्र. र., पृ. ६६ ।
जि. र. को., पृ. ४१८ ।
प्र. जै. सा., पृ. २३५ ।
आ सू. पृ. १३५ ।
रा. सू. II, पृ. १८६, ३८६ ।
र. सू. III, पृ. ४३ ।
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 703.

३४०. समयसार (आत्मख्याति टीका)

Opening : देखें—क्र० ३३९ ।

Closing : देखें—क्र० ३३९ ।

Colophon : इत्यात्मख्यातिनामा समयसार व्याख्या समाप्ता ।

विशेष—यह ग्रन्थ करीब १९०० विक्रम संवत् का है ।

३४१. समयसार सटीक

Opening : देखे—क्र० ३३९ ।

Closing : अनुपलब्ध ।

३४२. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जगतिमिर हरन खगतुरग लखन पगसिव-
मगदरसी ।
निरखत नयन भविक जल बरषत हरषत अमितभविक-
जन सरसी ।।

Closing : समैसार आतमदरब, नाटकभाव अनंत।
मोहै आगम नामपै, परमारथ विरतंत ॥

Colophon : इति श्री परमागम समैसार (समयसार) नाटकनाम सिद्धान्त सम्पूर्ण।

संवत् १७३५ वर्षे माघसुदि ८ बृहस्पतिवारे साहिजहानाबाद-मध्ये पातिसाह श्री अवरंगजेबराज्ये। श्रीमालज्ञाति शृंगार।

अज्ञानभावान्मतिविभ्रमाद्वा, यदर्थहीनं लिखितं मयात्र।
तत्सर्व्वमार्यैपरिशोधनायं, कोप न कुर्यात खलु लेखकस्य ॥

३४३. समयसार नाटक

Opening : देखें— क्र० ३४२।

Closing : देखें—क्र० ३४२।

Colophon : इति श्री परमागम नाटक समयसार सिद्धान्त सम्पूर्णम्। लिखत प्रयागमध्ये। संवत् १८२८ वर्षे मिति श्रावण सुदि १२ तिथौ शवासरे लिखतं शुभवेलायां लेखक पाठक चिरंजीव आयु। श्रीरस्तु। .... ओसवाल जातीय वैणी प्रसाद जी पुस्तक लिखाया प्रयाग मध्ये सं० १८२८ वर्षे लिखतं श्री।

३४४. समयसार नाटक

Opening : देखे—क्रम ३४२।

Closing : देखें—क्र० ३४२।

Colophon : इति श्री परमागम समयसार नाटकनाम सिद्धान्त संपूर्णम्। मिति अग्रहण शुक्ल प्रतिपदा बुधवासरे तृतीये प्रहरे पूर्ण किया।

३४५. समयसार नाटक

Opening : देखें०—क्र०, ३४२।

Closing देखें०—क्र०, ३४२।

Colophon : संवत् १७४५ फागुन वदि १० शनिवार को पूरन भया।

३४६. समयसार नाटक सार्थ

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colophon : इति श्री परमागम समयसार सिद्धान्त नाटक समाप्त: ।

३४७. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : ... ... बानी लीन भयो जगमो ... ... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३४८. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colophono : इति श्री परमागम समयसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम् । .... श्लोकसंख्या १७०७ । सन् १८८६ मिती माघ शुक्ल ४ वार रविवार के संपूरन भया । दसखत दुरगाप्रसाद आरेमध्ये महाजन टोली में ।

३४९. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colohpon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्ण । संवत् १८६२ । वैशाख मास कृष्णपक्ष तिथि सातैं (सप्तमी) शनिवार दिन गौरीशंकर अग्रवाल जैन धर्म प्रतिपालक ... लिखी पठनार्थं जैनधरम पालनहार श्री मंगलं ददातु ।

३५०. समयसार नाटक

Opening : देखें, क० ३४२।

Closing ; देखें क० ३४२।

Colophon ; इति श्री समयसार नाटक सिद्धान्त समाप्त:। संवत् १७२५ अ. सु. १० मं.।

३५१. समयसार नाटक

Opening : ...दलन नरकपद क्षयकरन, अघट भव जलतरन।
वरसवल मदन वनहर दहन, जय जय परम अभय करन॥

Closing : देखें क. ३४२।

Colophon : इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त बनारसी-दासकृतम्। लिखितं निस्यानंदब्राह्मणेन लिखायतं श्रावग जीवसुख-राम उभयोमंगलं ददातु। संवत् १८७६ वर्षे भाद्रपद सुक्ला ५ बुध-वासरे समाप्ता:। शुभं भूयात्।

३५२. सम्यक कौमुदी

Opening : श्री वर्द्धमानस्य जिनदेवं जगद्गुरुम्।
वक्षेह कौमुदी नृणां सम्यक्त्वगुण हेतवे॥ १॥

Closing : अर्हद्दासेन राजा हुष्टस्तस्य पुण्य कृतां प्रशसनश्च॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ७१।
(२) जि० र० को०, पृ० ४२४।
(३) प्र. जै. सा., पृ. २३६।
(४) रा० सू०, पृ० १३२, १३३।
(५) रा० सू० III, पृ० ८१।

३५३. समाधिमरण

Opening : अथ अपने इष्टदेव कौं नमस्कार करि अंतिम समाधिमरण ताका सरूप वरनन करिए हैं। सो हे भव्य तुम सुणौं। सोही अब लक्षण वरणन करिहैं। सो समाधिनाम नि:कषाय का है शांति प्रणामौं (परिणामो) का है।

Closing : ... ताका सुख की महिमा वचन अगोचर है ।

Colophon : इति श्री समाधिमरण सल्प सम्पूर्णम् । संवत् १८६२ आसोज सुदि ५ गुरुवारे लिखतं महात्मा बकसराम सवाई जयपुर मध्ये । श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय ।

३५४. समाधितन्त्र

Opening : जिनान् प्रणम्याखिलकर्ममुक्तान् गुरुन् यदाचारपरान् तथैव ।
समाधितन्त्रस्य करोमि बालाविबोधनं भव्यविबोधनाय ।।

Closing : ....इण ही आठ प्रकार का पृथक्-२ जघन्य अतरा-समय १ जाणिवा ।

Colophon : इति समाधितंत्रसूत्र बालबोध समाप्ता । ग्रन्थसख्या ४८००, संवत् १८७४ शाके १७३६ । आषाढ़ शुक्ल १ रवि पुस्तकरघुनाथ-शर्मणा लेषि पाठार्थं रत्नचंदस्य । शुभं भूयात् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ४२१ ।
Catg. of Skt.& pkt. Ms., P. 703.

३५५. समाधितन्त्र सटीक

Opneing : जिनान् प्रणम्याखिल कर्ममुक्तान् गुरुन् सदाचार
परात् तथैव ।
समाधितंत्रस्य करोमि बालावबोधनं भव्य
विबोधनाय ।।

Closing : .... अर्घोदयं सुकृतधी: कृत वा समाधौ ।।

Colophon : बालबोध समाधितंत्रसूत्रे भव्यप्रबोधनाधिकारे आत्मर-सप्रकाशे धर्माधिकार सम्पूर्णम् । संवत् १७८८ प्रवर्तमाने फागुण (फाल्गुन) वदी ११ तिथौ मुनि फतेसागरेण लिपि चक्रे ।

३५६. समाधितन्त्र

Opening : देखें—क्र० ३५४ ।

Closing : देखें—क्र० ३५४ ।

Colophon : नहीं है ।

३५७. समाधितन्त्र वचनिका

Opening : इहाँ संस्कृत में प्रवीन नाही अर अर्थ सीखने के रोचक औसे केतेकसुबुद्धी मूलग्रंथ का प्रयोजन .... ।

Closing : औरनिसूँ भी मेरी सोधिवे निमित्त प्रार्थना है सो देखि सोधि लीजियो ।

Colophon : इति समाधितंत्र वचनिका माणिकचंद कृत संपूर्णम् । संवत् १९३८ का मिती माघ शुक्ल पडिवा शुक्रवार ।

३५८. समाधिशतक

Opening : येनात्माबुद्धात्मैव परत्वेनैवचापरं ॥
अक्षयानंतबोधाय तस्मै सिद्धात्मने नमः ॥१॥

Closing : ज्योतिर्मयं सुखमुपैति परात्मनिष्ट ॥
स्तन्मार्गमेतदधिगम्यसमाधितंत्रम् ॥ १०५ ॥

Colophon : इति श्री समाधिशतक समाप्तम् ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । संवत् १८१४ । आश्विनकृष्ण ७ गुरुवासरे पुस्तकदमिदं संपूर्णम् ॥
देखें—जि० र० को०, पृ०४२१

३५९. सम्मेदशिखर महात्म्य

Opening : पंच परमगुरु को नमों दोकर सीस नवाय ।
श्रीजिन भाषित भारती, ताको लागो पाय ॥

Closing : रेवा सहर मनोग, बसै श्रावग भव्य सब ।
आदित्य ऐश्वर्य योग, तृतीय पहर पूरन भयौ ॥

Colophon : इति श्री संमेदशिखरमहात्मे लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति छप्पय लालचंद विरचिते सुवरकूटवर्णनो नाम एकविंशतिमः सर्गः ॥२१॥ समाप्त भया । इति श्री संमेदशिखर महात्म जी संपूर्णम् । लिखितं पन्नालचंद अमरवाले जैनी कानसीलमोत्रस्य पुत्र

१५६ बाबू मुन्नीलाल जीके। श्लोक ॥ १२६० ॥ मिति जेठ बदी ५ रोज सनीचर। संवत् १९३३ साल के संपूर्ण भया। पत्र चौंतीस।

३६०. सप्तपंचास दास्त्रविका

Opening : अभिवन्द्य जिनान् वीरान् सज्ञानादि गुणात्मकान्।
कर्णाटभाषाया वक्ष्ये जकामास्रव सन्मते: ॥

Closing : ध्यानमुमं मेळगे विसबुदये गेय्यलिकर कृतपराधं क्षंतुमर्हंति संत:।

Colophon : मन्मथ नाम संवत्सरद श्रावण बहुल विदिगे बुधवारदल्लु मंगलम्।

३६१. सत्वत्रिभंगी

Opening : पणमीय सुरेंद्रपूजिय पयकमलं वड्डमाइममलगुण।
पंचासतावणं वोछेहं सुणुह भवियजणा ॥१॥

Closing : पंचासवेहिं विरमण पंचिंदिय णिगहोकसायजया ॥
तिहिं दंडेहिं यविरदिस तारस संयमा भणियो ॥
तिथयरातपि यराहट्ठधर चकायअघकाय ॥
देवायभोगभूमिआहारा अत्थिणत्थिणिहारा ॥ १६४ ॥

Colophon : इत्यास्रवबंधउदयोदीरसत्वत्रिभगीमूल समाप्त: उडुयपुर प्रांत दुर्ग ग्रामस्थ रामकृष्ण शास्त्रि तनयेन रंगनाथ भट्टारख्येन लिखित्वा परिधाविवत्सरे वैशाख मासी शुक्लपक्षे पौर्णिम्यां समापितस्यास्य ग्रंथस्य शुभमस्तु।

३६२. सत्यशासन परीक्षा

Opening : विद्यानन्दाधिप: स्वामी विद्वद्देवो जिनेश्वर:।
यो लोकैकहितस्तस्मै नमस्तात्स्वात्मलब्धये ॥

Closing : तदेवमनेकबाधव सद्भावात् भादृप्राभाकरैरिष्टम्। भद्रं भूयात्।

Colophon : नहीं है।

देखें—जि० २० को, पृ० ४१२।

३६३. सत्यशासन परीक्षा

Opening : देखें—क्र० ३६२ ।

Colophon : यतो युगपद्भिन्नदेशस्वाधारवृतित्वे सत्येकत्वं तस्यासिद्ध-त्स्वाधारावृत्तित्वेसत्येकत्वं तस्य सिद्धयत्स्वाधारान्तरालेस्तित्व साधयेदिति तदेवमनेकबाधकसद्भावाद्भातृप्राभाकरैरिष्टम् ।।

३६४. सागारधर्मामृत (स्वोपज्ञटीका)

Opening : श्री वर्द्धमाननमाम्य मंदबुद्धि प्रबुद्धये ।
धर्मामृतोक्त सागार धर्मटीका करोम्यहम् ।।

Closing : यात्तिष्टशासनं जिनपते छिदानमंतस्तमो,
यावच्चार्कनिशाकरौ प्रकुरुतः पुंसां दृशामुत्सवं ।
तावत्तिष्ठतु धर्मस्तरिभिरियं व्याख्यायमाना निशं,
भव्यानां पुरतोत्रदेशविरता बार प्रबोधोद्धुर ।।

Colophon : इत्याशाधर विरचिता स्वोपज्ञधर्मामृतसागारधर्मटीकायां भव्य-कुमुदचंद्रिका नाम्नी समाप्ता ।

अनुपस्यां दसापंचशतायाणिसतां मता सहस्त्राण्यस्य चत्वारि ग्रंथस्य प्रमिति किल । मिति मार्गशिर (शीर्ष) कृष्णा ४ रविवासरे लिखत रामगोपाल ब्राह्मण वासी मौजपुरमध्ये अलवर का राजमैं ।

देखें— जि० र० को०, पृ० १६५ ।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 707.

३६५. सामायिक

Opening : पडिक्कमामि भंते । इरिया वहियाए विराहणाए अणागुत्ते .... ।

Closing : गुरवः पातु नो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः ।
चारित्रार्णवगंभीरा मोक्षमार्गोपदेशकाः ।।

Colophon : इति सामयिक संपूर्णम् ।

३६६. सामायिक

Opening : सिद्धश्चाष्ट गुणान्भक्त्या सिद्धान् प्रमणमत: सदा ।
सिद्धकार्या: शिवं प्राप्ता: सिद्धि ददतु नोहिते ॥

Closing : एवं सामयिकं सम्यक् सामायिकमखण्डितम् ।
वर्त्ततां मुक्तिमानेन वसीभूतमिदं मम ॥ १२ ॥

Colophon : इति श्रीलघु सामायिक समाप्तम् ।

३६७. सामायिक

Opening : सिद्धिवस्तुवचोभक्त्या सिद्धान् प्रणमते: सदा ।
सिद्धिकार्यसिवंप्रेदा सिद्ध दधतु मोव्ययम् ॥

Closing : ... ... भो सामायक मुक्ति वधू के वसीभूत अैमे तुम्हारे अर्थ हमारा नमस्कार होहु ।

Colophon : इति सामायक सम्पूर्णम् ।

३६८. सामायिक

Opening : ... अर्हन्त भगवान की वाणी की भक्ति करि सदाकाल सिद्धभगवान कूं नमस्कार करते ।

Closing : जलधी वाकी संख्या । वाजित्र वजासुन वाकी संख्या ।
दशोदिशा की संख्या ।

Colophon : इति सामायिक सम्पूर्णम् ।

३६९. सामायिक वचनिका

Opening : आदि रिषभ सनमति चरम, तीर्थंकर चउवीस ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि, नमूं धारिकरि शीश ॥

Closing : ऐसें सामायिक पढ्यो सारजानि मुनि वृंद ।
धर्मराज मति अल्प फुनि भाषामय जयचंद ॥

Colophon : इति सामायिक वचनिका संपूर्णम् । लिखितमिदं पुस्तकं श्रावक मौ (नव) नंदरामेण । पुत्र नान्हूं रामजी खीदूका का सवाई जयपुर में मिति आषाढ सुदी १० संवत् १८७० का ।

३७०. सामायिक वचनिका

Opening : देखें—क्र० ३६६ ।

Closing : देखें,—क्र० ३६६ ।

Colopnon : इति सामायिक वचनिका संपूर्णम् ।

३७१. शासन प्रभावना

Opening : निबद्धमुख्यमंगलकरणानंतरं परापरगुरून् शास्त्राणिपूर्वाचार्यविरचितग्रंथा: उपदेशा: गुर्वाद्युक्तरहस्य प्रकाशका: ··· व्यवहार: कर्मप्रयोग: जिनप्रतिष्ठाया. शास्त्राणि चोपदेशाश्च व्यवहारश्च तेषां दृष्टि: सम्यक् प्रतिपत्तिस्तथा · · · ।

Closing : प्रकृत्या सहोदरण्वजिनेन्द्रप्रमाणशास्त्रं जैनेन्द्रव्याकरणं च पडित महावीरान् जयवर्मनामिमालवाधिपति पंडितदेवचद्रादीन् श्लोके–नोपस्तुत: वादीप्रविशालकीर्त्यादय: उ.यति स्म बालसरस्वतीमहाक विमदनादय: सहृदयविदाधेधुमध्ये भट्टारक विनयचंद्रादय: अर्हत्प्रवचन मोक्षमार्गे स्वयकृतनिवधेन स्फुट प्रतिभास सिद्धिसब्दोकंचिद्दुसर्मप्रांतेषु यस्य तत् जिनागमनिर्यासभूतं आराधनासारभूपालचतुर्विंशतिस्तवनार्थ: प्रतिष्ठाचार्य सबंधिनं वसुनंदिसैद्धांत्याद्याचार्यविरचितानि स्पष्टीकृत्य पंचकल्याणा (का) दिविधानकथनात् शासनप्रभावना अभ्यर्चनम् ।

३७२. शास्त्र-सार-समुच्चय

Opening : श्री विबुधवंद्यजिनरंकेवलिचिरसुखदसिद्धपरमेपितगलम् ।
भावजजयसाधुयतं भविसिपोडेवपट्टपद्मवेनक्षयसुखमम् ॥ १ ॥

Closing : अनुपलब्ध ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३८३ ।

३७३. सिद्धान्तागमप्रशस्ति

Opening : सिद्धमणंतमणिंदिय मणुवममप्पुत्थ सोक्खमणवज्जं ।
केवल पहोह णिज्जियदुण्णय तिमिरं जिणं णमह ।।१।।

Closing : सर्वंज्ञ प्रतिपादितार्थं गणभृत्सूत्रानुटीकामिमां।
यम्यस्यन्ति बहुश्रुताः श्रुतगुरुं संपूज्य वीरं प्रभुं ।।
ते नित्योज्वल पद्मसेन परम. श्री देवसेनार्चिता ।
भासन्ते रविचंद्र भासिसुतपः श्री पाल सत्यकीर्तियः ।।३९।।

Colophon : These two Prashastees of Shri धवल सिद्धान्त and जयधवल सिद्धान्त are personally Copied from श्री सिद्धान्त शास्त्र at गुरुवस्ति in moodbidri for the sake of the, Central Jain Oriental Library alias श्री सिद्धान्त भवन at Arrah, on the 30 th August 1912 at 10.30 am. to 12.30 am.

By the most humble
जिनवाणी सेवक
तात्या नेमिनाथ पांगल
बार्शी–टौन

३७४. सिद्धान्तसार

Opening : जीवगुणट्ठाणसण्णापज्जत्ती पाणमग्गणणवूणे ।।
सिद्धंतसारमिणमो भजामि सिद्धेणमूसित्ता ।। १ ।।

Closing : सिद्दन्तसारवरसुत्तगुत्ता साहूंतु साहू मयमोहचत्ता ।
पूरंतु हीणं जिणणाहभत्ता वीरायचित्तासीवमग्ग जुत्ता ।। ।।

Colophono : सिद्धान्त सारसमाप्तः । श्रीवर्द्धमानाय नमः । हूयेन जिनेन्द्रदेवाचार्यनिन्दगता ।।

— संपूर्ण —

देखें—जि० र० को०, पृ० ४४० ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 709.
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 312.

३७५. सिद्धान्तसार दीपक

Opening : श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं सर्वज्ञसर्वदर्शिनम् ।
सर्वयोगीन्द्रवद्यां हि वंदे विश्वार्थ दीपकम् ॥ १ ॥

Closing : ग्रंथेऽस्मिन् पंचचत्वारिंशच्छतश्लोकपिंडिता: ।
षोडशाग्र बुधैर्ज्ञेया सिद्धांतसार शालिनि ॥ ११६ ।

Colohpon : इति श्री सिद्धांतसारदीपकमहाग्रंथसंपूर्णं समाप्तम् । अशुभ-संवत्सरे संवत् १८३० वर्षे मासोतममासे कृष्णपक्षे ।

देखें—जि० र० को., पृ. ४४० ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 702.
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 320.

३७६. सिद्धान्तसार दीपक

Opening : नही हैं ।
Closing : नही है ।

३७७. सिद्धिविनिश्चय टीका

Opening : अकलंकं जिनभक्त्या गुरुदेवीं सरस्वतीम् ।
नत्वा टीकां प्रवक्ष्यामि शुद्धां सिद्धि विनिश्चये ॥

Closing : यत् एवं तस्मात् नैरात्म्यं सकलशून्यत्वं बहिरन्तर्वा इत्येव प्रजयता इत्यादिना सम्बन्धः स्याद्वादमन्तरेण तदप्रतिपत्तेः इतिभावः।

Colophon : इति श्री रविभद्रपादोपजीवि अनन्तवीर्य विरचितायां सिद्धि-विनिश्चय टीकायां प्रत्यक्षसिद्धिः प्रथमः प्रस्तावः ।

देखें—जि० र० को, पृ० ४४१ ।

३७८. श्लोकवार्तिक

Opening : श्री वर्द्धमानमाध्याय घाति संघातघातनम् ।
विद्यास्पदं प्रवक्ष्यामि तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकम् ॥

Closing : अनुपलब्ध ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें—जि. र. को., पृ. १५६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 698.

३७९. श्रावक प्रतिक्रमण

Opening : जीवे प्रमादजनिताः प्रचुराप्तदोषाः,
यस्मात्प्रतिक्रमणतः प्रलय प्रयान्ति ।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥

Closing : अरकर पयथ हीनं मत्ता हीनं च जमए भाणियं ।
त खु मउणाणदेवयमक्षभविदु खु खु वंदितु ॥

Colophon : इति श्रावक प्रतिक्रमण सम्पूर्णम् ।

३८०. श्रावकाचार

Opening : प्रणम्य त्रिजगत्कीर्ति जिनेन्द्रं गुणभूषणम् ।
संक्षेपेणैव संवक्ष्ये धर्मं सागारगोचरम् ॥

Closing ; श्रीमद्वीरजिनेशपादकमले चेतः षडंघ्रि सदा,
हेयादेयविचारबोधनिपुणा बुद्धिश्च यस्यात्मनि ।
दानं श्रीकरकुड्मलेगुणततिर्देहोशिरस्युन्नती,
रत्नानां त्रितयं हृदि स्थितमसौ नेमिश्चिरं नंदतु ॥

Colophon : इति श्रीमद्गुण भूषणाचार्य विरचितेभव्यजनवल्लभाभिधान श्रावकाचारो साधुनेमिदेवनामाङ्किते सम्यक्त्वचारित्रवर्णनम् तृतीयोद्देशसमाप्तः । ग० रत्नेन लिखितम् । श्री संवत् १५२६ वर्षे चैत्र-सुदी ५ शनिदिने ।

जैनसिद्धान्त भवन, आरा में रोशनलाल लेखक द्वारा लिखी । शुभ संवत् १९९२ वर्षे आषाढ़ शुक्ला १५ मंगलवासरे ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४२, ७७ ।
रा० सू० III, पृ० ३६ ।

३८१. श्रावकाचार

Opening : श्रीमज्जिनेन्द्रचन्द्रस्य सांद्रवाक्चन्द्रिकांगिनाम् ।।
हृषीकदुष्टकर्माष्टिघर्मसंतापनभ्रमम् ।।१।।
दुराचारचयाक्रान्त दुःख संदोह हानये ।।
ब्रवीजिम्युपासकाचारं चारुमुक्ति सुखप्रदम् ।।२।।

Closing : जीवन्तं मृतकं मन्ये देहिनं धर्मवर्जितम् ।।
मतो धर्मेण संयुक्तो दीर्घजीवी भविष्यति ।।१०१।।
शरीरमंडन शीलं स्वर्णखेदावहं तनोः ।।
रागोवक्त्रस्य ताम्बूलं सत्येनैवोज्वलं मुखम् ।।१०२।।

Colophon : इति श्री पूज्यपाद स्वामि विरचितं श्रावकाचारं समाप्तं ।। शुभंभवतु सं १९७६ भादो वदी ३ लिखित पं० मूलचन्द्रेण जयपुरे ।
देखे—जि. र. को., पृ. ३९५ । (X)
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 696.

३८२. श्रावकाचार

Opening : राजत केवलज्ञान जुत, परमौदारिक काय ।
निरखि छवि भवि छकत है, पीरस सहज सुभाय ।।

Closing : ऐसैं ताका वचन के अनुसारि देवगुरुधर्म का श्रद्धान करै । इति कुदेवादिक का वर्णन संपूर्ण ।

Colophon : इति श्री श्रावकाचार ग्रंथ समाप्त । श्रीरस्तु लेखकपाठकयो: लिपि कृतं पंडित शिवलाल नगर भालपुरा मध्ये मिति आषाढ़ वदी ३ भूमि (भौम) वासरे पूर्णीकृतं सम्वत् १८८८ का ।

३८३. श्रावकाचार

Opening : देखें—क्र० ३८२ ।

Closing : ... ... सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताते तू अंगीकार कर और ताके अनुसार देव गुरु धर्म का स्वरूप अंगीकार कर श्रद्धान कर ।

Colophon : इति कुदेवादिक का वर्णन पूर्ण । इति श्री श्रावकाचार ग्रन्थ पूर्ण । संवत् १८५६ फाल्गुन शुक्ल अष्टमी ।

३८४. श्रुतस्कन्ध

Opening : वृद्धलियलालहरं माणुस जम्मस्स याणियदिन्नं ।
जीवा जेहिं णाणाया मा कुण णारकिया जेहिं ॥

Closing : जो पढइ सुणइ गाहा, अर्थ (अत्थं) जाणेइ कुणइ सद्दहणं ।
आसण्णभव्वजीवो सो पावइ परम णिव्वाणं ॥
इति ब्रह्महेमचन्द्र विरचित श्रुत स्कंध समाप्तम् । श्रीरस्तु । शुभमस्तु ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३११ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 697.

३८५. श्रुसागरी टीका

Opening : अथ श्रुतसागरी टीका तत्त्वार्थसूत्रस्यद शाध्यायस्य प्रारम्यते ॥
सिद्धोमास्वामिपूज्यं जिनवरवृषभं वीरमुसीरमात
धीमंतं पूज्यपादं गुणनिधिमधियन्सत्प्रभाचंद्रमिदु: ॥
श्री विद्यानदजीशंगतानमकलं कार्यम नम्यरम्यम्
वक्ष्ये तत्त्वार्थवृत्ति निजविभवतयाहंश्रुतादन्वदाख्य: ॥१॥

Closing : श्रीवर्द्धमानमकलकसमंतभद्र: श्रीपूज्यपादसदुमापति
पूज्यपादम् ॥
विद्या दिनदि गुणरत्नमुनीन्द्रसत्य भक्त्या नमामि
परित: श्रुतसागराद्यै ॥१॥

Colophon : इत्यनवद्यगद्यपद्यविद्याकविनोदनोदितप्रमोदरीयूषरसपान विन-मतिसमासरल राज मतिसागर यतिराज राजितार्थनसमर्थन तर्कव्याक ण छंदोलकारसाहित्यादिशास्त्र निशितमतिना यतिनादेवेन्द्र कीर्ति भट्टारक-प्रशिष्येण सकलविद्वज्जनविहितचरणसेवस्य श्री विद्यानदिदेवस्य सघा-यितंमिथ्यामत ? देण श्रुतसागरेण सूरिणा विरचितायां श्लोकवार्त्तिक राजवार्त्तिक सर्वार्सिद्धि न्याय कुमुदचन्द्रोदय प्रमेयकमलमार्कण्ड प्रचण्डाप्रवंसहररीषमुख ग्रन्थ संदर्भ निर्भरावलोकनबुद्धिविराजितायां तत्त्वार्थटीकायां दशमो ऽध्याय: ॥ इति तत्वार्थस्य श्रुतसागरी टीका समाप्ता वसुषत्कमिते वर्षे द्विसते मासते माघेवदि पक्षे पंचम्या संवत्सरे ॥१॥
सहारणपुरे मध्ये लिषितं मंदबुद्धिना ।
भव्यानां पठनार्थाय सीयारामकर शुभम् ॥२॥

देखें—जि० र० को०,पृ० १५६ (१५) ।

३८६. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : .... जानियै ।
मनवचनतनत्रय शुद्धकरिकै सदा तिनहि प्रनामियै ॥

Closing : संवत् अष्टादश शतक, फिर ऊपरि अड़तीस ।
सावन सुदि एकादशी, अर्धनिश पूरणकीन ॥

Colophon : इति श्री सुदृष्टि तरंगिणी नामग्रन्थे ब्यालीसमी संधि संपूर्णम् ।
इति श्री सुदृष्टि तरंगिणी नाम ग्रन्थ सम्पूर्णम् ।
धर्मकरत संसारसुख, धर्मकरत निर्वान ।
धर्मपथ साधन बिना, नर तिर्यञ्च समान ॥
शुभं भवतु मंगलं दद्यात् । मिती ज्येष्ठ सुदी १० संवत्
१९६१ ।

३८७. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : श्री अरहंतमहंत के, बंदौ जुग पदसार ।
ग्रन्थ सुदृष्टितरंगनी, करौ स्वपर हितकार ॥

Closing : ऐसें समुद्घातनका शामान्य सरूप कह्या विशेष श्री गोम्मट-
सार जीतै जानना तहाँ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३८८. सुखबोध टीका

Opening : ··· न सम्यक्त्वपर्याय उत्पद्यते तदैव मत्यज्ञानश्रुताज्ञानाभावे
मतिज्ञानं श्रुतज्ञानं चोत्पद्यत इति ·· ।

Closing : .... संख्येयगुणा पुष्करद्वीपसिद्धाः संख्येयगुणाः एवं
कालादिविभागेऽल्पबहुत्वमागमाद्वेद्यम् ।

Colophon : अथप्रशस्ती । शुद्धेद्धतपः प्रभाव पवित्रपादपद्मराजः किजल्प-पुंजस्यमनः कोणैकदेशक्रोडीकृताखिलशास्त्रार्थांतरस्य पंडित श्री बंधु-देवस्यगुण प्रबन्धानुस्मरणजातानुग्रहेण प्रमाणनयनिर्णीताखिलपदार्थप्रपंचेन श्रीमद्रु अबलभीमभूपालमार्त्तंडसभायामनेकधा लब्धतर्कचक्रांकल्केनाबलब-रादीनामात्मनश्चोपकारार्थेन पांडित्यमदविलासात्सुखबोधाभिधां वृत्तिं कृता महाभट्टारकेन कुंभनगरवास्तव्येन पंडित श्री योगदेवेन प्रकटयंतु संशोध्य बुधायदत्तायुक्तमुक्तं किञ्चिन्मति विभ्रमसभवादिति । प्रचंड पंडित-मंडलीमौनदीक्षागुरोर्यो योगदेव विदुषः कृतौ सुखबोधतत्वार्थवृत्तौ दशमः पादः समाप्तः ।

जैन सिद्धान्त भवन आरा में शुभमिति आषाढ़ शुक्ल ५ बृहस्पतिवार सं० १९९२ वी० सं० २४६१ । ह० रोशनलाल जैन लेखक ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १५६ (१३) ।

३८९. स्वस्वरूप स्वानुभव सूचक (सचित्र)

Opening : अथ अनादि अनंत जिनेश्वरसुरं मरस सुंदर बोध मयिपरं । परम मंगलदायक हैं सही, नमतहूंदस कारण शुभ मही ।।

Colsing : ... ... बहुत क्या कहूं ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाशवत् नये कहू बात है न होवैगा ।

Colophon : इति श्री क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास रचित स्वरूपपस्वानुभव सूचक समाप्त । सं० १९८६ आ० सु० १० ।

विशेष—(आठों कर्मों की प्रकृतियों को आठ चित्रों द्वारा दिखाया गया है) ।

३९०. स्वरूप स्वानुभव सम्यक् ज्ञान

Opening : देखें—क्रम ३८९ ।

Closing : ... ... मेरे अर तेरे बीच में कर्म है, सो न मेरे न तेरे कर्म कर्म ही मे निश्चय है ।

Colophon : नहीं है ।

विशेष—(१) क्र० ३८९ की ही प्रतिलिपि है ।
(२) मात्र नामकरण में थोड़ा सा अन्तर है ।
(३) पेज नं० २, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३ और १४ में बने हुए हैं ।

३६१. स्वरूप सम्बोधन

Opening : मुक्तामुक्तैकरूपो यः कर्मभिस्संविदादिना ।
अक्षयं परमात्मानं ज्ञानमूर्तिं नमामि तम् ॥

Closing : इति स्वतत्वं परिभाष्यवाङ्मयं,
य एतदाख्याति शृणोति चादरात् ।
करोति तस्मै परमार्थसंपदम्,
स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति. ॥२५॥
अकरो दाहितो ब्रह्मसूरि पंडित सद्विजः ।
स्वरूपबोधनाख्यस्य टीकां कर्णाटभाषया ॥

Colophon : नहीं है ।
देखें—जि० र० को०, पृ० ४५८ ।

३६२. तत्वरत्न प्रदीप

Opening : श्री निधिममन्तभद्र नबू .... ? पूज्यपादनजितनर्ज,
विद्यानंद तत्त्व सत्थान मनेमगीजे :मबयसारं वीरम् ॥

Closing : मालाद्राक्षाफलानां सुरसमधुरताधूरमास्तां निरस्ता सौधी-माधुर्यरीतिः परमनिविदुरा कर्कशा शर्करापि वीचो वीचिविचार-प्रचुरतररसा सारनिष्यन्दिनीनां चेस्ताकूलप्रबंधप्रणयनसुहृदां श्रूयते धर्मकीर्त्तेः ॥
श्री श्रुतमुनये नमः ।
तत्वसार ।

३६३. तत्वसार

Opening : झाणाग्गिदड्ढकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसब्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसारं पवुच्छामि ॥१॥

Closing : सोऊण तच्चसारं रइयं मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासयं सुक्खं ॥७४॥

Colophon : इति तत्त्वसार समाप्तम् ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १५३ ।
Catg. of skt. & Pkt. Ms., peag. 648,

३६४. तत्वसार भाषा

Opening : आदि सुखी अंतज सुखी, सिद्धसिद्ध भगवान ।
निज प्रताप प्रलाप विन, जगदर्पण जग आंन ।।

Closing : सत्रहसै एकावने, पौष सुकल तिथि वार ।
जो ईश्वर के गुन लखै, सो पावै भवपार ।।

Colophon : । नहीं है ।

३६५. तत्वसार वचनिका

Opening : प्रणमि श्री अर्हंत कूं सिद्धनिकूं शिरनाय ।
आचार्य उवझाय मुनि पूजूं मनवचकाय ।।

Closing : - - - पन्नालाल जु चौधरी विरचि जो कारक दुलीचंदजी ।

Colophon : इति ग्रन्थ वचनिका बनने का संबंध समाप्तम् । संवत् १९३८ का महावदि १२ सोमवार ।

३६६. तत्वानुशासन

Opening : सिद्धस्वार्थान शेषार्थं स्वरूपस्योपदेशकान् ।
परापरगुरून्नत्वा वक्ष्ये तत्वानुशासनम् ।।

Closing : तेन प्रसिद्धधिषणेन गुरूपदेश,
मासाद्य सिद्धिसुखसंपदुपाय भूतम् ।
तत्वानुशासनमिदं जगते हिताय,
श्री रामसेन विदुषाव्यरच स्फुटोर्थम् ।।

Colophon : इदं पुस्तकं परिधावि संवत्सरे उत्तरायणे अधिक आषाढमासे कृष्णपक्षे एकादश्यायां सौम्यवासरे द्वाविंश घटिकायां दिवा च वेणू-पुरस्त पन्नेवारीरित्तल विद्वत् वामनशर्मणा पंचम पुत्र भगवीति केशव शर्मणेन लिखितं समाप्तमित्यर्थः श्री जिनेश्वराय नमः ।
देखें,—जि० र० को०, पृ० १५३ ।

३६७. तत्वार्थसार

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ।।

Closing : वर्णाः पदानां कर्तारो वाक्यानां तु पदावलिः ।
वाक्यानि चास्य शास्त्रस्य कर्तृणि न पुनर्वयम् ॥

Colophon : इति श्री अमृतसूरीणांकृतिः तत्वार्थसारोनाम मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ७६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५३ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १५० ।
(४) आ० सू०, पृ० ६६ ।
(५) रा० सू० II, पृ० १३३ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १७६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 648.

३६८. तत्वार्थसार

Opening : देखें, क्र० ३६७ ।
Closing : देखें, क्र० ३६७ ।
Colophon : इति श्री अमृतचंद्रसूरीणां कृतिस्तत्वार्थसारोनाममोक्षशास्त्र-समाप्तम् । लिपिकृतम् बालमोकुन्दलाल अग्रवाला आरानग्र । श्रीरस्तु।

३६६. तत्वार्थसार

Opening : देखें, क्र० ३६७ ।
Closing : देखें, क्र० ३६७ ।
Colophon : इति अमृतचंद्र सूरीणां कृतिः तत्वार्थसारो नाम मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

श्री काष्ठासंघे श्री रामकीर्तिदेवामुन्कन्दकीर्त्ति । ग्रंथश्लोक सख्या ७२४ । संवत् १५५३ वैशाख सुदी सोमे श्री काष्ठासंघे माथुर-गच्छे पुष्करगणे आर्यलपुरमध्ये लिखाप्तं ताइ ? कीर्तिदेवा. ।

४००. तत्वार्थसूत्र (श्रुतसागरी टीका)

Opening : देखें, क्र० ३८५ ।
Cosing : देखें, क्र० ३८५ ।

Colophon : इत्यनवद्यगद्यपद्यविद्याविनोदविनोदितप्रमोदपीयूषरसपानपावन-मतिसभाजरत्नराराजमतिसागर यतिराजराजितार्थनसमर्थेन तद्धर्मब्याकरण छंदोलकारसाहित्यादि शास्त्रनिशितमतिना यतिना श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति भट्टारकप्रशिष्येण चशिष्येण सकलविद्वज्जन विरचितचिरसो सेवस्य श्री विद्यानंदिदेवस्य संछर्दित मिथ्यामतदुर्गरेण श्रुतसागरेण सूरिणा विरचितायां श्लोकवार्तिक राजवार्तिकसर्वार्थसिद्धिन्यायकुमुदचंद्रोदय प्रमेयकमलमार्तण्ड प्रचंडाष्टसहस्त्री प्रमुखग्रंथ संदर्भनिर्भरावलोकनबुद्धिविराजितायां तत्वार्थटीकायां दशमोध्याय: समाप्त:। इति तत्वार्थस्य श्रुतसागरी टीका समाप्ता। संवत् १७७० माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ सप्तम्यां रविवासरे पाटलिपुरे लिखितम् अमीसागरेण आत्मार्थे। श्री। श्री।

देखें -- दि. जि. ग्र. र., पृ. ८५।
जि. र. को., पृ. १५६ (१५)।
आ० सू० पृ० ६७।
रा० सू० III, पृ. १३।
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १८१।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 649.

४०१. तत्वार्थसूत्र

४०१

Opening : सम्यग्दर्शन ज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्ग:।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं शुक्ल पक्षोपलक्षितम्।
वंदे गणेन्द्र संजातमुमास्वामि मुनीश्वरम्॥

Colophon : इति दसध्याय सूत्र सम्पूर्णम् लिखितं पंडित कस्तुरी चंद तारतोलमध्ये पठनार्थम् लाला सोवयाल का बेटा मनुलाल के वास्ते संवत् १९४६ का मिति आसोज सुदी पूर्णमासी के दिन समाप्तम्.......

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ८१।
(२) जि० र० को०, पृ० १५४ (२)।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १५१।
(४) रा. सू. II, पृ. २८, ८३।
(५) रा. सू. III, पृ. ११, १२।
(6) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 7

४०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opneing : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्या ॥
पंचान्यंचास्तिकाया व्रत समिति गति ज्ञानचरित्रभेदा: ॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितै: प्रोक्तमर्हद्भिरीशै: ॥
प्रत्येतिश्रद्दधाति स्पृशति च मतिमानयं सवैशुद्धदृष्टि ॥१॥

Closing : नवमे संवर निजर। दसमे मोक्ख विमाणेहि।
इयतत्त तत्त्व भणियं। दहसूत्रे मुणिदेहि ॥७॥

Colophon : इति श्री उमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्र समाप्तं। लिखित पंडित किसनचंद सवाई जयपुर का वासी ॥ धर्मसूर्ति धर्मात्मा कवरजी श्री दिलसुखजी पठनार्थं ॥

४०३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : .... संसारिणस्त्रसस्थावरा:।
Closing : देखें—क्र० ४०१।
Colophon : इति उमास्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्रं समाप्तम्।

४०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं ··· ··· शुद्धदृष्टि: ॥
Closing : तवयरणं .... निजरई ॥
Colophon : इति श्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशाध्यायसूत्र जी समाप्तम्।

४०५. तत्त्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४०२।
Closing : .... आनयन, प्रेष्यप्रयोग, पुद्गलक्षेप ··· ···।
Colophon : अनुपलब्ध।

४०६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें---क्रम ४०४ ।

Closing : देखें---क्र० ४०४ ।

Colophon : इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् ।
श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ १ (एक) चन्द्रवासरे सवत् १६५५ श्री ।

४०७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं ... ... शुद्धदृष्टि: ।।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्तारं " " मुनीश्वरम् ।।

Colophon : इति उमास्वामीकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

४०८. तत्वार्थसूत्र (मूल)

Opening : त्रैकाल्यंद्रव्यषट्कं " शुद्धदृष्टि ।।

Closing : तत्वार्थसूत्र .... उमास्वामिमुनीश्वरम् ।।

Colophon : इमि तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय: सवत् १६०८ चैत्रकृष्णपक्षे नवम्यां बुद्धवारे ।

४०९. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यषट्कं ..... शुद्धदृष्टि: ।।

Closing : पहिले चतुके जीवपंचमे जाणि पुग्गलतं च ।
छहसत्तमे त्रआश्रव अष्टमे जानि बध ।।
नवमे संवरनिर्जरा, दशमे ज्ञानकेवलं मोक्ष ।।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्रम् ।
पुरन सुतर जी ।

४१०. तत्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ।

Closing : भयो सिद्धकारज यहु मंगल करता सोई।
इहकथा वंधराग्रमंजिन परभव मिलियो मोहु ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

४११. तत्त्वार्थसूत्र टिप्पण

Opening : देखें—क्र० ४१०।

Closing : संवत् उगणीसैदशशुद्ध।
फाल्गुण वदि दशमी तिथि बुद्ध॥
लिख्यो सूत्र टिप्पण गुणधान।
नमैं सदा सुख मिति धरिध्यान॥

Colophon : इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र का देशभाषामय टिप्पण समाप्तम्। संवत् १९१० मिति फाल्गुण कृष्ण १४ दीत वार समाप्तम्।

४१२. तत्त्वार्थवृत्ति

Opening : जयन्ति कुमतध्वांतपाटने पटुभास्वराः।
विद्यानंदास्सतां मान्याः पूज्यपादाः जिनेश्वराः॥

Closing : तस्यात्सुविशुद्धदृष्टिविभवः सिद्धान्त पारंगतः,
शिष्यः श्रीजिनचन्द्रनामकलितः चारित्रभूषान्वितः।
वाशिष्टैरपिनदिनामविबुधस्तस्याभवत्तत्त्ववित्,
तेनाकारिसुखादिबोधविषया. तत्त्वार्थवृत्तिः स्फुटम्॥

Colophon : परमत महासैद्धान्तिजिनचंद्रभट्टारकस्ताच्छिष्य पंडित श्रीभास्करनदिविरचितमहाशास्त्रतत्त्वार्थवृत्तौ सुखबोधायां दशमोध्यायः समाप्तः।

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदयशालिवाहनशकाब्दाः १७५० ने सर्वधारिसंवत्सरद्कार्तिकसुद्ध १४ गुरुवारदिन तत्त्वार्थसूत्रक्के सुखबोधयं म वृत्तियन्नु तगडूरु सिद्धान्तिब्रह्मसूरि ज्येष्ठपुत्रनादंता, चंद्रोपाध्यसिद्धातियुवरे दुदु संपूर्णवादुदु। जयमंगलं। शोभनमस्तु॥

देखें—जि० र० को, पृ० १५६।

४१३. तत्वार्थबोध

Opening : सिवमग दाइकभान, कर्मतिमिर गिरके हरनं।
सर्वतत्वमय ग्यान, वंदू जिणगुण हेतकूं ॥

Closing : संवत्‌ठारासैं विषै, अधिक गुन्यासी देस।
कातिकसुद सासिपंचमी, पूरनग्रंथ असेस ॥
मंगल श्री अरिहंत, सिधमंगलदायक सदा।
मंगलमाधमहंत, मंगल जिनवर धर्मवर ॥

Colophon : इति श्री तत्वार्थबोध ग्रंथ संपूर्णम्। इति शुभ मिति आषाढ़ सुदी १२ संवत् १९८२।
जैसी प्रत पाई हती, तैसी दई उतार।
भूलचूक जो होय सो, बुधजन लियौ सुधार ॥
हस्ताक्षर पं० चौबे लक्ष्मीनारायण के।

४१४. तत्वार्थसूत्र टीका

Opening : देखें०—क्र०, ४१०।

Closing : इह भांति करि घणांही भेदास्यौं सिद्ध हुआ सो सिद्धान्त से समझि लीज्यो।

Colophon : इति श्री तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय: ।१०। श्री उमास्वामी विरचितं सूत्र बालावबोध टीका पांडे जैवंतकृत संपूर्ण:। संवत् १९०४ वैशाख शुक्ल १२ लिपि कृतं इदम्।

४१५. तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४१०।

Closing : ऐसैं ही कालादिक का विभागतैं अल्पबहुत्व जानना। ऐसैं द्वादश अनुयोगनि करि सिद्धनि मैं भेद है और स्वरूप भेद नहीं है।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय: ॥१०॥
देखें—क्र० ४११।

इति श्री तत्वार्थसूत्र का देशभाषामय टिप्पण समाप्त । लिखतं दौलत-राम बखावरलालजी मध्ये मुक बकस के बेटा ने । संवत् १९२५ शुक्ल ६ गुरुवासरे सम्पूर्ण । शुभमस्तु ।

४१६. तत्वार्थसूत्र टीका

Opening : शुद्धतत्व की अर्थ में, लह्यो सार जिनराय ।
जिनपद नमों त्रियोगिकरि, हृदै इष्ट सुखदाय ॥

Closing : आदि अन्त मंगल करत, होत काज हितकार ।
तातैं मंगलमय नमौं, पंच परम गुरु सार ॥

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र दशाध्याय की तत्वार्थसार नामा भाषा टीका समाप्ता । संवत् १९७० शक: १८३५ चैत्र शुक्ला ५ भृगुवासरे लिपि-कृतम् प० सीताराम शास्त्री निजक .ण संशोधिता: ।

४१७. तत्वार्थाधिगम सूत्र

Opening : पूज्यपादं जगद्वंद्यं तत्वोमास्वामीभाषितम् ।
क्रियते बालबोधाय मोक्षशास्त्रस्य टिप्पणीम् ॥

Closing : रत्नप्रभाकरा सर्वार्थसिद्धिराजवार्तिका: ।
श्रुतांभोधिकृतयाश्चश्लोकवार्तिकसंज्ञिका ॥
ताभ्य विशेषज्ञानाय ज्ञेया विस्तारमंजसा ।
अल्पज्ञानाय सर्वेषां रचिता बोधचंद्रिका ॥

Colophon : इति तत्वार्थ सिद्धान्त सूत्रस्य टीकासमाप्तेयम् । श्रीरस्तु । सम्वत् १९१९ मिती फाल्गुन शुक्लदशम्यां स्वहस्तेन लिपि-कृतम् इन्द्रप्रस्थे पं० शिवचन्द्रेण ।

४१८. तत्वार्थ वार्तिक

Opening : अनुपलब्ध ।

Closing : इति तत्वार्थसूत्राणां भाष्यं भाषितमुत्तमै: ।
यत्रसंनिहितस्तर्कन्यायागम विनिर्णय: ॥

Colophon : इति तत्वार्थवार्तिकव्याख्यानालंकारे दशमोध्यायः समाप्तः ॥
जीयाज्जगतिजिनेश्वरनिगदितधर्मप्रकाशकः सूरिः
अभयेंदुरितिख्यातः पत्वादिपितामहः सततम् ॥
वंदे वालेंदु मुनितममंदबुधाग्रणि गुर्णनिनिधिम्
यस्य वचस्तोऽस्त स्वांतध्वंतं दुरस्तमपि नश्येत् ॥

श्रीपंचगुरुभ्यो नमः मंगलमहा । शके २२६२ वर्तमान प धावी संवत्सरे भाद्रपदशुक्लएकादश्यां भानुवासरे समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥ दक्षिणकर्नाटदेशे उडुपी कार्ककप्रांत्यदुर्गग्रामनिवासस्थरामकृष्ण स्त्रिणः पुत्रो रंगनाथ भट्टेन लिखितं पुस्तकम् ॥

शुभ मगलानि भवतु ॥

देखें—जि० र० को०, पृ० १५६ ।

४१९. त्रैकालिकद्रव्य

इस गथ में मात्र "त्रैकाल्य द्रव्यपट्क ... इत्यादि
अर्थ सहित लिखा गया है ।
अन्त मे एक भजन भी है ।

४२०. त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति

Opening : अट्ठविहकम्मवियला णिट्ठय कज्जापणट्ठ समारा ।
दिट्ठसलत्थसारासिद्धासिद्धि मम दिसंतु ॥१॥

Closing : सूरि श्री जिनचंद्रां ह्रि स्मरणाधीन चेतसा ।
प्रशस्तिर्विहिता वासौमीहाख्येनसुधीमता ॥१२३॥
यत्रद्यत्ताप्पवद्यस्यादर्थे पा मयादृत्त ।
तदाशोध्यवुर्धर्वाच्चमनंतः शब्दवारिधिः ॥१२४॥

Colophon : इति सूरि श्रीजिनचद्रांतेवासिना पंडित मेधाविना विरचि प्रशस्ता प्रशस्तिः समाप्ताः ॥ श्री सिंहपुरी जैनतीर्थ समीप सथवा ग्र निवासी कायस्थ बटुकप्रसाद ने श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा लिखा ॥ सं० १९८८ विक्रम ॥

४२१. त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति

Opening : देखें—क्र० ४२० ।

Closing : देखें,—क्र० ४२० ।

Colopnon : देखें—क्र० ४२० ।

४२२. त्रिभङ्गी

Opening : श्री पंचगुरुभ्यो नमः ।।
पणमियसुरिन्दद पूजियपयकमलं वड्डमाणममलगुणं ।
पच्चयसत्तावण्णं वोच्छेह सुणुह भवियजणा ।।१।।

Closing : अह चक्केण य चक्की छक्खंड साहये अविग्घेण ।
तहमइ चक्केण मया छक्खंड सहियं संमं ।।

Colophon : इति श्री कनकनंदि सैद्धांतिकचक्रवर्तिकृत विस्तरसत्त्वत्रिभंगी समाप्ता ।।

४२३. त्रिभंगीसार टीका

Opening : सर्वज्ञं करुणार्णवं त्रिभुवनं धीमार्च्यपादं विभुम्,
यं जीवादिपदार्थसार्थकलने लब्धप्रशंसं सदा ।
तं नत्वाखिलमंगलास्पदमहं श्रीनेमिचन्द्रं जिनं,
वक्ष्ये भव्यजनप्रबोधजनकं टीकां सुबोधाभिधाम् ।।

Closing : श्री सद्यां हि युगे जिनस्य नितरां लीनः शिवासाधरः,
सोमः सद्गुणभाजनं सविनयः सत्पात्रदाने रतः ।
सद्रत्नत्रययुक् सदा बुध मनोल्हादीचिरं भूतले,
तंथार्थेन विवेकिना विरचिता टीका सुबोधाभिधा ।।

Colophon : इति त्रिभंगीसार टीका समाप्ता । संवत् १६१५ । विक्रमादित्यगताब्दवाणैकरद्वाचंद्र वर्षे ज्येष्ठवदि तृतीयायां ३ सुरगुरुवासरे पूज्य श्री अर्यानीऋषिशिष्य. दुर्गु नाम्नेति ऋषिलिख्यतं आत्मावबोधनार्थं जलमार्गसंज्ञाभिधानेन नगरे लिख्यतमिदं पुस्तकम् ।

यहप्रतिलिपि श्रावणकृष्णा १३ गुरुवार विं० सं० १६६४ को लिखी गई । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १६२ ।
दि. जि. ग्र. र., पृ. ८७ ।
जै. ग्र. प्र. सं. १, पृ. २८, प्रस्तावना, पृ. २६ ।

४२४. त्रिलोकसार

Opening : बलगोविंदसिहामणि किरणकलावरुणचरणमाहकिरणं ।
विमलपरमणेमिचंदं तिहुवणचंदं णमसामि ॥

Closing : अरहंतासिद्धआयरिय उवज्झायासाहुपंचपरमेट्ठी ।
इयपंचणमोयारो भवे भवे मम सुह दितु ॥१०१०॥

Colophon : इति श्री त्रिलोकसारजी श्रीनेमिचंद आचार्यकृत मूलगाथा संपूर्णम् । शुभ मस्तु ॥

देखें—जि० र० को०, पृ० १६२ ।
Catg. of Skt. & pkt Ms, P. 162.
Catg. of Skt. Ms, P. 320.

४२५. त्रिलोकसार

Opening : देखें—क्र० ४२४ ।

Closing : ... ... महाध्वजं प्रशपरिवारध्वज १०८ ।
महाध्वज इ १०८० । ल दि १ ... ११६६२० ।

४२६. त्रिलोकसार भाषा

Opening : ... ... समान ही सिन्धु नदी है. सो सर्व वर्णन सिंधु विषै भी तैसे ही जानना ।

Closing : तातै परमवीतराग भावरूप शुद्धात्म स्वरूप जनित परम आनंद की प्राप्ति करहु ।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसार जी श्री नेमिचंद्र आचार्यकृत मूलगाथा ताकी टीका संस्कृत कर्त्ता आचार्यमाधवचंद्र ताकी भाषा टीका टोडरमल जी कृत संपूर्ण ।

४२७. त्रिलोकसार

Opening : त्रिभुवनसार अपारगुन, ज्ञायक नायक संत।
त्रिभुवन हितकारी नमौं, श्री अरहंत महंत ॥

Closing : अर्थकों जानता संता रागादिक त्यागि मोक्षपद कों पावै है। अब संस्कृत टीका अनुसार लिए मूलशास्त्र का अर्थ लिखिए है।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसार का टीका का पीठबंध सम्पूर्णम्।
विशेष—अन्त में पीठबंध सम्पूर्ण ऐसा लिखा है, लेकिन ग्रंथ की भाषा टीका लिखी जा चुकी है।

४२८. त्रिलोकसार

Opening : मंगलमय मंगलकरन वीतराग विज्ञान।
नमौं ताहि जातै भये अरिहंतादि महान ॥

Closing : इति श्री अरिष्ट नेम पुराण ···· ···।

Colophon : अनुपलब्ध।

४२९. त्रिलोकसार भाषा

Opening : देखें—क्र० ४२७।

Closing : अब संस्कृत टीका अनुसार लिए मूलशास्त्र का अर्थ लिखिए हैं।

Colophon ; इति श्री त्रिलोकसारभाषाटीका का पीठबंध सम्पूर्ण। संवत् १८६६ वर्षे मिती सावन वदी दो लिखतं भूपतिराम तिवारी, लिखी मोहौकमगंज मध्ये।

४३०. त्रिवर्णाचार (५ पर्व)

Opening : अथोच्यते त्रिवर्णानां शौचाचारविधिक्रमः।
शौचाचारविधिप्राप्तौ देहं संस्कर्तुमर्हसि ॥१॥
संस्कृतो देह एवासौ दीक्षणाद्यभिसम्मतः।
विशिष्ठान्वयजोऽप्यस्मै नेष्यतेऽयमसंस्कृतः ॥२॥

Closing : तत्रोपनयनादारभ्य समावर्तनपर्यन्तमुपनयनब्रह्मचारी। स्त्री-सेवां कुर्वाणो जुगुप्सया गुरुसमक्षं तन्निवृत्तः आलम्बनब्रह्मचारी। विवाहपूर्वकं त्रिभुवनपरिग्रहारम्भाद् क्रियाप्रवृत्तो गृहस्थः। परिग्रहानु-

मत्युद्दिष्टनिवृत्ता वाणप्रस्थाः । वैराग्यश्रीश्रितो महाव्रती भिक्षुः ।
इत्याश्रमलक्षणम् ।

Colophon : इति ब्रह्मसूरि विरचिते जिनसंहितासारोद्धारे प्रतिष्ठातिलकनाम्नि त्रैवर्णिकाचारग्रंथे (संग्रहे) गर्भाधानादिविवाह-पर्यन्तकर्मणां मन्त्रप्रयोगो नाम पञ्चमं पर्व समाप्तम् । फाल्गुनशुद्ध द्वितीयाया तिथौ समाप्तः ॥

देखें– जि० र० को०, पृ० १६३ ।

४३१. त्रिवर्णाचार (५ पर्व)

Opening : देखें, क्र० ४३० ।

Closing : देखें, क्र० ४३० ।

Colophon : इति श्री ब्रह्मसूरिविरचिते जिनसंहितासारोद्धारे प्रतिष्ठातिलकनाम्नि त्रैवर्णिकाचारसंग्रहे गर्भाधानादि विवाहपर्यन्तकर्मणां मंत्र-प्रयोगो नाम पंचमं पर्व्व । नमः सिद्धेभ्यः । श्री चंद्रप्रभजिनाय नम ॥

४३२. त्रिवर्णाचार (१३ अध्याय)

Opening : श्री चंद्रप्रभदेवदेवचरणौ नत्वा सदा पावनौ,
संसारार्णवतारकौ शिवकरौ धर्मार्थकामप्रदौ ।
वर्णाचार विकाशकं वसुकरं वक्ष्ये सुशास्त्रं परम्,
यच्छ्रुत्वा सुचरंति भव्यमनुजाः स्वर्गादिसौख्यार्थिनः ॥

Closing : श्लोकानां यत्र संख्यास्ति शतानिसप्तत्रिंशतिः ।
तद्धर्मरसिकं शास्त्रं वक्तुः श्रोतुः सुखप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री धर्मास्तिकशास्त्रे त्रिवर्णाचारप्ररूपणे भट्टारक श्रीसोमसेनविरचिते सूतकशुद्धिकथनीयो नाम त्रयोदशमोऽध्यायः ॥ इति त्रिवर्णाचारः समाप्तः ॥ संवत् १७५६ वर्षे फाल्गुन सित पक्षे त्रयोदशी गुरुवासरे इयं संपूर्णा जाता । अहमदाबादमध्ये इदं पुस्तकं लिखितमस्ति । शुभं भूयात् । श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती ग .... कुन्दकुन्दान्वये श्रीभट्टारक विश्वभूषण जी देवास्तत्पट्टे श्रीभट्टारक जिनेन्द्रभूषणजी देवास्तत्पट्टे श्रीभट्टारक महेन्द्रभूषण जी देवा तेनेदं देवेन्द्रकीर्तेः दत्तम् ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ८८ ।
जि०र० को०, पृ० १६३, I ।

प्र० जै० सा०, पृ० २५६ ।
रा० सू० II, पृ० ७, १५५ ।
रा० सू० III, पृ० १८४ ।
जै० प्र० प्र० सं० १ प्रस्तावना पृ. २६ ।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 651.

४३३. त्रिवर्णाचार

Opening : तज्जयति परं ज्योतिः समं समस्तैरनंतपर्यायैः ।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ॥
(पद्य पुरुषार्थ सिद्धयुपाय का है ।)

Closing : धर्मार्थकामाय कृतं सुशास्त्रं, श्री जैनसेनेन शिवार्थिनापि ।
गृहस्थधर्मेषु सदारता ये कुर्वन्तु तेऽभ्यासमहोजनास्ते ॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविन्दविनिर्गते श्री गौतमर्षि पादपद्मा-राधकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारोद्धारे सूतकशुद्धि कथनीय नाम अष्टादश पर्व. ॥१८॥ इति त्रिवर्णाचार समाप्तम् । संवत् १९७० । मिती पौष वदी ५ बुधवासरे लिखितमिदं पुस्तकं गुलजारीलाल शर्म्मणा । भिण्डाग्रनगरवासोस्ति । रिञ्वालियर ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १६३ ।
Catg. of skt. & Pkt. Ms., p. 651.

४३४. त्रिवर्णाचार

Opening : देखें—क्र० ४३३ ।

Closing : देखें—क्र० ४३३ ।

Colophon : देखें—क्र० ४३३ ।
मिति श्रावण कृष्ण ११ संवत् १९१९ । शुभं भूयात् ।]

४३५. त्रिवर्णाचार

Opening : देखें—क्र० ४३३ ।

Closing : देखें—क्र० ४३३ ।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविन्दाद्विनिर्गते श्री गौतमर्षि-पदा

पद्मारावकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययन-सारोद्धारे सूतकशुद्धि कथनीय नाम अष्टादश पर्व ॥१८॥ संवत् १६१६ .... वार मंगलवारे लि. कोठारी मोहनलाल मुंगरमी ॥ रहेवाशी बढवाण शे हेरना ॥ श्लोक सख्या ८५२५ ॥

४३६. त्रिवर्णाचार वचनिका

Opening : देखें —क्र० ४३२ ।

Closing : जयवंतो यह शास्त्र शुभ भूमंडल में नित्त ।
मंगलकर्ता हूजियो सुखकर्त्ता भविचित्त ॥

Colophon : इति त्रिवर्णाचार ग्रन्थ की वचनिका समाप्तम् । ज्येष्ठ शुक्ला १५ शनिवासरे सवत् १६५६ ।

४३७. त्रिवर्णा शौचाचार (७ परिच्छेद)

Opening : देखें - क्र. ४३० ।

Closing : आर्षं यद्यच्च तेषामुदितखनयानूतनापुण्यभाजः ।
मेतत्त्रैवर्णिकाद्याचरणविधिमहाकण्ठिका कण्ठमेति ॥

Colophon : इत्यार्षसंग्रहे त्रैवर्णिकाचारे नित्यनैमित्तिकक्रमो नाम सप्तम परिच्छेदः ॥ श्रीमदादिनाथाय नमः ॥ श्रीमद्विद्यागुरु श्री मदन·तमुनये नमः ॥पुस्तकमिदं श्री वेणुपुरस्थगीर्वाणपाठशालाध्यापकनेमिराजय्याज्ञानुसारेण संक्रमणात्मजेन पद्मराजनाम्ना मया प्रणीतमस्ति मंगलमस्तु चिरं भूयात् । करकृतमपराधं क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः इति विरम्यते ।

श्रीरस्तु ।

४३८. उपदेश रत्नमाला

Opening : तिहुवण परमेसरेहइवमीसरे अनंतचतुष्टय सहियो ।
बंदमि श्रुतसारणे कबुपसारणे सुरनरेन्द्र अहिमहियो ॥

Closing : मो अवियाणिधरी अणलगत्त अथहुछंद हीणय ।
संवारहु सुबुधिपंडित जनतुमसौ जमि पमाणयं ॥

Colophon : इति श्री महापुराणसम्बन्धिनिकलिका समाप्ता । शुभमिति फाल्गुन शुक्ला २ बृहस्पतिवार वीर सं० २४६० वि० सं. १६६० ।

४३६. उपदेश रत्नमाला (१८ परिच्छेद)

Opening :

वंदे श्री वृषभं देवं, दिव्यलक्षणलक्षितम् ।
प्रीणितं प्राणिसद्वर्गं, युगादिपुरुषोत्तमम् ॥१॥
अजितं जितकर्मारिं, संतानं शीलसागरम् ।
भवभूधरभेत्तारं, शंभवं च भवे सदा ॥२॥

Closing :

सहस्त्रत्रितयं चैदो परि असीत संयुतम् ।
अनुष्टप् बंद सा चास्य, प्रमाणं निश्चितं बुधैः ॥

Colophon :

इति भट्टारक श्री शुभचंद्र शिष्याचार्य श्री सकलभूषण विरचितायामुपदेशरत्नमालायां पुण्यषट्कर्मप्रकाशिकायां तपोदानमाहात्म्यवर्णनो नामाष्टदशः परिच्छेदः ।१८। समाप्तः । श्री साहिजहनाबादे पृथ्वीपति मुहम्मद साह शुभराज्ये संवत् वेदनभगजशशि वैशाख शुक्ल सप्तम्यां ।

सकलगुणधारिणो भव्यजीवतारणो,
परोपकारिणो गुरुगुण अनुचारिणो ॥
श्री भट्टारकपदधार देवेन्द्रकीर्ति विस्तारं
तत्पट्टे सुखकारं श्री जगकीर्तिबहुश्रुतं धारम् ॥
एषा प्रति प्रमुदितया लिखापिता शिष्यपरंपराचार्यै
मेरु शशि भानु यावत् तावदियं विस्तरतां यान्तु ॥ (१११४)

देखें—दि. जि. ग्र. र., पृ. ८९ ।
जि. र. को., पृ. ५१ (VI) ।
रा. सू. II, पृ. १४६ ।
रा. सू. III, पृ. २३ ।
आ० सू० पृ० १६ ।
जै० ग्र० प्र० सं० १, पृ० १६ ।
प्र० सं० (कस्तूरचन्द), पृ० २–४
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ. २४ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 628.
Catg. of Skt Ms., P. 312.

४४०. उपदेश रत्नमाला

Opening : देखें—क्र० ४३९ ।

Closing : देखें—क्र० ४३९ ।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्र शिष्याचार्य्य श्री सकलभूषण विरचितायमुपदेशरत्नमालायां पुण्यषटकर्म्मप्रकाशिकायां तपोदान माहात्म्यवर्णनोनामष्टादशः परिच्छेदः ।।१८।। मितीफागुनसुदी ।।३।। भृगुवासरे ।। सम्वत् ।।१९७०।। लिखितमिदं पुस्तकं मिश्रोपनामक गुलजारीलालशर्म्मणा भिण्डाग्रनगरवासोस्ति ।। इस ग्रन्थ की श्लोक संख्या ।।३६००।। प्रमाणम् ।।

४४१. वैराग्यसार सटीक

Opening : इक्कहिं घरेवधामणा अण्णहिं घरि धाहहि रोविज्जइ ।
परमत्थई सुप्पउ भणई किमवइ सयभाउण किज्जइ ।।

Closing : .... असौ जीवः चतुर्गतिषु अनंतदुःखानि भुंजति । कदाचित् सुख न प्राप्नोति ।

Colophon : इति सुप्रभाचार्यकृत वैराग्यसार प्राकृत दोहाबंध सटीक संपूर्णः । संवत् १८२७ वर्षे मिति पौष वदि ३ बुधवारे बसवानगरमध्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये पंडित जी श्री परसराम जी तत्शिष्य पं० अणंतराम जी तत्शिष्य श्रीचंद्र स्ववाचनार्थं वा उपदेशार्थ लिपिकृतं । लेखकपाठकयोः शुभमस्ति । श्रीजिनराजसहाय । तत्‌लिपे. संवत् १९८९ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां गुरुवासरे आरानगरे स्व० देवकुमारेण स्थापित श्री जैनसिद्धान्तभवने श्री के० भुजबलीशास्त्रिणः अध्यक्षतायां इदं प्रतिलिपि पूर्तिमभवत् । इति शुभं भूयात् ।

देखें—जि० र० को, पृ० ३६६ ।

४४२. वसुनन्दि श्रावकाचार वचनिका

Opening : वंदूं मैं अरिहंतपद, नमूं सिद्ध शिवराय ।
सूरि सु पाठक साधुके, चरण नमूं सुखदाय ।।१।।
वंदूं श्री जिनवैन कूं, वंदूं श्री जिनधर्म ।
जिमप्रतिमा जिनभवन कूं नमूं हरण वसुकर्म ।।२।।

Closing : ऋषि पूरण नव एक फुनि, माधव फुनि शुभ स्वेत ।
जया प्रथम बुधवार मम, मंगल होउ निकेत ।।

Colophon : इति श्री वसुनन्दि सिद्धान्ती चक्रवर्ति विरचित श्रावकाचार की वचनिका संपूर्णम् ।

वेदषणन्द चन्द्रेब्दे वैशाखे पूर्तिगें सिते ।
सीतारामाभिधेयेन लिखितं शोधितं मया ॥

भग्न पृष्टिकटिग्रीवा ऊर्ध्वदृष्टि अधोमुखम् ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिकल्पयेत् ॥

४४३. वसुनन्दि श्रावकाचार

Opening : देखें—क्र० ४४२ ।

Closing : देखें—क्र० ४४२ ।

Colophon : इति श्री वसुनन्दि सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित श्रावकाचार की वचनिका सम्पूर्णम् । संवत् १९०७ वैशाख शुक्ल ३ भौमवासरे । पुस्तक लिखी ब्राह्मण श्री गोपमालजी ज्ञाति साम्प्रदाय पड़ा भैरव लाले सू ।

४४४. वसूनन्दि श्रावकाचार वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४४२ ।

Closing : अपठनीय (जीर्ण) ।

Colohpon : अपठनीय (जीर्ण) ।

४४५. विदग्धमुखमण्डन (४ परिच्छेद)

Opening : सिद्धौषधानि भवदुःख महागदानां,
पुण्यात्मनां परम कर्णरसायनानि ।
प्रक्षालनैकसलिलानि मनोमलानां,
शौद्धोदनेः प्रवचनानि चिरं जयन्ति ॥

Closing : पूर्णचन्द्रमुखीरम्या कामिनी निर्मलांबरा ।
करोति कस्य न स्वांतमेकान्तमदनोत्तरम् ॥

Colophon : च्युतदत्ताक्षरजातिः । इति धर्मदासविरचिते चतुर्थपरिच्छेदः समाप्तं शास्त्ररत्नमिदं विदग्धमुखमंडनाख्यम् ।

...　　...

४८० ग्रंथश्लोका: ।

देखें—जि० र० को., पृ. ३५५ ।

दि. जि. ग्र. र., पृ.

Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 691

४४६. विश्वतत्वप्रकाश (१ अध्याय)

Opening : विश्वतत्वं प्रकाशाय परमानंदमूर्त्तये ।
अनाद्यनंतरूपाय नमस्तस्मै: परमात्मने ।।

Closing : चार्वाकवेदांतिकयोगभाट्टप्राभाकरार्थक्षणिकोक्ततत्वम् ।
यथोक्तयुक्त्यावितथ समर्थ्य समापितोऽय प्रथमोधिकार ।।

Colophon : इति परवादिगिरिसुरेश्वर श्री भावसेनत्रैविद्यदेवविरचिते मोक्षशास्त्रे विश्वतत्वप्रकाशे अशेषपरमततत्वविचारे प्रथम. परिच्छेद समाप्त: । शुभसंवत् १९८८ फाल्गुण शुक्ला १० गुरुवासरे ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद के अतिरिक्त एक पत्र मे प्रमाण के विषमर थोड़ा सा लिखा है, जिसमे विभिन्न मतो मे स्वीकृत प्रमाण सख्या दी गई है । जिनरत्नकोष मे भी पृष्ठ ३६० पर इसका एकही अधिकार होने की सूचना है ।

देखें दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६० ।

Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 692.

४४७. विवाद मत खण्डन

Opening : किं जापहोमनियमैः तीर्थस्नानैश्च भारत ।
यदि स्वादति मांसानि सर्वमेव निरर्थकम् ।।

Closing : मद्वयं मद्वयं चैव च त्रियं व चतुष्टय ।
अनया कुसकल्पितानि पुराणानष्टादशानि च ।।

Colophon : इति विवादमत खंडन सम्पूर्णम् ।

४४८. विवादमत खन्डन

Opening : अहिंसासत्यमस्तेयं त्यागो मैथुनवर्जनम् ।
यं च स्वे तेषु धर्मेषु सर्वधर्माः प्रतिष्ठिताः ॥

Closing : अष्टादशपुराणानां व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

Colophon : इति भारते इति तांबूलाख्यानकाधिकारः एकविंशतितमः २१ इति संपूर्णम् ।

४४९. विवेक विलास

Opening : शाश्वतानंदरूपाय तमः स्तोमैक भास्वते ।
सर्वज्ञाय नमस्तस्मै कस्मैचित्परमात्मने ॥

Closing : सश्रेष्ठः पुरुषाग्रणी स सुभटोत्तं सः प्रसंसास्पदं स,
प्राज्ञः सकलानिधि स च मुनि सक्ष्मातले योगवित ।
सज्ञानी सगुणि व्रजस्यतिलको जानातियःस्वांमूर्ति,
निर्मोहः समुपार्जयत्यथा पदं लोकोत्तरं सास्वतम् ॥

Colophon : इति श्री जिनदत्त (सू) रि विरचिते द्वादसोल्लासे विवेक विलासे जन्मचर्यायां परमपदप्रापणोनाम द्वादसमोल्लासः ।

यह ग्रथ करीब विक्रम स० १६०० से कम का है ।

देखें—जि० र० को, पृ० ३५६ ।

Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 692.

४५०. वृहद्दीक्षाविधि

Opening : पूर्वदिने भोजनसमये भोजनतिरष्कारविधि विधाय··· ,···

Colsing : स्वान्येषां ज्ञानसिद्धयर्थं शास्त्राण्यालोच्य युक्तितः
गुरुमार्गानुयायीति प्रतिष्ठासारसंग्रहम् ॥

Colophon : लिलेखेमं फतेलालपंडितो हितकाम्यया ।
संशोधयंतु विद्वांसः सद्धर्मस्निग्धमानसा ॥३॥

४५१. योगसार

Opening : भद्रं भूरिभवाम्भोधि शोषिणी दोषमोषिणी ।
जिनेशशासनायालम् कुशासनविशासिने ।।१।।

Closing : श्रीनन्दनन्दिवत्सः श्रीनन्दीगुरुपादाब्जषट्चरणः ।
श्रीगुरुदासो नन्धान्मुग्दमति श्री सरस्वति सूनुः ।।

Colophon : इति श्री योगसारमग्रहं समाप्तम् । संवत् १९८९ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे नवमीतिथौ रविवासरे जैनसिद्धान्त भवने ··· इदं पुस्तके पूर्णमगमत् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३२४ (१) ।

४५२. योगसार

Opening : देखें--क्र० ४५१ ।

तस्याभवच्छुतनिधिर्जिनचंद्रनामा
शिष्योनुतस्यकृति भास्करनं(द)नाम्ना ।।
शिष्येण संस्तवमिमं निजभावनार्थं
ध्यानानुगं विरचितं सुवितो विदंतु ।।

Colophon : इतिध्यानस्तवः समाप्तः ।

विशेष—अर्वाचीन लेख—
यह ग्रन्थ करीब १९५० विक्रम सं० का ज्ञात होता है ।

४५३. योगसार सटीका

Opening : णिम्मलझांण परट्ठिया कम्मकलंक डहेवि ।
अप्पा लद्धउ जेण परू ते परमप्पणवेवि ।।

Closing : ससारह भयभीयएण जोगचंद मुणिएण ।
अप्पा संबोहणकया दोहा इक्कमणेण ।।
इति श्री जोगसारग्रथ समाप्तः ।
जैनसिद्धान्त भवन आरा में लिखा । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन । शुभमिति कार्तिक शुक्ला १२ शनिवार श्री वीर सम्वत् २४६२ श्री विक्रम संवत् १९९२ । इति संपूर्णम् ।

विशेष—ढूढारी हिन्दी में ग्रन्थ की टीका भी गाथाओं के साथ दी गई ।
देखें—जि. र. को., पृ. ३२४ (II) ।
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 685.

४५४. आप्तमीमांसा

Opening : देवागमनभोयान् चामरादिविभूतयः ।।
मायाविष्वपि दृश्यंते नातस्त्वम सिनो महान् ।।१।।

Closing : जयति जयति केशावेष प्रपंचहिमांशुमान ।।
विहित विषमैकांतध्यात प्रमाणनया शुमान ।।
यतिपति रजोयस्याधृष्यन्मता वुनिश्चेतवान ।।
स्वमत मतयस्तीर्थ्या नानापरे समुपासते ।।११५।।
देखे—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 625.

४५५. आप्तमीमांसा

Opening : नहीं है ।

Closing : येनादोष····भीत्वृतिसरितः प्रेक्षावतां शोषिता
यद्व्याख्येप्यकलंक नीतिरुचिरा तत्त्वार्थसार्थद्युतः ।।
स श्री स्वामिसमन्तभद्रयतिभूद्याद्विभुर्भानुमान् ।
विद्यानंदफलप्रदोनघधियां स्याद्वादमार्गाग्रणी ।।

Colophon : इत्याप्तमीमांसालंकृतौ दशमः परिच्छेदः ।
श्रीमदकलंकशशधरकुलविद्यानंद संभवा भूयात्
गुरुमीमासालंकृतिरष्टसहश्री सतामृध्य ।।
वीरसेनाख्य मोक्षगेचारुगुणानर्घ्यरत्नसिंधुगि सततम् ।।
सारतारात्ममृरानिगेमारसवांभोदपवनगिरि गह्वरियलु ।। ।।
कपटसहश्री सिद्धा सापद सहश्रीव मत्र मे पुण्यात्
शश्वदभीष्ट सहश्री कुमारसेनोक्तवर्द्धमानार्था: ।।१।।
स्वस्ति श्री मूलामलसंघमंडलमणि श्री कुंदकुंदान्वये
वीर्णबलेच्छवलात्कारकगणे श्री नंदिसंघाग्रणी
स्याद्वादेतरवादिवंविदलणोद्यत्पाणि पंचाननों
योभूत्सोस्तु शुभेयसान्निह युवे श्री पद्मनंदी गणी ।।

श्रीपद्मनंद्यभिपपट्टपयोजटंसस्वैवात्तपचित्तयश:
स्फुरदात्मवंश: ।
राजाधिराजकृतपादपयोजसेव: स्यान्न: श्रिये कुवलये
शुभचंद्रदेव. ॥२॥
आर्याश्रीदार्यवर्यैर्यादीक्षिता पद्मनंदिभि: ।
रत्नश्रीरितिविख्याता तन्नाम्नैवास्तिदीक्षिता ॥
शुभचंद्रार्यवर्यैर्या श्रीमद्भि: शीलशालिनी
मलयश्रीरितिख्याता क्षांतिका गर्वगालि ॥
तयैषा लेखिता स्वस्य ज्ञानावरजशातये
लिखिता राजराजेन जीयादष्टसहस्रिका ॥
संवत् १८४२ कर्तिक शुक्लसप्तम्यां गुरुवारे इदं पुस्तका लिपिकृता महात्मा सीतारामेण जयनगरमध्ये । लेखकपाठक चिरंजीयात् शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

४५६. आप्तमीमांसा

Opening : श्रीवर्द्धमानमभिवंद्य समन्तभद्रंमुद्भूतबोधमहिमा-
नमनिन्द्यवाचम् ।
शास्त्रावतार रचितस्तुतिगोचराप्त मीमांसितं कृतिरलं
क्रियते मयास्य ॥

Closing : अनुपलब्ध ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १७६ (VI) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०४ ।
(४) रा० सू० II, पृ० १९६ ।
(५) रा० सू० III, पृ० ४७ २४० ।

४५७. आप्तमीमांसा भाष्य

Opening : उद्दीपीकृतधर्मतीर्थमचलं ज्योतिर्ज्वलत्केवलालोकालोकित-
लोकलोकमखिलैरिन्द्रादिभि: वंदितम् ।
वंदित्वापरमार्हतां समुदयं यां सप्तभङ्गीविधिं,
स्याद्वादामृतगर्भिणीं प्रतिहति कलाधकमरावयम् ॥

Closing : श्रीवर्द्धमानमकलकमनिंद्यवंद्यं पादारविन्दयुगलं प्रणिपत्य-मूर्द्धर्ना ॥
भव्यैकलोकनयनं परिपालयंतं स्याद्वादवर्त्मपरिणौमि समन्तभद्रम् ॥

Colophon : इत्याप्तमीमांसाभाष्यदशमः परिच्छेदः । इति श्री भट्टकलंकदेवविरचिताप्तमीमांसावृत्तिरष्टशतीयं परिसमाप्ता । संवत् १६६५ वर्षे कार्तिकवदि ८ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तच्छिष्येण ब्र० सधारणाख्येन स्वहस्तेन लिखितमिद शास्त्रम् । शुभं भवतु ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६३ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १६, १७८ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ ६७ ।
(4) Catg. of Skt. Ms. P. 306.

४५८. देवागम स्तोत्र

Opening : देवागमनभोयान् ······ नो महान् ।

Closing : जयति जगति क्लेशा ..... समुपासते ॥

Colophon : इति श्री समन्तभद्रपरमर्हता विरचिते देवागमापरनाम अष्ट-मीमांसा स्त्रोत्रम् ।

४५९. देवागम स्तोत्र

Opening : देवागमनभोयान ········ नो महान ॥

Closing : जयति जगति ···· ··· समुपासते ॥

Colophon : इति श्रीसमन्तभद्रपरमर्हताचार्य विरचितं देवागमस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

४६०. देवागम वचनिका

Opening : वृषभ आदि चउवीसजिन, वंदौ शीश नवाय ।
विघनहरन मंगलकरन मनवांछित फलदाय ॥

Closing : सुखी होऊ पाठक सदा, श्रवणकरैं चितधारि ।
बुद्धि विरधि मंगल कहा, होउ सदा बिस्तारि ॥

Colophon : इति श्री देवागमस्तोत्र वचनिका सम्पूर्णम् । शुभ संवत् १८९८ मासोत्तमे मासे अधिक आश्विनमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां चन्द्रवासरे पुस्तकमिदं संपूर्णम् । लेखाकाक्षर रघुनाथशर्मा पट्टनपुरमध्ये आलमगंज निवसति । शुभमस्तु ।

४६१. देवागम वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४६० ।

Closing : अष्टादश सत साठि षट् विक्रम संवत् जानि ।
चैत्र कृष्ण चतुर्थी दिवस, पूर्ण वचनिका मानि ॥

Colophon : इति श्री देवागम स्तोत्र की वचनिका सम्पूर्ण ।

४६२. आप्त परीक्षा

Opening : प्रबुद्धाशेषतत्त्वार्थ बोधदीधिदीधितमालिने ।
नमः श्रीजिनचन्द्राय मोहध्वांतप्रभेदिने ॥१॥

Closing : स जयतु विद्यानंदो रत्नत्रयभूरिभूषणस्सततम् ।
तत्त्वार्थार्णवतरणे सदुपायः प्रकटितो येन ॥ ॥

Colophon : इति श्री आप्त परीक्षा विद्यानंदिस्वाचार्य ॥
समाप्तम् । संपूर्णः । शुभम् ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ. ९१ ।
(२) जि० र० को०, पृ. ३० ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०३ ।
(४) रा० सू० II, पृ. १९३ ।
(५) रा० सू० III, पृ० १९६ ।
(6) **Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 625.**

४६३. आप्त परीक्षा

Opening : प्रबुद्धाशेषतत्वार्थ बोधदीधितिमालिने ।
नमः श्री जिनचंद्राय मोहध्वांतप्रभेदिने॥

Closing : स जयतु विद्यानंदो रत्नत्रयभूरिभूषणस्सततम् ।
तत्त्वार्थार्णवतरणे सदुपायः प्रकटितो येन ।।१२६।।

Colophon : इति आप्त परीक्षा टीका विद्यानन्दि आचार्यकृतसमाप्तम् ।।
श्री गुरुभ्यो नमो नम ।।

नेत्रषट्खेटचंद्रेब्दे माधवस्यासितेशरे ।।
तिथौमृगांकवारेऽयं मूलक्षंपूर्तिमाप्नुयात् ।। ।।
शिवयोगे शिवं भद्रं शास्त्र शिवप्रकाशकम्
सीतारामेण लिपितं भव्याः पाठयितुं क्षमाः ।।
रामे राज्ये बहामीये पौराज्ये जनवार्द्धिके
षड्दर्शनानि प्राप्तानि गुं मरेदानमानतः ।।३।।
इच्छावड्भिगुंणिता इच्छार्धा चतुर्गुणेणय इत्रधम् ।
पुनरपि तदाऽटगुणितं तीर्थंकरकदंबकं वन्दे ।।४।।

संवत् १९६२ शकः५८ १८२७ वैशाख कृष्ण पंचम्याम् चंद्रवासरे लिपि-कृतम् पं० सीतारामशास्त्री शुभं सहारनपुरनगरे । भव्यजनानां सर्वेषां पठनार्थम् । मंगलं भवतु । शुभं ।।२।।

४६४. न्यायदीपिका

Opening : श्री वर्द्धमानमर्हंतं नत्वा बालप्रबुद्धये ।।
विरच्यते मितस्पष्ट संदर्भन्याय दीपिका ।।१।।

Closing : ततो नयप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिरितिसिद्धः सिद्धान्तः पर्याप्त-मागमप्रमाणम् ।।

Colophon : इति श्रीमद्वर्द्धमानभट्टारकाचार्य गुरुकारुण्यसिद्धसारस्वतोदय श्रीमदभिनवधर्मभूषणाचार्यविरचितायां न्यायदीपिकायामागमप्रकाशः समाप्तः । संवत् १९१० मिति माघमासे शुक्ल पक्षे प्रतिपद्दिवसे रविवारे । शुभं भवतु ।।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९५ ।
जि० र० को०, पृ० २१९ II
प्र० जै० सा०, पृ० १६४ ।
आ० सू० II, पृ० ८२ ।
रा० सू० II, पृ० १९७ ।

रा० सू० ।।।, पृ० ४७, १६६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 662.

४६५. न्यायदीपिका

Opening : श्री वर्द्धमानमर्हन्तं नत्वा बालप्रबुद्धये ।
विरच्येतु मितस्पष्टसंदर्भ न्यायदीपिका ।।

Closing : .... तत्समाप्तौ च समाप्ता न्यायदीपिका मद्गुरोः वर्द्धमावेशोवर्द्धमानदयानिधेः श्रीपादस्नेह-सम्बधात् सिद्धेय न्यायदीपिका ।

Colophon : इति श्री मद्वर्द्धमानभट्टारकाचार्य गुरुकारुण्यसिद्धिसिद्धसारस्वतोदय श्री मदभिनवधर्मभूषणाचार्य विरचिताया न्यायदीपिकायामागमप्रकाशः समाप्तः ।

४६६. न्यायमणिदीपिक

४६६

Opening : श्रीवर्द्धमानमकलङ्कमनन्तवीर्य-
माणिक्यनन्दियतिभाषितशास्त्रवृत्तिम् ।
भक्त्या प्रभेन्दुरचितालघुवृत्तिदृस्टया,
नत्वा यथाविधि वृणोमि लघुप्रपचम् ।।१।।
मदज्ञानमरुश्रीतं मलमत्र यदि स्थितम् ।
तन्निष्काश्योमिवत्मन्तः प्रवर्त्तन्तामिहाब्धिवत् ।।२।।

Closing : अकलङ्करत्ननन्दिप्रभेन्दुमदवन्तगुणिभक्त्या ।
एतन्निकां ग्रन्थो निरुद्धवारि ने(?)प किल गुरु भक्त्या ।।
स्याद्वादनीनिकान्तामुखलोकनमुन्यसौख्यमिच्छन्तः ।
न्यायमणिदीपिकां हृद्वासागारे प्रवर्त्तयन्तु बुधाः ।।

Colophon : इति परीक्षामुखलघुवृत्तेः प्रमेयरत्नमाला नामधेयप्रसिद्धाया न्यायमणिदीपिकासंज्ञायां टीकायां षष्टः परिच्छेदः ।

श्रीमत्स्वर्गीयबाबूदेवकुमारस्यात्मजदानवीरबाबूनिर्मलकुमारस्यादेशमादाय आगराप्रान्तगतसकरौलीनिवासिनः रेवतीलालस्यात्मजराजकुमरविद्यार्थिना लिखितमिदं शास्त्रम् ।

इदं लक्ष्मणभट्टेन विलिखितं प्रथमं शास्त्रं लक्षीकृत्य लिखितम् । संशोधयितव्या विद्वज्जनैः । प्रतिलिपिकाल सं० १६८० श्रावण-शुक्ल- त्रयोदशी ।

४६७. न्यायविनिश्चय विवरण

Opening :
श्रीमज्ज्ञानमयोदयोन्नतपदव्यक्तोविविक्तं जगत्
कुर्वन्सर्वतनूमदीक्षामखसर्वं विश्वं वचो रश्मिभिः ॥
व्यातन्वन्भुवि भव्यलोक नलिनी खंडेश्वरखंडश्रियं
श्रेयः शाश्वतमातनोतु भवतां देवोजिनार्हन्यतिः ॥१॥

Closing :
व्याख्यानरत्नमालेयं प्रस्फुरन्नयदीधितिः ।
क्रियतां हृदि विद्वद्भिस्तुदतीमानसं तमः ॥

Colophon :
श्रीमान्सिंह महीपतेः परिषधि प्रख्यातवादोन्नतिः
तर्कन्यायतमोघ्नतोदयगिरिः सारस्वतः श्री निधिः ॥
शिष्य श्रीमतिसागरस्य विदुषां पत्युस्तपः श्रीभृतां
भर्तुः सिंहपुरेश्वरो विजयते स्याद्वादविद्यापतिः॥
इत्याचार्यवर्यस्याद्वादविद्यापति विरचितायां न्यायविनिश्चय-
तात्पर्यविद्योतिन्यां व्याख्यानरत्नमालायां तृतीयः प्रस्तावः समाप्तः ॥
समाप्तं च शास्त्रम् । ॐ नमो वीतरागाय ॐ नमः सिद्धेभ्यः । करकृत-
मपराधं क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः । ६ ।शाके १८३२ वर्तमानसा-
धारण नाम संवत्सरे उदयगयने वसंतऋतौ चैत्रे मासे कृष्णपक्षे द्वाद-
श्यां भार्गववासरे मध्याह्नसमये समाप्तोऽयं ग्रंथः । इदंपुस्तकं ३६ पी
प्रांत दुर्ग्रामवासिना फुंडा जेमरावंटे इत्युपनामक रामकृष्णशा-
स्त्रीणां लिखितम् ॥
श्री सन् १९१०-५-७ ॥

४६८. परीक्षामुखवचनिका

Opening :
श्रीमत् वीर जिनेश रवि, तम अज्ञान नशाय ।
शिव पथ वरतायो जगति, वंदौं मैं तसु पाय ॥

Closing :
अष्टादशशतसाठिलय विक्रम संवत माँहि ।
सुकल असाढ़ सु चोथि बुध पूरण करी सुचाहि ॥

Colophon : इति परीक्षामुख जैनन्यायप्रकरण की लघुवृत्ति प्रमेयरत्न-
माला की देशभाषामय वचनिका जयचंद छावड़ा कृत संपूर्ण । संवत्
१९२७ मिती पौहोवदी १ । श्री ।

४६९. परीक्षामुखवचनिका

Opening : देखें—क्र० ४६४।

Closing : देखें—क्र० ४६४।

Colophon : इति परीक्षामुख जैनन्याय प्रकरण की लघुवृत्ति प्रमेयरत्न-माला की देशभाषामय वचनिका जयचंद्र छावड़ा कृता समाप्ता। संवत् १९६२ वैशाख कृष्णा ५ पंचमी सोमवासरे। शुभं भवतु।

४७०. प्रमाणलक्षण

Opening : सिद्धेर्धाम महारिमोहहननं कीर्तेः परं मंदिरम्,
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुखं संशीति विध्वंसनम्।
सर्वप्राणिहितं प्रभेंदु वचनं सिद्धं प्रमालक्षणम्,
संतश्चेतसि चितयंतु सततं श्री वर्धमानं जिनम्॥

Closing : .... तत्कालभावी–उत्तरकालभावी वा विज्ञानप्रमाणता हेतुः न भावस्तत्कालभाविक्वचिन्मिथ्यात्वज्ञानेपि तस्य भावात् अथोत्तर-कालभावि–स किं ज्ञातोऽज्ञातो न तावदज्ञा॥

Colophon : नहीं है।

४७१. प्रमाण मीमांसा

Opening : अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यानन्दमयात्मने।
नमोऽर्हते कृत्याकृत्य धर्मतीर्थयितायिने॥

Closing : यतो न विज्ञातस्वरूपस्यास्यवलंबनं जयाय प्रभवति न चावि-ज्ञातस्वरुपं परतंत्रं भेत्तु शक्यमित्याह।

Colophon : इति प्रमाणमीमांसा ग्रन्थः। मिती श्रावण कृष्णा १० संवत् १९८७।

४७२. प्रमाणप्रमेय

Opening : तत्त्रिकालवर्त्यशेषवस्तुकमव्यापि केवलं सकलप्रत्यक्षम्॥

Closing : स्पर्शरसगंधरूपाः शब्दसंख्याविभागसंयोगो परिमाणं च प्रथक्त्वं तथा परत्वापेच ? समाप्तं श्रीरस्तु:॥

Colophon : इदं पुस्तकं परिधाविनाम संवत्सरे दक्षिणायने ग्रीष्मऋतौ निज आषाढ़मासे कृष्णपक्षे दशम्यां गुरुवासरे दिवा दश घटिकायां वेणुपुरस्थित पन्नैचारी मठस्थ श्रीपति अर्चक गौड़सारस्वत ब्राह्मन् विदवत् षट्कर्मी वेदमूर्त्तिवामननाम सर्मणस्य पंचमात्मजः केशवनाम शर्म्मणेन लिखितमिति । समाप्तमित्यर्थः श्रीरस्तु । श्री पंचगुरुभ्यः वीतरागाय नमः ।

नयी लिपि में—यह ग्रन्थ वीर निर्वाण संवत् २४४० में लिखा गया ।

४७३. प्रमाण-प्रमेय-कलिका

Opening : जयंति निर्जिताशेषसर्वथैकान्तनीतयः ।
सत्यवाक्याधिपाः शश्वद्विद्यानंदाविजिनेश्वराः ॥

Closing : ननु यद्येवं कथमेकाधिपत्यं न भवतीति चेत्, इत्यत्राप्युक्तं

समंतभद्राचार्यैः ।

काल: कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतु: प्रवक्तुर्वचनात्ययो वा ।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मी प्रभुत्वशक्तेरपवादहेतुः ॥

Colophon : इति श्री नरेन्द्रसेनविरचिता प्रमाणप्रमेयकलिका समाप्ता । लिप्यकृतशुभचिंतक लेखकदयाचंदमहात्मा । शुभमस्तु । मिति भादवा प्रथमशुक्लपक्षे छठि रविवासरे संवत् १८७१ का ।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा के लिए प्रतिलिपि की गई । शुभमिति मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी १२ चन्द्रवार विक्रम संवत् १९९१ । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन । इति ।

देखें—जि. र. को., पृ. २६८ ।
दि. जि. ग्र. र., पृ. ९८ ।
रा. सू. II, पृ. १९८ ।

४७४. प्रमेयकमल मार्तण्ड

Opening : देखें—क्र० ४७० ।

Closing : इति श्री प्रभाचंदविरचिते प्रमेयकमलमार्त्तण्डे परीक्षामुखालंकारे षष्ठः परिच्छेदः संपूर्ण ॥

Colophon : गंभीरनिखिलार्थगोचरमलं शिष्यप्रबोधप्रदं
यद्व्यक्तं पदमद्वितीयमखिलं माणिक्य नन्दी प्रभोः ।
तद्व्याख्यातमदोयथागमतः किंचन्मया लेशतः
स्थेया(?) द्बुधियां मनोरथतिगृहे चद्रार्कतारावधि ॥
मोहध्वांतविनाशनो निखिलतो विज्ञानबुद्धिप्रदो
मेयानंतनभोविसर्पणपटुर्वस्तु ·· विभाभासुरः
शिष्याऽन्वप्रतिबोधने समुदितो योग्रेपरीक्षामुखा-
ज्जीयात् सोत्र निबंधरावसुचिर मार्तण्डतुल्गोमल्पः ॥२॥
गुरुः श्री नंदि माणिक्यनंदिताशेषसज्जनः
नदता हरितैकंनर आर्जनमती ?र्व ॥

श्री पद्मनंदिसिद्धांमतिशिष्योनेकगुणालयः प्रभाचंद्राश्चिरं जीया ··· ··· ।
पदेरतः इति श्री प्रमेयकमलमार्त्तण्डः संपूर्णतामगमत् ।
मिति प्रथमजेठ सुदी ६ सनीचरवार संवत् १८९६ का संपूर्ण हुवो ग्रंथ

विशेष—बाबू श्रीमंधरदास आरेवाले की पोथी है।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९८।
जि० र० को०, पृ० २३८, २९९।
प्र० जै० सा०, पृ० १७७।
रा० सू० II, पृ० १९८।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 671.
Catg. of skt. Ms., P. 306.

४७५. प्रमेयकमलमार्त्तण्ड

Opening : सिद्धं धर्ममहारिमोहहननं कीर्त्तेः परं मन्दिरं
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुखं संशीतिविध्वंसनम् ॥
सर्वप्राणिहितं प्रभेन्दुभवनं सिद्धं प्रमालक्षणं
सन्तश्चेतसि चिन्तयन्तु सततं श्री वर्द्धमानं जिनम् ॥२॥

Closing : यत्नुशास्त्रान्तरद्वारेणापगतहेयोपादेयस्वरूपो म तं प्रतीत्यर्थः ॥
इति ॥

Colophon : इति श्री प्रभाचन्द्राचार्यविरचिते प्रमेयकमलमार्त्तण्डे परीक्षामुखालंकारे षष्ठः परिच्छेदः ॥

४७६. प्रमेयकण्ठिका

Opening : श्रीवर्द्धमानमानम्य विष्णु विश्वसृजं हरम् ।
परीक्षामुखसूत्रस्य ग्रन्थस्यार्थं विवृण्महे ॥१॥
अथ स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञानं प्रमाणमिति प्रमाणलक्षणं बाधातीतं साम्यद्युक्तिशतबाधितत्वात् । ननु स्वापूर्वार्थेतिलक्षणे यानि विशेषणान्युपात्तानितानि निर्थकानीतिचेन्न परप्रतिपादितानेकदूषणवारकत्वेन तेषां सार्थकत्वात् ।

Closing : प्रमेयकण्ठिका जीयात्प्रसिद्धानेकसद्गुणा
लसन्मार्त्तण्डसाम्राज्ययौवराज्यस्य कण्ठिका ॥
सनिष्कलङ्कं जनयन्तु तर्कं वा बाधितर्कों मम तर्करत्ने ।
केनानिश ह्यकृत: कलङ्कश्चन्द्रस्य किं भूषण-
कारण न ॥

Colophon : क्रोधन संवत्सरे माघमासे कृष्णचतुर्दश्यायं विजयचंद्रेण जैन क्षत्रियेण । श्री शांतिवर्णिविरचिता प्रमेयकठिका लिखित्वा समापिता ॥
॥ भद्रभूयात् वर्द्धतां जिनशासनम् ॥

४७७. प्रमेयरत्नमाला

Opening : अनुपलब्ध ।

Closing : तस्योपरोधवशतो विशदोरुकीर्तिर्माणिक्यनंदि-
कृतशास्त्रमगाधबोधः ॥
स्पष्टीकृत कतिपयैर्वचनैरुदारैर्बालप्रबोधकरमे-
तदनत विर्धः ॥

Colophon : इति प्रमेयरत्नमालापरनामधया परीक्षामुखलघुवृत्तिः समाप्ता: ॥ शुभम् संवत् १९६३ चै० शुक्ल लि० पं० सीतारामशास्त्रि ॥

देखें, Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 671.
Catg. Skt. Ms , P. 306.

४७८. प्रमेयरत्नमाला (न्यायमणिदीपिका)

Opening : श्री वर्द्धमानमकलंकमनंतवीर्यमाणिक्यनंदि-
यतिभाषितशास्त्रवृत्तिम् ।।
भक्त्या प्रभेंदुरचिता लघुवृत्तिद्रष्ट्या नता यथा-
विधिवृणोमि लवप्रपंचम् ।।१।।

Closing : स्याद्वादनीतिकांतामुखलोकन मुरगसौख्याभि वंतः ।।
न्यायमणिदीपिकां हृदा सागारे प्रवर्त्तयन्तु बुधाः ।। ।।

Colophon : इति परीक्षामुखलघुवृत्तेः प्रमेयरत्नमाला नामधेयप्रसिद्धायां न्यायमणिदीपिकायाम् संज्ञायां टीकायां षष्ठ परिच्छेदः ।। श्री वीत-रागाय नमः । श्रीमद्महाकलंक मुनये नमः । श्रीमद्वेदशास्त्रसंपन्न मूडबिदे दक्षिण कन्नडापन्ने च्चारि (रिधत) वेदमूर्तिवामनमहस्यपुत्र-लक्ष्मणभट्टेन लिखितमिदं पुस्तकं परिधावि संवत्सरे भाद्रपद ५ कुजवासरे संपूर्णश्च ।।

४७९. प्रमेयरत्नमाला-अर्थप्रकाशिका

Opening : श्रीमन्नेमिजिनेन्द्रस्य वन्दित्वा पादपङ्कजम् ।
प्रमेयरत्नमालार्थः संक्षेपेण विविच्यते ।।१।।
प्रमेयरत्नमालायाः व्याख्यास्सन्ति सहस्रश. ।
तथापि पण्डिताचार्यकृतिर्ग्राह्यैव कोविदैः ।।२।।

Closing : सर्वदाशक्यपदं शक्यरूपार्थबोधकमिति ज्ञानमित्थं भूतनया-भासमित्यत्र विस्तरः । सम्पूर्ण मंगलमहा श्री ।।

Colophon : स्वस्ति श्रीमन्सुरासुरवृंदवं दितपाद योज श्री मन्नेमीश्वरसमुत्पत्ति पवित्रीकृत गौतमगोत्र समुद्भूतार्हन् द्विज श्रीब्रह्मसूरि शास्त्रि तनुज श्री मद्दोर्बलिजिन दास शास्त्रिणामंतेवासिना । मेरु गिरि गोत्रोत्पन्न । वि । विजय चंद्राभिधेन जैन क्षत्रिणा लेखीति ।। भद्रं भूयात् ।।

४८०. षड्दर्शन प्रमाण प्रमेयानुप्रवेश

Opening : साद्यनन्तं समाख्यातं व्यक्तानन्तचतुष्टयम् ।
त्रैलोक्ये यस्य साम्राज्यं तस्मै तीर्थकृते नमः ।।

Closing : जयति सुभचंद्रदेवः कण्डूगणपुण्डरीकवनमार्तण्डः ।
चण्डालवण्डदूरो सिद्धान्तपयोधिपारगोबुधाविनुतः ॥

Colophon : इति समाप्तः शुभं भवतात् वर्धतां जिनशासनम् । इत्ययंग्रंथः दक्षिण कर्णाटके मूडबिद्री निवासिना राजू० नेमिराजाख्येन लिखितस्स-माप्तश्चस्मिन् दिने ॥ रक्ताक्षिसं । माघशुक्ल द्वादशी ॥

४८१. चिन्तामणिवृत्ति

Opening : श्रियं कियाद्वः सर्वज्ञज्ञानज्योतिरनश्वरीम् ।
विश्वं प्रकाशयश्चिंतामणिश्चिंतार्थसाधनम् ॥

Closing : किं भोजको गच्छति तुल्यकर्तृक इति किं इच्छामि बवान् क्रियायां तदर्थाविमिति किं इच्छा न भुक्ते ॥

Colophon : इति श्री श्रुतकेवलिदेशीयाचार्य शाकटायनकृतौ शब्दानुशासने चिंतामणौ वृत्तौ चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तोध्यायश्चतुर्थः ॥ स्याद्वादाधिपशाकटायनमहाचार्य प्रणीतस्यय शब्दानुशासनस्य महतीवृत्ति -स्समाहृत्यताम् ।

प्रेक्षातिक्षम यक्षवर्मरचिता वृत्तिर्लघीयस्यऽसौ ।
श्री चिंतामणिसंज्ञिकाविजयतामाचंद्रतारं भुवि ॥

श्रीमते शाकटायनाचार्याय नमः॥श्रीयक्षवर्माचार्याय नमः

दक्षिणकर्नाटदेशे कार्कल दुर्गग्रामे शके १८३२ स्य वर्तमाने साधारणनाम संवत्सरे मार्गशीर्ष कृष्णे अष्टम्यायां स्थिरवासरे लिखितोऽयं ग्रन्थः । फुंडाजेरामकृष्णशास्त्रिणः पुत्रेण रंगनाथ शास्त्रिणा अस्मद्गुरवे नमः । लक्ष्मीसेन गुरुभ्यो नमः ।

देखें—Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 694.

४८२. धातुपाठ

Opening : श्री विद्याप्रकृति नत्वा जिनं शब्दानुशासने ॥
मूलप्रकृति पाठोऽयं क्रियावैगणसिद्धये ॥ "॥

Closing : ... ... एकादशेति शब्दानुशासने धातवो मताः ॥
धातुपाठ समाप्तः । श्रीकल्याणकीर्तिमुनये नमः

४८३. हेमचन्द्रकोष

Opening : इमनालोइ इम प्रत्ययांतमल प्रयांतं नाम पुल्लिंग । इनमु प्रतिधिमा प्रदिमाश्रुतिम्यद्रठिमा इत्यादि । तथा निवसिद्ध इम न ग्रहण-माचाशदिरिति नपुंसक च बाधमार्थ ।

Closing : यशोक्तमत्रसद्धिल्लो कतएव विशेयं लिगं शिष्या लोकाश्रय चाल्लिमस्पेतिवान ता संख्याईतियुष्मद्रमस्त्वस्फर्रजिगकाः पदवाक्यमव्य-यंचित्थ संख्यं च तछ कुलर विपुला निस्वाप नाम लिगानुशासनाम्यभि समीक्ष्य संख्या क्षप्पत । आचार्य हेमचन्द्र समद्मदनुशासनांन लिंगानां ।

Colophon : इत्याचार्य श्री हेमचंद्रविरचितं स्वोपज्ञलिंगानुशासन विवरण समाप्तः ।।

विशेष—यह ग्रन्थ पूर्णतः जीर्णशीर्ण अवस्था में है । अतः इसके सभी अक्षर स्पष्ट पढ़े नहीं जा सकते है ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र र., पृ. १०१ ।
(२) जि. र. को., पृ. ४६२ ।

४८४. जैनेन्द्रव्याकरण महावृत्ति

Opening : प्रारम्भ के ७१ पत्र नहीं है ।

Closing : चतुष्टयं समन्तभद्रस्य ॥१२४॥ फरोह इत्यादि चतुष्टय समन्तभद्राचार्यस्य मतेन भवति, नान्येषां, तथाचैवोदाहृतम् ।

Colophon : इत्यभयनंदिविरचितायां जैनेन्द्रव्याकरणमहावृत्तौ पचमस्या-ध्यायस्य चतुर्थपादः समाप्तः । समाप्तश्चपचमोध्यायः । मगलमस्तु । इति श्री जैनेन्द्रव्याकरणग्रन्थ । आरे मध्ये लिपायितं जैनधर्मीशुभकर्मीबाबू कन्हैयालाल तस्यात्मज बाबू श्रीमन्दिरदास निजपरोपकारार्थं लिपिकृत देवकुमारलालभक्त कायस्थ शुभ मिति आषाढ़ सुदी सप्तमी सोमवार संवत् १९०७ । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. १०२ ।
(२) जि. र. को., पृ. १४६ (I) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १४८ ।
(४) आ० सू० पृ० ६४ ।
(५) रा. सू. II, पृ. २५७ ।
(५) रा. सू. III, पृ. ८७ ।
(६) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 645.

४८५. जैनेन्द्र व्याकरण महावृत्ति

Opening : लक्ष्मीरात्यंतिकीयस्य निरवद्यावभासते ।
देवनंदितपूजेशे नमस्तस्मै स्वयंभुवे ॥

Closing : सरोहरि खे २३ ॥

Colophon : इत्यभयनंदिविरचितायां जैनेन्द्रमहावृत्तौ पंचमस्याध्यस्य चतुर्थः पाद समाप्तः । शुभमस्तु मंगलमस्तु ।

४८६/१. जैनेन्द्र व्याकरण महावृत्ति

Opening : Missing.

Closing : कुयोह इत्यादिचतुष्टयं समंतभद्राचार्यस्य मतेन भवति नान्येषां तथाचेवोदाहृतम् ।

Colophon : इत्यभयनंदिविरचितायां जैनेन्द्रव्याकरणमहावृत्तौ पंचमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः । समाप्तश्चायं पंचमोध्यायः ॥

४८६।२. कातन्त्र विस्तार

Opening : जिनेश्वरं नमस्कृत्य गौतमं तदनन्तरम् ।
सुगमः क्रियतेऽस्माभिरयं कातंत्रविस्तरः ॥

Closing : .... सणे तद्धिते वृद्धिरागमो वा भवति । न्यंकोरिदंन्यांकवं नैयंकवं ।

Colophon : इति श्री मत्कर्णदेवोपाध्यायश्रीवर्धमानविरचिते कातत्रविस्तरे तद्धिते दशमप्रकरणं समाप्तमिति ।

परिसमाप्तोऽयं कातंत्रविस्तरो नाम ग्रन्थो माघवकृष्णाष्टम्यां लिखित्वा मया रानू नामधेयेन । सन् १६२८ ।

४८७. पंचसन्धि व्याकरण

Opening : प्रणम्य परमात्मानं बालधी वृद्धिसिद्धये ।
सारस्वतीमृजुकुर्व्वेपि क्रियां नातिविस्तराम् ॥

Closing : भ्रमत् अग्रे रुइप्रत्ययः डित्वादिलोपः स्वरहीनं अत्र तकारस्य नाशः प्रथमैकवचनं सि इकार उच्चारणार्थः इति इकारलोपः स्त्रोर्विसर्गः भ्रमन् सन् रौतिशब्दं करोतीति भ्रमर. इति सिद्धम् ।

Colophon : इति विसर्गं संधिः। पंचसंधि पूर्णं जातम्। इति सारस्वत पंचसंधि संपूर्णम्।

४८८. प्राकृत व्याकरण (२ अध्याय)

Opening : अत्र प्रणम्य सर्वज्ञं विद्यानंदास्पदप्रदम्।
पूज्यपादं प्रवक्ष्यामि प्राकृतव्याकृतस्सताम् ॥

Closing : ....एक्केक्कं एक्केक्के एअंगंगस्मिरसेआरत: अत: अकारांतात् लिङ्गात् परस्य स्यादि।

Colophon : अनुपलब्ध।

४८९. रूपसिद्धि व्याकरण

Opening : श्री वीरममलं पूर्णधी दृग्वीर्यसुखात्मकम्।
नत्वा देवमबाधोक्ति रूपसिद्धि हितां ब्रुवे ॥

Closing : दृवन इति दीर्घः। अधिजिगांसते व्याकरणं। इत्यादि समस्तं संप्रवंचं शब्दानुशासनं विद्वद्भिरुन्नेतव्यम्।

Colophon : इति रूपसिद्धिः समाप्तः। श्री कृष्णार्पणं श्री गुंमटनाथाय नमः। इति धातुप्रत्ययसिद्धिः
व्याकरणोधमो नीत्वा प्राप्तु ज्ञानसुखामृतम्।
बालानामृजुमार्गोयं संक्षेपेण प्रदर्शितः ॥
दयापालकृता स्त्रग्वत् रूपसिद्धि प्रवर्धताम्।
भूमावद्रिस्तमो भेत्ति विपुलो (लो) भानु रश्मिवत् ॥
जिननाथाय नमः।

४९०. सरस्वती प्रक्रिया

Opening : ... ... आव् भवति स्वरे परे पौ अकः, पावकः ... ...।

Closing : अचलाद्रोहयग्रीवः कमलाकरईश्वरः।
सुरासुरनराकारमधुपापीतपत्कजः ॥

Colophon : इति श्री सरस्वती प्रकिया समाप्ता।
संवत् १८०९ वर्षे मार्ग वदी ४ शुक्रे लिखितं पंडित श्री हेमरामेन स्व पठनार्थम्। शुभं भवतु।

४६१. सिद्धान्त चन्द्रिका

Opening : नमस्कृत्य महेशानं .... ।
वर्णप्रतीतिसूत्राणां, कुर्व्वे सिद्धान्तचन्द्रिका ।

Closing : ... ... ककारादि फो वा रेफः रकारः लोकाद्धे वषस्य सिद्धिर्यप्वामातरा दे ।

Colophon : इति श्री रामचंद्राश्रम विरचितायां सिद्धान्तचन्द्रिका सम्पूर्णम् ।
अदृष्टिदोषात् मतिविभ्रमाच्च यदर्थहीनं लिषतं मयात्र ।
तत्साधुमुख्यैरपि शोधनीयं कोपो न कार्यः खलु लेषकायः ।।
यादृशं पुस्तकं .... ।।
वाचनाचार्यवर्यधुर्यज्ञानकुशलगणिः तत्शिष्यप्रशिष्यपंडितो-समपंडित श्री ज्ञानसिंहगणिः शिष्य धनजी लिषतं । श्री मेदणी तटमध्ये ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १०६ ।
(२) रा० सू० ।।, पृ० २६, २६४ ।
(३) रा० सू० ।।।, पृ० २३१ ।
(४) आ० सू०, पृ० १४२ ।
(५) जि. र. को., पृ. ४३६ (।।) ।

४६२. तद्धित प्रक्रिया

Opening : .... आआ एऐ औ एते वृद्धिसंज्ञकाः भवन्ति ।

Closing : ... संख्यायां द्वितयं, त्रितयं, द्वयं शेषानिपात्याः कृत्यात्ययाः कृति यति तति ।

Opening : इति तद्धितप्रक्रिया समाप्ता ।

४६३. धनञ्जयकोष

Opening : तन्नमामि परं ज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ।
उन्मूलयत्यविद्यां यत् विद्यामुन्मीलयत्यपि ।।

Closing : अर्हत्सिद्धमितिद्वावप्यर्हत्सिद्धाभिधायिनैः ।
अर्हदादिनापि प्राहुः शरणोत्तममंगलाम् ॥

Colophon : नहीं है ।
देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 654.

४६४. नाममाला

Opening : बंदौं श्री परमातमा, वरसावन निजपंथ ।
तसु प्रसाद भाषा करौं, नाम मालिका ग्रन्थ ॥

Closing : संवत् अष्टादश लिषौ, जा ऊपर उनतीस ।
वासौं दे भादौं सुदी, वातेचतुरदशीश ॥

Colophon : इति श्री देवीदास कृत नाममालिका सम्पूर्णम् । संवत् १८७३ वैशाख वदी २ आदि वारे ।

४६५. शारदीयाख्यनाममाला

Opening : प्रणम्य परमात्मानं सच्चिदानंदमीश्वरम् ।
ग्रथनाम्यहं नाममालां मालामिवमनोरमाम् ।।

Closing : भूद्वीपवर्षसरिदद्रिनभः समुद्रपातालदिक्,
ज्वलनवायु वनानि यावत् ।
यावन्मुदं वितरतो भूवितरतो भुवि पुष्पवंतो,
तावस्थिरां विजयतां वद् नामालामिमा ॥

Colophon : इति श्री शारदीयाख्यनाममाला समाप्ता ।
संवत् १८२८ वर्षे मासोत्त (मे) मासे वैशाखमासे कृष्णपक्ष-पंचम्या गुरुवासरे गोपाचलमध्ये लिखितमाचार्य संकलकीर्ति स्वहस्थे । श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । शुभंभवतु ।
एकाक्षर परमदातारो ज्योगुरु नवैव मन्यते ।
स्वानज्यौन्यसतं यत्वा चौकालो शुभजायते ॥
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १११ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३३५ ।
(३) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 695.

४९६. शारदीयाख्यनाममाला

Opening : देखें—क्र० ४६३ ।

Closing : देखें,—क्र० ४६३ ।

Colophon : इति श्री सारदीयाख्य लघु नाममाला समाप्तम् । संवत् १९१८ मासानां मासोत्तममासे मार्गशिर मासे शुभेशुक्लपक्षे तिथौ षष्ठी भृगुवासरे लिपीकृतं ब्राह्मण रामगोपालेन वासी मौजपुर को लीखी रामगढ़-मध्ये । शुभमस्तु ।

४९७. शारदीयाख्यनाममाला

Opening देखें—क्र० ४६३ ।

Closing : देखें—क्र० ४६३ ।

Colophon : इति श्री सारदीयाख्य नाममाला समाप्तं । सवत् १९८५ का जेष्ट शुक्ला ८ शनिवासरे ।

४९८. त्रेपनक्रियाकोष

Opening : समवसरण लिछिमी सहित वरधमान जिनराय ।
नमो विबुध वंदित चरन भविजन कौं सुखदाय ॥

Closing : जबलौ धर्मजिनेश्वर साह । जगत मांहिं वरतै सुखकार ॥
तबलो विसतरिजो ईह ग्रन्थ । भविजन सुर शिव दायक
पंथ ॥

Colophon : इति श्री त्रेपनक्रिया भाषा ग्रन्थ सिंघई किसनसिंघ (सिंह) कृत संपूर्णम् । मिती फूंस (पौष) सुदी ११ संवत् १९६१ ।

४९९. त्रेपनक्रिया कोष

Opening : देखें—क्र० ४९६ ।

Closing : देखें—क्र० ४९६ ।

Colophon : इति श्री त्रेपनक्रिया कोस विधान का छंद की जाति का अंक २९१५ एक अधिकार का अंक १०८। श्लोक संख्या टीका शुद्ध । ३००० । तीन हजार के ऊन मान ।

इति श्री क्रियाकोस भाषाग्रन्थ सिंही किसनसिंघ कृत संपूर्णम् श्रीरस्तु ।।

५००. उर्वशीनाममाला

Opening : श्री आदिपुरुष कहिये जगत, जाकी आदि अनंत ।
अगम अगोचर विश्वपति, सो सुमिरो भगवंत ।।

Closing : वक्तासुरगुरुसौ हुतो श्रोता हो सुरराज ।
तहुमवन पारन लह्यो कहा औरको काज ।।

Colophon : इति श्री शिरोमणि कृता उर्वशीनाममाला संपूर्ण । शुभंभवतु ।

५०१. विश्वलोचन कोष

Opening : जयति भगवानास्तां धर्म्मः प्रसीदतु भारती,
वहन्तु जगतीप्रेमोद्गारंतरंगवशुभ जनाः ।

अयमपि ममश्रेयानगुं स्तनोन्नुमनोमुदं
किमधिकमितस्त्यक्तावेगाम् भवन्तु विपश्चितः ।।१।।

Closing : हेहे व्यस्तौ समस्तौ च स्मृत्या मंत्र हूतिषु ।।
हौव हौव समस्तौ व संबुद्धया ध्यानयोर्म्मतौ ।।६६।।

Colophon : इति श्री पंडित श्री श्री धरसेन विरचितायां विश्वलोचन-मित्यपराभिधानायां मुक्तवल्यां नामार्थकांड समाप्तः ।। संवत् ।।१६६१।। वर्षे ~ ? मासे शुक्लपक्षे .... शेदासा ? आनंतीयो १३ दिने गुरुवारे ।।

५०२. अलंकारसंग्रह

Opening : जगद्विध्यजनन जागरूकपद्वयम् ।
अवियोगरसाभिज्ञमाद्यं मिथुनमाश्रये ।।१।।

Closing : सर्वदोषरहितं सगुणं यत् काव्यमव्ययशकरमूर्व्याम् ।
त्वच्चारित्रमि बसादुनिषिव्यं मविसारियमगं डरमं डए ।

Colophon : इत्यमृतानंदयोगी प्रवरविरचितेऽलंकारसंग्रहे दोषगुणनिर्णयो नाम षष्ठः परिच्छेदः ।।५२४।।
जुम्ला श्लोक ६६० ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १७

५०३. अलंकारसंग्रह

Opening : देखें, क्र० ५०२ ।

Closing : रसोक्तस्यान्यथाव्याख्याराबीचार्या बुद्धिशालिभिः ।।

Colophon : इत्यमृतानंदयोगि प्रवरविरचिते अलंकारसंग्रहे वसुनिर्णयो नामाष्टमो अध्यायः ।

करकृतमपराधं क्षंतुमर्हन्तिसंतः ।।
अयमलंकारसंग्रहो नाम ग्रंथः रात् नेमिराजाख्येन लिखितः
रक्ताक्षिमं माघमासे शुलपक्षे द्वितीयां तिथौ समाप्तश्च ।।

५०४. बारहमासा

Opening : अलिरी मर नेमपिया बिनमें नर होरी ।
प्रथ(म)लियो नहि मन समुकाय ।
नाहक पठयो है लगन लिषाय ।।

Closing : जेठ संपूरन बारहमास, नेम लियो सिवथान नेवास ।
रजमति सुरपद पाई विख्यात, सागरबुध कहत यह बात ।।

Colophon : बारहमासा संपूरनं ।

५०५. चन्द्रोन्मीलन

Opening : चंद्रप्रभं नमस्कृत्य चंद्राभं चंद्रलांच्छनम् ॥
चंद्रोन्मीलनकं वक्ष्ये, सकलाद्यं चराचरम् ।

Closing : यत्तु लभ्यते तत्संवत्सर आदित्य वद्धितप्रश्ना-
दित्यं लभ्यते ।
चंद्रवद्धितप्रश्ना चंद्रं लभ्यते,
क्षितिजवद्धित प्रश्ना भौमं लभ्यते ॥

Colophon : इति चंद्रोन्मील्नं समाप्तं ।

देखें—जि० र० को० पृ०, १२१

५०६. चन्द्रोन्मीलन

Opening : देखें, क्र० ५०५ ।

Closing : .... एव चन्द्रमा से चन्द्रलोक की प्राप्ति और भौम से भौम लोक की प्राप्ति कहना चाहिए ।

Colophon : इति चन्द्रोन्मीलनं समाप्तम् । शुभ भवतु ।
शुभमिति फाल्गुन शुक्ला ५ सं० १९६० ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १२१ ।

५०७. चन्द्रोन्मीलन

Opening : देखें, क्र० ५०५ ।

Closing : देखें, क्र० ५०६ ।

Colophon : इति चन्द्रोन्मीलनं समाप्तम् ।

५०८. दोहावली

Opening : जिनके बचन विनोद ते प्रगटे शिवपुर राह ।
ते जिनेन्द्र मंगल करो नितप्रति नयो उछाह ॥१॥

Closing : सो सम्यक्त सहित बने व्रत संयम सम्बन्ध ।
सो उपमा सांची फबे सोना और सुगन्ध ॥

Colophon : नहीं है ।

५०६. फुटकर कवित्त

Opening : श्री (भव) जल माहि परयो चिर जीव सदीव
अतीत अवस्थिति माठी।
राग विरोध विमोह उदै बहु कर्मप्रकृति लगि
अति गाठी ॥

Closing : ... . ? अस्पष्ट।

Colophon : इति कवित्तानि।

५१०: फुटकर कवित्त

Opening : देखें, क्र० ५०६।

Closing : कहूं लताहूं फूल्यौ कहूं फूलहूं फूल्यौ कहूं,
भौंरहूं भूल्यो कहूं रूप कहूं दिष्ट है।
सकल निवासी अविनाशी सर्वभूतवासी,
गुपत प्रकासी आपैं सिष्ट आपै मिष्ट हैं।

Colophon : इति श्री तिलोकचंदकृत फुटकर कवित्त सम्पूर्णम्।
संवत् द्वादशषष्टहि, अवर असी परमानि।
माघशुक्ल द्वितीया तिथी, वार चंद्र शुभ जानि ॥१॥
अच्छेलाल आरे बसैं, लिखवायो जिन ग्रंथ।
नंदलाल लेखक सही, समीचीन यह पंथ ॥२॥
गंगातट छपरा नगर, दवलत गंज सुधाम।
तहां लिखि पूरन कियौ, सुंदर रचि विश्राम ॥३॥

५११. नीतिवाक्यामृत

Opening : सोमं सोमसमाकारं, सोमाभं सोमसंभवम्।
सोमदेवमुनि नत्वा, नीतिवाक्यामृतं ब्रुवे ॥

Closing : ... ... जनस्याकृतविप्रियस्य हि बालकस्य जनन्येव जीवितव्यकारणम् ।

Colophon : इति सकलतार्किकचक्रचूडामणिचुंबितचरणस्य रमणीयपंचपंचाश-महावादिविजयोपार्जितोर्जितकीर्ति मंदाकिनीपवित्रित त्रिभुवनस्य परमतपश्चरणरत्नोदन्वतः श्रीनेमिदेवभगवतः प्रियशिष्येण वादीन्द्रकालानल श्रीमन्महेन्द्रदेवभट्टारकानुजेन स्याद्वादाचलसिंह तार्किकचक्रवर्तिवादिभयं चाननवाक्कल्लोलपयोनिधि के कुलराजकुंजरप्रभृतिप्रशस्तिप्रशस्तालंकारेण षण्णवतिप्रकरणयुक्तिचिंतामणि त्रिवर्गमिहेन्द्रमातलिसजल्पयशोधरमहाराज चरित्र महाशास्त्रवेधसा श्रीमत्सोमदेवसूरिणा विरचितं नीतिवाक्यामृतं नाम राजनीतिशास्त्रं समाप्तम् ।

मिति पौष कृष्णदशम्ययां रविवामरान्यतायां शुभसंवत्सर १६१० का मध्ये समाप्तम् । लिखितं ब्राह्मण रामकवारकेन, लिखायतचिरंजीवसाह जी श्री सदासुख जी कासलीवाल जयनगरमध्ये लिखि ।

देखें—जि. र. को., पृ. २१५ ।
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 660.

५१२. नीतिवाक्यामृत

Opening : देखें—क्र० ५११ ।

Closing : अथाप्तलक्षणमाह । यथानुभूतानुमतश्रुतार्थाविसंवादिवचन पुमानासः यथाभूतं सत्यं अनुमतं लोकसंमत यथाश्रुतार्थः भुतार्थो यस्य वचनस्य स आप्तपुरुषः ।

५१३. रत्नमंजूषा

Opening : यो भूतभव्यभवदर्थयथार्थवेदी, देवासुरेन्द्रमुकुटपादपद्मः ।
विद्यानदीप्रभवपर्वत एक एव, तं क्षीणकल्मषगणं
प्रणमामि वीरम् ॥

Closing : सैकामैकगणोज्ज्वलसमभिमतच्छन्दोऽक्षरागारिका-
मेकां श्रेणिमुपक्षिपन्नवरतोऽप्येकैकहीनाश्च ताः ।

उर्ध्वं द्विद्विमूर्ध्वांकमेलनमयोथ: स्थानकेष्वालिखे-
देकच्छन्दसि खण्डमेरुरमल: श्रु'नागचन्द्रोदित: ।।१।।

Colophon : एतस्योक्तक्रमेण प्रस्तारे कृते विवक्षितछन्दस: लगक्रियया सह तत: पूर्वस्थितसकलछन्दसां लगक्रिया. सर्वा: समायान्तीत्यर्थ: ।।

देखें— जि० र० को०, पृ० ३२७ ।

५१४. राघवपाण्डवीयम् सटीक

Opening : श्रीमान् शिवानंदनयीशवंमो
भूयाद्विभूत्यै मुनिसुव्रतो व: ।।
सद्धर्मसभूतिनरेन्द्रपूज्यो
भिन्नेन्दुनीलोल्लसदंगकांति: ।।१।।

Closing : केन गुरुणा किमाख्येन दशरथेनेति

Colophon : इति निरवद्यविद्यामंडनपंडितमंडलीजितस्य षट्तर्कचक्रवर्तिन: श्रीमद्विनयचंद्रपंडितस्य गुरुरंतेवासिनो देवनंदिनाम्न: शिष्येण सकल-कलोद्भवचारुचातुरीचंद्रिकाचकोरेण विरचितायां द्विसंधानकवेर्धनंज-यस्य राघवपांडवीयाभिधानस्य महाकाव्यस्य पदकौमुदीनामदधानायां टीकायां नायकाभ्युदयरावणजरासंधवधमावर्णनं नामष्टादश: सर्ग: ।।१८।।

देखें—Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 654.

५१५. श्रृंगारमञ्जरी

Opening : श्री महादीश्वरं नत्वा सोमवंशसुवार्थित: ।
रायाख्य जैनभूपेन वक्ष्ये श्रृंगारमञ्जरीम् ।।१।।

Closing : तद्भूमिपालपाठार्थमुदितेयमलङ्क्रिया ।
संक्षेपेण बुधैर्ह्येषा यदत्रास्ति विशोध्यताम् ।।

Colophon : इति श्रृंगारमञ्जर्यां तृतीय: परिच्छेद: । श्री सेनगणाग्र-गण्यातपोलक्ष्मीविराजिताजितसेनदेवयतीश्वरविरचित: श्रृंगारमञ्ज-रीनामालङ्कारोऽयम् । संवत् १९८९ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिक-मासे शुभशुक्लपक्षे चतुर्दश्यां शुक्रवासरे आरानगरे श्रीयुत स्व० देव-कुमारेण स्थापित जैनसिद्धान्तभवने श्री के० भुजबलिशास्त्रिण: अध्य-क्षतां इदं पुस्तकं पूर्तिमगमत् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३८९ ।

५१६. शृंगारवर्णव चन्द्रिका

Opening ।

जयति संसिद्धकाव्याभापपद्माकरैयम् (?)
बहुगुणयुतजीवन्मुक्तिपुंस ···· ।
रवाणीसारनिक्काणरम्यो—
जिनपतिकलहंसश्चाक्संनीति(?) वक्ष्ये ॥१॥
अमन्दानन्दसन्दोहपीयूषरसदायिनीम् ।
स्तवीमि शारदं दिव्यां सज्ज्ञानफल-
शालिनीम् ॥२॥

Closing ।

कीर्तिस्ते विमला सदा वरगुणा वाणी जयश्रीपरा,
लक्ष्मी: सर्वहिता सुखं सुरसुखं दानं विशालं महत् ।
ज्ञानं पीनमिदं पराक्रमगुणस्तुङ्गो नय: कोमल:
रूपं कान्ततरं जयन्तमिव(?)भो श्रीरायभूमीश्वर ॥११७

Colophon । इति परमजिनेन्द्रवदनचन्द्रिरविनिर्गतस्याद्वादचन्द्रिकाचकोर-विजयकीर्तिमुनीन्द्रचरणाब्जचञ्चरीकविजयवर्णिविरचिते श्रीवीरनरसिंहकामिरायनरेन्द्रशरदिन्दुसन्निभकीर्तिप्रकाशके शृङ्गारार्णवचन्द्रिकानाम्नि अलङ्कारसंग्रहे दोषगुणनिर्णयो नाम दशमः परिच्छेद: समाप्त: ।

श्रवणबेलुगुलक्षेत्र निवासि बि० विजयचंद्रेण जैन क्षत्रियेण इदं ग्रंथं समाप्तं लेखीति मंगल महा ॥

५१७. श्रुतबोध

Opening ।

छन्दसां लक्षणं येन, श्रुतमात्रेण बुध्यते ।
तमहं संप्रवक्ष्यामि श्रुतबोधमविस्तरम् ॥

Closing ।

चत्वारो यत्रवर्णा: प्रथमलघव: षष्टकस्सप्तमोऽपि,
द्वौतावन्तोऽदशाशौ मृगमदमुदिते षोडशान्त्यौ तथान्त्यौ ।
रम्भास्तम्भोरुकाण्डे मुनि मुनि मुनिभिर्यत्रकान्ते विराम:,
बाले वन्द्यै कवीन्द्रैस्सुतनु निगदिता स्रग्धरा सा प्रसिद्धा ॥

Colophon । इति श्रीमदजितसेनाचार्य विरचित श्रुतबोधाभिधानच्छन्दोलक्षण ग्रन्थ: समाप्त: ।

विशेष—यह ग्रन्थ कालिदास रचित है, किन्तु इसकी प्रशस्ति में अजितसेन रचित लिखा है।

देखें—(१) दि० जि. ग. र., पृ. १०८।
(२) जि० र० को०, पृ० ३६८।
(३) रा० सू० III, पृ० ८६, २३३।

१ . श्रुतबोध

Opening : देखें—क० ५१७।

Closing : देखें—क० ५१७।

Colophon : इति श्री कालिदासविरचितं श्रुतबोधाख्यं छंदस्संपूर्णम्। माघवद्य वल पंचम्यां लिखेश शङ्कुनाभिधो द्विजन्मा।

५१९. श्रुतपंचमीरासा

Opening : ....सुनहु भव्य एक चित देव सबही सुखकारी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुणेइ मन वच रचिगाय।
सुख संपति आनंद लहै वंछित फल पावइ॥

Colophon : नहीं है।

५२०. सुभद्रा नाटिका

Opening : आर्हन्तीमतुलामवाप्य तपसामेकं फलं भूयसाम्,
यो नैराश्य प्रशस्त्रयस्य जगतामभ्यर्हणाया. पदम्।
स्वीचक्रे स्तवनातिवर्तिविभवां सिद्धिश्रियं यावती-
माद्यस्तीर्थकृतां कृतिः स वृषभः श्रेयांसि पुष्णातु नः॥

Closing : ... . भद्रं विराव भवतो जिन शासनाव। नान्दि: एवमस्तु। इतिनिष्क्रान्ताः सर्वे।

Colophon : इति श्री भट्टारगोविन्दस्वामिनः सुनुना श्रीकुमारसत्यवाक्यदेव-चरवल्लभोदयभूषणावाणामार्यमित्राणमनुजेन कवेर्वर्द्धमानस्याग्रजेन महाकविना हस्तिमल्लेन विरचितायां सुभद्रानाटिकायां चतुर्थोऽङ्कः।
हस्तिमल्लस्य गोविन्दनन्दनस्य महीयसः।
सूक्तिरत्नाकरस्यैका सुभद्रानामनाटिका॥
समाप्ता चेयं सुभद्रा नाटिका। भद्रं भूयात्।

सम्यक्त्वस्य परीक्षार्थं मुक्तं मत्तमतंगजम् ।
यः सरण्यापुरेजित्वा हस्तिमल्लेतिकीर्तितः ।।१।।
कविकुलगुरुणा तेन हि रचितेयं नाटिका सुभद्राख्या ।
'लिखिता' सुसार्थरम्या बुधजनपदसेविना 'शशिना' ।।२।।
समाप्तश्चायं ग्रन्थः वैशाख शुक्ला प्रतिपत् वीर नि० सं० २४५८ ।

देखें—जि० र०, को० पृ० ४४५ ।
Catg. of skt. Ms., P. 304.

५२१. सुभाषित मुक्तावली

Opening : अर्हंतो भगवंतइन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पचै ते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु ते मंगलम् ।

Closing : सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।
पुराकृत कर्म तदैव भुज्यते,
शरीरतो निस्तृपयत्वयाकृतम् ।।

Colophon : नहीं है ।

विशेष—प्रारंभ का श्लोक मंगलाष्टक का है ।

५२२. सुभाषितरत्नसंदोह

Opening : जनयति मुदमंतर्भव्यपाथोरुहाणां हरति तिमिर राशिं या प्रभामानवीव कृतनिखिलपदार्थद्योतनाभारतीद्धा वितरतु धृतदो वामार्हतीभारतीवः ।।१।।

Closing : आशीर्विध्वस्तकंतोर्विपुलशमभृतः श्रीमतः कांतकीर्तिः
सूरेर्यातस्य पारं श्रुतसलिलनिधे देवसेनस्य शिष्यः ।
विज्ञाताशेषशास्त्रोव्रतसमितिभृतामग्रणीरस्तकोपः
श्रीमान्मान्यो मुनीनाममितगति मुनिस्त्यक्त निःशेष संगः ।। ।।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४४५ ।

(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५० ।
(४) रा० सू०, पृ० २१४ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २८८ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २३६ ।
(७) भ० संग्र०, पृ० २१३ ।

५२३. सुभाषितरत्नसंदोह

Opening :

दोषंनतं नृपतयो रिपवोपि रुष्टा: ।
कुर्वंति केशरि करीद्रमहोरू गावा ।
धर्म्मं निहत्य भवकानन दाव वन्हि ।
यंदोयमत्र विदधाति नरस्य शेष: ॥३॥

Closing :

यावच्चन्द्रदिवाकरौ दिविगतौ भित्रस्तम: शार्वर
यावन्मेरू तरंगिणी परिवृढौनोमुंचत:
स्वस्थितिं यावद्याति तरंग भंगुर तनुर्मगाहिमा-
द्रेर्भुवं
तावच्छास्त्रमिदं करोतु विदुषां पृथ्वीतले सम्मद ॥६॥

Colophon : इत्यमितगति विरचित: सुभाषितरत्नसदोह संपूर्णतां । संवत् १७८४ वर्षे कार्तिकमासे कृष्ण चतुर्दसी दीपोत्सव दिने श्री धुपल बंदिरे लिषतोयं ग्रंथ: शुभं भूयात् ।

५२४. सुभाषितावली

Opening :

जनिाधीशं नमस्कृत्य संसारांबुधितारकम् ।
स्वान्यस्पाहितमुद्दिश्य वक्ष्ये सद्भाषितावलीम् ॥

Closing :

जिनवरमुखजातं ग्रथितं श्री गणेन्द्रै:,
त्रिभुवनपति सेव्यं विश्वतत्त्वैकदीपम् ।
अमृतमिव सुमिष्ट धर्मबीजं पवित्रं,
सकलजनहितार्थं ज्ञानतीर्थं हि जीयात् ॥

Colophon : इति श्री सुभाषितावली संपूर्ण ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० २७ ।
जि० र० को०, पृ० ४४६ ।

आ० सू०, पृ० १४७ ।
रा० सू० II, पृ० ४४, ७४,२८८ ।
रा० सू० III, पृ० ६६, ११७ ।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 701, 712.

५२५. सुभाषितावली

Opening : देखें—क्र० ५२४ ।

Closing : नाभेयादिजिनेश्वराश्चविमलाः ख्याता परे ये जिनाः ।
त्रैकाल्ये प्रभवा व्यतीतगणनाः सौख्याकराः सौख्यदाः ।।
.... ।

Colophon : नहीं है ।

५२६. सुभाषित रत्नावली

Opening : देखें, क्र० ५२४ ।

Closing : देखें, क्र० ५२४ ।

Colophon : इति श्रीमदाचार्य श्री सकलकीर्तिविरचिता सुभाषितावली समाप्ता । संवत् १८३६ मिति आश्विन शुक्ला तृतीया भौमवासरे पुस्तकं लिपिकृतम् दिलसुखब्राह्मणस्य फरकनगरमध्ये पठनार्थं लालचंद-जी स्वपठनार्थम् ।

विशेष—" ॐ नमो सुग्रीवाय हुनवंताय (हनुमंताय) सर्वकीटकानक्षायपिपीलिका बिलेप्रवेशाय स्वाहा ।"

५२७. सूक्ति-मुक्तावली

Opening : सर्जाविवत् नवनीतं पंकादिव पद्ममृतमिव जलात् ।
मुक्तामणिरिव वंशात् धर्मं सारंमनुष्यभवात् ।।

Closing : नगरे वससि त्वं बालि, अटव्या नैव गच्छसि ।
व्याघ्ररीछमनुष्याणां, कथं जानासि भाषितम् ।।

Colophon : Missing.

५२८. सूक्ति मुक्तावली

Opening : देखें, क्र० ५२१ ।
Closing : लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये किंचित् किंचित् कर्षणे ।
.... ।
Colophon : Missing.

५२९. सूक्ति मुक्तावली

Opening : सिंदूरप्रकरस्तपः करिशिरः क्रोडे कषायाटवी
दावार्चिर्निचयः प्रबोधदिवसप्रारंभसूर्योदयः ।
मुक्तस्त्रिकुचकुंभ कुंकुमरसः श्रेयस्तरोपल्लव · · ।
प्रोल्लासः क्रमयोर्नखद्युतिभरः पार्श्वप्रभो पातुवः ।।१।।
Closing : अभजदजितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि
द्युमणिविजय-सिंहाचार्य पादारविंदे ।।
मधुकरसमतां यस्तेन सोमप्रभेण
विरचि मुनिपराज्ञा सूक्तिमुक्तावलीयम् ।।
Colophon : इति श्री सोमप्रभुसूरि विरचितं सूक्तिमुक्ता वली संपूर्णम् ।
श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३०-३१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४४१, ४४८, ४४९ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५१ ।
(४) आ० सू० पृ. २१४ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २६ ।
(६) रा० सू III, पृ० १००, २१७ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 710, 712.

५३०. सूक्ति मुक्तावली (सिन्दूर प्रकरण)

Opening : देखें—क्र० ५२९ ।
Closing : देखें—क्र० ५२९ ।

Colophon : इति सूक्तिमुक्तावली सिन्दूरप्रकरणः संपूर्णः । लिखतं मुन्यचेतसी जी तस्य शिष्य ······ तस्य शिष्य सेवक आज्ञाकारी मुन्यः चन्द्रभाण गढं रणस्थंभोर मध्ये संवत् १८१३ का ।।श्री।।

५३१. सिन्दूरप्रकरण

Opening : देखें क० ५२६ ।

Closing : सोमप्रभाचार्यमभाषयन्न पुंसातमः पंकमपाकरोति ।
तदप्यमुस्मिन्नुपदेशलेशे निशम्यमाने निशमेति
नाशम् ।।

Colophon : इति श्री सोमप्रभाचार्यकृत सिंदूरप्रकरण काव्य समाप्त-मिदम् । स्वस्ति श्री काष्ठासंघे लोहाचार्याम्नाये भट्टारकोत्तमभट्टारक जी श्री १०८ ललितकीर्त्तिदेवाः तद्‌पट्टे भट्टारक श्री १०८ राजेन्द्रकीर्तिदेवाः तेषां पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ मुनीन्द्र-कीर्त्तिदेवाः महातपासि तेषां पठनार्थम् । संवत् १९४७ मध्ये कार्तिकमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्यां बुधवासरे आदिनाथबृहज्जिनमंदिरे लक्ष्मणपुरमध्ये प्रातः काले पंडितपरमानन्दन रचितमिदं शुभ भूयात् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभं भूयात् लेखकपाठकयोः ।

सन्दर्भ के लिए—क्र० ५२६ ।

५३२. अक्षर केवली

Opening : ॐकारे लभते सिद्धि प्रतिष्ठां च सुशोभनां ।
सर्वकार्यणि सिद्धयंति मित्राणां च समागमः ।।

Closing : क्षकारे क्षेममारोग्यं सर्वसिद्धिर्नसंशयः ।
पृछकस्यमहालाभं मित्रदर्शनमाप्नुते ।।

Colophon : इति अक्षरकेवली शकुनः समाप्तः ।

५३३. अक्षरकेवली प्रश्नशास्त्र

Opening : ओं चिलि चिलि मिलि मिलि मातंगिनि ! सत्यं निर्दशय निर्दशय स्वाहा । ककारादि हकारान्तं वर्णमात्रकं विलिखेत् । तत्र

स्वकार्यं चिंतितं यत्स्वया पश्यन् सर्वेषां वर्णमेकं पृच्छय, सफलाफल शुभाशुभं निवेदयति ।

Closing : ह्र-ह्रकारे सर्वासिद्धिश्च द्रव्यलाभश्च जायते ।
तस्मात्कर्मप्रकर्त्तव्यं सफल तस्य जायते ॥४८॥

Colophon : इति अक्षरकेवली प्रश्नशास्त्रम् ।
श्री वेणुपुर (मूडबिद्रि) स्थ श्री वीरवाणी विलाससिद्धान्त भवनस्य तालपत्रग्रंथादुद्धृतं श्री लोकनाथशास्त्रिणा आरा 'जैनसिद्धान्त-भवनं कृते' श्री महावीर निर्वाण शक २४७० तमे मार्गशीर्षं शुक्लपक्ष-पूर्णिमायां तिथौ परिसमापितं च । इति मंगलमहः । ११-१२-१६४३ ।-

५३४. अरिष्टाध्याय

Opening : पणमंत सुरासुरमउलि रयणवरकिरणकंत विच्छुरियं ।
वीरजिनपाय जुयलं णमिऊण भणेमि रिट्ठाइं ॥

Closing : अट्ठारहछिण्णे जे लद्धहिंतछरे हाऊ ।
पढमो हि रेह अंकं गविज्जए यहिण तछ ॥

Colophon : इत्यारिष्टाध्याय शास्त्रं जिनभाषितं समाप्तम् । मरणकाण्ड-निमित्तसारशास्त्रं सम्पूर्णम् । संवत् १८३५ मास आषाढ़ वदि ३ शनीवार । शुभं भूयात् । लिखापित पंडित रामचन्द ।

५३५. द्वादसभावफल

Opening : अथ द्वादसभावमध्ये रविफलम् ।

Closing : .... उच्च कन्या को सुग्रीव धन को नीच । इति उच्चनीच सुग्रीव ।
साथ में उच्चनीच चक्र भी है ।

Colophon : नहीं है ।

५३६. गणितप्रकरण

Opening : यत्राप्यक्षरसंदेहं तत्र स्थाप्यं तु देवरम् ।
स्वर्जेतद्गतवाक्यानि अन्य वाक्यानि शोधयेत् ॥

Closing : .... मिन्ना खविजनि रत्नं भा नु:सुनिर्णय ... । इत्यपूर्णो ग्रन्थ: ।

Colophon : श्री वेण्पुरनिवासिना लोकनाथशास्त्रिणा मूडविद्रिस्थ-वीरवाणी विलास-नामक जैन सिद्धान्तभवनस्य ग्रन्थसग्रहादुद्धृ ज्योतिर्ज्ञानविधि आरा जैनसिद्धान्त भवनकृते श्री महावीर शक २४८ पौषमासस्य अमावस्यायां दिने लिखित्वा परिसमापितमिति भद्रं भूयात्

५३७. ज्ञानतिलक सटीक (२४ प्रकरण)

Opening : नमिऊण नमिय नमिय दुत्तरसंसारसायरुत्तिन्नं ।
सव्वन्नं वीरजिणं पुलिदिणि सिद्धसंघं च ।।

Closing : . . . अंतश्चेतो वसति ११ महादेवान्मांत्री (१२

Colophon : इति श्री दिगम्बराचार्ये पंडितश्रीदामनंदिशिष्य भट्टवोसरि विरचिते सायश्री टीकायां ज्ञानतिलके चक्रपूजाप्रकरणम् समाप्तम् ।
शुभमिति आषाढ़कृष्णा ३ सं० १९९० विक्रमीय । लिपि कर्त्ता रोशनलाल जैन कठूमर (अलवर) निवासी ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १४७ ।

५३८: ज्योतिर्ज्ञानविधि

Opening : प्रणिपत्य वर्धमानं स्फुटकेवलदृष्टतत्वमीशानम् ।
ज्योतिर्ज्ञानविधानं सम्यक्स्वायंभुवं वक्ष्ये ।।

Closing : ललाटलोके कलमा सुधी समा,
खनोरि खिशोरिव चेरि दौ नवा: ।
कापालिकौपागमसाधुसमि
गाच्छायाहि, मध्यान्हनिमेषमुख्यत: ।। १३ ।।

Colophon : इति श्री धराचार्य विरचिते ज्योतिर्ज्ञानविधौ श्रीकरण लग्नप्रकरणं नाम अष्टम: परिच्छेद: ।

५३९. ज्ञानप्रदीपिका

Opening : महीरजिनाधीशं सर्वज्ञं त्रिजगद्गुरुम् ।
प्रातिहार्याष्टकोपेतं प्रकृष्टं प्रणमाम्यहम् ।।

द्वितीये वा तृतीये वा शुक्रस्वेत्री समागम: ।
अनेन च क्रमेणैव सर्वं वक्ष्मि वदेत् स्फुटं ।।

Colophon : इति ज्ञानप्रदीपिका नाम ज्योतिषशास्त्रं समाप्तम् । मंगलमस्तु।।
श्री भारत्यै नमो नमः ।। अयमपि रामू: नेमिराजनामधेयेन लिखित: ।।

देखें—जि० र० को०, पृ० १४८ ।

५४०. केवलज्ञानप्रश्न चूड़ामणि

Opening : अं क च ट त प य श वर्गा: ।
आ ए क च ट त प य शा: इति । प्रथम: ।।१।।

Closing : जो पढमो सो मरओ, जो मरओ सो होइ अत्ति आ ।
अत्तिल्लेशा पढमो जसण्णामं णत्थि संदेहो ।।

Colophon : समाप्ता केवलज्ञानप्रश्न चूडामणि: ।

५४१. केवलज्ञानहोरा

Opening : अनन्तविद्याविभवं जिनेन्द्रं निधाय नित्यं निरवद्यबोधम् ।
स्वान्तेदुहभिन्दुप्रमभिन्द्रवन्द्यं वक्ष्ये परां केवलबोधहोराम् ।।१।

Closing : X X X X हणरे ६५ । हरियट्टि ९६ । हुक्केरि ६७ ।
हरिगे ९८ । हिप्परिगे ९९ । हुरुमुंजि १०० । कोडन-
हुब्बल्लि १०१ । होसदुर्ग १०२ । हिजर्यिडि १०३ ।
हुबल्लि १०४ । हुणिसिगे १०५ । हुनगवाडे १०६
हामाल्लि १०७ । सम्पूर्णम् ।

Colophon : यादृशं पुस्त ·· ·········· दीयते ।।१।।

देखें—जि. र. को., पृ. ६६ ।
Catg. of Skt. Ms., P. 318.

५४२. निमित्तशास्त्र टीका

Opening : सो जयउ जाए उसहो अणंत संसार सायरुत्तिण्णो ।
कम्माणलेण जेणं लीलाइ णिउज्जइ मयणो ।।

Closing : एवं बहुपायारं उप्पायपरंपरायणाऊण ।
रिसिपुत्तेणामुणिणा सबप्पियं अप्पगंथेण ।।

Colophon : इति श्री एवं रिखिपुत्तिकेयं संपूर्ण । इति श्री गाथा निमित्त शास्त्र की संपूर्णम् ।

५४३. महानिमित्तशास्त्र

Opening : नमस्कृत्य जिनं वीरं, सुरासुरनतक्रमम् ।
यस्य ज्ञानांबुधेः प्राप्य, किंचिद्वक्ष्ये निमित्तकम् ।।

Closing : चत्तारि एक चत्ता मासावरणे चोत्तसंसदावतंसा ।
णाऊण विह विहिणा तत्तो विवियारण कुणह ।।

Colophon : इति श्री भद्रबाहु विरचिते निमित्तं परिसमाप्तम् । शुभं भवतु कल्याणमस्तु । श्री । इति श्री भद्रबाहु विरचिते महानिमित्त-शास्त्रे सप्तविंशतिमोऽध्यायः समाप्तः ।

देखें– (१) जि. र. को., पृ. २१२, २९ । (भद्रबाहुसंहिता)
(२) दि. जि. ग्र. र., पृ. ११५ ।

५४४. महानिमित्तशास्त्र

Opening : देखें—क्र० ५४३ ।
Closing : देखें—क्र० ५४३ ।
Colophon : देखें—क्र० ५४३ ।

संवत् १८७७ कार्तिकमासे कृष्णपक्षे १ रविवासरे लिखित-मिदं पुस्तकम् । श्रीरस्तु । शुभं भूयात् ।

५४५. निमित्तशास्त्र टीका

Closing : देखें—क्र० ५४३ ।
Closing : देखें—क्र० ५४३ ।
Colophon : देखें—क्र० ५४३ ।

५४६. षट्पञ्चषिका सूत्र

Opening : प्रणिपत्य रविमूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन पृथु यशसा ।
प्रश्नेक्रियातार्थं ग्रहाणां परार्थमुद्दिश्य सद्यशसा ॥

Closing : जीवसितो विप्राणां क्षेत्रः स्यारोप्लमूविशाचंद्रः ।
शूद्राधिपं शशि स्तुतः शनीश्वरशंकरो भवानाम् ॥

Colophon : इति श्री षट्पंचासिकायां मित्रकानाम सप्तमोऽध्यायः । इति श्री षट्पंचासिकासूत्र नाम ज्योतिष संपूर्णम् । संवत् द्वीपनयनमुनिचंद्र वत्सरे शालिवाहन गताब्द अंबकनंदभूत कौमदी प्रवर्त्तमाने पौषमासे कृष्णपक्षे चतुर्दशी षीषणवासरे मैत्री नक्षत्रे श्री उग्रसेनपुरे लिखितम् ।

देखें—जि. र. को., पृ. ४०१

५४७. सामुद्रिकाशास्त्रम्

Opening : आदिदेव नमस्कृत्य सर्वज्ञं सर्वदर्शनम् ।
सामुद्रिक प्रवक्ष्यामि शुभांगं पुरुषस्त्रियोः ॥

Closing : पद्मिनी पद्मगंधा च मदगंधा च हस्तिनी ।
शंखिनी क्षारगंधा च शून्यगंधा च चित्रिनी ॥

Colophon : इति सामुद्रिकाशास्त्रे स्त्रीलक्षणं कथनं नाम तृतीयः पर्व. समाप्तोऽयं ग्रन्थश्च ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ४३३ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 708.

५४८. व्रततिथिनिर्णय

Opening : श्रीमंतं वर्द्धमानेशं भारतीं गौतमं गुरुम् ।
नत्वा वक्ष्ये तिथिना वै निर्णयं व्रतनिर्णयम् ॥

Closing : क्रममुल्लंघ्य यो नारी नरो वा गच्छति स्वयम् ।
स एव नरक याति जिनाज्ञा गुरुलोपतः ॥७॥

Colophon : इति आचार्य सिंहनंदि विरचित व्रततिथिनिर्णयं समाप्तम। सम्वत् १९६६ चैत्रशुक्ल ६ का लिखी हुई सरस्वती भवन बम्बई की प्रति से श्री पं० के० भुजबली जी शास्त्री की अध्यक्षता में श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए प्रतिलिपि की गई। शुभ मिति ज्येष्ठ शुक्ला १२ रविवार विक्रमसम्वत् १९९१ वीर स. २४६० । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक।

देखें—जि. र. को, पृ. ३६८।

५४६. यात्रामुहूर्त्त

इसमें ग्यारह मुहूर्त्त बोधक चक्र हैं।

५५०/१. आकाशगामिनी विद्या विधि

Opening : जहां गंगा तथा और नदी के संगम के निकास पर वट का वृक्ष होइ ....।

Closing : - - - णमो लोए सव्वसाहूण । एही मंत्रराज को एक सौ आठ बार जपै।

Colophon : इति आकाशगामिनी विद्या विधि।

५५०/२. अम्बिका कल्प।

Opening : वन्देऽहं वीरसन्नाथम् शुभचंद्रजगत्पतिम्।
येनाप्येतमहामुक्तिवधूस्त्रीहस्तपालनम् ॥१॥

Closing : समसामधन भरभारंभरं धरधारमर: पुरुत: सुखकारम्।
अतएव भजध्वमतिप्रथितं प्रथितं सार्थकमेव जनै: ॥

Colophon : इत्यंबिकाकल्पे चार्ये शुभचंद्रप्रणीते सप्तमोऽधिकार: समाप्त :॥७॥
नाम्नाधिकार: प्रथितोयं यंत्रसाधनकर्मण:
समाप्त एष मंत्रोऽयं पूर्णं कुर्यात् शुभं जन: ॥१॥
इत्यम्बिका कल्प:।
... ... — शुभमिति कार्तिक कृष्णा ७ मंगलवार विक्रम-सम्वत् १९९४ वीर सम्वत् २४६३। इति शुभम्। ह० रोशनलाल।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२१।
जि० र० को०, पृ० १५।
जै० ग्रं० प्र० सं०, I, पृ० १७१।

५५१. बालग्रह चिकित्सा

Opening : श्रीमत्पंचगुरून्नत्वा मंत्रशास्त्रसमुद्भूतः।
बालग्रहचिकित्सेयं मल्लिषेणेन रच्यते ॥

Closing : ... — ... रक्षामंत्रस्य संजपात् ... ... सन्ध्यायां विक्षिपेत्तानि पावके।

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखरश्री मल्लिषेणसूरि विरचिते बाल-चिकित्सा दिन-मास-वर्ष संख्याधिकारसमुच्चये द्वितीयोध्याय:।

देखें—जि० र० को०, पृ० २८२।

५५२. बालग्रह चिकित्सा

Opening : अथास्य प्रथमे दिवसे मासे वर्षे बालं वा गृह्णातिनन्दना नाम माता तस्य प्रथमं जायते ज्वर: ....।

Closing : ... ...एतेषां चूर्णीकृत्य विजयधूपं बालकस्य कुर्यात्।

विशेष—यह प्रति अपूर्ण है।

५५३. बालग्रह शान्ति

Opening : प्रणिपत्य जिनेन्द्रस्य चरणांभोरुहद्वयम्।
ग्रहाणां विकृतेः शांतिं वक्ष्ये कालनिरोधिनाम्।

Closing : ॐ नमो कुजनी गृहि-२ बलिग्रस्त २ मुंच २ बालकं स्वाहा।

Colophon : इति बलिविसर्जनमंत्र: इति षोडशोवत्सर: ।१६।
पूज्यपादमिदं लिख्य शिशोर्बलिविधानकम्।
शान्तिकं पौष्टिकं चैव कुर्यात्क्रमसमन्वितम ॥
इति सम्पूर्णम्।

देखें—जि० र० को०, पृ० २८२।

५५४. बालकमुण्डन विधि

Opening । मुन्डनं सर्वजातीनां बालकेषु प्रवर्तते ।
पुष्टिबलप्रदं वक्षे, जैनशास्त्रानुमार्गतः ॥

Closing । ··· ··· ततः कुमारं स्थापयित्वा वस्त्राभूषणैः अलंकृत्वा गृह-मानीय यक्षादीनां अर्घंदत्वा पुण्याहवचनैः पुनः संचयित्वा सज्जनान् भोजयेत् इति ।

Colophon । नहीं है ।

५५५. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र

Opening । भक्तामरप्रणत ··· ··· ··· जनानाम् ॥

Closing । ··· ··· अंजनातस्कर वंत निसंक सत्य जानै तौ सर्वसिद्ध होइ सत्यमेव ॥४८॥

Colophon इति श्री गौतमस्वामी विरचिते अड़तालीस ऋद्धिमंत्रगर्भित स्तोत्र भक्तामरमूलमंत्र सम्पूर्णम् ।

५५६. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र

Opening । देखें, क्र० ५५५ ।

Closing । देखें—क्र० ५५५ ।

Colophon । इति श्री गौतमस्वामीविरचिते अड़तालीस ऋद्धिमंत्रगुणगर्भित-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
सम्वत् १९५० मी० वै० कृ० १० ।

५५७. भूमिशुद्धिकरण मंत्र

Opening । ॐ क्षीं भूः शुद्धयतु स्वाहा ।

Closing । ··· ··· तालुरंध्रेण गतं तं श्रवंतममृतां बुभिः ।

Colophon । नहीं है ।

५५८. बीज मंत्र

Opening : मन वचन काय के जोग की जो क्रिया सो जोग ताके दोय भेद एक शुभ एक अशुभ ।

Closing : वक्तुं लालविनोदेन श्री गुरुणां प्रभावतः ।
श्लोकसंख्यामिति ज्ञेयं अष्टाधिकशतद्वयी ॥

Colophon : लालविनोदी ने रचा संस्कृतबानी मांहि ।
वृंदावन भाषा लिखी कछु इक ताकी छाह ॥१८९॥
भूलचूक सब छिमा करि लीजो पंडित सोध ।
बालक बुद्धी जानि मोहि मत कीजो उर क्रोध ॥१९०॥
सम्वतसर विक्रमविगत चन्द्ररंध्रदिगचंद ।
माघ कृष्ण आठैं गुरु पूरण जयति जिनंद ॥१९१॥
इति भाषाकारनामकुलाम्प्रनामसमस्त लिखितं सम्वत् १८९१ माघवदी ८ गुरौ वार कूं नवीन भाषा बनी सो यही मूल प्रति है कर्ता के हाथ की लिखी ।

५५९. बीजकोश

Opening : तेजो भक्तिर्विनयः प्रणवः ब्रह्मप्रदीपवामाश्च ।
वेदोऽब्धदहनध्रुवमादि (?) ओमितिख्यातम् ॥
मायातत्वं शक्तिर्लोकेशो ह्रीं त्रिमूर्तिबीजेशो ।
कूटाक्षरं क्षकारं मलवरयूं पिण्डमष्टमूर्तिश्च ॥

Closing : सर्वधान्यकृतैर्लाजैस्तद्रजोभिर्गुडान्वितैः ।
चन्द्रनागुरुकर्पूरगुग्गुलाज्यघृतादिभिः ॥
पायसाक्षतैर्मिश्रैर्ब्रह्मवृक्षोद्भवादिभिः ।
समिद्भिश्च चरेद्धोमं प्रतिष्ठाशान्तिपौष्टिके ॥

Colophon : ॥ इति षट्कर्मविधिः समाप्तः ॥

५६०. ब्रह्मविद्याविधि

Opening : श्रीमद्वीरं महासेनं ब्रह्माणं पुरुषोत्तमम् ।
जिनेश्वरं च तं वंदे मोक्षलक्ष्मीकलायकम् ॥

चन्द्रप्रभं जिनं नत्वा सर्वज्ञं त्रिजगद्गुरुम् ।
ब्रह्मविद्याविधिं वक्ष्ये यथाविद्योपदेशतः ।।

Closing : धेनुमुद्रया सर्वोपचारं कृत्वा पूजाविधि परिसमापयेत् ।

Colophon : नहीं है ।

५६१. चन्द्रप्रभमंत्र

Opening : ॐ चंद्रप्रभो प्रभाधीश-चंद्रशेखरचन्द्रभू ।
चन्द्रलक्ष्मंकचन्द्रांग चन्द्रबीजनमोऽस्तु ते ।।

Closing : ---- ---- नित्य जपने ते सर्वमंगल होय है ।

Colophon : नहीं है ।

५६२. चौबीस तीर्थङ्कर मंत्र

Opening : आदिनाथमंत्र । ॐह्रीं श्रीं चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे · · सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : ---- ---- नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्ध होय ।

Colophon : इति श्री मंत्र सम्पूर्णम् ।

५६३. चौबीस शासन देवी मंत्र

Opening : मंत्र के अन्त में मरन माह नवसा अरणं विद्वेषण आकर्षण सब .... ।

Closing : ---- धनार्थी आकर्षन करे ता धन बहुत पावे ।

Colophon : नहीं है ।

५६४. गणधरवलयकल्प

Opening : देवदत्तस्य नामाहंकारेण वेष्टयेत् ।
ततोऽनाहतेन तस्याधः कमलयार्थं अर्थप्राप्त्यर्थं पद्मासनम् शांतिकपौष्टिक-सारस्वतार्थंश्रीकारासनम् शत्रुविनाशार्थं क्रूरप्राणिक्षयार्थं च हूंकारासनं।

Closing : अंतश्चंद्रावृत हंस इति मुतमतो विद्यु यं वं विदुलु ।
नालाग्रे भवों तदाद।वमृतमतिसितं सप्तपत्रं द्विपद्मम् ॥
लं कीताम्भोजपत्रे मुखकमलदले वं घटीरूपयन्त्रम् ।
क्षं प्रमं ह्ल: ठः पोह्मेग्रे गतमुखवपु: सन्नमेतस्य्रशस्तम् ॥

Colophon : प्रशस्ति संग्रह (श्री जैन सिद्धान्तभवनद्वारा प्रकाशित) पृ० ६८ में सम्पादक भुजबली शास्त्री ने लिखा है कि इसके कर्त्ता अज्ञात हैं, पर निम्नलिखित तीन विद्वान 'गणधरवलय पूजा' के कर्त्ता अब तक प्रसिद्ध है :—

(१) भट्टारक धर्मकीर्ति (२) शुभचन्द्र (३) हस्तिमल्ल ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १०२ ।

५६५. घंटाकर्ण

Opening : घंटाकर्णमहावीर सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विस्फोटकभय प्राप्ति. रक्ष रक्ष महाबलम् ॥

Closing : तानेन काले मरण तस्य सर्पेन दृश्यते ।
अग्निचोरभय नास्ति घटाकर्ण नमोऽस्तु ते ॥४॥

Colophon : इति घटाकर्ण सम्पूर्णम् ।
विशेष—साथ में कुछ जाप्य मंत्र भी लिखे हैं ।

५६६. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : प्रणम्य गिरजाकान्ता रिद्धिसिद्धिप्रदायकम् ।
घटाकर्णस्य कल्पं वारिष्टकष्टनिवारणम् ॥

Closing : आह्वानंन न जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि त्वं क्षमस्व परमेश्वर: ।

Colophon : इति घंटाकर्णविधि कल्प सम्पूर्णम् । मिति आषाढ़ शुक्ल अष्टमी संवत् १९८५ वर्षे ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ११३ ।

५६७. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : देखें—क्र० ५६६ ।

Closing : देखें—क्र० ५६६ ।

Colophon : इति घंटाकर्णवृद्धि कल्प संपूर्णम् । मिति अगहन कृष्णामावस्यां लिखतं रतनप्रसाद अग्रवाल अपने पठनार्थम् । सम्वत् १६०३ ।

५६८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : देखें, क्र० ५६६ ।

Closing : देखें, क्र० ५६६ ।

Colophon : इति घंटाकर्णवृद्धि कल्प सम्पूर्णम् ।
विशेष-सात मंत्रचित्र (मंत्र चक्र) भी हैं ।

५६९. हाथाजोड़ीकल्प

Opening : रविभौमशनिवारं, हस्तपुष्य पुनर्वसु ।
दीपोत्सवं होलिकां च, गृहीत्वा हस्त जोडीका ॥

Closing : अदोसो दासतां यथोति, मनोवाञ्छितदायकम् ।
मस्तके कंठव्याप्तं च, पार्श्वे रक्षं गुणाद्धिक ॥

Colophon : इति हाथाजोड़ीकल्प शिवोक्तं सम्पूर्णम् ।

५७०. इष्टदेवताराधन मंत्र

Opening : वश्यकर्मणिपूर्वाङ्कः कालश्च स्वस्तिकाशनम् ।
उत्तरादिक् सरोजाख्या मुद्राविद्रुममालिका ॥

Closing : ... ... मोहस्य संमोहनं पापात्पंचनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता ॥

Colophon : इति मंत्र इष्टदेवता के आराधना का समाप्तम् ।

५७१. जैनसन्ध्या

Opening : ॐ क्ष्मों भू शुद्धयतु स्वाहा।

Closing : ॐ भूर्भुवः स्व असिआ उसा हुं प्राणायामं करोति स्वाहा। अनामिकां गृहीत्वा त्रिवारं जपेत्।

Colophon : इति प्राणायाममंत्रः। इति जैनसन्ध्या सम्पूर्णम्।

५७२. जैन विवाह विधि

Opening : स्वस्ति श्रीकारकं नत्वा वर्द्धमानजिनेश्वरं।
गौतमादिगणाधीशं वाग्देविं च विशेषतः॥

Closing : मंगलमय मंगलकरण परमपूज्य गुणवृन्द।
हम तुम को मंगल करो नाभिराय कुलचन्द॥

Colophon : इति जैनविवाह पद्धति समाप्तम्।
मिती असाढ वदी १० सं० १९७८। सहारनपुर।

५७३. जैनसंहिता

Opening : विज्ञानं विमलं यस्य भासते विश्वगोचरम्।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांघ्रये॥

Closing : इक्षोधनुः कुसुमकाडधनु. शरं च, खेटासिपाशवरदोत्पलमक्षसूत्रं। द्वि. षड्भुजाभयफलं गरुडादिरुढा, सिद्धायिनी धरति हेमगिरिप्रभाः
श्री॥

Colophon : इति श्री माघनन्दिविरचितायां जिनसंहितायांयक्षयक्षी प्रतिष्ठा विधानम्।

इति श्री माघनन्दिविरचित जिनसँहिता समाप्ता।

उक्त सम्हिता वैदर्भदेशस्थ पूज्य प्रातः स्मरणीय बालब्रह्मचारी-रामचन्द्रजी महाराज का परमप्रिय शिष्य दिगम्बर बालकृष्ण टाकल–कर सईतवाल जैन चम्पापुरी निवासी ने सोलापुर (महाराष्ट्र प्रान्त) में वर्धमान जिनचैत्यालय में अत्यन्तभक्तिपूर्वक लिखकर पूर्ण की। मिती कार्तिक वदी ६ बुधवार शके १८६० वीर सँ० २४६५ विक्रम सम्वत् १९९५ सन् १९३८। कल्याणमस्तु।

५७४. कर्मदहन मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहिताय सिद्धाय नमः ॥१॥
Closing : ॐ ह्रीं वीर्यान्तिराय रहिताय सिद्धाय नमः ॥१६४॥
Colophong : इति कर्म्मदहनमन्त्रसम्पूर्णम् ।१६४। श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ १२ रविवासरे सम्वत् १६६५ ।

५७५. कलिकुण्ड मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड ···· ।
Closing : पापात्पंचनमस्कारक्रियाक्षरमयी साराधनादेवता ।
Colophon : इति मंत्र इष्टदवता के आराधन का समाप्तम् ।

५७६. मंत्र यंत्र

Opening : अघताक्ष के षोडशी जोग सुवर्णमासी सोरा की ढेरी ऊपर धरिये अग्नि देइं तब ········· ।
Closing : ········ सिद्धि गुरु श्रीराम आज्ञा काली करि वर एही तेल पलाय अमुकी नरव्वहे घर । मंत्र ।
Colophon : नहीं है ।

५७७. नमोकार गण विधि

Opening : रेखयाष्ट गुणं पुन्यं पुत्रजीवेफलैर्दस ।
सतं स्यात्संखमणिभिः सहस्त्रं च प्रवालकैः ॥
Closing : अंगुल्यग्रेनुयज्जप्तं यज्जप्तंमेरुलंघनात् ।
संख्यासहितं जप्तं सर्वं तन्निफलं भवेत् ॥
Colophon : इति जाप्य विधिः समाप्तम् ।

५७८. णमोकार मंत्र

Opening : णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं ॥
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं ॥
णमो लोए सव्व साहूणं ॥

Closing : समस्त लोकत्रय प्रभु बसत्तापछैनिर्दस्त ॥
लच्छही करिवार १०८ जपणं जपलेवण ॥
पद्मासन पूर्वदिशि मुखराखणु
जो विचारै सोही वश्यहोवै मंत्रदीन जपणं ॥

५७९. पद्मावती कवच

Opening : ॐ अस्य श्री मंत्रराजस्य परमदेवता पद्मावती चरणांबुजेभ्यो नमः ।

Closing : पाठालं कथतां .... — .... परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २३५ ।

५८०. पंचपरमेष्ठी मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं निःस्वेरगुणसंयुक्त श्री जिनेभ्यो नमः स्वाहा ।

Closing : ॐ ह्रीं दंतरत्नत्यागमूरगुणसहितसर्वसाधुभ्यो नमः — ।

Colophon : नहीं है ।

५८१. पञ्चनमस्कार चक्र

Opening : येनाभ्यासवशाभिष्यामादायुत्याचकेवलम् ॥
कृत्स्नो मन्त्रविधिः प्रोक्तस्तस्मै तंत्राण्यथोक्तवान्,
तस्मै सर्वज्ञदेवाय देवदेवात्मने नमः ॥

Closing : सम्यग्दृष्टिजनस्य एषा विद्या दातव्या । निन्दासूयानास्तिक्य युक्तानां धर्मद्वेषिणां मिथ्यादृशामपुष्टधर्माणञ्च न दातव्या । कदा चिद्दत्ते (?) सति (?) तदा महापातकं प्रयुक्तं भवति ।

Colophon : एवं पञ्चनमस्कारचक्रं समाप्तमिति

५८२. पीठिका मंत्र

Opening : ॐ नीरजसे नमः। ॐ दर्पमथनाय नमः।

Closing : ॐ ह्रीं अर्हं नमो भयवदो महावीरवड्ढमाणानम्।

Colophon : नहीं है।

५८३. सरस्वती कल्प

Opening : बारहअंगं गिज्जा दंसणतिलया चरित्तहुहरा।
चउदसपुव्वाहरण ठावे दव्याय सुखदेवी ॥
आचारशिरसं सूत्रकृतवक्त्रां (सरस्वती) सकण्ठिकाम्।
स्थानेन समयोद्ध (स्थानांगसमयाश्रितां) व्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम्

Closing : परमहंसहिमाचलनिर्गता सकलपातकपंकविवर्जिता।
अमितबोधपयः परिपूरिता दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती ॥
परममुक्तिनिवाससमुज्जवलं कमलया कृतवासमनुत्तमम्।
वहति या वदनाम्बुरुहं सदा दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती॥

Colophon : मलयकीर्ति कृतामिति संस्तुति सतत मतिमाश्नरः।
विजयकीर्ति गुरुकृतमादरात् समति कल्पलता फलमश्नुते ॥
इति सरस्वति कल्पः समाप्तः

५८४. शान्तिनाथ मंत्र

Opening : ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष ···· ···· ।

Closing : चक्रादिसंपदका दाता अचिन्त्य प्रतापी हैं।

Colophon : नहीं है।

५८५. सिद्ध भगवान के गुण

Opening : ॐ, ह्रीं मतिज्ञानावरणीकर्मरहित श्री सिद्धदेवेभ्यो नमः स्वाहा।

Closing : ॐ ह्रीं सम्य ···· ···· ।

Colophon : नहीं है।

५८६. सोलह थाली

Opening : श्री जिन नमि फुनि गुरु कौं नमो, मन धरि अधिक सनेह ।
सोलह थाली मंत्र की रचौं सुविधि कर एह ।।

Closing : ---- --- और जो एक घटाईये तो एक-एक घटाइ लिये ८ के अंक तहीं ।

Colophong : इति श्री १६ थाली पूर्णम् ।

५८७. विवाह विधि

Opening : स्वस्ति श्री कारकं नत्वा वर्द्धमान जिनेश्वरम् ।
गौतमादि गणाधीशं वाग्देवं विशेषत: ।

Closing : ··· ··· विपुलं नीलोत्पलालं कृतं स्वस्येकोचन,
भूवितैकपचितैः विद्युत्प्रभा भासुरैः ।

Colophon : Missing.

५८८. यन्त्रमंत्र संग्रह

Opening : यस्तु कोटिसहस्राणि मन्त्रतन्त्राण्यनेकशान् ।
तस्मै सर्वज्ञदेवाय देवदेवात्मने नमः ।।

Closing : अपुष्टधर्माणां च न दातव्यं इदं दृष्वा यदि कदाचिद्ददाति तदा महापातक प्रयुक्तो भवति एवं पंचनमस्कारचक्रं नानाक्रियासाधन स · · · वसारं समाप्तमिति ।

Colophon : समाप्तमभूत् ।

५८९. अकलंक संहिता (सारसंग्रह)

Opening : श्री मच्चातुर्निकायामरखचरवरं नृत्यसंगीतकीर्तिम्
व्याप्ता ········शालं सुरपटहादि सत्प्रतिहार्यम् ।
नत्वा श्री वीरनाथं भुवि सकलजनारोग्यसिद्धयै समस्तै-
रायुर्वेदोक्तसारैरिहममल(?) महासंग्रहं संलिखामि ।।

Closing : वातिसेव दोष २० बमेय प्रमेह प्रदर चैत्य कामले पांडु सह सह परिहर । इच्छा पथ्य ।

Colophon : वैद्यग्रंथं परिसमाप्तम् ।

५६०. आरोग्य चिन्तामणि

Opening :

आरोग्यं भवरोगपीडितनृणां यच्चिंतना जायते
तं सम्यगादिविधायिनं सुरनुतं नत्वा शिवं शाश्वतम् ॥
आयुर्वेदमहोदधेर्लघुतरं सर्वार्थदं सुप्रभं
वक्ष्येहं चरकादिसूक्तिनिचयैरारोग्यचिंतामणिम् ॥ ॥

Closing :

बालादिह प्रमाणेन पुष्पमालां सदीपकम् ॥
प्रगृह्य मुष्टिका भक्तं बलिहं यं सुमन्त्रिणा ॥ ॥

इति सूतिका बालरोगाध्यायः स्त्रिशः बालत्रंमम् ॥ इति श्री भट्टारविष्णुसुतपंडितदामोदरविरचितायामारोग्यचिंतामणिसंहितायामुत्तर-स्थानं षष्ठं समाप्तम् ॥ एवं ग्रंथसंख्या शतः ॥ १२०० ॥ परिधावि संवत्सरद माघ शुक्लपक्ष १४ चतुर्दशीयु गुरुवारदल्लु । मूडविद्रेयल्ले च्यारि श्रीधरभट्टनुबरदशा आरोग्यचिंतामणिसंहितेये मंगलमहा ॥ श्री वीतरागाय नमः ॥ करकृतमपराधं क्षंतुमर्हंति संतः ॥ विजयापुरीश्च भवनस्वर्गविलरोजिनः ॥ श्रीमन्मंदरमस्त-काग्रसदनः श्रीमत्तपोधासनः लोकालोक विभासि बोधनघनोलोकाग्र-सिंहासनः ॥ संधानैक्यकमुद्दमाणिकजिनः पयातु पायात्सनः ॥

श्रीजिनार्पणमस्तु ॥ श्री शुभमस्तु । श्री वीतरागार्पणमस्तु ॥ ॐ श्री वासुपूज्याय नमः ॥ सिध्यदिनदलूबंजेठु माडुवागल कदम प्रातः का लदलू मौनदि पांगि ॥

ॐ नमः औषधेभ्यः उज्जांबंतोमतिवययवीर्यं मंर्ककस्मिन् कुरुध्वं पथ दह दहन धारय तुभ्य नमः कांचीपुरवासिनः । दिमंत्रदि-मंत्रि सिक्षग द्रुतं छायाशुष्क कर्मठं भाक्षि अजमूथदिनस्य अग्ये सर्व्व ग्रहं ॥

देखें— जि० र० को, पृ० ३४ ।

५६१. कल्याण कारक

Opening :

श्रीमत्सुरासुरनरेन्द्रकिरीटकोटि–माणिक्यरश्मि निकरार्चि-
पादपीठः ।
तीर्थादिपूजितवपुर्यमो बभूव साक्षादकारणजग-
त्रितयैकबन्धुः ॥१॥

Closing : इति जिनवक्त्रनिर्गत सुशास्त्रमहाम्बुनिधेः सकलपदा-
र्थविस्तृततरंगकुलाकुलतः ।
उभयभवार्थसाधनतट द्वयभासुरतो निसृतमिदं हि
शीकरनिभं जगदेकहितम् ॥२॥

Colophon : इत्युग्रादित्याचार्यकृत कल्याणकोत्तरे नानाविधकल्पकल्पना-
सिद्धये कल्पाधिकार: पंचमोऽध्यायोऽप्यायित: पञ्चविंश परिच्छेद: ।

देखें— जि० र० को., पृ. ७६ ।

५६२. मदनकामरत्न

Opening : मृतसूतलोहाभ्ररोप्यं समांशम्
.... मृतस्वर्णगन्धं (?)
ससर्वं विनिक्षिप्य खल्वे विमर्द्य ततः स्वर्णतैलोद्भवेन त्रिवारम् ॥१॥

Closing : अहन्येव रज: स्त्रीणां भवन्ति प्रियदर्शनात् ।
वीर्यवृद्धिकरश्चैव नारीणां रमते शतम् ॥

Colophon : पञ्चबाणरमो नाम पूज्यपादेन निर्मित: ॥

५६३. निदान मुक्तावली

Opening : रिष्टं दोष प्रवक्ष्यामि सर्वशास्त्रेषु सम्मतम् ।
सर्वप्राणिहित दृष्टं कालारिष्टञ्च निर्णयम् ॥१॥

Closing : गुरौ मंत्रे देवेऽप्ययदनिकरैर्नास्ति भजनम्
तथाप्येवं विद्या अतिनिगदिता शास्त्रनिपुणै: ।
अरिष्टं प्रन्यर्थं सुभवमनुमारूढसुभगम् विचार्य्यंतच्छ्रवन्नि-
पुणमतिभि: कर्मणि सदा ॥
विज्ञाय यो नर: काललक्षणैरेवमादिभि: ।
न भूयो मृत्यवे यस्माद्विद्वान्कर्म समाचरेत् ॥

Colophon : इति पूज्यापादविरचितायां स्वस्थारिष्ठनिदानं समाप्तम् ।

५६४. रससार संग्रह

Opening : भद्रं भूयात् जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसंघातरश्मिप्रभवभानवे ॥१॥

Closing : ... .रत्नं रत्नत्रयारो .... ।

५९५. वैद्यकसार संग्रह

Opening : सिद्धौषधानि पथ्यानि रागद्वेषरुजां क्षये ।
जयन्ति यद्वचांसत्र तीर्थकृच्छ्रेस्तुव श्रिये ॥

Closing : पथायोग प्रदीपोऽस्ति पूर्वयोगा शतं तथा ।
तथैवायं विजयतो योगन्तिामणिश्चिरम् ॥
नागपूरि यतयो गणराज श्रीहर्षकीर्ति संकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे सप्तमोमिश्रकाध्याय: ॥

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरि पतपातया गच्छाय श्रीहर्षकीर्ति संकलिते वैद्यकसारसंग्रहे योगचिन्तामणौ मिश्रकाध्याय: समाप्त: । इति योगचिन्तामणि संपूर्ण ।

देखें, जि. र. को., पृ. ३६५ ।

५९६. वैद्यकसार संग्रह

Opening : यत्र चित्रा समयांति तेजासिजतमांसिच
मदीयस्तोदय वंद चिदानंदमयंमह ॥१॥

Closing : नागपूरियतयो गणराज श्रीहर्षकीर्ति मकलिते ।
वैदकसारोद्धारे सप्तमकोमिश्रकाध्याय ॥३०॥

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरियतपायतपागछाय श्री हर्षकीर्ति संकलिते वैद्यकसारसंग्रहे जोगचितामणौ मिश्रकाध्याय समाप्तम् ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्टा तादृशं लिखतं मया । यदिशुद्धं अशुद्ध वा मम दोषो न दियते ॥ मिति भाद्रवा शुक्ल १० भोमवासरे: संवत् १८५० साके १७१५ शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ॥

५९७. वैद्य विधान

Opening : महारस सिंधुर विधि: शुद्ध पारद षड्गुणोक्त सुरमी औषधीतद्र संयुक्त गोक्तं नवसरकं मणिशिला पचांगक टंकणं वज्र क्षारकलाश

कैविमलितं मंघार्घभाषं क्रमात् सर्वं खल्वसले विमर्द्दं ममलं योगादि-
म्हलो शुभे कन्या भास्कर हंस पादि मनसं ।

Closing : स्यास्स्वेदनं तदनुमर्दन मूउनेन, स्यादुत्थिता पतन रोद नियाम-
मनानि । संदीपनं गगन भक्षण मानमात्रा: सज्जारणा तदनुगर्भगता
घृतिश्च ॥ बाह्या द्रुति: सूतक जारणस्याद्रासस्तथा सारण कर्म
पश्चात् । संक्रामणावेद विधि: शरीरा योग: किलाष्टादश वेति
कर्म ॥२॥

विशेष—वैसाख कृष्ण द्वितीयायां समाप्तश्च शाली वाहन शक् १८४८ ॥
सन् १९२६ ईश्वी ।

५९८. विद्याविनोदनम

Opening : प्रप्रणम्य जिनं देवं सर्वज्ञं दोषवर्जितम् ।
सर्सवंशीति चतुरं वाराकल्पमकल्पकम् ॥

Closing : व्याध्युर्वीजकुठाररोषदण्ड जाति क्रूरदाम
भूद्यं वरूपम वावगाहनमिदं
भूपैरलं सेव्यताम् ॥

Colophon : इति श्रीमदर्हत्परमेश्वर चारु चरणारविन्द गन्धगुणानन्दित
मानसाशेषकला शास्त्र प्रवीण परमागमत्रयवेदि प्राणापायागमान्तर
समुदित वेद्य शास्त्राम्बुनिधिपारगम सर्वं विद्यानन्द मानस श्रीमदक-
लङ्क स्वामि विरचित महावैद्यशास्त्रे विद्याविनोदाख्ये अवगाहन
लक्षणं समाप्तम् ॥

देखें, जि. र. को., पृ. ३५६ ।

५९९: योगचिन्ता मणि

Opening : यत्र विभासमायांति, तेजांसि च तमांसि च ।
महीयंस्तवहं वंदे, चिदानंदमयंपहम् ॥

Closing : यथायोगप्रदायोस्ति पूर्वं योगसतं यथा ।
तथैवायं विश्वसतो योगचिंतामणिश्चिरम्

Colophon ; इति श्री नागाराचयो गणराज: । श्री हर्षकीर्ति संकलिते: वैद्यकसारो,द्धारे सप्तको मिश्रकाध्याय: ७ । इति श्री योगचिंताम-णिर्वैद्यकशास्त्रं संपूर्णम् ।
संवत् १८६६ मिती ज्येष्ठ शुक्ल ३ शुक्रवार कु सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ३२१ ।

६००. योगचिन्ता मणि

Opening : देखें—क्र० ५९९ ।

Closing : देखें—क्र० ५९९ ।

Colophon ; इति श्री योगचिन्तामणिर्वैद्यकशास्त्र संपूर्णम् । संवत् १९८५ का साल जेष्ट शुक्लमासे एकादशी वृहस्पति । लेखक भुजबल-प्रसाद जैनी मुकाम आरा नगरे श्री मनेजर भुजवली शास्त्री के संप्र-दाय में लिखा गया । इत्यलं भवतु शुभ: ।

६०१. आचार्य भक्ति

Opening : सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसम्पूर्णान् मुक्तियुक्तः सत्यवचनलक्षितभावान् ।।१।

Closing : ... . णिगगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।

इति आचार्यभक्ति: ।

देखें—जि. र. को., पृ. २५ ।

६०२. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धिप्रियै: प्रतिदिन प्रतिभासमानै:,
जन्मप्रबंधमथनै: प्रतिभासमानै: ।
श्री नाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्रायजनैर्वितनुभूपदवीक्षणेन ।।

Closing : तुष्टि: देशनया जनस्य मनसे येन स्थिर्तिविस्तृता,
सर्वं वस्तुविजानता समवता ये नक्षता कृष्णता ।
कल्याणकारेण येन महतां तत्त्वप्रणीतिः कृता,
ताथ हृतु जिनः समेशुभधियां ततः सतामीशिता ॥

Colophon : इति देवनंदि कृतिरियं कर्ममर्षडारचक्रं सम्पूर्णम् ।
दे०—जि० र० को०, पृ० १ ।

६०३. अष्टगायत्री टीका

Opening : ॐभूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गोदेवस्य धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयात् ।।१।।

Closing : श्रीनाभिभेरजिः पद्मप्रभेवा हेवाकिदंवासुरकिन्नरौघः ।
श्रीचारित्रास्तारतम्येरेण प्रभावदातावदतां शिवं वः ।।१।।

Colophon : इति जैनगायत्री षट् दर्शन अष्टमतयेन वेदांत रहस्येन तीर्थराजस्तुति समाप्तं ।। इति अष्ट गायत्री टीका समाप्तं ।। श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ ८ भौमवासरे श्री सम्वत् १९६२ ।

६०४. आत्मतत्वाष्टक

Opening : अनुपमगुणकोषं छिन्न संभोरूपाशम् ।,
तनुभुवन समानं केवलज्ञानभानुम् ।
विनमदमरवृंद संच्चिदानंदकंदं,
जिनवलसमतत्वं भावयाम्यात्मतत्वम् ।।

Closing : त्रिदशनुतमनिद्यं भवभयमलदूरं,
शास्वतानंदपूरं चिदमलगुणमूर्ति
बालचंद्रोत्कीर्ति विदितं सकलतत्वं-
भावयाम्यात्मतत्वम् ।।

Colophon : नहीं है ।

६०५. आत्मतत्वाष्टक

Opening : यदीतरागं वरचिन्मय बोधरूपम्,
एस्वर्णटंकसदृशं घनसारभूतम् ।
यल्लोकमात्र कथितं नय निश्चयेन,
तच्चिन्तयामि निजदेहगतात्मतत्वम् ।।

Closing : ये चिन्तयंति पदपिंड स्वरूपमेवम्,
शाश्वतं तदपितं मुनयो वदन्ति ।
यन्निर्विकल्प कवलेन समाधिजातम्,
तच्चिन्तयामि निजदेहगतात्मतत्वम् ।।

Colophon : नहीं है ।

६०६. आत्मज्ञान प्रकरण स्तोत्र

Opening : नमोभिः श्रीजपापाना ज्ञाताना वीतरागिणाम् ।
मुमुक्षुणामपेक्षायमात्मबोधो विधीयते ।।१।।

Closing : दिग्देशकाला .... अमृतो भवेत् ।।६८।।

Colophon : इति श्री गुरुपरमहंस श्री दिगम्बराम्नायपक्षसूरिभिः कृते आत्मज्ञानमहाज्ञानप्रकरणं स्तोत्रं समाप्तम् ।

६०७. भक्तामर स्तोत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्योतकं दलितपाप तमोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा
वालं वनं भवजले पततां जनानां ।

Closing : स्तोत्रस्रजं तवजिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं
तं मानतुङ्गमवशाः समुपैति लक्ष्मीः ।।

Colophon : यह ग्रंथ वीर सं० २४४० में लिखा गया ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२२ ।
(२) जि. र. को., पृ. २८७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १०६ ।
(४) रा० सू० ।।, पृ० ४६, ८३ ।
(५) रा० सू० ।।।, पृ० ११, ३५, १०५, २४१ ।
(६) प्र० जै० सा०, पृ० १६० ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 676.

६०८. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Closing : देखें, क० ६०७ ।

इति श्री मानतुंगाचार्यविरचिते भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।
संवत् १८८२ श्रावण द्वितीक वदी ।

युग्म सिद्धि गजमेदनी, संवत्सर इह सार ।
द्वितीक मास नभ तिथि, मुनि पक्ष रुक्मिण भरतार ॥१॥
सूर्य सुत शुभवार कहि प्रथम नक्षत्र घडी वांण ।
मंड योग षटयन मैं, लिख्यौ स्तोत्र हित जांण ॥२॥
आदि ५ दोहे ।

६०९. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Closing : देखें क० ६०७ ।

Colophon : इति भक्तमर स्तोत्र संपूर्णम् ।

६१०. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Closing : देखें, क० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुंगाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ।
संवत् १७६३ भादव वदी ४ दिने लिखतं अमरुसो नगरमध्ये ।

६११. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Closing : देखें, क० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुंगाचार्यकृत भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ।

६१२. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Closing । देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon । इति श्री मानतुङ्गाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ।

६१३. भक्तामरस्तोत्र

Opening । देखें, क्र० ६०७ ।

Closing । ... .ग्रंथ का थोडा थोडा फल विध सुय लिखा ऐसा जानना ।

Colophon । इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मानतुंगाचार्यविरचित समाप्तम् ।

६१४. भक्तामर स्तोत्र

Opening । देखें, क्र० ६०७ ।

Closing । भाषा भक्तामर कियो हेमराज हितहेत ।
जे नर पढ़ै सुभाव सो ते पावैं सिवखेत ।।४६।।

Colophon । इति श्री भक्तामर संस्कृतभाषा समाप्तम् ।

६१५. भक्तामर स्तोत्र

Opening । देखें, क्र० ६०७

Closing । देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon । इति मानतुङ्गाचार्यविरचित भक्तामर आदिनाथस्तोत्र संपूर्णम् ।

६१६. भक्तामर स्तोत्र

Opening । देखें, क्र० ६०७ ।

Closing । देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon । इति भक्तामरसंस्कृतसमाप्तम् ।

६१७. भक्तामर स्तोत्र सटीक

Opening । देखें क्र० ६०७ ।

Closing : ·········उस लक्ष्मी को विवश होकर इस स्तोत्र के पठन अध्ययन करने वाले पुरुष के पास आना ही पड़ता है ॥२८॥

Colophon : इति भक्तामरसमाप्त. ।
हस्ताक्षर बालकृष्ण-जैन धामम निवासी ।
मिती मार्गशीर्ष शुक्ला ९ गुरुवासरे सम्वत् विक्रम १६७१ इति शुभम् ।
मङ्गलमस्तु ।

६१८. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Closing : देखें क० ६०७ ।

इति मानतुङ्गाचार्यकृत भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ।

६१९. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें क० ६०७ ।

Closing : देखें, क० ६०७ ।

Colophon : इति श्री मानतुङ्गाचार्यविरचितं श्री भक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

६२०. भक्तामर स्तोत्र टीका

Opening : देखें, क० ६०७ ।

Colsing : देखें क० ६२६ ।

Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पंडित हेमराजकृत संपूर्णम् । संवत् १६१६ तत्र माघकृष्ण ६ बुधवासरे लिखितं अंबाशंकर ।

६२१. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : चंदन अगर लवंग वालछड़ मांजीतिल अरलु
मिठाई दूध घृत इनकी आहुति दशांश होमिये

चक्रेश्वरी प्रसन्नं भवति तत्काल सिद्धि:
चतुष्कोण कडे मध्ये ह्रीं पंचदश द्वितीये
इर तृतीये लोकपाल चतुर्थे नवग्रहाः पंचमे ।।

Closing : अष्टदलकमलवत् गोलाकारं कृत्वा मध्ये ।
ॐ ह्रीं लक्ष्मी प्राप्त्यै नमः लिखेत् पुनः चतुष्कं कृत्वा ।
षोडश श्री कारेणवेष्टि तंत्रद्धिमंत्रेण वेष्टयेत् ।।

Colophon : संवत् १९६७ फाल्गुन शुक्ला १२ रविवासरे लिपिकृतं पं० सीताराम शास्त्री ।।

६२२. भक्तामर ऋद्धि मंत्र

Opening : य: संस्तुत: ..... प्रथमं जिनेन्द्रं ।।२।।

Closing : अष्टदलकमलं कृत्वा तन्मध्ये ॐ ह्रीं लक्ष्मी प्राप्ति नमः लिखित्वाय अवादसोडश श्रीकारेण वेष्टित तदुपरिमृद्धि मत्र वेष्टित अयंत्र पूजावाय की एकाव्यमृद्धि मंत्रवार १०८ नित्य जपवाथी दिन ४८ सर्वसिद्धि मनोवांछित कार्य सिद्धि होय जिह नैव सिकरणों होय- तिको नाम चितिज मनोवांछित सिद्धि होय ।। इति काव्य सपूर्णम् ।

Colophon : इदं पुस्तकं लिखितं नीलकठवासेन ऋषभदास नामधेय अस्य अर्थे लेखनीकृतं ।। संवत् १९३० मिति आश्विन शुक्ल अष्टम्या वासर शुभं भूयात् ।

६२३. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : देखें क्र० ६२२ ।

Closing : देखें क्र० ६२२ ।

Colophon : देखें क्र० ६२२ ।

६२४. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६०७ ।

Closing : देखें—क्र० ६०७ ।

Colophon : नहीं है ।

विशेष—इसमें सभी काव्यों के मत्रचित्र (मंडल) बने हुए हैं ।

६२५. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : ॐ णमो अरिहंताणं ।१। णमो जिणाणं ।२। ॐ णमो ओहिजिणाणं ।३। ॐ णमो परमोहि जिणाणं ।४। ॐ णमो तु सव्वों हि जिणाणं ।५।

Closing : अयं मंत्रो महामंत्रः सर्वपापविनाशकः ।
अष्टोत्तरशतं जप्तो धत्ते कार्याणि सर्वशः ॥

Colophon : नहीं है ।

६२६. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : देखें—क्र० ६०७ ।

Closing : देखें—क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुङ्गाचार्यविरचिते भक्तामरस्तोत्र सिद्धि मंत्र मंत्र विधि विधान सपूर्णम् ।

विशेष—इसमें सभी ऋद्धिमंत्रचित्र रंगीन हैं ।

६२७. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ।

Closing : ईष्टार्थसंपादिनी समापातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ।१२। इत्याशीर्वादः ।

Colophon : इति पद्मावती पूजा चारूकीर्तिकृत सपूर्णम् । मिती माघ-बदी १० बार बुध संवत् १६६६ आरा नगरमध्ये लिखतं भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति अंगरेजी राजधानी मे काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुस्करगच्छे लोहाचार्याम्नाये भट्टारक राजेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० मुनीन्द्रकीर्ति समये ।

विशेष—इसमें पद्मावती पूजा भी है ।

६२८. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : ... ... ति जन सहसा ग्रहीतुं । अथ रिद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिति णमं ... — ।

Closing : यह चौवालीसमा काव्य मंत्र जपै पढ़ै तै समुद्र जिहाज न डूबै पारलगै आपदा मिटै काव्य उद्धृत ...... ।

Colophon : अपूर्ण ।

६२९. भक्तामर टीका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : भक्तामर टीका सदा, पढ़ै सुनै जो कोई ।
हेमराज शिवसुख लहै, तसमनबंछित होई ।।

Colophon : इति श्री भक्तामरटीका समाप्ता ।।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२३ ।

६३०. भक्तामर टीका

Opening : श्री वर्द्धमानं प्रणिपत्य मूर्ध्ना दोषैर्व्ययेतं ह्यविरुद्धवाचम् ।
वक्ष्ये फलं तत् वृषभस्तवस्य सूरीश्वरैर्यत् कथित क्रमेण ।।

Closing : वर्णितः कूर्म्माम्मसोनाम्नः वचनात्मयकारि च ।।
भक्तामरस्थ सद्वृतिः रायमल्लेन वर्णिता ।।
त्रिभिः कुलकम् ।

Colophon : इति श्री ब्रह्म श्री रायमल्लविरचित भक्तामरस्तोत्रवृत्तिः समाप्ताः ।।

६३१. भक्तामर स्तोत्र टीका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६२९ ।

Colophon : इति श्री भक्तामर जी का टीका उक्त वार्तिक ग्रथ बालबोध हेमराजकृत संपूर्णम् । संवत् १९०८ माघसुदी १० बुधवार लि० पं० जमनादास दिल्ली मध्ये धर्मपुरा आरहमल का मंदिर मै ।

६३२. भक्तामर स्तोत्र वचनिका

Opening : देव जिनेसुर वंदिकरि, वाणी गुरु उरलाय।
स्तोत्र भक्तामर तणी, करू वचनिका भाय ॥

Closing : संवत्सर शतअष्टदश, सत्तरि विक्रमराय।
कातिकवदिबुधद्वादशी, पूरन भई सुभाय ॥

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य कृत भक्तामर स्तोत्र की देशभाषामय वचनिका समाप्ता। संवत् १९४४ मिति फागुण सुदी १० ।

६३३. भक्तामर स्तोत्र सार्थ

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें क्र० ६२९ ।

Colophon : इति श्री भक्तामर जी की टीका संयुक्त समाप्तम् ।

६३४. भक्तामर स्तोत्र का मंत्र संग्रह

Opening : बुद्धया विनापि ···· ···· सहसा ग्रहीतुम् ॥

Closing : बहु भक्त ···· ···· ।

६३५. भैरवाष्टक

Opening : अतितीक्ष्णमहाकायं - ···· मानमद्दतमोहरः ॥१॥

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रं बंधी मुञ्चति बंधनात् ।
राजाग्नि हरिभयं भैरवाष्टककीर्तिनात् ॥११॥

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

६३६. भैरवाष्टक स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६३५ ।

Closing : देखें क्र० ६३५ ।

Colophon : इति भैरवाष्ठकस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

६३७. भैरवपद्मावती कल्प

Opening : ॐकारविष्टिसंयुक्तैः छ्वजैः यंत्र समामकं
लिखित्वा परिभूताणां बद्धमुच्चाटनं रिपोः ॥१॥

Closing : यावद्वाग्निधिभूधरताराणगगनचंद्रविमपतयः
तिष्टतु भुवितावदयं भैरवपद्मावती कल्पः ॥५६॥

Colophon इत्युभय भाषा कविशेखर श्री मल्लिषेण सूरि विरचिते भैरवपद्मावती कल्प समाप्ताः ॥ श्रीरस्तुवाचकानां मिति फाल्गुण कृष्ण चतुर्दश्यां १४ बुधवासरे श्री नीलकंठदास स्व पठनार्थम् संवत् १९५६ ।

६३८. भैरवपद्मावती कल्प

Opening : श्री मच्चातुर्निकायाऽमर --- वक्ष्यते मल्लिषेणे ॥१॥

Closing : जब तक समुद्रपर्वत तारागण आकाश चंद्र और
सूर्य रहें तब तक यह भैरव पद्मावती कल्प भी रहे ॥

Colophon : इति उभयभाषा कविशेखर श्री मल्लिषेणसूरि विरचिते भैरवपद्मावती कल्प की साहित्यतीर्थाचार्य प्राच्य विद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखरशास्त्रीकृत भाषाटीका में गारुडाधिकार नामका दशमपरिछेद समाप्तम् । इति संपूर्णम् । शुभमिति कार्तिकशुक्ला ४ वीर-संवत् २४६४ विक्रम संवत् १९९३ ।

देखें—(१) जि. र. को., पृ. २९९ ।
(2) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 678.

६३९. भजन संग्रह

Opening : हो वो सिले मोहे तेरि सगरी ॥टेक॥

Closing : तुम सुमिरत बत रिधि सिधि पसरी,
अजितहि बत कर अर पकरी ॥सि० ॥४॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

६४०. भक्तिसंग्रह टीका

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृतिसमुदयान् साधितात्मस्वभावान् ।
वंदे सिद्धि प्रसिद्धयै तदनुपम गुणप्रग्रहाकृति तुष्टः ।।

Closing : दुखकरकउ कम्मरकउ बोहिलाओ सुगइगमणं समहिमरण जिणगुण संपति होउ मज्झम् ।

Colophon : इति नंदीश्वर भक्तिः । मूल श्लोक ४७० संख्या ।
इति दशभक्ति पाठ की अक्षरार्थ भाषा बालवबोधार्थ पंडित शिवचंद्र कृत समाप्तम् । संवत् १६४८ मार्ग० वदी ६ शनौ शुभं भूयात् ।

६४१. भाषापद संग्रह

Opening : दरसन भयो आज शिखिर जी के ।
बीस कोस पर गिरवर दीखे,
भाजे भरम सकल जी के ।।

Closing : कुंदन ऐसी अनर्थ माया, विधिना जगमें विस्तारी ।
अजठारह नाते हुए, जहां एक नहीं जारी ।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

६४२. भूपालचतुर्विंशतिकामूल

Opening : श्री लीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदम्,
वाग्देवी रतिकेतनं जयरमा क्रीडानिधानं महत् ।
स स्यात्सर्व महोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलं छाया जिनांघ्रिद्वयम् ।।

Closing : दृष्टस्त्वं जिनराजचंद्रविकसद्भूपेन्द्र नेत्रोत्पले,
स्नातस्त्वन्नुति चंद्रिकांभसि भवद्विद्वच्चकोरोत्सवे ।
नीतश्चाद्य निदाघजः क्लमभरः शांतिमया गम्यते,
देवत्वद्गतचेतसैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ।।

Colophon : इति भूपाल चौबीसी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
देखें—(१) रा० सू० प्र० र०, पृ० १२१ ।

(२) जि० र० को०, पृ० २९८ ।
(३) रा० सू० III, पृ० १०६, २४२ ।
(४) आ० सू० पृ. १०९ ।
(५) जै० ग्र० प्र० सं० I, पृ० ६ ।

६४३. भूपाल स्तोत्र

OPening : देखें—क्र० ६४२ ।

Closing : उपशम इति मूर्तिलंलित चंद्रान्मुनीन्द्रा
दजनि विनयचद्रः सच्चकोरैकचन्द्रः ।
जगदमृत सगर्भाः शास्त्रसंदर्भ गर्भाः,
शुचि चरित चरिष्टमोर्यस्पधिन्वति वाच ॥

Colophon : इति श्री भूपालस्तोत्र संपूर्णम् । मिति प्रथमभाद्रपद कृष्णा प्रतिपक्षभृगो संवत् १९४७ शुभं भवतु ।
सन्दर्भ के लिए देखें—क्र० ६४२ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms. 678.

६४४. भूपालस्तोत्र टीका

Closing : देखें—क्र० ६४२ ।

Closing : ········ ग्रीष्मभवः प्रस्वेदभरः शांतिनीतः समाप्तिं प्रापितः भो देव मया त्वगदृतचेतसारावगम्यते भवतः तवपुनर्दर्शनं भूयात् अस्तु इत्येवस्तवनकत्रयि चित्तं त्वय्येवगतं चेतो यस्य सः तेन ।

Colophon : इति भूपालस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् ।

६४५. भावनाष्टक

Opening : मुनिस्तुत्य चिन्लक्ष्मीरेजभृंगम्,
परित्यक्त रागादिदोषानुसंगम् ।
जगद्वस्तु विद्योतज्ञानरूपम्,
सदा पावनं भावयामि स्वरूपम् ॥

Closing : स्वचिद्भावना-संभवानन्तशक्ति,
निरासे निरीहं परिआप्यमुक्तिम् ।

त्रिलोकेश्वरं निश्चलं निस्वरूपम्
सदा पावनं भावयामि स्वरूपम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६४६. चन्द्रप्रभ स्तोत्र

Opening : शशांकशंखगोक्षीरहारधवलगात्राय ... ... इत्यादिना ।

Closing : ... ... घेघे आं क्रों क्षीं क्षूं क्षौं क्षः ज्वालामालिनिज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति चंद्रप्रभस्तोत्र ज्वालामालिनि स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १२० ।

६४७. चन्द्रप्रभशासनदेवी स्तोत्र (ज्वामामालिनी स्तोत्र)

Opening : देखें—क्र० ६४६ ।

Closing : घे घे, ख: ख: ख: ख: ह्रीं ह्रीं ह्रां-४ आं क्रों ह्रीं क्षां क्षीं क्ष्वीं क्ली क्लूं ह्रौं ह्रीं क्ष्वीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चंद्रप्रभुशासनदेव्या स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० १२१ ।
(२) रा० सू० III, पृ० २३६ ।

६४८. चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

Opening : आद्योवर्षसहस्रमौनममलप्राप्तो जिनो द्वादश:,
द्विसप्तैव च संभवोष्ट च दश: श्री नंदनो विंशति: ।
छद्मस्थो सुमतिश्चषष्ठजिनप: षण्मा समासन्नस्थिति:,
वर्षाण्यत्रनवैव सप्तमजिनो मासत्रयं चद्रम: ॥

Closing : एते सर्वजिना घातकलुसषण्यर्थ्यक्रमांभोरुहा। ।
तज्ञाश्चविरुद्धवाच्यरहिता: कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशतिस्तोत्र संपूर्णम् ।

६४६. चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

Opening : आदिनाथं जगन्नाथं अरनाथं तथा नमि ।
अजितं जितमोहारिं पार्श्वं वन्दे गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीर्विलसति लालया ।
क्षुद्रोपद्रवभूतादि, नश्यति व्याधिवेदना ॥७॥

Colophon : इति चतुर्विशतिजिनस्तोत्रं समाप्तम् ।

६५०. चतुर्विंशति जिन स्तुति

Opening : सद्भक्तानतमौलिनिर्जरवरभ्राजिष्णुमौलिप्रभा,
संमिश्रारुण दीप्ति शोभिचरणां भोजद्वय: सर्वदा ।
सर्वज्ञ: पुरुषोत्तम: सुचरिते धर्मार्थिनां प्राणिनां,
भूयाद्भूरिविभूतये मुनिपति: श्री नाभिसूनुर्जिन: ॥

Closing : यस्या: प्रसादात्परिपूर्णभावं भूत: सुनिर्विधूतयास्तवोयं ।
जगत्त्रयी जन्तुहितैकनिष्टा वाग्देवतासाजयतादजस्रं ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिनस्तुति: ।

६५१. चरित्र भक्ति

Opening : येनेन्द्रान् भुवनत्रयस्य — ·· रभ्यर्चनम् ॥१॥

Closing : ··· — समाहिमरणं जिणगुणसंपत्तिहोउ मत्क ।

Colophon : इति चारित्रभक्ति: सम्पूर्णम् ।

६५२. चौबीस तीर्थङ्कर स्तोत्र

Opening : सिद्धप्रियैप्रतिदिनं प्रतिभासमानै: — ··· ··· ।
— ···· ···· प्रापेजनैर्विनुतनुपदवीक्षणेन ॥

Closing : तुष्टिं देसनयाजनस्य मनसे येनस्थितिवल्लसिता ।
········· ·· शुभधियातात सतामीप्सित: ।

Colophon : इति श्री देवनंद्याचार्य कृत चौबीस महाराज आजमक काव्यमई महास्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि० जि. ग्र. र., पृ. १२८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ११४ ।

६५३. चिन्तामणि अष्टक

Opening : वंदावन्नि सुरेन्द्रनमौलिसुधामवदांभोनिधिमौक्तिकचारुमणि-
प्रभपुष्टपदम् ।
श्रीचिंतामणिमेत्वमहाभि सुराब्धिजलैफेनसुधाकरचंद तदाप्त-
यशो बिमलैः ॥

Closing : स्याद्वादामृतासिक्तफणि — — सुवांछितभावभूतैः ॥

Colophon इत्यष्टकम् ।

६५४. चिन्तामणि स्तोत्र

Opening : श्री सुगुरु चिंतामणि देवसदा मुझसकल मनोरथपूर्णमुदा ।
कुलकमला दूरज होयकदा जपता प्रभुपारस नाम यदा ॥

Closing : अमचोप्रभु पारस आसफलो भणतापसवासर वास भलो ।
मन मिन सुकोमल होयमिलो कीरति प्रभु पारसनाथ किये ॥

Colophon : चिंतामणि स्तोत्र संपूर्णम् ।

६५५. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : जगद्गुरुं जगद्देवं जगदानंददायकं ।
जगद्वं जगन्नाथं श्री पार्श्वसंस्तुवे जिनं ॥१॥

Closing : दर्भस्वस्तिकनैवेद्य — — अर्घयाम्यहम् ।
इति दिग्कालार्चनविधानम् ।

Colophon : इति चिंतामणिपूजाविधि सम्पूर्णम् ।
संवत् १८९३ वर्षे कार्तिककृष्णा एकादशी कों सम्पूर्ण भवे ।
लिखतं सारजीत जैसवाल पठनपाठन निमित लिखी ।

६५६. दशभक्त्यादि महाशास्त्र

Opening : नमः श्री वर्द्धमानाय चिद्रूपाय स्वयम्भुवे ।
सहजात्मप्रकाशाय ध्वस्तसंसार भेदिने ।।

Closing : वर्द्धमानमुनीन्द्रेण विद्यानन्दार्यबन्धुना ।
लिखितं दशभक्त्यादिदर्शनं जनता... ।।

Colophon : इत्ययं समाप्तो ग्रंथः । अस्तु ।

६५७. देवी स्तवन

Opening : श्री मद्देवपतिप्रसन्नमुकुट प्रद्योतरत्नप्रभा,
मालामानितपादपद्मपरमोत्कृष्टप्र रामासुरा ।
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती,
समरागमशीर्षविस्तरवत सेवासमीपस्थितम् ।।

Closing : इदमपि भगवतिवृन्तपुष्पालकारलंकृतम् ।
स्तोत्रं कंठे करोति यश्च दिव्य श्रीस्त समाश्रयैति ।।

Colophon : इति देव्यः स्तवनम् ।

६५८. एकीभाव स्तोत्र

Opening : एकीभावं गत इव — — कर्मतापहेतु ।।१।।

Closing : वादिराजमनु — ... मनुभव्यमहायः ।।२६।।

Colophon : इति श्री वादिराजदेवविरचितं एकीभाव महास्तवनं समाप्तः ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३० ।
(२) जि० र० को०, पृ० ६२ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० ११० ।
(४) रा० सू० II, पृ० ४६, १०७, ११२, २७४ ।
(५) रा० सू III, पृ० १०१, १२३, २३८, ३०८ ।
(६) आ० सू०, पृ० ११ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 630

६५९. एकीभावस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति वदि (राज) मुनि कृत एकीभाव स्तोत्र सम्पूर्णम्।

६६०. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति श्री वादिराजकृतं एकीभावस्तोत्रं संपूर्णम् ।

६६१. एकीभावस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : शब्दिकानां मध्ये तार्किकानां मध्ये काव्यीश्वराणां मध्ये भव्यसहायानां मध्ये वादिराज प्रधान इत्यर्थः ।

Colophon : इति वादिराज कृतं एकीभाव टीका संपूर्णम् ।

६६२. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्रं समाप्तम् ।

६६३. एकीभाव स्तोत्र सटीक

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : भव्यसहायः तं वादिराजं अनुवर्तते भव्यानां सहायः संघातः वादिराजा न्यून इत्यर्थः । वादिराज एव शब्दिकः नान्यः, वादिराज एव तार्किकः नान्यः, वादिराज एव काव्यकृतः नान्यः, वादिराज एव भव्यसहायः नान्यः इति तात्पर्यार्थः अनुयोगे द्वितीया ।

Colophon : इति वादिराजसूरि विरचितं एकीभावस्तोत्रटीका सम्पूर्णम् । भूयात् ।

६६४. गौतम स्वामी स्तोत्र

Opening : श्रीमदेवेन्द्रवृंदा ··· ··· पार्श्वनाथोऽनिशम् ॥१॥

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रमंत्रं ते सारतोम्हवम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्वं भवसर्थार्थिसिद्धये ॥६॥

Colophon : इति श्री गौतमस्वामी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६६५. गीतवीत राग

Opening : विद्याव्याप्तसमस्तवस्तुविसरो विश्वैर्गुणैर्भासुरो,
दिव्यश्रव्यवचः प्रतुष्टनृसुरः सद्ध्यानरत्नाकरः ।
यः संसारविषाब्धिपारसुतरो निर्वाणसौख्यादरः
स श्रीमान वृषभेश्वरो जिनवरो भवत्याद्वारान् पातु नः ॥१॥

Closing : गंगेयवंशाम्बुधिपूर्णचन्द्रो यो देवराजोऽजनि राजपुत्रः ।
तस्यानुरोधेन च गीतवीतराग-प्रबन्धं मुनिपश्चकार ॥१॥
द्राविडदेशविशिष्टे सिंहपुरे लब्धशस्तजन्मामो ।
बेलगोलपण्डितवर्यश्चकार श्रीवृषभनाथवरचरितम् ॥२॥
स्वस्तिश्रीबेलगुले दोर्बलिजिननिकटे कुन्दकुन्दान्वये
मोऽभूत्स्तुत्यः पुस्तकाङ्कश्रुतगुणाभरणः इयातदेशीगणार्यः
विस्तीर्णाशिषरीतिप्रगुणरसभृतं गीतयुग्वीतरागम्,
शस्तादीशप्रबन्धं बुधनुतमतनोत् पण्डिताचार्यवर्य ॥

Colophon : इति श्रीमद्रायराजगुरुभूमण्डलाचार्यवर्यमहावादवादीश्वरराय-वादिपितामहसकलविद्वज्जनचक्रवर्तिबल्लालरायजीवरक्षापाल (?) कृत्या-द्यनेकविरुदावलिविराजच्छ्रीमद्बेलगोलसिद्धसिंहासनाधीश्वर श्रीमद-भिनवचारुकीर्तिपण्डिताचार्यवर्यप्रणीतगीतवीतरागाभिधानाष्टपदी समाप्ता।

६६६. गोम्मटाष्टक

Opening : तुभ्यं नमोऽस्तु शिवशंकरशंकराय,
तुभ्यं नमोऽस्तु कृतकृत्यमहोन्नताय ।
तुभ्यं नमोस्तु घनघातिविनाशकाय,
तुभ्यं नमोस्तु विभवे जिनगुम्मटाय ॥

Closing : तुभ्यं नमो निखिललोकविलोकनाय,
तुभ्यं नमोस्तु परमार्थगुणाष्टकाय ।
तुभ्यं नमो केवलुगुलाधिसाधनाय,
तुभ्यं नमोस्तु विभवे जिन गुम्मदाय ।।

Colophon : नहीं है ।

६६७. गुरुदेव की विनती

Opening : जयवंत दयावंत सुगुरुदेव हमारे ।
संसार विषमसार ते जिन भक्त उद्धारे ।।टेक।।

Closing : इहलोक का सुख भोग सुरलोक में जावे,
नरलोक में फिर आयकें निर्वान कों पावें ।।
.... जयवंत दयावंत ।।३२।।

Colophon : इति गुरावली संपूर्ण ।

६६८. जिनचैत्य स्तव

Opening : वंदौं श्रीजिन जगतगुरु, उपदेशक शिवपंथ ।
सम श्रुतिशासन तें रचूं, जिन चैत्यस्तव ग्रन्थ ।।

Closing : अठारै से के ऊपरै, लग्यौ बियासीसाल ।
गुरु कातिग वदि अष्टमी, पूरण कियौ सुकाल ।।

Colophon : इति श्रीजिनचैत्यस्तव ग्रन्थ दिवान चंपाराम कृतौ समाप्ता शुभमस्तु । संवत् १८८३ मिति कार्तिक कृष्ण अष्टमी गुरुवार लिखतम् खरगराय श्री वृंदावन मध्ये लिखाइतं श्री दिवान चंपाराम जी ।

६६९. जिनदर्शनाष्टक

Opening : अद्याखिलं कर्मजितं मयाद्यमोक्षो न भूतो ननुभूतपूर्वः ।
तीर्णोभवार्णोनिधिरद्यघोरो जिनेन्द्रपादांबुजदर्शनेन ।।

Closing : अद्याष्टकं निर्मितमुक्तसारैः,
कीर्तिस्वनांतैरमलैर्मुनीन्द्रैः ।

यो धीयते नित्यमिदं प्रकीर्त्तै,
पद्मामको तै परमालयंतै ॥

Colophon : इति जिनदर्शाष्टकं समाप्तम् ।

६७०. जिनेन्द्र दर्शन पाठी

Opening : णमो अरिहंताणं .... णमो लोए सव्वसाहूण ॥

Closing : जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्मरोगं जरातंकं हन्यते जिनदर्शनात् ॥

Colophon : इति दर्शन समाप्तः ।

६७१. जिनेन्द्र स्तोत्र

Opening : दृष्टं जिनेन्द्रभवनं .... विराजमानम ॥१॥

Closing : श्रेय: पदं ... . प्रमानुत ॥११॥

Colophon : इति दृष्टं जिनेन्द्रस्तोत्रं संपूर्णम् ।

६७२. जिनवाणी स्तुति

Opening : माधुरी जिनेसुर वानी, गुरु गनधर करत बखानी हो ॥

Closing : चारों जोग प्रयोग कों, औ पुरान परमान ।
अब नमत नरिंद्रप्रीतनित, सदा सत्य सरधान ॥

Colophon : इति संपूर्णम् । माघशुक्ल १ सं० १९६३ सोमवार शुभं । हरीदास प्यारा ।

६७३. जिनगुण स्तवन

Opening : तंबगतभवतापावौ प्रणम्य सम्यग्जिनेन्द्रवरपादौ ।
भक्तागुणमण्युवधे: विमलगिरपिरपि स्तुतिमहं विदधे ॥१३॥

Closing : इत्यर्हन्तं स्तुत्वा स्वानालोचयतिय: सुधी दोषान्
तद्भुवमेनस्तस्मिन्बंधनोपैति रज इवास्निग्धे: ।।

Colophon : इति जिनगुणस्तवनपूर्विकालोचना समाप्तम् ।

६७४. जिनगुण सम्पत्ति

Opening : विबुधपति खगपनरपति धनदोरगभूतपक्षपति महितम् ।
अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामयम् ।।

Closing : इक्षो विकाररसप्राप्त गुणेन लोके,
पिष्टादिक मधुरतामुपयाति यद्वत् ।
तद्वच्च पुण्यपुरर्षस्थितानि नित्यम्,
जातानि तानि जगतामिह पावनानि ।।
इत्यर्हतांश भवतां च महामुनीना,
प्रोक्ता ममात्र परिनिर्वृत भूमिदशा: ।
ते मे जिनाजित भया मुनयश्च शान्ता,
दिश्या सुराशुभगति निवद्यसौख्यम् ।।

Colophon : नही है ।

६७५. जिनस्तोत्र

Opening : उपकनेमुनेर्श्वस भवनत्रययान्वित: ।
विरतो विषयासगे प्रविष्ट: कैकसीसुत: ।।

Closing : आसमाप्रदशास्योपि स्थित्वाकैलाशमर्हते ।
प्रणिवसतिमदेशं प्रपद्यवमि वांछितम् ।।

Colophong : नही है ।

६७६. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : परमेष्ठिनमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्र पंजराभं स्मराम्यहम् ।।

Closing : श्री रुद्रपल्लीय वरेण्य गण्ये देवप्रभाचार्य पदाजहं स: ।
वादीन्द्रचूडामणिराष जैनी जीयाद श्री कमल प्रभाख्य: ।।

Colophon : इति श्री जिनपंजरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६७७. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्री अर्हं अर्हंद्भ्यो नमो नम: ।।

Closing : यस्मिन् गृहे महाभक्त्या यंत्रोयं पूजते बुध: ।
भूतप्रे .... ।।

Colophon : Missing.

६७८. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रां श्री ह्रूं अर्हद्भ्यो नमो नम: ।

Closing : प्राप्तसमपुच्छीय लक्ष्मीमनोवंछितपूरानाय ।।२८।।

Colophon : इति जिनपंजर संपूर्णम् ।

६७९. ज्वालामालिनी स्तोत्र

Opening : ॐ नमो भगवते श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशांकशंखगोक्षीर-हारधवलगात्राय घातिकर्मनिर्मूलछेदनकराय ... ।

Closing : ... ... हुरू हुरू: स्फुत स्फुट: घे घे आँ क्रों क्षीं क्षूं क्षूं क्षी क्षीं ज्वालामालिनि ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनि स्तोत्रं संपूर्णम् । शुभमस्तु ।

६८०. ज्वालामालिनी देवी स्तुति

Opening : देखें--क्र० ६७९ ।

Closing : देखें--क्र० ६७९ ।

Colophon: इति श्री चंद्रप्रभतीर्थंकर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल-दु:खहर मंगलकर विजयकरस्त स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६८१. ज्वालामालिनी कल्प

Opening : चंद्रप्रभजिननाथं चंद्रप्रभमिद्रनंदिमहिमानम् ।
ज्वालामालिन्यर्चितचरणसरोरुहद्वयं वंदे ॥१॥

Closing : ... उरगक्रूरग्रहशांतिं कुरु—अनेन मंत्रेण पुष्पाम् क्षिपेत् ।

Colophon : संपूर्णो ।

देखें—Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 647.

६८२. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिंदिमङ्घ्रिपद्मं ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु ।
पोतयमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥

Closing : जननयनकुमुदचन्द्रप्रभासुराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचयाः अचिरान् मोक्षं प्रपद्यंते ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिरस्तोत्रम्

देखें —(१) दि० जि० ग्रं० र०, पृ० १३७ ।
(२) जि० र० को, पृ० ८० ।
(३) रा० सू० II, पृ० ४६, ६७, १०९ ।
(४) रा० सू० III, पृ० १०१, ११२ ।
(५) आ० सू०, पृ० २४ ।
(६) प्र० जै० सा०, पृ० ११३ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 633

६८३. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें क्र० ६८२ ।

Closing : देखें क्र० ६८२ ।

Colophon : इति कल्याणमंदिरजीसंस्कृतसमाप्तम् ।

६८४. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति कल्याणमंदिर स्तोत्रं संपूर्णम् । संवत् १७३१ वर्ष मार्गशीर्षमासे कृष्ण चतुर्दशां(श्यां) चंद्रवासरे लिपिकृता केशवसागरेण ।

६८५. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तवनं संपूर्णम् । पं० हेमसंकुल-गणियोग्यं चंद्रजय गणिना लिखितम् ।

६८६. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्रं समाप्तम् । लिखत जमनादास सुश्रावककुले हूंसार नगरे स्थान संवत् १८८७ मगशिर सुदी १२ सोमवारे ।

६८७ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कुमुदचन्द्राचार्य कृत श्री कल्याणमंदिर स्तोत्रम् ।

६८८. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : .... पुनः किं भूताः भव्या विगलितमलनिचयाः स्फुटितपापसमूहा. ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर टीका समाप्ता सम्वत् १९२३ ।

६८९. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।
Closing : देखें, क्र० ६८२ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर स्तोत्र संपूर्णम् ।

६९०. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।
Closing : देखें, क्र० ६८२ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर स्तोत्रं समाप्तम् ।

६९१ भल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।
Closing : इह कल्याणमंदिर कियो कुमुदचन्द्र की बुद्धि ।
भाषा करत बनारसी कारणसमकित सुद्धि ॥
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

६९२ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।
Closing : देखें क्र० ६८२ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिरस्तोत्रसंपूर्णम् ।

६९३ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।
Closing : देखें, क्र० ६८२ ।
Colophon : इति श्री कुमुदचंद्रमुनि विरचितं कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

६९४ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : परम जोति परमात्मा परम ग्यान परवीन ।
वंदू परमानंदमय घट घट अंतरलीन ॥१॥

Closing : प्रगटरसगिनं तै ... . ।

Clophon : अनुपलब्ध ।

६९५ कल्याणमंदिर वचनिका

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : ...., ... मल कहिये पाप के निचया: समूह ही ते भव्य जैसे हैं।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषाटीका समाप्ता ।

६९६. कल्याण मन्दिर सार्थ

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६६५ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जी की टीका सहित समाप्तम् ।

६९७. क्षमावणी आरती

Opening : उनतीस अंग की आरती, सुनो भविक चितलाय ।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भो (भव) पाय ॥

Closing : दोष न कहियो कोई, गुणग्राही पढ़े भावसो ।
भूल चूक जो होइ, अरथ विचारि कै सोधियो ॥२३॥

Colophon : इति क्षमावणी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।

६९८. क्षेत्रपाल स्तुति

Opening : जिनेन्द्र धर्म के सदैव रक्षपाल जी ।
बड़े दयाल भक्तपाल क्षेत्रपाल जी ॥टेक॥

Closing : जिनेन्द्र द्वार रक्षपाल क्षेत्रपाल जी,
तुम्हें नमें सदैव भव्यवृंद बाल जी ।
कृपा कटाक्ष हेरिए अहो कृपाल जी
हमें समस्त रिद्धि सिद्धि दो दयाल जी ।

Colophon : इति क्षेत्रपाल जी की सैर पूर्ण ।

६९९ काष्ठासंघ गुर्वावली

Opening : सम्प्राप्तसंसारसमुद्रतीरं, जिनेन्द्रचन्द्रं प्रणिपत्य वीरम् ।
समीहितादयं सुमनस्तरूणां, नामावलि वच्मित मां गुरुणाम् ॥

Closing : ....ससदि विचित्पार्श्ववरं महिमातदिमारोपि निपुणम् ।

Colophon : नहीं है ।

७००. लघु सहस्त्र नाम

Opening : नमः त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञाय महात्मने ।
वक्ष्ये तस्य नामानी मोक्षसौख्याभिलाषया। ।१॥

Closing : नामाष्टसहस्त्राणि ये पठंति पुनः पुनः ।
ते निर्वाणपदं यान्ति मुच्यते नात्रसंसयः ॥४०॥

Colophon : इति लघुसहस्त्रनाम संपूर्णम् ।

७०१. लघु सहस्त्र नाम स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७०० ।

Closing : देखें, क० ७०० ।

Colophon : इति श्री वीतराग सहस्त्रनामस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७०२. लक्ष्मी आराधन विधि

Opening : ॐ रीं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरू कुरू स्वाहा ।

Colsing : इस मंत्र सो चावल अक्षत मंत्रिके जिस्में राखें सरे वस्तु घटे नहीं।

७०३. महालक्ष्मी स्तोत्र

Opening : आद्यं प्रणवतत्श्रींमायाकामाक्षरं तथा ।
महालक्ष्मी नमस्यांते मंत्रोऽयं दशवर्णकः ॥१॥

Closing : वाराराशिरसी प्रसूय भवती...... ...मध्येमहत्वं संस्थितं ।।१२।।

Colophon : इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रसंपूर्णम् ।

७०४. महालक्ष्मी स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७०३ ।

Closing : न कस्यापि हि मंत्रोयं कथनीयं विपश्चिता ।
यशोधर्मधनप्राप्त्यैः सौभाग्य भूतिमिच्छिता ।।

Colophon : इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रसंपूर्णम् ।

७०५. मंगलाष्टक

Opening : श्री मन्नम्रसुरासुरेन्द्र — ... कुर्वन्तु ते मंगलम् ।।१।।

Closing : जीर्ण-शीर्ण ।

७०६. मंगल आरती

Opening : मगल आरती कीजै भोर । विघन हरन सुखकरण किसोर ।।
अरहंतसिद्ध सुरि उवझाय । साधु नाम जपिय सुखदाय ।।

Closing : मंगलदान शील तपभाव, मंगल मुक्तवधू को चाव ।
द्यानत मगल आठो जाम, मगल महा भक्ति जिन साम ।।

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

७०७. मणि भद्राष्टक

Opening : अपठनीय ।

Closing : — — — —

धर्मकामार्थ लक्ष्मीस्तुष्टदेवोस्त्यवश्यं,
धरणिधरकवेर्मारती भक्तिः सत्यम् ।।

Colophon : इति श्री मणिभद्र यक्षादि राज स्तोत्रमंत्रयुतं महाप्रभावीकं सम्मतम् ।

विशेष— अन्त में दिया गया मंत्र अपूर्ण है ।

७०८. नंदीश्वर भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुट ··· विरहितनिलयान् ॥
Closing : ··· जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं ।
Colophon : इति नंदीश्वरभक्तिसंपूर्णम् ।

७०९. णमोकार स्तोत्र

Opening : ॐ परमेष्ठि नमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्रं पंजराभि स्मराम्यहम् ।
Closing : यश्चैनां कुरुते रक्षां परमेष्ठि पदैः सदा ।
तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि न कदाचन: ॥
Colophon : इति नवकार स्तोत्रम् ।

७१०. नवकार भावना स्तोत्र

Opening : विश्लिष्यन् घनकर्मस्य · संजीवनं मंत्रराट् ॥१॥
Closing : स्वपन् जाग्रन् ·· स्तोत्र सुकृती ॥११॥
Colophon : इति नवकार मंत्रस्य स्तोत्र समाप्त । मिति पूसबदी १० दिन रवि संवत् १९५४ द० नीलकंठदास ।

विशेष—ड०।२ संख्या ग्रन्थ एक गुटका है, जिसमें ५३ पूजास्तोत्र आदि संकलित हैं । इसका लेखनकाल विक्रम सं० १९५४ है ।

७११. नेमिजिन स्तोत्र

Opening : कश्चित्कांता विरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः,
स्नोतापारं सहगपितवेयाद्गुणाब्धेर्जलोत्र ।
प्रान्त्योदन्वत्स्वमधिकतरस्येति तुष्टावमोदात्,
सुत्रामायं दिशतु सशिवं श्री शिवानदनो वः ॥
Closing : इति स्तुतः श्रीमुनिराज ···दीर्घदर्शिताम् ॥८॥
Colophon : इति रघुनाथकृतं श्रीमन्नेमिजिनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

विशेष—इसके ३-४ श्लोक कालिदास एवं भारवी के श्लोकों का आश्रय लेकर बनाये गए हैं । प्रथम चरण यथावत् मिलता है ।

७१२. निजात्माष्टक

Opening : णिच्चन्तेलोकचक्काहिव सयणमिया जोजिणिन्दाय सिद्धा।
अण्णेमन्धन्थसण्धा गमसमियमण उव्वज्झा भया।
सूरि साहू सव्वे सुद्धणियाद अनुसरण प्रणामोखसम्मं।
ति तम्हासोऽहंज्झायेमिणिज्ज्वपरमपयगओ णिविषप्पोणियप्पो ।१।

Closing ; रूवे पिंडेपयत्थेण कलपरिचये जोयिविदेण णादे।
अत्थे गन्थे ण सत्थेण करण किरि या णावरे मंगवारे।
साणन्दाणन्द रूओ अणुमहू सुसुमंवयेणा भावपण्वो।
सोहंझाये मिणिज्ज्वं परमपयगओ णिविपप्णोणियप्पो ॥

Colophon : इति योगीन्द्रदेवविरचितं निजात्माष्टकं समाप्त शुभं भूयात्।

७१३. निर्वाण कण्ड

Opening : वर्द्धमानमहं स्तोष्ये वर्द्धमानमहोदयम्।
कल्याणैर्पंचभिर्येन मुक्तिलक्ष्मीस्वयंवरम् ॥१॥

Closing : इत्यर्हतां शमवतां··· — निरवद्यसौख्यम् ॥१२॥

Colophon : इति निर्वाणकांड सम्पूर्णम्।

७१४. निर्वाण काण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो — महावीरो ॥१॥

Closing : ओयट्टं इतियालं ··· लहइ णिव्वाणं ॥२८॥

Colophon : इति निर्वाण कांड समाप्तम्।

७१५. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वंदौं सदा, भाव सहित सिरनाय।
कहूं कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाय ॥

Closing : संवत् सत्रह सै तैताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
भैया वंदन करैं त्रिकाल जय निर्वाण कांड गुनमाल ॥२२॥

Colophon : इति निर्वाण कांड भाषा समाप्तम्।

७१६. निर्वाण काण्ड

Opening : देखें—क्र० ७१५ ।

Closing : देखें—क्र० ७१५ ।

Colophon : इति निर्वाण कांड समाप्तम् । संवत् १८७१ ज्येष्ठ वदि ८ लि(खा) आलमचंद्रेण ।

७१७. निर्वाण भक्ति

Opening : त्रिभुवनपति खगपनरपति ··· मनामम प्राप्तम् ।।

Closing : · · · · जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इति निर्वाणभक्तिसंपूर्णम् ।

७१८. पद्मावती कवच

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटमुकुट तटीदिव्यमाणिक्य माला ।
ज्योतिज्वालाकराला स्फुरित मुकरिका घृष्टपादारविंदे ।।
व्याघ्रोरूल्कासहस्रज्वलदलन शिखा लोकं पाशांकु शालं ।।
आंक्रोंह्रीं मंत्ररूपे क्षपितदलमल रक्ष मां देविपद्मे ।।१।।

Colsing : इदं कवचं ज्ञात्वा पद्मायास्तौति ये नर: ।।
कल्परकोटिशतेनापि न भवेत् सिद्धिदायिनी ।१८।
देखें, जि० र० को०, पृ० २३५ ।

७१९. पद्मावती कल्प

Opening : कमठोपसर्गदलनं त्रिभुवननाथं प्रणम्यपार्श्वं जिनम् ।।
वक्ष्येभीष्टफलप्रदं भैरवपद्मावतीकल्पम् ।१।

Closing : यावद्वारिधिभूधरतारागगनचंद्रदिनपतय: ।।
तिष्ठतु भुवि तावदयं भैरवपद्मावती कल्प: ।५६।

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखर श्री मल्लिषेणसूरिविरचिते भैरव-पद्मावतीकल्पे गरुडाधिकारो नाम दशम: परिच्छेद: ।।
देखें, जि० र० को०, पृ० २३५ ।

७२०. पद्मावती वृहत्कल्प

Opening : देखें क्र० ७१८ ।

Closing : जगभक्त्यानुकृत्ये क्लीं भक्त्या मां कुरुते सदा ।
वांछितं फलमाप्नोति तस्य पद्मावती स्वयं ॥

Colophon : इति पद्मावत्या वृहत्कल्प समाप्तम् ।

७२१. पद्मामाता स्तुति

Opening : जिनसासनी हंसामनी पद्मासनी माता ।
भुज चार ते फल चार दे पद्मावती माता ।

Closing : जिनधर्म से डिगने का कहु आपरे कारन ।
तो लीजियो उबार मुझे भक्त उद्धारन ॥
निज कर्म के संयोग से जिस यौन मे जाओ ।
तहां ही जियो सम्यक्त औ सिवधाम का पावो ॥

Colophon : जिनशासनी इति पूर्ण ।

७२२. पद्मावती स्तोत्र

Opening : श्री पार्श्वनाथजिननाथकरत्नचूडापाशांकुशोभयफलांकित-
दोश्चतुष्का ॥
पद्मावतीत्रिनयना त्रिफलावतंसा पद्मावती जयति शासन-
पुण्यलक्ष्मी: ॥

Closing : पठितं भणितं गुणितं जयविजयरमानिबंधनं परमम्
सर्वाधिव्याधिहरं त्रिजगति पद्मावतीस्तोत्रम् ॥
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्
विसर्जन न जानामि क्षमस्व परमेश्वरी ॥२८॥

विशेष— आरा मे पद्मावतीमंदिर चढ़ायो आरा वाला गुलाल चंद जी गुलु-
लाल जी ॥

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० २३५ ।
(2) Catg. of Skt. & pkt. Ms., 665.

७२३. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें क्र० ७१८ ।

Closing : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावती सकल चराचर त्रैलोक्यव्यापी ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं ह्रों ह्रौं ह्रौं ह्रः ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र को १२०००० जपे तो सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त होय।

Colophon : षड्विंशति श्लोक विधानम् सम्पूर्णम्। समाप्तम्।

७२४. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८।

Closing : देखें, क्र० ७२२।

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्रं समाप्तम्।

७२५. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८।

Closing : देखें, क्र० ७२२।

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र संपूर्णम्।

७२६. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८।

Closing : ॐ णमो भोयमस्स सिद्धस्स आनय आनय पूरय पूरय मम कुरु कुरु वृद्धि कुरु कुरु ह्रीं भास्करी नमः।

Colophon : नहीं है।

७२७. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : प्रणम्य परमां भक्त्या देव्या पादांबुजं त्रिधा।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भक्तिसिद्धये ॥

Closing : भो देवि भीमा ! ---- सम्यक्तिमीतितत्तापने किं ॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्रं समाप्तम्।

देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. १४१।
(२) जि. र. को., पृ. २३५।

७२८. परमानंदस्तोत्र

Opening : परमानंदसंयुक्तं निर्विकारं निरामयम् ।
ध्यानहीना तु नश्यंति निजदेहे व्यवस्थितम् ॥१॥

Closing : पाषाणेषु यथा … … ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

७२९. परमानन्दस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० २२८ ।

Closing : काष्टमध्ये ……… जानाति स पण्डित: ॥१४॥

Colophon : इति परमानदस्तोत्रसमाप्तम् ।

(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २३८ ।
(३) रा० सू० III, पृ० ११२, १३३, १५७, २८८ ।
(4) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., 665.

७३०. परमानन्द चतुर्विंशतिका

Opening : देखें, क्र० ७२८ ।

Closing : स एव परमानंद: स एव सुखदायक: ।
स एव परचिद्रूप: स एव गुणसागर: ॥

Colophon : परमानंद चतुर्विंशति(का) समाप्ता ।
देखें—जि० र० को०, पृ० २३७ । (पञ्चविंशतिका)

७३१. पार्श्व जिनस्तवन

Opening : देवेन्द्रा: शतश: स्तुवंति — …. स्तौमि भक्त्या जिनम् ॥

Closing : इति पार्श्वजिनेश्वर. … — सौख्यकरम् ॥

Colophon : इति यमकबंध श्री पार्श्वनाथ स्तवन सम्पूर्णम् ।

७३२. पार्श्वनाथ स्तवन

Opening : नमिऊण पणयसुरगण चूडामणिकिरणरंजियं मुणिणो ।
चलणजुयलं महाभयं पणासणं संथुवं वुच्छं ॥

Closing : जो भठइ जो वनिसुणइ ताणं कइणो अमाणतु'मस्स ।
पासो पावं समेऊ सयलभुवणंच्चियचलं ॥२१॥

Colophon : इति पार्श्वनाथस्तवनं सम्पूर्णम् ।

७३३. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : धरणोरगसुरपतिविद्याधरपूजितं नत्वा ।
क्षुद्रोपद्रवशमनं तस्यैव महास्तवनं वक्ये ॥

Closing : भक्तिर्जिनेश्वरे यस्य गंधमाल्याभिलेपनैः ।
संपूजयति यश्चैनं तस्यैतत् सकलं भवेत् ॥

७३४. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : यः श्री पार्वतवेश श्रयति सपदि सःश्रीपुरं संश्रयेत् ।
स्वामिन् पार्श्वप्रभोत्वत्प्रवचनवचनोद्दीप्रदीपप्रभावैः ॥
लब्ध्वामार्गं निरस्ताखिलविपदमतो यत्वधीशैस्तु ॥
धीभिर्वन्द्यःस्तुत्यो महास्त्वं विभुरसिजगतामेक
एवाप्ततराथः ॥१॥

Closing : एभिः श्रीपुरपार्श्वनाथ विलन्माहात्म्य पुस्यत्सुधा ।
कूपारोर्हिनिदर्शितः प्रविसरद्धार्मगिवतुर्यैतः ॥
तस्मास्तोत्रमिदं सुरसनमिवयद्यत्नाद्वही ॥
तं मया विद्यानन्द महोदयाय नियतं धीमद्भिरासे-
व्यताम् ॥३०॥

Colophon : इति श्रीमदमरकीर्ति यतीश्वर-प्रियशिष्य श्रीमद्विद्यानन्द स्वामी विरचितं श्री पुरपार्श्वनाथ स्तोत्रं समाप्तमभूद् ।

७३५. पार्श्वनाथ स्तोत्र (सटीक)

Opening : लक्ष्मीर्महस्तुल्यसतीसतीसती प्रवृद्धकालो विरतोरतोरतो॥
जरारुजाजन्महताहताहता पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौगिरौ ॥१॥

Closing : — — कोकनेप्रवीणचतुरे अतः कारणात् ॥

Colophon : इति पद्मनंदीमुनिविरचितं श्री पार्श्वनाथस्तोत्रटीकासहितं सम्पूर्णम् ।१।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र० पृ० १४० ।
(२) जि० र०, को०, पृ० २४७ ।

७३६. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७३५ ।

Closing : त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं नित्यमाप्नोति संश्रियम् ।
श्रीपार्श्वपरमात्मैं ससेवध्वं भो वुधा सुकृत् ॥

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

७३७. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७३५

Closing : तर्कव्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौशले,
विख्यातो भुवि पद्मनंदमुनयः तत्वस्य कोशं निधिः ।
गंभीरं यमकाष्टकं भणितयं संस्तूय सा लभ्यते,
श्री पद्मप्रभदेवनिर्मितमिदं स्तोत्रं जगन्मंगलम् ॥६॥

Colophon : इति श्री लक्ष्मीपतिपार्श्वनाथस्तोत्रसमाप्तम् ।

७३८. पंचस्तोत्र सटीक

Opening : देखें, क्र० १०७ ।

Closing : दृष्टस्तत्वं जिनराजचंद्रविकसद्भूत्नैत्र नेत्रोत्पले ।
स्नातं त्वन्नुति चंद्रिकांभसिभवद्विद्वच्चकारोत्सवे ॥
नीतश्चाद्य निदाघजः क्लमभरः शांतिमयाक्लृप्ते ।
देवत्वद्गतचेतसैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥२६॥

Colophon : संवत् १९६७ फाल्गुण शुक्ला १२ रविवासरे लिपिकृतं पं० सीताराम शास्त्री ।

७३६. पंचासिकाशिक्षा

Opening : करि करि आतम हित रे प्राणी ।
जिन परिणामनि तजि बंध होत है ।
सो परिणति तजि सुखदानी ॥ करि० ॥

Closing : यह शिक्षापंचासिका, कीनी द्यानतराय ।
पढ़ें सुनें जो मनधरैं, अन जन कौं सुखदाय ॥

Colophon : इति श्री पंचसिका शिक्षा सम्पूर्णम् । मिती भाद्रपद सुदी ६ बुधवार शुभ सम्वत् १६४७ ।

७४०. पंचपदाम्नाय

Opening : भक्तिभरामरप्रणतं प्रणम्य परमेष्ठी पंचकम् ।
श्रीर्वण नमस्कारसारस्तवनं भणामि भव्यानां भयहरणम् ॥

Closing : —— .... अनेन ध्यानेन पायोच्चाट्टनताडननिपुणाः साधवः सदा स्मरतः ।

Colophon : इति पंचपदाम्नायः ।

७४१. प्रभावती कल्प

Opening : हरिद्रानिंबपत्राणि पिप्पली मरिचानि च ।
भद्रामुस्ता विषमेमानि सप्तमं विषम भेषजम् ॥

Closing : ॐ अदेवी स्वाहा गुटिका प्रयुञ्जनमंत्रः ।

Colophon : इति प्रभावती कल्पः । श्रीरस्तु ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २६६ ।

७४२. प्रार्थना स्तोत्र

Opening : त्रिभुवनगुरो जिनेश्वरपरमानंदैककारणम् ।
कुरुष्वमपि किंकरेऽत्रकरुणा तथा यथा जायते मुक्तिः ॥१॥

Closing : जगदेकशरणं भगवन्नसमश्रीपद्मनंदितगुणौघ किं ।
बहुना कुरु करुणामत्रजने शरणमापन्ने ॥८॥

Colophon : इति प्रार्थनास्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७४३. रक्त पद्मावती कल्प

Opening : ... ... सन्निधापयेत् विसर्जना विसर्जयेत् । गधादि-ग्रहणानंतरं पटमवलं कृत्वा ततो जापं कुर्यात् ... ... ।

Closing : ... ... भवतोऽस्माभिर्दत्तो मंत्रोऽयं परंपरायात: साक्षिणो-रव्यादिदेवता ।

Colophon : इति रक्तपद्मावती कल्प समाप्तम् । संवत् १७३८ वर्षे कार्तिकसुदी १३ रवौ श्री औरंगाबाद नगरे श्री षरतर श्री वेगमुगबे भट्टारक श्री जिनसमुद्रसूरिविजयराज्ये तत् शिष्यसौभाग्यसमुद्रेण एषा प्रतिलिपि कृता: ।

७४४. ऋषभस्तवन

Opening : सिद्धाचल श्रीललनाललामं, महीमहीयो महिमाभिरामं ।
असारसंसार पथोपराम नवामि नाभेय जिनं निकामम् ॥

Closing : एव श्रमो यमकभेद परंपराभि:,
राभिर्मयाविमल शैलपति: पराभि: ।
आदीश्वरो विशतु मे कुशलं विलासम्,
वाचां विचक्षण चकोरसुधांशु भारम् ॥

Colophon : इति श्री शत्रुंजयालंकरण श्री ऋषभस्तवनमेकादशयमकभेदै: समर्पितम् श्री जिनकुशलसूरिभि: सम्पूर्णम ।

७४५. ऋषिमंडलस्तोत्र

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लब्धिसमस्तसयुतं ॥
ऋषिमंडलयंत्रस्य वक्ष्ये पूज्यादिमल्पमम् ॥१॥

Closing : निःशेषामरशेखरर्चितपदं इंद्रोल्लसत्सख ॥
कांतिश्रीदत्तकीर्ति संहतिहतप्रव्यक्त भवत यासव

निर्वाण समह्रोत्समाणमुकत प्रस्फुरंम ज्ञूभराब्हदि
वृद्धिमनारत जिनरतं: जिनवरा: कुर्वन्तु व:सर्वदा ॥

७४६. ऋषिमंडल स्तोत्र

Opening : आन्त्यंताक्षर — — समन्वितम् ॥१॥

Closing : शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवं ... ... ॥

Colophon : नहीं है ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४७ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 629.

७४७. ऋषिमंडल स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० सं० ७४६ ।

Closing : ये वधित ... — रक्षतु सर्वत: ॥६३॥

Colophon : नहीं है ।

७४८. त्रिकालजैन सन्ध्यावंदन

Opening : ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मा ठ: ठ: उपवेशनभूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा ।

Closing : ... मंत्रं श्री जैनमंत्रं जपजपजपितं जन्मनिर्वाणमंत्रम् ॥

Colophon : इति त्रिकालजैनसंध्यावंदन सम्पूर्णम् ।

७४९. सहस्त्रनामाराधना

Opening : सुत्रामपूजितं पूज्यं सिद्धं शुद्धं निरंजनम् ।
जन्मदाहविनाशाय नौमि प्रारब्ध सिद्धये ।१।
तद्वकथा नमस्कुर्वे शारदां विश्वशारदाम् ।
गौतमादि गुरुन् सम्यक् दर्शनज्ञानमंडितान् ।२।

Closing : विशालकीर्तिर्वरपुण्यमूर्तिः शतेंद्रसंचर्चितपादपद्म: ।
श्रीमज्जिनों कुर्वसहस्त्रनामा जिनेश्वर: पातु सा भव्यलोकान्।

इत्थं पुरोत्थं पुरुदेवयंत्रं संभाव्यमध्ये जिनमर्चयामि ।
सिद्धाविधर्मादि जिनालयानां पत्रेषु नामांकित तत्पदेषु ।।

विशेष—प्रशस्ति संग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ६४ में सम्पादक भुजबली शास्त्री ने ग्रन्थ कर्त्ता के बारे में लिखा है। इसके कर्त्ता देवेन्द्रकीर्ति हैं और इन्होंने जिनेन्द्र भगवान के विशेष रूप में अपना, अपने गुरु का एवं प्रगुरु का क्रमश:—धर्मचन्द्र, धर्मभूषण, देवेन्द्रकीर्ति इन नामों से उल्लेख किया है। देवेन्द्रकीर्ति के नाम से कई व्यक्ति हुए हैं, इसलिये नहीं कहा जा सकता कि अमुक देवेन्द्रकीर्ति ही इसके प्रणेता हैं।

७५०. सहस्त्रनामस्तोत्र टीका

Opening : ध्यात्वा विद्यानंदं समन्तभद्रं मुनीन्द्रमर्हन्तम् ।
श्रीमत्सहस्त्रनाम्नां विवरणमावस्मि संसिद्धौ ।।

Closing : अस्ति स्वस्तिसमस्तसंघ तिलकं श्रीमूलसंघोनघम्,
वृत्तं यत्र मुमुक्षुवर्गशिवदं संसेवितं साधुभि: ।।
विद्यानंदिगुरुस्त्विह गुणवद्गच्छे गिर: सांप्रतम्,
तच्छिष्यश्रुतसागरेण रचिता टीका चिरं नंदतु ।।

Colophon : इत्याचार्य श्री श्रुतसागरविरचितायां जिनसहस्त्रनामटीकायामंतकृत्स्वतविवरणो नाम दशमोध्याय: समाप्त: । इति जिनसहस्त्रनामस्तवनं समाप्तम् । संवत् १७७५ वर्षे वैशाख सुदी ५ गुरौ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवास्तदंतेवासिन: ब्रह्म श्री विनयसागर तदंतेवासिन: पंडित श्री हरिकृष्ण तदंतेवासिन: (पंजीवनि) गंगारामेन लिखितं भेंदग्रामे आदिनाथचैत्यालये लिखितमिदं पुस्तकम् ।

७५१. सहस्त्रनाम स्तोत्र

Opening : स्वयंभुवे नमस्तुभ्यं —......... चित्तवृत्तये ।।१।।

Closing : अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोमोघशासन ।
.... — — ।।

Colophon : Missing.

देखें, Catg. of Skt. & Pkt. Mss., P. 707.

७५२. सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० ७५० ।

Closing : देखें, क्र० ७५० ।

Colophon : इत्याचार्य श्री श्रुतसागर विरचितायां जिनसहस्रनामटीकायां दशमोध्याय: समाप्त: ।

संवत् १९८५ वर्षे आषाढ़मासे सुदी १ गुरौ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवा; तदंतेवासिन: ब्रह्म श्री विनयसागर तदंतेवासिन: भुजबल प्रसाद जैनी लिखितम् । श्री मैनेजर भुजबली जी शास्त्री की सम्मति आदेशानुसार आरा स्थाने ।

७५३. सहस्रनाम टीका

Opening : ·· श्रुतिवचनविरचितचित्तचमत्कार: स्वर्गापवर्गमार्गस्यंदन· चारुचारित्रचमत्कृतसकंदन: ···· ।

Closing : ···· नाम्नामष्टसंहस्रेण स्मृतिमात्रेण स्मरणमात्रेण प्रमाणेन सेवां कर्तुं इच्छाम: प्रमाणेयेंद्वयसटदघ्नच् मात्रट् प्रत्यया भवति । इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते श्रीमहापुराणे श्री वृषभस्तुतेस्टीका सम्पूर्णां कृता सूरिश्रीमदमरकीर्तिना ।

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनामटीका । इदं मुद्रितं पं० चिमनरामेण लिपि कृतम फतेपुरमध्ये सं० १८६० अश्विन शुक्ल तृतीयायां शुभं भूयात् ।

७५४. सत अष्टोत्तरी स्तोत्र

Opening : ओंकार धुनि अति अगम, पंच प्रसिष्ट निवास ।
प्रथम तासु वंदन किये, लहिये ब्रह्म विलास ॥

Closing : यह श्री सत्य अठोतरी, कीनी निजहित काज ।
जे नर पढ़ै विवेक सौं, ते पावहिं मुनिराज ॥

Colophon : इति श्री सत अठोतरी कवित्त बंध सम्पूर्णम् ।

७५५. शक्रस्तवन

Opening : ॐ नमो अर्हते परमात्मने, परमज्योतिषे परमपरमेष्ठिने परमवेधसे परमयोगिने ... ... ।

Closing : ... ... तथायं सिद्धसेनेन लिलिखे सपदां पदम् ।

Clolophon : इति शक्रस्तवः समाप्तः । संवत् १७७४ वर्षे पौष वदि ८ दिने लिखतं श्री काश्मार्वा ऽ रमध्ये ।

७५६. सत्तरिसय स्तवन

Opening : तिजयपहुत्तपयासय अट्ठमहापाडिहारजुत्ताण
समयखितठियाणं सरेमि चक्कजिणंदाणं ॥

Closing : इय सत्तरिसयं जंतं सम्मं तं दुवारिपडि लिहियं ।
दुरियारि विजयतं तं निआत्मानं निच्चमच्चेह ॥१४॥

Colophon : इति सत्तरिसयस्तवन सम्पूर्णम् ।

७५७. सम्मेदाष्टक

Opening : एकैकं सिद्धकूट .... राजते स्पृष्टराजकैः ॥१॥

Closing : आधिव्याधिःप्रबाधिः .... जगद्भूषणानाम् ॥९॥

Colophon : इति श्री जगद्भूषणकृतं सम्मेदाष्टकं सम्पूर्णम् ।

७५८. समवशरण स्तोत्र

Opening : वृषभाद्यानभिवंद्याभिवंदित्वा वीरपश्चिमजिनेन्द्रान् ।
भक्त्या नतोत्तमांगः स्तोष्टोतत्समवशरणानि ॥

Closing : अनन्यगुणनिबद्धामर्हतां मागधणंदि,
विरचित सुवर्णानेकपुष्पप्रजामाम् ।
स भवति नुति माला यो बिभर्ति स्वकंठे,
त्रिभुवनपतिरमणी श्रीलक्ष्मीवधूनाम् ॥

Colophon : इति श्री समवसरण स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

७५६. संकटहरण विनती

Opening : सारद दीजे ग्यान अपार । मुझ भरमन छूटे संसार ।।
बर्द्धमान स्वामी जिनराय । करों वीनती मनचित लाय ।।

Closing : इहैं वीनती नित भणे प्राणी, सिवधाम पावै धरें ।
सुभ मावधर मन सदा गुणियै, सुद्ध चेतन सो तरैं ।।३७।।

Colophon : इति संकटहरण वीनती सम्पूर्णम् ।

७६०. शान्तिनाथ आरती

Opening : शांत जिनेसर स्वामि वीनती अवधार प्रभु ।
सेवक जनसाधार, पापपनासन शांति जिनो ।।

Closing : पाटण नगर मंझार, शांतकरण स्वामी शांत जिनो ।।

Colophon : इति शांतिनाथ वीनती (विनती) ।

७६१. शान्तिनाथ स्तोत्र

Opening : नानाविचित्रं भवदुःखराशिः नानाप्रकारं मोहाग्नियपाशिः
पापानि दोषानि हरंति देवाः इह जन्मशरणं तुबशान्ति-
नाथम् ।

Closing : जपति पठति नित्यं शान्तिनाथाधिपुखम्,
स्तवनमधुगिरायां पावतापापहारम् ।
शिवसुखनिधिपोतं सर्वसत्वानुकंपम्,
कृतमुनिगुणभद्रं भद्रकार्येषु नित्यम् ।।६।।

Colophon : इति श्री शान्तिनाथस्तोत्रमगुणभद्राचार्यकृत समाप्तम् ।

७६२. शान्तिनाथ प्रभातिक स्तवन

Opening : सुरैनं सदासंतरद्यानतोयं वरं हारचन्द्रोज्वलं सोरमेयम् ।
सदाशुभ्वलं शांतिनाथो जिनो मो भर्व वैकताले सदा
सुप्रभातम् ।।१।।

Closing : श्री शान्तिनाथस्य जिनेश्वरस्य प्रभातिकं स्तोत्रमिदं पवित्रम् ।
पुमानधीते भवती हृयोपि श्री भूषणस्याद्वरपंत्र ॥६॥

Colophon : इति श्री शान्तिनाथप्रभातिकस्तवनं समाप्तम् ।

७६३. शान्तिनाथ स्तवन

Opening : ॐ शांतिशांति · शांतये स्तौमि ॥१॥

Closing : यश्चैनं पठति सदा शृणोति भावयति वा यथायोगं ।
शिवशांतिपद क्यात् सूरिश्रीमानदेवस्य ॥१७॥

Colophon : इतिशांतिस्तवनं समाप्तम् ।
देखें—जि० जि. ग्र. र., पृ. १५० ।

७६४. शान्तिनाथ स्तवन

Opening अथशान्त्य गृहस्यास्य मध्ये परमसुन्दरम् ॥
भवन शांतिनाथस्य मुक्तविस्तारतुंगतम् ॥

Closing : कृत्वा स्तुतिं प्रणामं च भूयोभूयः सुचेतसः ।
यथासुखं समासीना प्रथमे जिनवेश्मनि ॥

Colophon : नहीं है ।

७६५. सरस्वती कल्प

Opening : अनदीशं जिनं देवमभिवन्द्याभि नन्दनम् ।
वक्ष्ये सरस्वतीकल्पं समासादल्पमेधसाम् ॥

Closing : कृतिना मल्लिषेणेन श्रीषेणस्य सूनुना ।
रचितो भारतीकल्पः शिष्टलोकमनोहरः ॥
कुर्यमचन्द्रांकता यावत् मेदिनीभूधरार्णवः ।
तावत्सरस्वतीकल्पः स्थेयाच्चेतसि धीमताम् ॥

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखर श्री मल्लिषेणसूरिविरचितो भारतीकल्पः समाप्तोऽभूत् ।

७६६. सरस्वती स्तोत्र

Opening : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मंत्ररूपे विबुधजननुते देवदेवेन्द्रवंद्ये,
चंञ्चच्चंद्रावदाते क्षपितकलिमले हारमृंकारगौरे।
भीमे भीमाट्टहास्ये भवभयहरणे भैरवे भेरुधारे,
ह्रां ह्रूं कारनादे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवी ॥

Closing : करबदरसदृशमखिलं भुवनतलं यत्प्रसादतः कवयः।
पश्यन्ति सूक्ष्मगतयः सा जयतु सरस्वती देवी ॥

Colophon : इति सरस्वती स्तुतिः।

विशेष—अन्त में सरस्वती मन्त्र भी लिखा है।

देखें— Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 706.

७६७. सरस्वती स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६६८।

Closing : देखें—क्र० ६६८।

Colophon : इति सरस्वती स्तोत्र समाप्तम्।

७६८. सरस्वती स्तोत्र

Opening : नमस्ते शारदादेवी विमलस्याबुजवासनी।
त्वामहं प्रार्थये नाथे विद्यादानं प्रदेहुमे ॥

Closing : सरस्वती महाभागे यादृष्टा देवी कमललोचना,
हंसस्कंधसमारूढा वीणापुस्तकधारणी।
सरस्वती महाभागे वरदे कामरूपनी,
हंसरूपी विशालाक्षी विद्यादे परमेश्वरी ॥

Colophon : इति संपूर्णम्।

७६९. सरस्वती स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं अर्हन्मुखकमलवासिनी नमः। ह्रां ह्रीं क्ष्वीं वौषट्-
[illegible] —।

Closing : अनुपलब्ध ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

७७०. सिद्धभक्ति

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृति ···· ···· यथा हेमभावोपलब्धिः ।

Closing : ··· बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं
जिणगुण संपत्ति होउमज्झं ॥

Colophon : इति सिद्धभक्तिः ।

७७१. सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका

Opening : सिद्धिप्रियैः प्रतिदिनं ··· ···· भूप रेक्षणेन ॥ ॥

Closing : तुष्टिं देशनया ··· सतोमीशितम् ॥२५॥

Colophon: इति श्री सिद्धिप्रियै स्तोत्र टीका संपूर्णम् ।

विशेष—२४ श्लोकों की संस्कृत टीका है, २५ वें श्लोक की टीका नहीं है ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४३८ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ४६, ५३, ११२, ३३२ आदि
(४) रा० सू० III, पृ० १०६, १४१, १५६, २४४ ।
(५) प्र० जै० सा०, पृ० २४६ ।

७७२. सिद्ध परमेष्ठी स्तवन

Opening : अनन्तवीरयोगिन्द्रः सुप्रशस्तपुण्मुना ।
एवघोनात्मनो मृत्युः परिपृष्टः समाविशत् ॥१॥

Closing : परिवार्यमहावीर्यं रामलक्ष्मणसंयतम् ।
किष्किन्धनगरं प्रापुः विविधमूत्तैमहद्ध्वं वा ॥१५॥

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्यकृत पद्मपुराण संस्कृत ग्रन्थ सत्कमयी कृत सिद्धपरमेष्ठी स्तवनं संमाप्तम् ।

७७३. श्रुतभक्ति

Opening : स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन-लोलितसल्लोकलोचनानि सदा ॥१॥

Closing : ... दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउमज्झं ।

Colophon : इति श्रुतज्ञानभक्ति सम्पूर्णम् ।

७७४. स्तोत्र संग्रह

Opening : यस्यानुग्रहतो दुराग्रहपरित्यक्तात्मरूपात्मनः
सद्द्रव्य चिदचित्त्रिकालविषय स्वैं स्वैरभिन्नं गुणैः ॥ ॥
सार्थं व्यञ्जनपर्ययैरसममवयज्ज्ञानातिबोधस्समं
तत्सम्यक्त्वमशेषकर्मभिदुर सिद्धाः परं नौमि वः ॥१॥

Closing : तुभ्यं नमो वेलगुलाधिपपावनाय ।
तुभ्यं नमोस्तु विभवे जिनगुंमटाय ॥८॥

७७५. स्तोत्रावली

Opening : नहीं है ।

Closing : .... सुप्रसन्नचित्तनो चित्ताटली श्री सार जीनगुणगावतां हिव सकलमन आस्या फली ।

Colophon : इति श्री रोहिणी स्तवन संपूर्णः ।

७७६. स्तोत्रावली

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : जहए एसं भगवाओ, कम्माण बिज्ञाण तह भावा ॥
.........अपूर्ण ।

Colophon : नहीं है ।

७७७. स्तोत्र संग्रह गुटका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : बरसत कीजै देवको आदिमध्यअवसान ।।
सुरगन के सुखभुगत के पावैं पद निर्वाण ।।२०।।

Colophon : इति विनै संपूर्ण ।।

७७८. स्तोत्र संग्रह

Opening : देखें—क्र० ७८५ ।

Closing : भाषा भक्तामर कियो हेमराज हित हेत ।
जे नर पढ़ै सुभावसों ते पावैं शिवखेत ।।

Colophon : इति भक्तामर स्तवन सम्पूर्णम् ।

विशेष—लगभग एक सौ स्तोत्र, पाठ, पूजा आदि का संग्रह इस गुटका में है ।

७७९. स्तोत्र संग्रह

Opening : प्रणम्य परयाभक्त्या देव्याः पादाम्बुजं त्रिधा ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भक्ति सिद्धये ।।१।।

Closing : ... इति पुनः मंत्र ॐ ह्रीं क्लीं क्लूं श्रीं ह्रीं नमः । लक्ष जापते सिद्ध होय ।

Colophon : इति शारदा स्तुति सम्पूर्णम् ।

विशेष—इस ग्रन्थ में ३७ स्तोत्र मंत्रादि का संग्रह है ।

७८०. स्तोत्र

Opening : श्री नाभिराजतनुजः सदयाविहारी,
देवोजितो जयतु कौसलयाविहारः ।
श्री संभवो हतभवोखिलसारसारः,
श्री कोमिनंदनजिनोखिलसारधीरः ।।१।।

Closing:
विख्यातकं विदितबंधरसावसारम् ।
संसारवासविरलं हृतकाण्डमूलम् ।
बंदे नवं बदनकं अद्भुताकसाद्मम्,
भिन्नं जिनंभिदजिरं भवहारभावम् ।।

Colophon : अस्पष्ट ।

७८१. सुप्रभात स्तोत्र

Opening :
विद्याधरामर नरोरगयातुधान-
सिद्धासुराधिपति सस्तुत पादपद्मम् ।
हेमद्युते वृषभनाथ युगादिदेव-
श्रीमज्जिनेन्द्र विमलं तव सुप्रभातम् ।।

Closing :
दिव्यां प्रभातमणिका वलिकां स्वरूप-,
कंठेन शुद्धगुणसग्रथितां क्रमेण ।
ये धारयन्ति मनुजा जिननाथभक्त्या,
निर्वाणपादपफलं खलु ते लभंते ।।

Colophon : इति सुप्रभातस्तोत्रं समाप्तम् ।

७८२. स्वयंभू स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७८१ ।

Closing : — इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon : इति श्री स्वामीसमन्तभद्राचार्यं विरचित वृहत्स्वयम्भूस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

७८३. स्वयंभू स्तोत्र

Opening :
येन स्वयंबोधमयेन लोका,
आश्वासिता केचन वित्तकार्ये ।
प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे,
तमादिनाथं प्रणमामि नित्यम् ।।१।।

Closing : यो धर्मं दशधा करोति ···· ·· स्वर्गापवर्गास्थितम् ॥२५॥

Colophon : इति स्वयम्भूस्तोत्र समाप्तम् ।

७८४. बृहत्स्वयंभू स्तोत्र

Opening : मानस्तंभाः संरासि ···· पीठिकाग्रे स्वयंभूः ॥१॥

Closing : तथ्याख्यानमदो यथावगमतः किंचित्कृतं लेशतः
स्थेयाच्चन्द्रदिवाकरावधिबुधप्रह्लादिचेतस्यलम् ॥

Colophon : इति श्री पंडित प्रभाचंद्रविरचितायां क्रियाकलापटीकायां समंतभद्रकृतबृहत्स्वयंभू स्तोत्रस्यटीका समाप्ता । संवत्सरे आषाढ़शुक्लपूर्णिमायां सं० १६१६ लिपिकृतम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५३ ।
(2) Catg. of Skt. & Pkt Ms., P. 714.

७८५. विषापहार स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्त-
व्यापारवेदीविनिवृत्तसंगः ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्यः,
पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥

Closing : वितिरति विहिता यथाकथंचिद्-
जिनविनतायमनीषितानि भक्तिः ।
त्वयि नुति विषया पुनर्विशेषा-
दिशतु सुखनियशो धनंजयं च ॥

Colophon : इति युगादिजिनं विषापहारस्तोत्रम् ।

देखें —(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५४ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३६१ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २१७ ।
(४) आ० सू०, पृ० १२७ ।
(५) रा० सू० II, पृ० ५१, ६६, १०७, ११२, १०३ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १०६, १०७, १५७, २३४, २७८ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 693.

७८६. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।
Colophon : इति श्री विषापहारस्तोत्रसमाप्तः ।

७८७. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।
Closing : देखें, क्र० ७८५ ।
Colophon : इति विषापहारस्तोत्रं समाप्तम् ।

७८८. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।
Closing : देखें, क्र० ७८५ ।
Colophon : इति धनञ्जयकृतं विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

७८९. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।
Closing : देखें, क्र० ७८५ ।
Colophon : इति विषापहारस्तवनंसमाप्तम् ।

७९०. विशापहार स्तोत्र (टीका)

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।
Closing : ... विषं निर्विषीकृत्य पुनरनंतसौख्यरूप लक्ष्मी वशीकरोति इति तात्पर्यर्थम् ।

Colophon : इति श्री नागचन्द्रकवि विरचितायां श्री श्रेष्ठी धनजय प्रणीत जिनेन्द्रस्तोत्रपंजिकायां विषापहारनामातिशय दिव्य मंत्रः समाप्तः ।

७९१. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।
Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति श्री धनंजय कृत विषापहार स्तोत्रं संपूर्णम् ।

७९२. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : स्तोत्र जु विषापहार, भूलचूक कछु वाक्य ही ।
ज्ञाता लेहु संवार, अखैराज अरजंत हम ॥

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्रमूल कर्त्ता श्री धनञ्जय तस्य उपरि भाषा वचनिका करी शाह अखैराज श्रीमालनैं अपनीं बुद्धिअनुसारे ।

७९३. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहार स्तवन: समाप्त: । संवत् १६७२ वर्षे जेष्ट (ज्येष्ठ) वदी ७ शुभदिने भट्टारक श्री हेमचंद तत्पट्टे भ० श्री पद्मनंद तत्पट्टे भट्टारक जसकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री गुणचंद्र तत्पट्टे-भट्टारक श्री सकलचंद्र तत्शिष्य पंडित मानसिंघ (ह.)लिखापितं आत्मपठनार्थम् । लिखित कायस्थ माथुरसेवरिया दयालदास तत्पुत्र सुदर्शनेन शुभ भवतु लेखक पाठकयो: ।

७९४. विषापहार स्तोत्र मूल

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

७९५. विनती संग्रह

Opening : मंत्र जप्यो भवसागर तिरियो, पाई मुकति पियारी ।
ज्याका० ॥

Closing : देवा ब्रह्ममुकुत्यां पद पावै, तो दरसण ग्यान घटावै हीनैं रै ।
वाणी बोलै केवल ग्यानी ॥८॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

७९६. विनती

Oponing : वंदौं श्री जिनराय मनवचकाय करौं जी ।
तुम माता तुम तात तुमही परमधनी जी ।

Closing : कनककीर्ति रचिभाव श्रीजिण भक्ति रचौ जी ।
पढ़ै सुनैं नरनारि स्वर्गसुख लहै जी ।।

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।
संवत् १८५२ वर्षे पौषकृष्णा चतुर्दशीसनिवार ।

७९७. वीतराग स्तोत्र

Opening : स्वादेवं सन्मुमी ······ मादयन्त्यूर्ध्वंलोके ।।०।।

Closing : सो जयउ मयणराओ ···· विप्पवयोगोसणामेणा ।।

विशेष—एक मंत्र यंत्र भी बनाया गया है ।

देखे—Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 693.

७९८. बृहत् सहस्रनाम

Opening : प्रमोभवाणभोगेषु निर्विस्नोदु:खभीरुक: ।
एष: विज्ञापयामि त्वां शरणं करुणार्णवम् ।।

Closing : एकविद्योमहाविद्योमहा ···· ।

७९९. यमकाष्टक स्तोत्र

Opening : विद्यास्पदार्हन्त्य पदं पदं पदम्,
प्रत्यग्रसत्यत्नपरं परं परम् ।
हेयेतराकारबुधं बुधं बुधम् ,
करंस्तुवे विश्वहितं हित हितम् ।।१।।

Closing : भट्टारकै: कृतं स्तोत्र य: पठेद्यमकाष्टकम् ।
सर्वदा स भवद्भव्यो भारतीमुखदर्पण: ।।१०।।

Colophon : इति भट्टारक श्री अमरकीर्ति कृतं यमकाष्टकस्तोत्रं समाप्तम् ।

८००. योगभक्ति

Opening : थोस्सामि गणधराणं अणगाराणं गुणेहि तच्चेहिं ।
अंजलि मउलिय हच्छो अभिवंदंतो सविभवेण ।।१।।

Closing : ... जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इति योगभक्तिः सम्पूर्ण ।

८०१. अभिषेक पाठ

Opening : श्री मन्मन्दिरसुन्दरे ... ... जैनाभिषेकोत्सवे ॥

Closing : पुष्प जयकर भगवान के ऊपर चढावने गंधोदक कीये पश्चात् ।

Colophon : इति शान्तिधारा समाप्त ।
भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे तिथौ ४ रविवासरे संवत् १९५५ ।

८०२. अभिषक समय का पद

Opening : प्रभुवर इन्द्रकलश कर लायो,
शैलराज पर सजिसमाज सब जनम समय नहवायो ॥

Closing : प्रभु केवय प्रमान .... जनकल्याणक गायो ॥

Colophon : इति पद पूर्णम् ।

८०३. अकृत्रिमचैत्यालय पूजा

Opening : ॐ ह्रीं असुरकुमारार्च्चितपंकमार्गेषु दक्षिणदिगवतु
त्रिसतलक्षाकृत्रिम जिनालय जिनेभ्यो ॥१॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophong : नहीं है ।

८०४. अनन्तव्रत विधि

Opening : एकादशी के दिन पूरतन करैं भगवान की तब व्रत स्थापन है। एक करै तथा आचाम्ल पाणी भात करैं तथा द्वादशी को भी ऐसे ही करैं .. — ।

Closing : अनन्त व्रत के मादक करम के काटने वाले अनंत वनायसो नीके धारने स्वर्णरजत पटसूत्र भर्दव नवाई जी
पुजिभक्ति बहुत ठानि पुण्य उपजाय जी ।

Colophon : चतुर्दश पदार्थ चितवन की ब्यौरा जीव समास १४ अजीव १४ गुणस्थान १४ मार्गणा १४ । भूत । १५ । —
इति अनन्तव्रत विधि सम्पूर्णम् ।

८०५. अनन्तव्रतोद्यापन पूजा

Opening : श्री सर्वशं नमस्कृत्य सिद्ध साधू स्त्रिधा पुनः ।
अनंतव्रतमुख्यस्य पूजां कुर्वे यथाक्रमम् ।।१।।

Closing : साध्व्यंम्योगुणचन्द्रसूरिरमलब्धारित्रचेतो हर,
स्तेनेदं वरपूजन जिनवरानतस्य युक्त्यारचि ।
वेत्रग्रथानविकारिणो यतिवरास्तैः सोध्यमेतदवुधम्,
गंधादारविचंद्रमक्षयतरं संघस्य मांगल्यकृत् ।।५।।

Colophon : इत्याचार्य श्री गुणचन्द्रविरचिता श्री अनंतनाथ पूजन व्रत-पूजा उद्यापन सहिता समाप्ता ।।
सी० ग्रा० नयाष्टकसपु ~ ? ।।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
(२) जि० र० को०, पृ० ७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १६६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० २०५ ।
(५) जै० ग्र० प्र० सं० I, पृ० ३४ ।

८०६. अंकुर रोपणविधि एवं वास्तुपूजा

Opening : अथ अवारा विधिलिख्यते । जवारा किइदिन वावारचरि देव गुरु शास्त्र पूजा ··· ।

Closing : कीट प्रवेशादपि वास्तुदेवः,
चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ।।

Colophon : इति वास्तु पूजा विधि ।

८०७. अर्हद्देववृहद शान्तिविधान

Opening : जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु .... — ।
.... — — लोर सठपसाहूणं ।

Closing : एतद्देशीया महाभिषेकं नवुर्वन्ति तस्मान्मया न लिखितम् ।

Colophon : इत्यर्हद्देववृहद्शान्ति विधिः समाप्तः ।

८०८. अर्हदेव शांतिकाभिषेकविधि

Opening : देखें क्र० ७५७ ।

Closing : अनेन विधिना यथा विभवमर्हतः स्नापनं विधाय महमन्वहं सृजति यः शिवाशाधरः स चक्रिहरितीर्थंकृताभिषेकः सूरैः समर्चितपदः सदासुखसुधा बुधो मज्जति । इति पूजाफलम् ।

Colophon : एवं समुदायांकः ३६० इत्यर्हद्देव शांतिकाभिषेक विधिः समाप्ता ।
विशेष—यह ग्रन्थ करीब १८०० वि० सं० का है ।

८०९. अथ प्रकारीपूजा विधान

Opening : जलधारा चंदन पुहुय, अक्षत अरु नैवेद ।
दीपधूप फल अर्घजुत, जिन पूजा वसुभेद ।।

Closing : यह जिनपूजा अष्टविधि, कीजे कर सुचि अंग ।
प्रति पूजा जलधारसूं, दीजे अरघ अभंग ।।

Colophon : इत्यष्टप्रकारी पूजा विधानम् ।

८१०. अतीतचतुर्विशति पूजा

Opening : १-श्री निर्वाण जी, २-सागर जी, ३-महासाधुजी, ४-विमल प्रभ जी ... — ।

Closing : मांगल्य जन्माभिषेकसमये गर्भावतारे भवे,.

मांगल्यं यः सपरैश्च वरता ज्ञान च निर्वाणकैः ।
मागल्यं यः सदा भवंति भवता श्री नाभिराजो गृहे,
मांगल्यं यत्सदा भवंतु भवता श्री आदिनाथैः ॥

Colophon : इति जन्मपूजा संपूर्णम् । सं० १९६६ का ।

८११. वारसीचौबीसी पूजा वा उद्यापन

Opening : बारसि चुनीसानुवेक्ष । चतुर्दश जीवसमासा ।

Closing : कीर्तिस्फूर्ति ---- --- सेवाफलात् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्रीं शुभचन्द्र विरचित बारसि चुनीसां नूं उद्यापन मंत्रपाठ सम्पूर्णम् । श्री सूरतिबिंदिरे लिखापितम् ।

... — लालचन्द गुणवंत सपरैमनकर वाचियै भल भावै भगवंत । सं० १९४९ ।

८१२. भावना बत्तीसी

Opening : अतुलसुखनिधानं सर्वकल्याणबीजं,
जननजलधिपोतं भव्यसत्वैकपात्रम् ।
दुरिततरुकुठारं पुण्यतीर्थप्रधानं,
पिबतु जितविपक्षं दर्शनाख्यं सुधांबु ॥१॥

Closing : इति द्वात्रिंशतावृतैः परमात्मातमीक्षये ।
योनन्यगतचेतस्कयात्यसो परमव्ययम् ॥३३॥

Colopon : इति भावना बतीसी समाप्तम् ।

८१३. बीस भगवान पूजा

Opening : श्रीमज्जंबूधातकी --- --- नित्यं यजामि ॥

Closing : तुमको पूजा वन्दना करैं धन्य नर जोय ।
सरदा हिरदैं ओधरैं सो भी धरमी होय ॥

Colopon : इति श्री बीसविहरमानपूजा जी समाप्तम् ।

८१४. वृहत्सिद्धचक्र पाठ

Opening : प्रणम्य श्री जिनाधीशं लब्धिसामस्त्यसंयुतम् ।
श्री सिद्धचक्रयंत्रस्यार्च्चासहस्त्रगुणं स्तुवे ॥

Closing : श्री काष्ठासंघे ललितादिकीर्तिना भट्टारकेणैव विनिर्मितावरा
नामावलीपद्यनिबद्धरूपिका भूयात्सतां मुक्तिपदाप्तिकारणम् ॥

Colopon: इति श्री बृहत्सिद्धचक्रपाठ समाप्तम् । संवत् १६६१ चंद्रनाङ्क चंद्रेब्दे माधवे सितगेमुनौ स्वनिमित्तं लिखेत्सीतारामनामकरेणश ।

८१५. बृहत्सिद्धचक्रविधान

Opening : उर्ध्वाधोरयुतं सबिंदुसपरं ब्रह्मस्वरावेष्ठितम्
वर्गा· पूरितदिग्गतांबुजदलं मृतत्वंधितत्त्वान्वितम् ।
अन्त. पत्र तटेष्वनाहतयुल ह्रींकार संवेष्टितम्
देवं ध्यायति यः स्वंमुक्तिशुभगो वैरिभकठण्ठे स्वः ॥

Closing : निरवशेषनिरसनाय दिव्यमहार्घ्यम् निर्वपामि
स्वाहा पूर्णार्घ्यम् । एवं शांतिधारादि । पुष्पाञ्जलिः ॥

Colophon : इति सर्वदोषपरिहार पूजा ॥

८१६. वृहत्शान्ति पाठ

Opening : भो भो भव्या श्रृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् ।
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥

Closing : अहं तित्थयरमाया देशिवावी तुह्ल नयरनिवासिनी अह्ल
शिवं तुह्लशिवं अशिवोपशामं शिवभवंतु स्वाहा. ।

Colophon : इति वृहद् शांति समाप्तम् । सकल पंडित शिरोमणि पंडित श्री दानकुशलमणि गणिराज कुशल शिष्य गुमानकुशल लिखितम् ।

८१७. चन्द्रशतक

Opening : अनुभव अभ्यास में निवास शुद्ध चेतन को,
अनुभव सरूप शुद्धबोध को प्रकाश है ।

अनुभव अनूप ऊपरकृत अनंत (ज्ञान) ग्यान,
अनुभव अतीत त्याग ग्यान सुखरास है ।

Closing : सपत सेष गुनथान थैं छूटे एक सत देवकी ।
यौं कह्यौ अरथ गुरु ग्रन्थ मैं सति बचन जिनसेवकी ।।

Colophon : इति श्री चद्रशतक संपूर्णम् । मितीमाघशुक्ल द्वितीया सोमवासरे सम्वत् १८६० साल मध्ये । लिखापित श्री धर्ममूरति बाबू अच्छेलाल जी जातिअग्रवाल बसैया आराके । लिपिकृतं नंदलाल पांडे छपरा के दौलतगंज मध्ये । श्रीजिनं भजत् ।

८१८. चैत्यालय प्रतिष्ठाविधि

Opening : सुकनासस्य पर्यन्तं वेदिकास्तरंसरे ।
गर्भे प्रनरकं कृत्वा वेदिकां तत्र विन्यसेत् ।।

Closing : शांतिकरौष्टिकं इति षटकर्मविधि — .... ।
... ... मुक्तिकांतापिवश्या ।।

Colophon : इति यंत्रार्चन विधि समाप्ता: ।

८१९. चतुर्विंशति पूजा

Opening : ऋषभ अजित .... — पुष्प चढ़ाय ।।

Closing : भुक्ति मुक्ति दातार ... ... सिव लहै ।।

Colophon : इति श्री समुच्चय चौबीसी पूजा संपूर्णम् ।
इह पूजन जी की पोथी चढ़ाया व्रत के उद्यापन में बाबू परमेसरी सहाय की भार्या बनसीकुंवर ने । मोज गांमिल । मिती फागुन बदी २२ । सन् २२८३ साल ।
विशेष—इसकी १४ प्रतियां है ।

८२०. चतुर्विंशतितीर्थंकर पूजा

Opening : प्रणम्य श्री जिनाधीशो लब्धिसामस्तिसंयुतम् ।
चतुर्विंशति तीर्थेशां वक्ष्ये पूजां क्रमागताम् ।।

Closing : — — पश्चात् चतुर्विंशति जिनमातृकास्थापनम् ।

Colophon : मिति भाद्रव। कृष्णपक्षे तिथौ च आज १३ तेरस: शनिवरवासरे संवत् १२६२ का । शाके १७५७ का प्रवर्समाने लिप्यकृतं मथेन राधा की सनवासरूपनगममध्ये पोथी लिखी। श्रीरस्तु मंगल क्रियात् । श्री गुरुभ्यो नमः ।। पोथी चोइस महाराज की पूजा संपूर्ण समाप्ता ।

देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms , P. 640.

८२१. चतुर्विंशति जिन पूजा

Opening : देखें, क्र० ८१६ ।

Closing : देखें, क्र० ८१६ ।

Colophon : इति श्री चतुर्विंशतिजिनपूजा सम्पूर्णम् ।

८२२. चौबीसी पूजा

Opening : अलख लखत सब जगत् के, रखवारे ऋषिनाथ ।
नाभिनंद पदपद्म छवि, तिनहिं नवाऊँ माथ ।।

Closing : ··· — भव रूज मैं ठन वैद्यराज शिवतिय के भर्त्ता,
तिनचरण त्रिकाल त्रिशुद्ध है, नमिनमिनित आनंद धरते ।
जिन वर्तमान पूजन शुभगमनरंग संपूरन करते ।।

Colophon : संवत् विक्रम द्विक सहस, तामैं अड़तीस ऊन ।
पांच कृष्ण वैशाख की, चंद्रवार रिषम्लून ।।१।।
नगर सहारनपुर विषैं, सीताराम लिखंत ।
भविजन वांचो भावसों, पाठक पाठ पढ़ंत ।।२।।
संवत् १९६२ शक १८२७ वैशाख कृष्णा ५ सोमदिने शुभम् ।

८२३. चौबीसी पूजा

Opening : वंदौं पांचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदित जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकास ।।

Closing : कासीजोनो कासीनाथ नकवी अनंतराम मूलचंद आठल सुराम आदि जानियो ।
सजन अनेक तिहां धर्मचंद जी को नद वृंदावन अग्रवाल गोलगोती बानियौ ॥
तातें रच्यो पाय मनालाल को सहाय बालबुद्धि अनुसार-सुनी सरधानियौ ।
तामें भूलचूक होय ताहि सोधि सुद्धकीज्यो मोहि अल्पबुद्धि जानि क्षमा उर आनियौ ॥

Colophon : नहीं है ।

८२४. चौबीस तीर्थङ्करपूजा

Opening : देखें क्र० ८२३ ।

Closing : जय त्रिसमानंदन हरि कृत वदन जगदानंदन चंद बरं ।
भवताप निकन्दन तनकन मदन रहित सवंदन नयन धरं ॥

Colophon : नहीं है ।

८२५. चौबीसी पूजा

Opening : देखें, क्र० ८२३ ।

Closing : चौबीसों जिनराज को जजो अंकसुनाथ ।
इच्छा पूरन कर प्रभू, हे त्रिभुवन के राय ॥

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीसी पाठ सम्पूर्णम् । कार्तिक कृष्ण ६ सं० १९६५ वार शनि ।

८२६. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : इन्द्रः चैत्यालयं गत्वा वीक्ष्य बज्रांमसज्जिनान् ।
यागमंडलपूजार्थं कर्मचिरेविदं ॥१॥

Closing : धूपश्रीखण्डदेवदारोमं गुग्गुलं रसरसिला ।
घृतरालश्च माषाज्य मूलवपसंग्रहादिकम् ॥

Colophon : इति चिंतामणिपार्श्वनाथ पूजा समाप्ता ।
देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 641.

८२७. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : जगद्गुरुजगद्देवं जगदानन्ददायकम् ।
जगद्वंद्यं जगंन्नाथ श्रीपार्श्वं संस्तुवे जिनम् ।

Closing ; जित्वा दाराति भवांतरश्रेष्ठं
... कर्मापर्वत ।।

Colophon : :—

८२८. चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा

Opening : शान्तं — .... ।
जायते पुजयेद्यः १ ।।

Closing : आपद विविधहारी संपदा सौख्यकारी,
त्रिभुवन पदधारी सिद्धलोकाग्रसूरी ।
जल वहुविध पूरैं गंधमाल्यादि साहै,
जिनवर मुख विम्बं पूजित भावभक्त्या ।।

Colophon : इति पूर्ण ।

८२९. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : देखें, क्र० ८२७ ।

Closing : दीर्घायुः शुभगोत्रपुत्रवनिता — .... ।।
... मांगल्यमोक्षोद्यतः ।।

Colophon : इति श्री चिंतामणिपार्श्वनाथवृहत्पूजा समाप्ता ।

८३०. दसलाक्षण उद्यापन

Opening : विमल गुणसमृद्धं ज्ञान विज्ञान शुद्धम्,
अभयवन प्रचंडं विश्वपूज्य प्रचंडम् ।
व्रत दसविधसारं संजते श्री विपारं,

प्रथम जिन चिवक्षं श्रीवृताख्यं जिनेशम् ।।

Closing : दशधर्म प्रभां पूजां सुमतिसागरोदितम् ।
स्वर्गमोक्षप्रदां लोके, विश्वजीवहितप्रदाम् ।।

Colophon : इति दसलाक्षणोद्यापन समाप्तम् ।
देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. १३६ ।
(२) जि. र. को., पृ. १६८ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६०।
(४) रा० सू० III, पृ० ५४
(५) रा० सू० IV, पृ० ७६५ ।
(६) भ० सं०, पृ० १६३, २०० ।
(७) जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ८७ ।

८३१/१. दशलक्षण उद्यापन

Opening : देखें, क्र० ८३० ।

Closing : देखें, क्र० ८३० ।

Colophon : इति श्रीदशलक्षणोद्यापनपाठ सम्पूर्णम् ।

८३१/२. दशलाक्षणीक व्रतोद्यापन

Opening : देखें, क्र० ८३० ।

Closing : उपवासपरोजातो ··· ·· विश्वजीवहितप्रदम् ।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी उद्यापन जी संपूर्ण जेष्ठ कृष्ण ११ एकादश्यां भोमवार १ बजे दोपहर को संवत् १६५५ आरामपुर निजग्रह में बाबू हरीदास पूज्यदादा वृंदावन जी के पोते को पुत्र बाबू अजितदास के पुत्र ने लिखा ।

८३२. दसलक्षण पूजा

Opening : उत्तम छिमा मारदव आर्जव भाव हैं,
सत्य शौच संजम तप त्याग उपाय हैं ।

आकिंचन ब्रह्मचर्य धर्मदस सार हैं,
चहुंगति दुःख तैं काढ़ि मुकति करतार हैं ।।

Closing : करैं कर्म की निर्जरा, भवपींजरा विनाश ।
अजर अमर पद कूँ लहै, द्यानत सुख की राश ।।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा संपूर्णम् ।

८३३. दसलाक्षण पूजा

Opening : उत्तमादि क्षमाद्यंते ब्रह्मचर्य सुलक्षणम् ।
स्थापयंद्दशधा धर्ममुत्तम जिनभाषितम् ।।

Closing : कोहानल चक्कउ होइ गुरुक्कउ, जाइरिसिंद सिद्धइं ।
जगताइ सुहंकरू धम्ममहातरू देइ फलाइ सुमिट्ठइ ।।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा आरती संपूर्णम् ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५ ।

८३४. दसलाक्षण पूजा

Opening : देखें—क्र० ८३३ ।

Closing : देखें—क्र० ८३२ ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी पूजा सम्पूर्णम् ।
श्री संवत् १६५१ मिती वैशाखकृष्ण परिवा को सितल-प्रसादके पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

८३५. दशलाक्षण पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३३ ।

Closing : देखें, क्र० ८३२ ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

८३६. दर्शन सामायिक पाठ संग्रह

Opening : चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो नमः श्रीसरस्वतिभ्यो नमः ··· ।।

विशेष—अनेक पाठों का संग्रह किया गया है ।

८३७. देवपूजा

Opening : सुरपति — ... पूजा रचों ॥

Closing : कीजै सकत समान विन सकते सरधा धरो ।
सासत मरधाबाल अजर-अमर सुख भोगवे ॥

Colophon : इति ।

८३८. देवपूजा

Opening : ॐ अपवित्रपवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोपि वा ।
ध्यायेत् पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

Closing : श्रीसंघानविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयंतो नराः,
पुन्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूतालपो भूषणाः-
ते भव्याः सकलाः विवोधरूचिरं सिद्धिं लभंते पराम्॥ ''।

Colophon : इतिदेवपूजा समाप्तम् ।

विशेष - नेमिनाथ का बारहमासा भी इसके बाद में दिया हुआ ।

८३९. देवपूजा

Opening : जय जय जय णमोत्थु ... ... — ।
.... सव्वसाहूणं ॥१॥

Closing : हरीवंशसमुद्भूतो गरिष्टमेमिर्जिनेश्वरः ।
ध्वस्तोपसर्गदैत्यारि पार्श्वनागेन्द्रपूजितः ॥४॥

Colophon : — अनुपलब्ध

८४०. देवपूजन

Opening : देखें—क० ८३९ ।

Closing : दुःख का क्षय होहु । कर्म का छय होहु ।
भली गति विषै गमन होहु । ...... ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् ।

८४१. देवशास्त्रगुरु पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३६।

Closing : जे तपसूरा संयमधीरा सिद्धिवधूअणुराइया।
रयनत्तयरंजिय कम्महगंजिय ते रिसिवर मम झाइया॥

Colophon : इति देवशास्त्रगुरुपूजा जी समाप्तम्।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६।

८४२. देवपूजा

Opening : ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्नान स्थान भू: शुद्धयतु स्वाहा।

Closing : तुष्टिं पुष्टिमनाकुलत्वममिल सौख्यश्रियं संपदौ।
दद्यात्पुत्रकलित्रमित्रसहितेभ्य: श्रावकेभ्य: सदा॥

Colophon : इति न्हवण विधि संपूर्णम्।

देखें (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६७।

८४३. धर्मचक्रपाठ

Opening : आपदागम परारथों के, स्वामी सर्वज्ञ आप हो।
सुरिंद वृंद सेवै है, आपहीं को इसलोक मे॥१॥

Colsing : वर्षत्वानद मोधा: प्रशरतु सततं भद्रमाला विशाला,
... . भोअयुग्मप्रसुते॥

Colophon : इत्याचार्यवर्य्यं धर्म्मभूषणपदांभोजदिवाकरायमानै: श्री यशोनंदीसुरिभि: प्रणीत धर्म्मचक्रपाठ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा बुद्धवार संवत् १९६२ आरामपुर में हरिदास ने लिखकर पूर्ण किया।

८४४. धर्मचक्रपाठ

Opening : ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शना नम: स्वाहा, ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम.।

Closing : ॐ ह्रीं मिश्रमिथ्यात प्रकृत श्री सिद्धदेवेभ्यो नम: स्वाहा।

Colophon : अनुपलब्ध

८४५. धर्मचक्र पूजा

Opening : ह्रींकारेणदृतोर्हन् मिदलरसदलं तद्वहि:,
बीजयुग्मं ब्रह्मस्वंबालराले सकलशशिमिव लेखयेत्परमेष्ठीम्॥

पूर्वं रत्नत्रयाकं त्रिगुणवरयुतं धर्म्मपंचद्विकेन
तद्बल्यिद्वाष्टकं यद्वधिकगुणयुतं पूजयेद्भक्तिनम्र: ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं श्री वीरनाथाय नमः ।।२४।।

Colophon : इति धर्मचक्रपूजा विधिः समाप्ता । शुभं भवतु ।

८४६. गणधरवलय पूजा

Opening : जिनान् जितारातिगणान् गरिष्टाम,
देशावधीन् सर्वपरावधींश्च ।
सत्कोष्ठबीजादिपदानुसारीन्,
स्तुवेगनेसानपि तद्गुणादौ ।।१।।

Closing : चरिगणिदसमरं तहं फिट्टइवाहि असेसलऊ ।
वऊ पावम नासई होइ लभि महामुण सविसदजणण ।।

Clophon : इति ।

८४७. गणधरवलय पूजा

Opening : प्रणम्य शिरसार्हंतं पवित्रिस्तीर्थवारिभिः ।
गणीन्द्रवलयस्याग्रे पूर्णकुंभं न्यासाम्यहम् ।।

Closing : ... संपूजकानां इत्यादि शांतिधारा ।

Colophon : इति श्री गणधरवलय पूजा समाप्त:

८४८. ग्रहशान्तिपूजा

Opening : अम्मलवन गोचर समै, रवि सुत पीड़ा देई ।
तव मुनिसुव्रत पूजवे, पातक नास करेय ।।

Closing : सगुन अधिकारी दुःख हरभारी रोगादिक हरनम् ।
भृगु सुत दव जाई पाप मिटा (ई) पुष्पदंत पूजत चरनम् ।।

Colophon : इति शुक्रारिष्ट निवारक पुष्पदंत पूजा सम्पूर्णम् ।

८४९. होमविधान

Opening : श्री शांतिनाथ ममरासुर मर्त्यनाथः,
माध्वंति रीवमणि दीधित पादपद्मम् ।

त्रैलोक्य शांतिकरणं प्रणवं प्रणम्य:
होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुक्षपामी ।।

Closing : तिनने लिखदिनो होम को विधान जान,
पंडित सु लक्ष्मीचंद नाम जु बखान है।
भूल चूक होय जो भाई तुव सुधारि लिज्यो,
हमपर छिमाभाव मेरी यह आन है ।।

Colophon : इति सम्वत् १६३० मिती चैत्रवदी १० राति आधी गई रोज सोमवार ।

८५०. होमविधान

Opening : शांतिनाथं जिनाधीशं वंदितं त्रिदशेश्वरे ।
नत्वा शांतिकमावक्ष्ये सर्वविघ्नोपशांतये ।।१।।

Closing : ॐ ह्रौं क्रों प्रशस्ततर: सर्वदेवा ममाभिलषित
सिद्धि कृत्वा निज-निज स्थानं गच्छतु ॐ स्वाहा ।

Colophon : इत्याशाधर विरचितं शांत्यर्थं होम विधानं सम्पूर्णम् ।

८५१. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : सकलकेवलज्ञानप्रकाशकं, सकलकर्मविपाटन सद्भवम् ।
सकलचिन्मय ज्योतिनिवासकं, सकलधर्मध्वजांकित सद्रथम् ।

Closing पद्मपुरुषपद्मसमानमति, पद्मालयासजमुक्तिभागी ।
तन्मंगलं भव्यजनाय कुर्यात् सुरोजचिन्तांकितविश्व-
दृष्टि: ।।

Colophon : इति रुचिकगिरिउत्तरदिक्, चैत्यालयपूजा समाप्ता । इति श्रीविशालकीर्तित्यात्मज विश्वभूषणभट्टारक विरचितायां इन्द्रध्वजपूजा समाप्ता । मिति माघ कृष्णपक्षे ६ म्यां शुक्रवासरे सवत् १६१० ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र० पृ० १७३ ।
(२) जि० र०, को०, पृ० ४० ।
(३) रा० सू० II, पृ० ५७, ३०६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० ५०, १६८ ।
(५) आ० सू०, पृ० १७१ ।

८५२. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : देखें, क्र० ८५१ ।

Closing : देखें, क्र० ८५१ ।

Colophon : देखें, क्र० ८५१ ।

श्रीसंवत् १६५१ मी० वैशाख कृष्ण परिवा को सितलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढाया पंचायती मंदिर जी में ···· ···· १६५३ ।

८५३. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : सकलमेत्र कथामृततर्प्यकं, सकलचारुचरित्रप्रभासतम् ।
सकलमोहमहांतमघातकं सकलकलासप्रवासकम् ॥

Closing : देखें, क्र० ८५१ ।

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मिज विश्वभूषणभट्टारक विरचितायां इन्द्रध्वज पूजां समाप्ता । सम्वत् १८७० ज्येष्ठ शुक्ल एकादस्यां बुधवासरे पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्म्मने लेखि पट्टनपुर मध्ये । शुभमस्तु । पुस्तक संख्या ३६०० । लाला शंकर लाल रतन चंद के माथे के ।

८५४. जन्मकल्याणक अभिषेक जयमाला

Opening : श्रीमत श्री जिनराज ···· पूजा च मेरी कृतम् ॥

Closing : जिनवर वरमाला ···· लभंते विमुक्ति ॥

Colophon : इति श्री जन्मकल्याणक अभिषेक की जयमाला सम्पूर्णम् ।

८५५. जापविधि

Opening : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

Closing : दर्शन दे चाहे तो एक लाख जाप करै दिन तीनि उपवास के पारने परमोवाह लाल वस्त्र लाल माला कनेर के फूल करणा तेज प्रताप अपि करै ।

Colophon : इति जाप विधि सम्पूर्णम् ।

८५६. जिनपंचकल्याणक जयमाला

Opening : जिनेन्द्रपदाब्जयुगं प्रणम्य स्वर्गापवर्गैककरं कराणां ।
सुरासुरेंद्रादिभिरर्च्चनीयं तस्यैवभक्त्यास्तवनं करिष्ये ॥

Closing : विद्याभूषणसूरिपादयुगलं नत्वाकृतं सार्थकं,
स्तोत्रं श्री सुखदायकं मुनिनुतैः संगर्भितं सुंदरम् ।
पञ्चाश्चर्यरित्रपचकयुतं श्री भूषणैः भूषणैः,
तीर्थेशैर्गुणगुंफितं कृतकरं प्रण्यं सदाशंकरम् ॥

Colophon : इति जिन पंचकल्याणक जयमाला सम्पूर्णम् ।

८५७. जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय (विद्यानुवादांग)

Opening : लक्ष्मीं दिशतु वो यस्य ज्ञानादर्शे जगत्त्रयम् ।
भ्यदीपि स जिनः श्रीमान्नाभेयो नौरिवाम्बुधौ ॥१॥
माङ्गल्यमुत्तमं जीयाच्छरण्यं यद्रजोहरम् ।
निरहस्यमरिघ्नं तत्पञ्चब्रह्मात्मकं महः ॥२॥

Closing : तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रं द्विगुणं भवेत् ।
लग्नन्तु त्रिगुणं तेषां शुभाशुभफलं भवेत् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

८५८. जिनयज्ञफलोदय

Opening : सर्वज्ञं सर्वविद्यानां विधातारं जिनाधिपम् ।
हिरण्यगर्भं नाभेयं वन्देऽहं विबुधार्चितम् ॥१॥
अन्यानपि जिनान्नत्वा तथा गणधरादिकान् ।
कथ्यते मुक्तिसम्प्राप्त्यै जिनयज्ञफलोदयः ॥२॥

Closing : द्विसहस्रमिदं प्रोक्तं शास्त्रं ग्रन्थप्रमाणतः ।
पञ्चाशदुत्तरैः सप्तशतश्लोकैश्च संगतम् ॥४२७॥
पञ्चाशत्त्रिशतीयुक्तसहस्रशकवत्सरे ।
प्लवंगे श्रुतपञ्चम्यां ज्येष्ठेमासि प्रतिष्ठितम् ॥४२८॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमत्कल्याणकीर्तिमुनीन्द्रविरचिते जिनयज्ञफलोदये विप्रभट्टहेमप्रभादिकृत जिनयज्ञाष्टविधानाख्यवर्णनं नाम नवमो लम्बः समाप्तः । अस्मिन् ग्रंथे स्थितानि श्लोकानि ॥२७५०॥ करकृतमपराधं क्षन्तुमर्हन्ति संतः इति प्रार्थयामि ।

अयं जिनयज्ञफलोदयो नाम ग्रंथः वेणुपुर (जैन मूडबिन्द्री) निवासिना नेमिराजाख्येन लिखितः । रक्ताक्षिसंवत्सरे फाल्गुनशुद्धाष्टम्यां समाप्तश्चाभूत् ।

८५९. जिनप्रतिमा स्थापन प्रबन्ध

Opening : श्रीजिन वंदउं चोवीस, सविसयधर नइं नामुं सीस ।
श्री सदगुरुना चरण नमेवि, मनि संभारु शारद देवि ॥

Closing : संवत् सोलसतोत्तरइं कार्तिक शुदि तेरसि वारइ गुरइ ।
भणतां गुणतां अणंद करइ, नवउजा जिम धर्म
विस्तरइं ॥६१॥

Colophon : इति श्रीब्रह्मर्षिरचिते जिनप्रतिमास्थापनप्रबंधे सम्पूर्णम् ।

८६०. जिनपुरंदरव्रतोद्यापन

Opening : श्री मदादिजिनं नौमि पंचकल्याणनायकं ।
इंद्रादिभिर्देवगणै पूजित अष्टधाश्च तैः ॥

Closing : धर्मवृद्धि जयमंगलमालराज ऋद्धिप्रददाति समाजं अपापताप दुःखरोगविनाश कुर्वते जिनपुरंदरवास: । इत्याशीर्वाद: ।

Colophon : इति श्रीजिनपुरंदरपूजा उद्यापन समाप्तम् । मिति मार्गशिर (शीर्ष) बदी ४ भोमवासरे सम्वत् १९३२ लिखतं रामगोपाल ब्राह्मण ।

८६१. कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजा

Opening : ह्रींकारं ब्रह्मरुद्रं ... ... ।
... ... विद्याविनासे प्रयुक्तम् ॥१॥

Closing : तरलतरो ... . ।
राजहंसोबाताह ॥

olophon : इति कलिकुंड स्वामी पूजन सम्पूर्णम् ।

८६२. कलिकुंडल पूजा

Opening : ॐकारं ब्रह्मरूद्रं स्वरपरिकलितं वज्ररेखाष्टभिन्नं,
वज्रस्याग्रांतराले प्रणवमनुपमानाहतं संवृणि च ।
वर्णाँलाधानसर्पितान् ... ...
... दुष्टविद्याविनासी ॥१॥

Closing : इति परमजिनेन्द्रं विनुतमहिदं यह: कलिकुंडमरचंडं संद्वयं ।
पूजयति सजयति स्तुतिकृतिमयति प्रतिसिवं मुक्तभुवयं ।।

Colophon : इति कलिकुंडल पूजा समाप्तम् ।

८६३. कलिण्ड़ाराधना विधान

Opening : सत्पुष्पधाम्ना प्रविराजितेन पुष्पेण पूर्णेन सुपल्लवेन ।
संमंगलार्थं कलिकुंडदेवम् उपाग्रभूमौ समलंकरोमि ।।
शुद्धेन शुद्धह्रदकूपवापीगंगातटाकादिनामाबृतेन ।
प्रीतेन तोयेन सुगंधिनाहं भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ।

Closing : कलिलदहनदक्षं योगियोगोपलक्षम्
ह्याविकुलकलिकुंडो दंडपार्श्वप्रचंडम्
शिवसुखमभवद्वा वासवल्ली वसन्तम्
प्रतिदिनमहमीडे वर्द्धमानस्य सिद्धयैं ।।

विशेष—प्रशस्ति संग्रह (श्री जैनसिद्धान्तभवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ६६ में संपादकभूजवली शास्त्री ने ग्रन्थ के बारे लिखा है—इस कलिकुण्ड़ाराधना' के आदि में कलिकुण्ड़यन्त्र एवं श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा का अभिषेक, भूमिशुद्धि, पञ्चगुरुपूजा और चत्तारि अर्घ्य निर्दिष्ट हैं। बाद पार्श्वनाथ पूजा एवं इन्हीं की मन्त्रस्तुति धरयोन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षी की पूजा तथा इनके मन्त्र स्तोत्र दिये गये हैं। इसके उपरान्त मंत्र लिखने की विधि और फल इत्यादि का निर्देश करते हुए प्रस्तुत मन्त्र की पूजा बतलाई गयी है। अन्तमें यन्त्रीय मंत्र की स्तुति, मंत्रस्थ पिण्डाक्षरोका अर्घ्य, अष्टमातृका की पूजा, मन्त्रपुष्प और जयमाला लिखी गयी है। इसके कर्ता भी अभी तक अज्ञात ही है।

८६४. कर्मदहन पाठ भाषा

Opening : लोक शिखर तन छांडि अमूरति ह्वै रहै।
चेतन ज्ञान सुभाव नेहतैं भिन्न भये ।।
लोकालोक त्रुकाल तीन सब विधिधनी ।
जामैं सो सिद्धदेव जजौं बहु थुति ठनी ।।

Closing : अपकर्म लोको हरिके उसकी बुधि आई रे।
तब जिय उरकंपाय चेत मन भा ——···· ॥

Colophon : नहीं है।

८६५. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८६४।

Closing : नमो सिद्ध सिद्ध कारनैं, भक्ति मद्रा मनलाय।
पूजों सो शिवसुख लहैं, और कहा अधिकाय॥

Colophon : इति श्री कर्मदहन पूजा पाठ समाप्तम्। श्री सम्वत् १९५१ मिती बैशाख कृष्ण परिवा (प्रतिपदा) कों शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढ़ाया।

८६६. कर्मदहन पूजा

Opening : सकलकर्मविमुक्ताय सिद्धाय परमेष्ठिने।
नमोनेकांतरूपाय सिद्धायशिवसर्मणे॥

Closing : आनंदामृतजन्मधामनगरी मा पद्मपद्माकरी।
धर्मा सां जयतां जिनमयतु श्रेयस्करी शंकरी॥

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्ता॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७६, १७७।
(२) जि० र० को०, पृ० ७१।
(३) रा० सू०, पृ० ३२।
(४) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 631.

८६७. कर्मदहन पूजा

Opening : ॐ नहीं चौरसुई ——··· ॥

Closing : विविध—वस्तुएँ।

८६८. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८९५ ।
Closing : देखें—क्र० ८९६ ।
Colophon : इति कर्मदहनपूजा संपूर्णम् ।
इदं कर्मदहनपूजाव्रजलालदासवयात्मज जिनणरदासेन लिखपितं ।।
स्वयं पठनाय ।।

८६९. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें क्र० ९५ ।
Closing : देखें, क्र० ८६१ ।
Colophon : आशीर्वाद: । इति कर्मदहनपूजा समाप्ता । ग्रंथ संख्या ३३५ । शुभं भवतु ।

८७०. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८९५ ।
Closing : देखें—क्र० ८६८ ।
इति कर्म दहन पूजा संपूर्णम् ।
Colophon : शुभमस्तु ।

८७१. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८९३ ।
Closing : या कर्मनिकर्म — — पूजेयमानन्दवी ।।
Colophon : इति सूरि श्री वादिचन्द्रकृता श्री कर्मदहनपूजा समाप्ता ।

८७२. क्षेत्रपाल पूजा

Opening : श्री काष्ठासंघे गच्छनंदीतटे विद्यागणे प्रणिपत्य पूर्वम् ।
श्री क्षेत्रपालोत्तमपूजनस्य, विधिंप्रवक्ष्ये विधि मार्गमंक: ।।

Closing : पुत्रान्च मित्राणि कलत्रबन्धून्, सर्व्वांश्चकीर्तिरमणी सरूपाः ।
श्री क्षेत्रपालोपरप्रभावा दायांतु ते सर्व समी हितानि ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालपूजा समाप्तम् । शुभ संवत् १८३६ पोषशुक्ल चौथचंद्रवासरे लि० चैनसुखेन । शुभ भूयात् ।

विशेष—सबसे अन्त में एक स्तुति भी लिखी गई है ।

८७३. लघु सामायिक पाठ

Opening : पडिक्कमामि भंतेइरियाए विराहणाए अणगुत्ते अइगमणे णिगमणे चंकमणे पाणगमणे ··· ··· ··· ।

Closing : गुरवः पांतु वो नित्यं, ज्ञानदर्शननायकाः ।
चारित्रार्णवं धीराः मोक्षमार्गोपदेशकाः ॥

Colophon : इति सामायिक स्तवनं समाप्तम् ।

८७४. महाभिषेक विधान

Opening : श्रीमद्भिर्जिनराजजन्मसमये स्नानक्रमप्रक्रिया,
मेरौ सूक्ष्निपवः पयोविनिमयवः पूर्णैः सुवर्णात्मकैः ।
कामं याममितश्रियाघटशतैः शक्रादयश्चक्रिरे,
स्वामजार्यजनानुरागजननी जातोत्सवंप्रस्तुवे ॥

Closing : पायोभिःपातयामस्तदनुतजगतां शांतये शांतिधाराम् ।

Colophon : एवं चाह्ं क्रमेणपरिसमापित महाभिषवस्य कल्याणमहामह विधानः समाप्तः ।

८७५. महावीर जयमाल

Opening : अमृतसरसिहंसो सुकृतध्यातहंसो,
भवकदंबनुअहंसो मुक्तिमार्गैकहंसः ।
करणविजयहंसो भावदंभहंसो,
जयतुसुवीसुवीरो भव्यलेखासुखाम: ॥१॥

Closing : अखिलनृसुरावती पंचकल्याणकर्त्ता,
त्रिदशवरणकर्त्ता दुःखसंदोहहर्त्ता ।
भवजलनिधितर्त्ता सिद्धिकांताविवर्त्ता,
भवतु जगतिवीरो नेमीशं मंगलाय ॥१०॥

Colophon : इति श्री महावीर जयमाल समाप्तम् ।

८७६. मंदिरप्रतिष्ठा विधान

Opening : श्री महावीरजिनेशानं प्रणिपत्य महोदयम् ।
अर्हद्भव्यविधानस्य शुद्धिं वक्ष्ये यथागमम् ॥

Closing : तिर्यग्प्रचाराद्वनिप्रपाता,
द्दीजप्ररोहा च् कालपातात्
कीटप्रवेशादपि वास्तुदेवा:,
चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ॥
अथाग्रे शांतिधारा कुर्यात् ।

Colophon : नहीं है ।

८७७. मृत्युंजयआराधना विधान

Opening : चंद्रपुरांबुधिचंद्रं चंद्रार्क चंद्रकांतिसंकाशम् ।
चंद्रप्रभजिनमंचे कुंदेंदुस्फारकीर्तिकांताक्रांतम् ॥

Closing : अत्यंतभव्यानतदेवचंद्रसूर्याभिवंद्याश्रजिनेन्द्रभक्ताः ।
सद्भूणिकाद्या उररीकृताभ्यां सर्वोपमृत्युं विनिवारयंतम् ।
अणिमादिगुणैश्वर्यशालिन्येस्त्वष्टमातरः ।
याचकानां सुखायैव सुप्रसन्ना भवंतु ते ॥

Colophon : नहीं है ।

८७८. मूलसंघकाष्ठा संघी

Opening : [illegible] — — — ।
[illegible] जैनागमैकोत्सवे ॥

Closing : — ... ... सिंहरनिल्याय चहुपटह वजिनय कहुत ···· ···।

Colophon : Missing.

८७९. नन्दीश्वर विधान

Opening : नंदीश्वर पूरव दिशा, तेरह श्री जिनगेह।
आह्वानन तिनको करौं, मन वच तनधरिनेह ॥

Closing : अध्यलोक जिनभवन अकीतिम ताको पाठ पढ़ै मन लाइ।
ताके पुन्य तनी अति महिमा बरनन को करि सकै बनाई ॥
ताके पुत्र पौत्र अरु संपति बाढ़ै अधिक सरस सुखदाइ।
इह भव जस परभव सुखदाई, सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ॥

Colophon : इति श्री नंदीश्वर दीप की उत्तर दिशि सम्बन्धी एक अंजन गिरि चार दधिमुख गिरि आठ रतिकर गिरि पर यथोदश सिद्धकूट जिन विराजमान तिनकी पूजा सम्पूर्ण।

८८०. नन्दीश्वर विधान

Oenping : अष्टमद्वीप नंदीश्वर बहु विस्तार है।
ताके चव (हु) दिसि बावन गिरि मनिधारि हैं ॥

Closing : सामान (सामान्य) भाव ऐसें जानि लेना और विशेष भाव अन्य शास्त्र तें जानि लेना। इस मंडल की नकल सुभट-आकारकारजी।

Colopohn: इति सम्पूर्ण अष्टमाह्न की नंदीश्वर पूजा चार दिस संबंधी द्वापंचासजिनालय टेक चंद कृत संपूर्णम्।
पौष सुदी आठै दिवसै बारसुभो पहिचान।
संवत्सर (उन्नीस) सै अधिक इक्यावन मान ॥
संवत् १९५१ लिखतं पं० ... बद्रुप्रसाद पंडेरी वारल की। (बालेकी)

८८१. नवग्रह अरिष्ट निवारणक पूजा

Opening : अर्कश्चंद्रकुज: सौम्यगुरुशुक्रशनैश्चर:।
राहुकेतुग्रहारिष्टनाशनं जिनपूजनात् ॥१॥

Closing : चौबीसों जिनदेव प्रभु ग्रह बंधो विचार ।
फुनि पूजौं प्रत्येक तुम जो पावो सुखसार ॥११॥

Colophon : इति नवग्रह पूजा सम्पूर्णम् ।

८८२. नवकार पच्चीसी

Opening : ··· मुषकूं ढके बोलई या परद्यम के हरइ या कल्पना न जाके हियै है ।

Closing : यह नवकार सु पच पद जपो सुमनवचकाय ।
सकलकर्मनासकरि पचमगति को जाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री नवकारपचीसी समाप्त: । मिति ज्येष्ठ शुक्ल चउदश्या सवत् १६१३ साल ।

८८३. नांदी मंगल विधान

Opening : तनूदरीनिर्मितमंगलादिके नांदीविधानं क्रियतेत्रशोभनम् ।
पूर्वविनिर्वार्य जिनार्चनततो जलादिभिर्गंधविशेष-
कौमुदा ॥

Closing : ॐ कपिल वटुकपिंगलाय क्लौं ब्लौं स्वां लां ह्रीं पुष्पवंत संवौषट् ।

Colophon : इति नांदीविधान संपूर्ण ।

८८४ नान्दीमंगलविधान

Opening : यातु श्रीपादपद्मानि पंचानांपरमेष्ठिना ।
ललितानि सुरधीश चूडामणि मरीचिभि: ॥

Closing : ओं ह्रीं ... स्वाहा, पट्टस्थापनम् ।

Colophon : इति नांदी मंगलविधानं समाप्तम् । शुभंभूयादिति च ।

८८५. नित्यनियम पूजा

Opening : सौधर्म्यसेंतसमकृत ···· ···· जिनेन्द्रसभाजम् ॥

Closing : सुखदेवी दुखभेदियो ··· ···· पार्श्वपद निर्वाण ॥

Colophon : इति [illegible] संपूर्ण ।

विशेष—नित्य करने वाली पूजाएँ इसमें संकलित हैं ।

८८६. नित्यनियम पूजा

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीर्ण है तथा अन्तिम पत्र अनुपलब्ध हैं ।

८८७. नित्यनियम पूजा संग्रह

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु — — ।

Closing : कीजे [illegible] समान ······· सुख भोगवै ॥

Colophon : इति भाषा आरती सम्पूर्णम् ।

८८८. निर्वाण पूजा

Opening : ॐ नमः सिद्धेभ्यः इत्यादि स्थापना ।

Closing : जे पढतियालं णिव्वुईकठ भावसुद्धीये ।
भुंजीवि णरसुरसुक्ख वाञ्छा सो लहई णिव्वाणं ॥

Colophon : इति श्री निर्वाणकांड सम्पूर्णम् । कार्तिकशुक्ल २ संवत् १९६५ भोम-शुभम् ।

८८९. पंचमंगल

Opening : पनविविर्णय परमगुरु गुरु जिन शासनं ।
सकल सिद्धि दातार सुविघनविनाशनं ॥
सारद अरुगुरु गौतम सुमति प्रकाशनं ।
मंगल करि चउ संघहि पाप पणासनं ॥

Closing : [illegible] ताकों सिद्धि — — [illegible] शिवमये ॥

Colophon : इति पंचमंगल सम्पूर्णम् ।

८९०. पंचमासव्रतोद्यापन

Opening : श्री[illegible] पद्मं,
[illegible] निवास पद [illegible]माम् ।

यस्तावान् शिवपदे कल्याणकुतोयैं,
संस्थापयैविविधिवर्णयुतेभ्युततम् ।

Closing : जयति विदलि कीर्तेरामकीर्तेसुपण्यी,
जिनपतिपदभक्तो हर्षनामासुधीर ।
क्वचित् उदयसुनुनेन कल्लाणभूमौ'
विविरचमेवर्णामामोऽसामसौख्यं ददातु ॥

Colophon : इति श्री आशीर्वाद । इति पंचमी व्रत उद्यापन समाप्ता ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २२७ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६४ ।

८९१. पंचमेरु पूजा

Opening : सर्वोपचाहूय — ··· प्रतिमा समस्ता ॥

Closing : पंचमेरु की आरती ···· ···· सुख होई ॥

Colophon : इति श्री पंचमेरु की पूजा जी सम्पूर्ण ।

विशेष—साथ में नंदीश्वर पूजा भी है ।

८९२. पंचपरमेष्ठा पूजा

Opening : कल्याणकीर्तिकमला — ··· प्रवक्ष्ये ॥१॥

Closing : सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिस्फूर्यंदुच्चैः प्रतापं ॥
कांतिं शांतिं समाधिं वितरतु भवतामुत्तमासाधु भक्तिः॥१५॥

Colophon : पंचपरमेष्टि पूजाविधान संपूर्णम् ॥६॥ (१८७५) अब्देबाण नवाहिमीत फिरमें संख्यामिते कार्तिकस्येतोर्वीवराकन्यका सुर्तातयो [illegible]पूजाहूनि । पूर्णाकारि [illegible] भूवनपते: शिष्येण दैवर्षिपि- नीपक्मासूतिरजतमार इति [illegible] पूर्णाक्यया ॥१॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २२१ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६४ ३१४ ।
(४) रा० सू० III, पृ० [illegible] ।

(५) रा० जै० सा०, पृ० ५७९।
(६) भा० म०, पृ० ५३२।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms, P. 662.

८९३. पंचपरमेष्ठी पूजा

Opening : देखो, क्र० ८७२।

Closing : स्फूर्यंद् मतावसतमःश्रेकटीकृतार्थक् श्रीधर्मभूषणपदांबुज- षु विताले
कर्त्तव्यमित्युवयतां सुयशोभिनंदि सूरैः सदंतकृदयी करणैक-। हेतुः ॥४॥

Colophon : इति श्री यशोनंदिकृता पंचपरमेष्ठि पूजाविधिः समाप्ता ॥

८९४. पंचपरमेष्ठी पूजा

Opening : मंगलमय मंगलकरन, पंच परम पद सार।
असरण कौं एही सरन, उत्तम लोक मझार ॥

Closing: मार्गशीर्ष वदि पंचमी, कुज दिन पूरन भाय।
संवत्सर सत अष्टदश, एक दोय अधिकाय ॥

Colophon : इति श्री पंचपरमेष्ठि भाषा पूजा सम्पूर्णम्। लिखतं सुगनचंद श्रावक पालमग्राम मध्ये जेष्ठ सुक्ल २ बुधवार संवत् १९२७।

८९५. पंचपरमेष्ठी विधान

Opening : भव रंजन भंजन करम, पंच परमगुरु सार।
पूजित पद पुरंदर जसा, करता है भवपार ॥

Closing : चौबीसों जिनदेव के, कल्यानक हितदाय।
पूर्व सो संवर्ण कहै, परभये शिवपुर पाय ॥

Colophon : इति पंच कल्यानक पूजा पाठ संपूर्ण संवत् १९६३ — पौष-मासे कृष्ण पक्षे गुरुवासरे पुस्तकं लिखतं आरामपुर मध्ये पंडित हीरालाल जी। लिखापितं आविका ... जी हो जे। शुभंमस्तु।

८९६. पंचपरमेष्ठी पाठ

Opening : देखें, क्र० ८९२ ।

Closing : देखें, क्र० ८९२ ।

Colophon : इति श्री पंचपरमेष्ठी पाठ संस्कृत श्री यशोनंदि आचार्य कृत संपूर्ण ॥ श्री शुभ संवत् १९३५ शाके ॥१८००॥ चैत्रशुक्ल चातुर्थ्यां उपरि पंचम्या रविवासरे मध्यरात्र: शुभ दिनें ॥ सोने बजे लिखे श्री सिद्धान्त तैयार भया ॥

सन्दर्भ के लिए देखें, क्र० ८९२ ।

८९७. पंचकल्याणक पूजा

Opening : सिद्ध कल्याणबीजं कलमलहरणं पंचकल्याणयुक्तम् ।
[illegible] कुटमणिमौलिप्रियादारविंदम् ॥
भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रं सकलसुखकरं कर्मवल्लीकुठारम् ।
वक्ष्ये पूजां च [illegible] शान्तये श्री जिनानाम् ॥

Closing : [illegible] महोत्सवोद्भवसुखं संसारकंदाद्भुतम् ॥
[illegible] जिनवरा: सर्वा स्तमता सर्वदा ॥१॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपूजा संपूर्णम् ॥
[illegible] लिखितरवाशिवप्रसादेन विप्रवंशेन [illegible] ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।
(२) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 662.

८९८. पंचकल्याणक पूजा

Opening : देखें, क्र० ८९७ ।

Closing : देखें, क्र० ८९७ ।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । [illegible] [illegible] लिखी [illegible] । संवत् [illegible] ।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपाठसंस्कृत संपूर्णम् ।। चैत्र कृष्ण अष्टमी शुक्रवासरे संवत् १९३६ धौमपुर एक ।। शुभं ।।

१०३. पंचकल्याणक पाठ

Opening : ध्यानस्थित मोहविकारदूरं श्रीवीतरागम्
शिव सौख्यहेतुं कठोरकर्मघनवहिरूपम् ।।७।।

(पृष्ठ ४६) जय जय श्रीवरमध्यमालंकृतपंण ॥

Closing : जयजय मुक्तिवधूमवतर्पण ।।८।।

१०४. पंचकल्याणक पाठ

Opening : देखें, क्र० ८६७ ।
Closing : देखें, क्र० ८६७ ।
Colopon : इति श्री पंचकल्याणकपाठ सम्पूर्णम् ।

१०५. पंचकल्याणकादि मंडल

Opening : श्रुतस्कन्ध मंडलचित्र ।

Closing : सोलहकारण मंडल ।
विशेष— ३० मंडलचित्र संगृहीत हैं ।

१०६. पद्मावती पूजा

Opening : श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य मोक्षसौख्यप्रदायकम् ।
वक्ष्ये पद्मावती पूजां हस्तायुधानिपूर्विका ।।

Closing : [illegible] पद्मावती पातु: वः ।।

Colophon : इति श्री पद्मावतीपूजा सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ कृष्ण ११ बुधवार सं० १९५२ बारह वर्ष दिन को लिखकर आमपुर (आरानगर) [illegible] सम्पूर्ण [illegible] ने पूर्ण करी । सो जयवंतहोहु
विशेष— इसमें [illegible] पूजा भी संगृहीत है ।

९०७. पद्मावती देवी पूजा

Opening : केशकुसुम कुंकुम ·· ··· पद्मावती ॥

Closing : गंधीरमधुरमनोहर ··· ··· कुर्वन्तु मंगलम् ॥

Colophon : इतिपद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम् ।

९०८. पद्मावतीदेवी पूजन

Opening : देखें, ग्रं० ९०७ ।

Closing : सनीरगंध सालिपुंज --- ।
······ वृद्धि क्षेत्रपाल अर्चनम् ॥

Colophon : श्री ।

९०९. पल्य विधान पूजा

Opening : नत्वा सन्मतिं वीरं वांछितार्थप्रदायकम् ।
ब्रुवे पल्यविधानस्य यथा सूत्रं हि पूजनम् ॥

Closing : हिएस्ति पार्श्व जिनं कुमारं पूजेयमाप्तागमशोभरस च ।
यत्ने मुनीभाग्यपदं सलीलं तनोति सर्वत्र यशोभिरामम् ॥

Colophon : नहीं है ।

९१०. प्रतिष्ठा कल्प

Opening : विज्ञानं विमलं यस्य विशदं विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांघ्रये ॥

Closing : इति प्रतिष्ठाहें कार्तीय दिवसक्रियम्,
यः करोति हि भक्तत्या स. स्यात्कल्याणभाजनम् ।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमत्कुन्दकुन्दाचार्येण संगृहीते प्रतिष्ठाकल्प नाम्नि ग्रंथे सूत्रस्थाने प्रतिष्ठा द्वितीय तृतीय दिवस विधि निरूपणीयो नामैकोन-विंशः परिच्छेदः इत्ययं ग्रंथो भाद्रपद शुक्लदशम्यां तिथौ रात नेमि-चन्द्राचार्येण समर्पितम् परिसमाप्तोऽभूद् मङ्गलं भूयर्भवेत । महावीर शक २५५२, १९९५ ईस्वी ।

(४) रा० सू० III, पृ० ५७ ।
(५)आ० सू० पृ० १६३ ।

६१६. प्रतिष्ठा विधान

Opening : नमोऽर्हते सदासूत्रदर्शितार्थायोऽर्हते ।
रहस्यभावतो लोकत्रयपूजार्हभावत, ॥
मन्त्रैः स्नानमिषुकुटोत्कटः प्रतिष्ठाप्राग्भाविकृत्यमखिलविधिमूर्तैः ।
तीर्थैर्पूर्णं शुभतमैरभितो विलोक्य पात्राणि तत्र सलिलाद्यपि
मोक्षयित्वा ॥

Closing : स्वस्तिश्रीसुखसिद्धिवृद्धिविभवः प्रख्यातयः पूज्यता,
कीर्तिः क्षेममगण्यपुण्यमहिमा दीर्घायुरारोग्यवत् ।
सौभाग्यं धनधान्यमन्यदपयं भद्रं शुभं मंगलम्,
भूयाद्भव्यजनस्य भास्वति जिनाधीशे प्रतिष्ठापिते ॥

विशेष–प्रशस्ति संग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन द्वारा प्रकाशित) पृ० १०४ में सम्पादक भुजबलीशास्त्री ने ग्रन्थ के बारे में लिखा है–यह हस्तिमल्ल प्रतिष्ठा विधान मूड़विद्री से प्रतिलिपि कराकर आया है। इसमें कहीं भी ग्रन्थ कर्ताका परिचय नहीं मिलता। परन्तु ग्रन्थ के आदि और अन्त में हस्तिमल्ल लिखा मिलता अवश्य है। इसी से इस प्रतिष्ठा ग्रन्थ का कर्ता हस्तिमल्ल माना गया है।
"श्रीकाचार्य गुणभद्राख्य जिनसेनाचार्य संभाषितो,
यः पूर्वं गुणभद्रसूरिवसुनन्दीन्द्रादिनन्द्या जितः ।
यश्चाशाधर हस्तिमल्लकथितो यश्चैकसन्धीरित-
स्तेभ्यस्स्वाहृतसारमध्यरचितः स्यार्ज्जिनपूजाक्रमः ।
इस श्लोक से यह बात सिद्ध हो जाती है कि हस्तिमल्ल ने भी एक प्रतिष्ठा पाठ रचा है।

६१७. प्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रणम्य स्वस्ति वृद्धि श्रीआनन्दादि प्रदायिने ।
महावीराय विबुध प्रवेशं विधि लिख्यते ॥

Closing : इन्द्रादिस्थेदलत २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

Colophon : इति प्रतिष्ठाविधि संपूर्णम् । संवत् १६०६ का मि० चैत ब० ६ शनि । श्री ।

६१८. प्राकृतन्हवण

Opening . जो इह गंगा चावी अ, जुलेण वि विमलेण ।
जिण न्हावेइ अडभत्त जु, सुह पावेइ अचिरेण ।।

Closing : मायबतु रंगहण सरहं रहधरवामरिपरि
वेयालियबकलमैयल मझिलोल रहिणराहि उणीपरयो ।.
पत्तोसि समवसूरणे असुइ हरणं वियकालवारणम्,
मयराण ण विणसे मुक्ताहलं मालालुलेय तोरणम् ।।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

६१६. पुण्याहवाचन

Opening : श्री शांतिनाथममरासुरमूत्तिनाथ,
भास्वत्किरीटमणिदीप्तति पादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशांतिकरणं प्रणम्य,
होमोत्सवाय कुसमांजलिमुत्क्षिपामि ।।

Closing : श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तवपुष्टि-समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु संतानाभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलं गोत्रं धनं तथास्तु ।

Colophon इति पुण्याहवाचन सम्पूर्णम् ।

६२०. पुण्याहवाचन

Opening : देखें, क्र० ६१६ ।

Closing : ... — कुलगोत्र धनं तथास्तु ।

Colophon : इति पुण्याहवाचनं संपूर्णम् । समाप्ता: ।। श्री संवत् १८६६ शकि १७३२ प्रमोद नामसंवत्सरे श्रावणमासे शुक्लपक्षेषष्टम्यां तद्दिने लिखितं कारंजाम धरे द: देवमन: राय स्वपठनार्थ

माघावधि कर्म्म अथार्यं ।

१२१. पुष्पाञ्जलि पूजा

Closing : जिन संस्थापयाम्यत्राह्वनादिविधानतः ।
कुर्वे नमके पुष्पाञ्जलिव्रतविशुद्धये ॥

Closing : पुष्पाञ्जलिव्रतविधानमाख्यातिकं ··· ।
··· ···· प्रभ्युपान्तरः ॥

Colophon : इति मेघमाला व्रतपूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

देखें, (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २५४ ।

१२२. पूजा संग्रह

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु, णमोऽस्तु, णमोऽस्तु । णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

Closing : आरत्तिय ओवइ कम्मइ ग्रोवइ सग्गापवग्गह लहुलहइ ।
जं जं मण भावइ सुह पावई, दीणु वि कासु ण भासुई ॥

Colophon : अष्टान्हिकाया पूजा समाप्तम् । संवत् १६४७ मिति आषाढ़ शुक्ल ६ चंद्रवासरे लिखतं अमीराम पुज इंद्रप्रस्थ नगरे । शुभं भूयात् ।

१२३. रत्नत्रय पूजा

Opening : श्री मंतं सन्मति नत्वा, श्रीमतः सुगुरूनपि ।
श्रीमज्जिनमतः श्रीमान्, वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ॥

Closing : चिरमवि रमसंसारम्बु च मुंच प्रपंच,
विकुल विकुल मोहं विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।
कलय कलय वृत्तं पश्य पश्य स्वरूपम्,

कुरु कुरु सुखानां [illegible] ॥

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते चारित्र पूजा समाप्तां ।

देखें—(१) जि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।

६२४. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें क्र० ६२१ ।

Closing : देखें, क्र० ६२१ ।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्रीजिनेंद्रसेन विरचिते रत्नत्रयः पूजा जी समाप्तम् । श्री श्री ।

६२५. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ६२१ ।

Closing : यामें मणि माणिक भंडार, पद-पद मंगल जयकार ।
श्रीभूषण गुणरत्न आधार, [illegible] बोलें सु विचार ॥

Colophon : इति रत्नत्रय व्रत कथा समाप्ता ।

६२६. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ६२१ ।

Closing : एक सरूपप्रकाश निज वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब, द्यानत को सुखदाय ॥

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

६२७. रत्नत्रय पूजा

Opening : चहुंगति फनि [illegible], दुख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ॥

Closing : देखें, क्र० ६२१ ।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा सम्पूर्ण ।

९२८. रत्नत्रय पूजा उद्यापन

Opening : श्रीवर्द्धमानमानम्य गौतमादींश्च सद्गुरून् ।
रत्नत्रयविधिं वक्ष्ये यथाम्नायं विमुक्तये ।

Closing ; इत्थं चारित्रमालां यैः कंठे यो विदधाति च ।
शोभाविनिर्जितरां नूनं शीघ्रं मुक्तिरमापतिः ।।

Colophon : इति विशालकीर्त्यात्मजो भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते रत्नत्रयपाठोद्यापन पूजा समाप्ता । शुभम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३२७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १२१ ।
(४) रा० सू० III, पृ० १५६, २०६, ३०८ ।

९२९. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ९२८ ।

Closing : इय जवउ सुरगिरि ससि रविहिं जावतारणरकतरं ।
रयणत्तय जतसंघ सयल चिर मंगल होऊ पवतइ ।।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा जयमाल संपूर्णम् ।

विशेष—संवत् १९४० में पचायती मंदिर आरा में चढ़ाया गया ।

९३०. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ९२८ ।

Closing : तद्विसर्जनद्वार प्रक्षालनांतः पुष्पादिक मनुष्ठातृभ्यः
तदनुमोदकेभ्यश्च वितीर्य शांतीमाशंसीयान्
समंतात्पुष्पाक्षतं विकरेद् ।।

Colophon : इति श्री चरित्र पूजा संपूर्णम् समाप्ता ।

९३१. रत्नत्रय जयमाल

Opening : पणवे जिणु [illegible] विमलसहावे वीर जिणि [illegible] जिहिं ।
[illegible] जिनु [illegible] पयासिउ रयणत्तय
सुविहाण विहिं ।।६।

अदवमासिवेय बारसि विणिएहाइ विसेयकुपहुरे बितणि ।
भुल लरि जिमहरि बाएप्पिणु पोसहु ससिपमाण लए-
प्पिणु ।।

Closing : रयणत्तय कारउ अभिउतारवकउपयडइ जो आयरइ ।
सो सुर णर सुखइ लहइ असंखइसिद्दि विलासिणि अणु-
सरइ ।।

Colophon : नहीं है ।

६३२. रत्नत्रय जयमाल

Opening : जय जय सद्दर्शन भव भय निरसन मोहमहातम तरुवारण ।
उपसम कमलदिवाकर सकलगुणकर परममुक्ति सुखकारण ।

Closing : इदं चारित्ररत्नं यः संस्तवीमिव पविमधीः ।।
अभिप्रेतार्थसिद्धयर्थं स प्राप्नोति चिरं नरः ।।

Colophon : इति सम्यक्चारित्रजयमाल सपूर्णम् ।

६३३. ऋषिमंडल पूजा

Opening : कर जुग जोरी शारदा, प्रनमि देवगुरुचर्न ।
ऋषिमण्डल पूजा रचो, श्री जिनवर पद सर्न ।।

Closing : संवत् नभ सत अंक भू, मगसिर मासव असेत ।
अर्द्धरात्र पूरन कियो, चद्रनाथ सकेत ।।

Colophon : इति श्री ऋषिमंडल ⋯ पूजा सम्पूर्णम् । शुभ सवत्
१९०१ मिति सावन सुदी सप्तमी पुस्तक लिखी गोरखपुर
नगरे श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यालये पठन हेतु भव्य जीवन
के लिखायो लाला मानिकचंद ।

६३४. ऋषिमंडल पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३३ ।

Closing : देखें, क्र० ८३३ ।

Colophon : इति श्री रिषमंडल जंत्र संबन्धी पूजा सम्पूर्णम् । शुभं सम्वत्

१९६० मिती जेठ कृष्ण ६ वार रविवार ।
सुत श्रीवीरनलाल के,लेखक दुरगालाल ।
जैनी आरा में रहै, कासीकगोत्र अग्रवाल ।।
अंग्रेजी सरकार बहादुर ११ मई सन् १९०३ ।

६३५. ऋषिमंडल पूजा

Opening : आद्यं ताक्षरसंलक्षमक्षरं वाप्ययस्थितम् ।
अग्निज्वालासमानाद् बिंदुरेखासमन्वितम् ॥१॥

Closing : यावन्मेरुमहीशशांक ... ... ,
... ... ऋषिमंडलस्य तु महापूजा विधिनंदतु ॥

Clophon : इति श्री ऋषिमडल पूजाविधि समापिता ।

देखें—Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 629.

६३६. रूपचंद्र शतक

Opening : अपनी पद न विचारहु, अहो जगत के राय ।
भव वन आयक हार हैं, शिवपुर सुधि बिसराय ।।

Closing : रूपचंद सद् गुरुनिकी जनु बलिहारी जाइ ।
आपुन वे शिवपुरि गए, भव्यनु पथ दिखाइ ।।१००।।

Colophon : इति श्री पांडे रूपचंद कृत शतक संपूर्णम् ।

६३७. सकलीकरण विधान

Opening : देखें, क्र० ८२६ ।

Closing : श्रीमद्रमस्तुमलवर्जितशासनाय,
निर्भासितासमसमस्तकुशासनाय ।
धर्मांशुवृष्टिपरिषिक्त य गत्रयाय,
देवादिदेवपरमेश्वरमोजिनाय ॥६॥

Colophon : इति स्तवनम् ।

देखो, (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९४ ।

६३८. सकलीकरण विधान

Opening : देखें, क्र० ८२६ ।

Closing : अनेन सिद्धार्थानभिर्मं असर्वविघ्नोपशमनार्थं सर्वदिक् क्षिपेत् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधानम् ।

विशेष—अन्त में दिग्पाल एवं क्षेत्रपाल की अर्चना तेल, चंदन, पुष्प आदि से करना लिखा है। अन्त में कुछ यंत्र-चित्र भी अंकित है।

६३९. समवसरण पूजा

Opening : प्रणमामि महावीरं, पंचकल्याणनायकम् ।
केवलज्ञानसाम्राज्यं लोकालोकप्रकाशकम् ॥१॥

Closing : श्रीमत्सर्वज्ञ ... ... ।
... ... विबुधारत्नरंजितम् ॥५॥

Colophon : इति श्री समवसरण पूजा बृहत्पाठ सम्पूर्णम् ।

देखें—दि० जि. ग्र. र., पृ. १९५ ।
जि. र. को., पृ. ४१९ ।

६४०. समवश्रुति पूजा

Opening : देखें क्र० ६३९ ।

Closing : श्रीमत्सर्वज्ञसेवा ? सर्वनिर्मलंति मतः ॥
? :—मृदुवचर्य बुधारातिः विबुधारत्नरंजितम् ॥५॥

Colophon : इति श्री समवश्रुतपूजाबृहत्पीठ संपूर्णम् ॥

६४१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : पंच परम गुरु को नमो, वो कर शीश नवाय ।
श्री जिन भाषित भारती, ताको लागो पाय ॥

Closing : रेवातहर समेत, बसे श्रावक भव्य सब ।
श्रादित्य आश्चर्य योग तृतीय पहर पूरणभयो ॥

Colophon : इति सम्मेद शिखर महात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति लालचंद विरचिते सुवर कूट वर्णनो नाम एकविंशमो सर्गः । इति श्री सम्मेदशिखर माहात्म्य जी संपूर्णम् । मिति चैत्र शुक्ल ८ रवीवार वस्तखत दुर्गादास संवत् १९३७ साल । शुभमस्तु ।

६४२. सम्मेदशिखर पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सुथान ।
सिखसम्मेद सदा नमो, होय पाप की हानि ॥

Closing : सिखिर सु पूजै सदा जो मनवचतन चितलाइ ।
दास जवाहिर यौं कही, सो शिवपुर को जाइ ॥

Colophon : इति श्री सम्मेदशिखरपूजा भाषा संपूर्णम् ।

६४३. सम्मेदशिखर पूजा

Opening : परमपूज्य जिन बीस जहाँ ते शिव लये ।
ओरहु बहुत मुनीश शिवाले सुखमये ॥

Closing : इत्यादि धनी महिमा अपार ।
प्रणमों ... सौसवार ॥

Colophon : इति ।

६४४. सरस्वती पूजा

Opening : मायातीत मयंक सम, हरन ताप संसार ।
ऐसे जिन पद कमलप्रति, नमूं टरन भवभार ।

Closing : देखें, क्र० ६४५ ।

Colophon : इति सरस्वती पूजन समाप्तम् ।

६४५. सरस्वती पूजा

Opening : देखें, क्र० ६४४ ।

Closing : मगलकारक श्री अरहंत । सिद्ध चिदातम सूरिमनंत ।
पाठक सर्व साधु गुणवंत । सुमरि भव्य शिव सौख्य लहंत ॥

Colophon : इति सरस्वती पूजा समाप्तम् । संवत् १९६२ शक १८२७ वैशाख कृष्ण ५ चन्द्रदिने । लि० पं० सीताराम स्वकरेण ।

६४६. सप्तर्षि पूजा

Opening : विमतीर्थकरं वंदे जिनेशं मुनिसुव्रतम् ।
सप्तर्षिमुनीन्द्राणां पूजयामि सुशांतये ॥

Closing : श्री गच्छे मूलसंघे अतिशतितिलको जो भवत् कुंदकुंदा-, तत्पट्टे ज्ञानभूयाभुतबलविरिच श्री जगत्भूषणाख्यः। तत्पट्टे भूरिभागी कविरसरसिक: विश्वभूषणकवेन्द्रः, तैनेदं पाठपूर्वं रचित सुलभितं भव्यकल्याणकारी ॥

Colophon : इति सप्तऋषिको पाठ विश्वभूषणकृतसमाप्त:

९४७. सप्तर्षि पूजा

Opening : देखें, क्र० ६४६ ।

Closing : देखें, क्र० ६४६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारकविश्वभूषणकृतं सप्तर्षि पूजाविधान समाप्तम् ।

संवत् १६५१ मिति वैशाख कृष्ण परिवा को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

९४८. सप्तर्षि पूजा

Opening : देखें, क्र० ६४६ ।

Closing : देखें क्र० ६४६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारक विश्वभूषण कृतं सप्तर्षिविपूजन विधानं समाप्तम् । चैत्रमासे कृष्णपक्षे तिथौ १४, संवत् १६५६ । श्रीरस्तु ।

९४९. षट्चतुर्थजिनार्च्चन

Opening : नमोनेकांतरचनाविधायिनो जिनेंद्राय नमः । अथ षट्चतुर्थवर्तमानजिनार्च्चनं समुदीरयामः यतः समानंदति विष्टपत्रयं ··· ।

Closing : शिवाभिरामार्यशिवाभिरामं, शिवाभिरामात्रशिवाभि- रामैः । शिवाभिरामप्रदकं भजत्वं, मुहुर्मुहुः मैविद किं वदामि ॥

Colophon : इति श्री षट्चतुर्थवर्तमानार्च्चाशिवाभिरामावनिपसुनुकृताऽलंकृतरेयं समाप्तः । संवत् १६१८ साल मिति कार्तिक वदी ११ बुधवार के दिन समाप्त हुआ ।

६५०. षण्णवतिक्षेत्रपाल पूजा

Opening : वंदेहं सन्मतिं देवं सन्मतिं मतिदायकम् ॥
क्षेत्रपालां विधिं वक्ष्ये भव्यानां विघ्नहानये ॥१॥

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्ठसंघे यतिपतितिलके रामसेनस्य संघे
सच्छ्रेनंदीतटाख्येतार्थविदितहृदुषे तुच्छकाम्मीमुनीन्द्रः ॥
ख्यातोसौ विश्वसेनोविमलतरमतिर्य नगर्ज चकार्षीत्
सोऽयं सुधामत्रासे भविजनकलिते क्षेत्रपाना शिवाय ।२७।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृतापण्णवतिक्षेत्रपाल पूजा सपूर्ण ॥

६५१. सार्द्धद्वयदीप पूजा

Opening : देखें, क० ६५२ ।

Closing : देखें, क० ६५२ ।

Colophon : इति श्री सार्द्धद्वयदीपस्थजिनानां पूजा सपूर्ण ॥
मंगलम् लेखकानां च पाठकानां च मंगलम् ।
मंगलं सर्वलोकानां भूमिभू पति मंगलम् ॥
अग्रवालवंशोद्भवेन लाला वृजपालदासः तस्य पुत्रः जिनवर
सतु रविचलण गुण वानतस्य पुत्रः स्वाध्यायहेतवे लिखापितम् ।

६५२. सार्द्धद्वय द्वीपस्थजिन पूजा

Opening : ऋषभाद्वर्द्धमानां, तान् जिनान् नत्वा स्वभक्तितः ।
सार्द्धद्वयद्वीपजिनपूजां विरचयाम्यहम् ॥

Closing : षष्टिर्णवोविभंगा विषयविरचिताख्यातिवक्षारनामा,
कालीर्तिशंमितास्युः कुमरजलधिगोद्वीपभूषबत्व ।
आगाद्भिकालकाब्धिद्वयमपि जलधिर्लक्षपंचाकतुर्यः,
तत्रासंज्योजनामामिति नरधरनीस दिम स्वर्द्धकानां ॥

Colophon : इति सार्द्धद्वयद्वीपस्थजिनानां पूजा सम्पूर्णम् । संवत् १८६८
माघमासे कृष्णपक्षे १३ रविवासरे समाप्तम् । लेखकपाठकयोश्चिरं-
जीवतो । लिख्यते श्रीकाशीमध्ये राजमंदिर शीतलाघाट ब्राह्मणशिव-
लाल जाति गौड । श्रीवाईजी लाला शंकरलाल लाला मनुलाल पठनार्थं
परोपकारार्थम् ।

९५३. सामयिक पाठ

Opening : देखें—क्र० ८७३ ।

Closing : देखें—क्र० ८७३ ।

Colophon : नहीं है ।

९५४. शान्त्यष्टक

Opening : स्नेहाच्चरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयन्ते प्रजाः
हेतुस्तत्रविचित्रदुःख निलयः संसारघोराम्बुधिः ।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्ण भूमंडलो
ग्रैष्मं काल इतिन्दुपादसलिलच्छायानुलागं रविः ॥१॥

Closing : उत्तमं भवमांगल्यं मध्यमं सप्तमंगलं ।
जघन्यां पंचमांगल्यं यंत्र मंगल लक्षणम् ॥

विशेष—यह ग्रंथ वीर निर्वाण संवत् २४४० में लिखा ।

९५५. शान्तिमंत्राभिषेक

Opening : ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराया: द्वादशांगोपर-
श्रेष्ठितायाः .... पवित्राय सर्वज्ञानाय स्वयंभुवेः
सिद्धाय परमात्मने .... ।

Closing : एकमंत्रस्थितं सिद्ध .... एकग्रहपरीक्षा ।

Colophon : नहीं है ।

९५६. शान्तिपाठ

Opening : शांतिजिनं शशिनिर्मल वक्त्रं । शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं । नौमिजिनोत्तममम्बुजनेत्रं ॥१॥

Closing : मंत्रहीनो क्रियाहीनो द्रव्यहीनो तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव क्षमस्व परमेश्वर ॥

Colophon : वीर संवत् २४३८ का पुस्तक आरावाले जगमोहन बा(भा)इ

ने पालीटाणा जैन दिगम्बर कार्यालय का मुनीम ग्ररमचंद्र हस्तक लिखवाया।

१५७. शान्ति विधान

Opening : सारासारविचार करि तजि संसृति को भार।
धाराधर जिनध्यान की, भये सिन्धु भवपार।

Closing : सम्वत् शत उगणीस दश श्रावण सप्तमि सेत।
सक्षयचंद कुमि चक्ति बसि रच्यो स्वापर हित हेत॥

Colophon : इति वृहत गुरांजी पूजा शांतिक विधान सम्पूर्णम्।

१५८. शान्ति विधान

Opening : देखें, क० ११६।

Closing : चैत्यादि भक्तिमयं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रस्तवनं पठित्वा पंचांग प्रणम्य न स्नेहाच्चरणमित्यादि शास्त्यष्टकं पठेत् स्वीकारं च लोकगे- मनुषैः।

Colophon : इति हवन विधानमासीत्। शुभमस्तु।

१५९. शांति धारापाठ

Opening : उँ ह्रीं श्रीं क्लीं ....।

Closing : सर्वशांति तुष्टि पुष्टि कुरु-कुरु स्वाहा॥

Colophon : इति लघु शांतिमंत्र चार्य १०८ नित्यजपे संवत् १६४७। मास वैशाखे शुक्लपक्षे तेरस्याम्॥१॥

१६०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० ८१५।

Closing : अष्टमसदमवसारं ... सौख्येति मुक्ति॥

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी संपूर्णम्।

... देखें, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ. २०८।

१६१. सिद्ध पूजा

Opening : सिद्ध अनन्त चतुष्टमयी शुद्ध सरूपी देव।
सुरनर मुनि जिन ध्यान करि प्रणमो करि बहु सेव॥

Closing : काल अनन्त एक समराजे ।
सुरनर नृप प्रणमे निज काजे ॥

Colophon : नहीं है ।

९६२. सिद्धचक्रव्रताख्यान

Opening : सिद्धार्थं सिद्धये नत्वा सिद्ध सिद्धार्थनंदनम् ।
सिद्धचक्रव्रताख्यानं, ब्रुवे सूत्रानुसारत. ॥

Closing : पद्मनन्दी भविनारक्षके सरिसूरि ... त्रनस्तुतो ।
जय ... ... ॥

Colophon : नहीं है ।

९६३. शिखर माहात्म्य .

Opening : देखें. क्र० ९४१ ।

Closing : देखें, क्र० ९४१ ।

Colophon : देखें क्र० ९४१ ।
वैशाखमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ६ भौमवासरे संवत् १९५५ ।

९६४. सिंहासन प्रतिष्ठा

Opening : श्री महावीरजिनेशानं प्रणिपत्य महोदयम् ।
मध्यज्ञानस्य सूत्रेण शुद्धि वक्ष्ये यथागमम् ॥

Closing : अलक्ष्य लुप्तिच्छिद्रोत्वविषमग्रहक्षयं कुर्वते ।
श्री ... जिनेश्वरपादयुगल ध्यानस्य मंत्रोदकम् ॥

Colophon : इति शांतिधारा संपूर्णम् । इति सिंहासनप्रतिष्ठा सम्पूर्णम् ।
शुभमस्तु । पंडितजगन्नाथेन रचितमिदम् । श्री
अथ कुम्भसूत्र कलश स्थापनम् ।
श्वेतेन पीतेन च लोहितेन, धर्मानुरागात् प्रविकल्पितेन ।
जिनस्य मार्गेण पवित्रतेन, सूत्रेण कुंभ अतिवेष्टयामि ॥
ॐ नमो भगवते असिआउसा ऐं ह्रीं ह्रां ह्रीं सःसंवौषट्
त्रिवर्ण सूत्रेण शांति कुभं वेष्टयामि ।

९६५. सोलह कारण जयमाला

Opening : जम्मंवुहितारण कुणइ निवारण सोलहकारण सियकरणं
पणविवि थुई भास मिससिपयासमितिक्छयरतुलद्धिधरणं ॥

Closing : सोलहमउअं गुणइ य थुणविअणु तारइ ।
जो जिण क्याइ विवंसधु आयरवि, तवहो इयुणुविसो-
तियपरू ॥

Colophon : इति श्री सोलाकारण जीकी सोला जयमालसंपूर्णम् । मिती कार (कार्तिक) शुक्ला ३ संवत् १९५२ हस्ताक्षर गोविंद सिंह वर्मा । शुभं भूयात् ।

९६६. सोलहकारण उद्यापन

Opening : अनन्तसौख्यं पवदं विशालं परं गुणौघं जिनदेव्यसेव्यम् ।
अनादिकाल प्रभवं व्रतेश त्रिधाह्वाये षोडषकारणं वै ॥

Closing : कतेपिरोधपृआयामूलसंधविद्याग्रणी ।
सुमतिसागरदेवब्रह्मषोडशकारणे ।

Colophon : इति श्री षोडशकारणोद्यापनपाठः ।

९६७. सुदर्शन पूजा

Opening : जंबूदीप मंझार राजत भरतराज अपार है ।
मैं देशपाडलिपुत्र जानको पुण्य पूजागार है ॥
मोक्ष सालागरहि आवस सेठ सुदर्शन है वली,
ममहृदयकमलिका सहकसुमार दुःखदारन को चली ॥

Closing : छन्दशास्त्र जानौ नहीं, क्षमैं सुकविवर जान ।
भावभक्ति पूजन रच्यौ आरा शुभ स्थान ॥
शुभ सम्बत् रचना रची, गत उनीस पचास ।
मलोमास तिथि पंचमी असाढ़ कृष्ण सुखरास ॥

Colophon : इति श्री सेठ सुदर्शनपूजा सम्पूर्णम् ।

९६८. सुदर्शन पूजा

Opening : देखें, क्र० ६६७ ।
Closing : देखें, क्र० ६६७ ।
Colophon : इति श्री सेठ सुदर्शन पूजा सम्पूर्णम् ।

९६९. श्रुतस्कंध विधान

Opening : प्रथम मंगल वाचक अनुष्टुभ छंद जाति ।
ॐ नमो वीतरागाय. गुरवे च नमो नमः ।
पुनर्नमामि भारत्यैः यस्माद्भवति मंगलम् ॥१॥

Closing : स्तुत्वेति बहुशास्त्रोर्वैर्बहुभक्तिपरायणैः ।
नाना भव्यै समं भीमामघं चारि समुद्धरेत् ॥१०॥

Colophon : इति श्री श्रुतज्ञान श्रुतस्कंध पूजा जयमाल संपूर्ण । ॥श्री॥

९७० श्रुतस्कंध पूजा

Opening : ॐ ह्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवतिसरस्वति ह्रीं नमः ।
Closing : सम्यक्तसुरत्नं सद्व्रतयत्नं सकलजन्तुककणाकरणम् ।
श्रुतसागरमेतं भजतमभेतं निखिलजने परितः शरणम् ।
Colophon : इति श्री श्रुतस्कंध पूजाविधिः समाप्तम् ।

९७१. स्वस्ति विधान

Opening : सौख्याक्षयाश्चाष्टगुणैर्गरिष्टाः,
युक्ताः स्वबोधेन विनिर्मलेन ।
सिद्धाः प्रणष्टाखिलकर्मबंध,
स्वस्तिप्रदाः केवलिनो भवंतु ॥

Closing : महापुंडरीक ... ... परिपूरतम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६७२. स्वाध्याय पाठ

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभावने ।
नम. श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान जिनेशिने ।।

Closing : उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वहणं साहण च णिट्ठवणं ।
दंसणणाणचरित्तं तवाणमाराहणा भणिया ।।

Colophon : इतिस्वाध्यायपाठः सम्पूर्णम् ।

६७३. तेरह द्वीप विधान

Opening : दश जनमत पूरन भइ, अब केवलदशसार ।
तिनको मुनि समुझै सुधी, परम शुद्धता धारि ।।

Closing : उत्तरदिशि, सुविशाल, रुचिक नाम गिरिवर ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

६७४. तीस चोबीसी पाठ

Opening : श्रीमतं सर्वविद्येशं नत्वा नयविशारदम् ।
कुर्वेहं श्रेयसां नित्यं कारणं दुःखवारणम् ।।१।।

Closing : अयकारवि जिणवर ··· ··· भोरकहो ठाणगुणट्ठहर ।।

Colophon : इति श्री तीस चोबीसी पाठ सम्पूर्णम् ।

६७५. तीस चतुर्विंशति पूजा

Opening : संसारतापसन्तप्तोहं स्वामिन् शरणमागतः ।
विज्ञापयामि भोमेषु निस्पृहो भगवद्रतः ।।

Closing : देखें, क्र० ८११ ।

Colophon : इति आचार्य श्री शुभचन्द्र विरचिता त्रिंशच्चतुर्विंशतिका पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. २०३ ।

Colophon : इति बृहदन्हवन विधि समाप्तम् ।

९८९. बृहद्शान्तिपाठ

Opening : प्रणिपत्य जिनान् सिद्धान् आचार्योपाठकान् यतीन् ।
सर्वशास्त्रार्थसाम्नाय-पूर्वकं शांति कि ब्रुवे ॥

Closing : यावन्मेरु महिमावत्, यावच्चंद्रार्कतारका: ॥
तावन्मुद्राणिरश्यन्तु, शांतिक स्नानमुत्तमा: ॥

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य विरचिते श्री धर्मदेवकृतं शांतिक पाठ समाप्तम् । माघकृष्णपक्ष १० संवत् लिपिकृत ब्राह्मणगंगाधरम-पुष्कर्णं ॥ श्री ॥

९९०. बिम्बनिर्माण विधि

Opening : प्रथम नमौं अरहन्त को नमौं सिद्ध अरु साध ।
कथन केवली श्रुत नमौं हरो सकल भवव्याध ॥

Closing : — — अथवा जे कृत्रिम होंय ते अरहंत प्रतिमा अकृत्रिम होय ते सिद्ध प्रतिमा कहिये । इति ।

Colophon : श्री शुभ मिति पौष शुक्ल २ शुक्रवार वीर सं० २४६२ विक्रम संवत् १९९२ । जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए लिखा । ह० रोशनलाल जैन ।

९९१. चौबीस दण्डक

Opening : अब चौबीसदण्डक चौपाई बंध दौलतरामकृत है ताका अर्थ [illegible] लिखिए है—

Closing : ऐसे [illegible] का कथन किया सो [illegible]- [illegible] ।

Colophon : [illegible]

Closing : परमजिनेन्द्रपदाम्बुजमधुकरवरचिदानंद विरचित ।
सुरुचिरमुनिवंदनाम्बुजवनि ....संधि रोदु ॥

Colophon : अंतु संधि ५ बक्कं पद ६३५ हक्कं मंगलमहा । रोदनेय संधि मुगिदुदु ।

९९६ त्रैलोक्य प्रदीप

Opening : वंदे देवेन्द्र वृन्दार्च्यं नाभेयं जिन भास्करम् ।
येन ज्ञानांशुभिर्नित्यं लोकालोकौ प्रकाशितौ ॥

Closing : यावत्तिष्ठन्ति.......मंडलम् ।
तावन्नित्यमहोद्योतैः वर्द्धतां जैनशासननम् ॥

Colophon : इतीन्द्रवामदेव विरचिते पुरवाडवंशविशेषकस्य नेमिदेवस्य यशः प्रकाशत्रैलोक्यदीपके ऊर्ध्वलोकव्यावर्णनो नाम तृतीयोधिकार: समाप्तः । मिती .... गुरुवारे संवत् १८०७ के साल पंडित .... मानपुर में लिखि । तस्मादिदं .... संवत्सरे १९९७ विक्रमाब्दे ज्येष्ठकृष्णपक्षे पंचम्यां रविवासरे आराप्रभरे ...... प्रतिलिपि कृतम् ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० १६५ ।

९९७ यंत्रादि विवरण

विशेष—यंत्रो (विवरण) ...... ४१ ...... पर बनाकी गई है ।